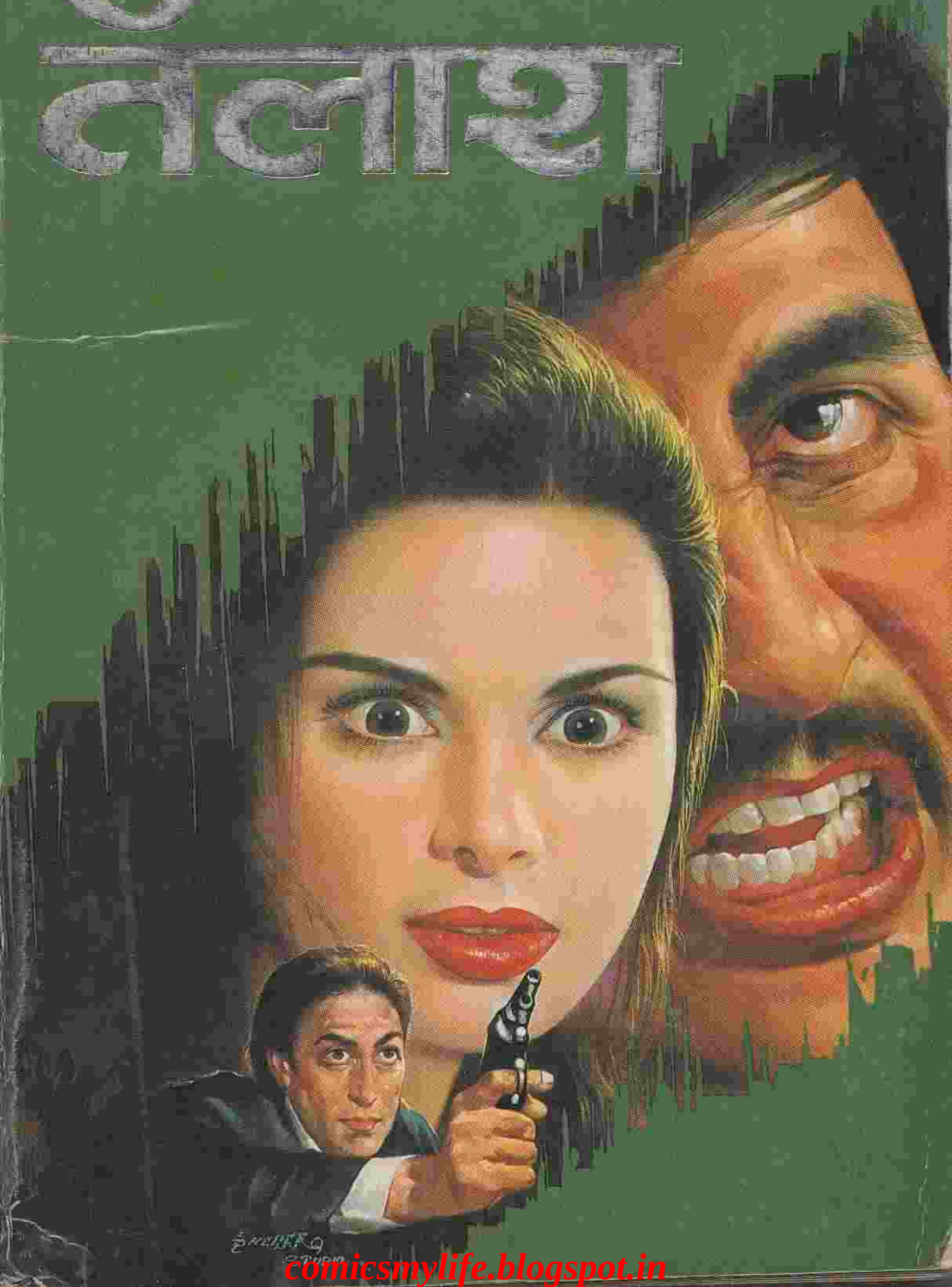


कर्नल रंजीत

comicsmylife.blogspot.in

मुगारिमकी वलाश



comicsmylife.blogspot.in

एक ऐसे खतरनाक मुजरिम की कहानी, जिसने एक मासूम लड़की की सिर्फ इसलिए झील में डुबोकर हत्या कर दी, क्योंकि वह उसका असली चेहरा पहचान गई थी, जिसे वह अपने पिता के रूप में जानती थी।

एक ऐसी औरत की कहानी, जिसके पति की दौलत लूटकर कुछ धन लोभी अय्याशों ने उसके साथ बलात्कार किया और उसके बच्चों को दर-बदर का भिखारी बना दिया।

वह औरत बदला लेने के लिए तड़पा-तड़पाकर उनकी हत्या कर देती है।

अत्यधिक सनसनी और रोमांच से भरपूर उपन्यास, जिसमें कारों के एक्सीडेंट, भूतहा बरगद, आदमकद मूर्ति, चिथड़े-चिथड़े लाशें, दिन-दहाड़े लाखों की लूट, अनोखे सपने और मदहोश कर देने वाली खुशबुएं आश्चर्यजनक रहस्यों का ताना-बाना बुना गया है।



मुजरिम की तलाश

कर्नल रंजीत के इस विशेषांक में पाठक पाएंगे कि उनके जैसा जासूसी लेखन अन्यत्र देखने को नहीं मिलता।

मनोज पब्लिकेशन्स
में कर्नल रंजीत के प्रकाशित उपन्यास

- | | |
|-------------------------|--------------------------------|
| 1. छः लाशें | 38. षड्यंत्र |
| 2. तीसरा खून | 39. मौत के फंदे |
| 3. अंधेरा बंगला | 40. खूनी संगीत |
| 4. हत्या का रहस्य | 41. मौत की छाया |
| 5. भयंकर मूर्ति | 42. अंतिम हत्या |
| 6. वह कौन था | 43. गहरी चाल |
| 7. खून के छीटे | 44. अधूरी औरत |
| 8. मौत के व्यापारी | 45. हत्यारे की पत्नी |
| 9. खूनी घाटी | 46. 11 बजकर 12 मिनट |
| 10. आस्तीन का सांप | 47. हांगकांग के हत्यारे |
| 11. नीले निशान | 48. अभिनेत्री की हत्या |
| 12. प्रेतात्मा की डायरी | 49. विजय दुर्ग का रहस्य |
| 13. विनाश के शोले | 50. लहू और मिट्टी |
| 14. गूंगी औरत | 51. पांचवीं औरत |
| 15. कुचली हुई लाशें | 52. नकली चेहरे |
| 16. विचित्र हत्यारा | 53. बदले की आग |
| 17. टेढ़ी उंगलियां | 54. स्वर्ण दुर्ग का ध्वंस |
| 18. खूनी कंगन | 55. काला शाल |
| 19. साप की बेटी | 56. आधी रात के बाद |
| 20. भयानक बदला | 57. सिले हुए होंठ |
| 21. शैतान की आंखें | 58. नीली आंखें |
| 22. जिन्दा लाशें | 59. औरत का दुश्मन |
| 23. पीले बिच्छू | 60. बूढ़ी परछाई |
| 24. खून-खून | 61. रात के अंधेरे में |
| 25. दूसरी मौत | 62. बेजान आदमी |
| 26. खून की बौछार | 63. कातिल मेरा नाम |
| 27. खून की लकीर | 64. सफेद खून |
| 28. दुल्हन की चीख | 65. मौत के दरवाजे |
| 29. बोलती लाशें | 66. खाली सूटकेस |
| 30. हत्यारे का हथियार | 67. मौत का बुलावा |
| 31. अनोखी रात | 68. जान खतरों में |
| 32. उड़ती मौत | 69. बहन की आबरू |
| 33. रहस्यमय रमणी | 70. मौत की आवाज |
| 34. भयानक बीने | 71. कोई लाशें |
| 35. मौत का भूल | 72. मौत का महल |
| 36. जहरीले तीर | 73. मुजरिम की तलाश |
| 37. सात पर्दे | 74. औरत तेरा कानून (प्रेस में) |

मनोज पब्लिकेशन्स

761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084

मुजरिम की तलाश

कर्नल रंजीत

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रकाशक

मनोज पब्लिकेशन्स

761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084

दूरभाष : 27611349, 27611869

फैक्स : 27611546

मुद्रक

दीपक ऑफसेट प्रिंटर्स

विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली-32

मुजरिम की तलाश : उपन्यास : कर्नल रंजीत

मूल्य : पच्चीस रुपये

इस उपन्यास के पात्र, स्थान तथा घटनाएं सर्वथा काल्पनिक हैं। किसी भी प्रकार के बाद-विवाद का न्याय क्षेत्र दिल्ली ही रहेगा।

मुजरिम की तलाश

गोलियों की बारिश

काजल जैसी काली अमावस की रात।

आकाश के सीमाहीन वक्षस्थल को रोंदती घुमड़ती-गरजती दैत्याकार काली-काली घटाएं और अंधड़ की तरह चलती हुई तेज हवा।

बेडौल पत्थरों और चट्टानों को जोड़कर बनाई गई पुलिस पोस्ट के दरवाजे पर खड़े इंस्पेक्टर जयसिंह सोलंकी ने आकाश की ओर गर्दन उठाकर देखा। सारा आकाश घटाओं से घिर चुका था। किसी भी पल वर्षा शुरू हो सकती थी और अगर वर्षा शुरू हो गई, तो भीगी हुई चट्टानों पर चलते हुए सड़क तक पहुंचना असंभव नहीं, तो कठिन अवश्य था।

रात के बारह बज चुके थे। शाम के छः बजे से इस पुलिस पोस्ट में बैठे-बैठे पूरे छः घन्टे बीत चुके थे। आबादी से दूर सड़क के किनारे ऊबड़-खाबड़ चट्टानों और कंटीली झाड़ियों के बीच बिताए हुए ये छः घन्टे छः दिन के बराबर मालूम हो रहे थे। फिर जब किसी का इन्तजार होता है, तो वक्त की रफ्तार न जाने क्यों धीमी और सुस्त हो जाती है।

वह सोचने लगा कि अगर उसने रमा की बात मान ली होती, तो अच्छा रहता। रमा उसकी पत्नी, जिसके साथ उसका विवाह हुए अभी तीन महीने भी नहीं बीते थे एक पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट की इकलौती बेटी थी। वह अच्छी तरह जानती थी कि पुलिस की नौकरी किस तरह की जाती है। उसके पिता! राजसिंह चौहान अपनी कोठी में बैठे-बैठे ही आए दिन पूरे इलाके का दौरा कर आते थे और फिर अपना और अपने मातहतों का टी.ए. बिल बनाकर हर महीने सैकड़ों रुपये वसूल

कर लेते थे।

रमा ने यही तरकीब जयसिंह सोलंकी को भी सुनाई थी। ऐसे खराब मौसम और बीहड़ इलाके के खतरनाक गश्त से बचने की खुशी के साथ-साथ थोड़ी-सी जेब भारी होने की खुशी उसके मातहतों का मुंह बन्द करने के लिए काफी थी, लेकिन जयसिंह सोलंकी ने ट्रेनिंग पूरी करने के बाद अभी छः महीने पहले ही बम्बई पुलिस के इंस्पेक्टर की हैसियत से चार्ज लिया था। उसे एस.आई. न बनाकर उसकी कर्तव्य परायणता, साहस, दिलेरी और सूझबूझ के कारण सीधा इंस्पेक्टर बनाया गया था। उसमें जोखिमों से जूझने का उत्साह, उमंग और साहस था। अपनी ड्यूटी के प्रति ईमानदार बने रहने की निश्चित भावना थी। वह अपने कारनामों से यह सिद्ध कर देना चाहता था कि जिस पद पर उसकी पोस्टिंग की गई है, वह उस पद के सर्वथा उपयुक्त है।

सामने दूर क्षितिज तक फैला समुद्र खराब मौसम के बावजूद शान्त था। हवा के अन्धड़ के कारण लहरों के बहाव में तेजी तो आ गई थी लेकिन वे तूफानी लहरों की तरह खतरनाक नहीं बन सकी थीं।

समुद्र की ओर देखते-देखते सहसा जयसिंह सोलंकी चौंक पड़ा।

उसने एक नन्हे से काले धब्बे को धीरे-धीरे किनारे की ओर बढ़ते हुए देखा।

उसने गले में लटका वाइनाक्युलर उठाकर आंखों पर लगा लिया। सागर की लहरों पर किनारे की ओर तैरता हुआ वह काला धब्बा हर पल बड़ा होता चला जा रहा था।

कुछ देर बाद ही उस धब्बे ने एक जलयान का रूप ले लिया।

इंस्पेक्टर जयसिंह सोलंकी ने गर्दन मोड़कर अन्दर बैठे अपने साथियों को आवश्यक निर्देश दिए। वे सब हलकी बूँदा-बांदी की परवाह न करके पुलिस पोस्ट के सामने बिखरी चट्टानों के

पीछे आ गए। उन्होंने अपनी राइफलें चैक कीं और मोर्चा लगाकर उस जलयान के निकट आने की प्रतीक्षा करने लगे।

अब उस जहाज पर जलती हुई बत्तियां टिमटिमाते हुए जुगनुओं की तरह स्पष्ट दिखाई देने लगी थीं, जो धीरे-धीरे बड़ी होती चली जा रही थीं।

फिर देखते ही देखते वह विशालकाय मालवाही जहाज किनारे से केवल एक फलांग की दूरी पर पहुंच कर रुक गया।

थोड़ी देर के बाद डेक के अगले छोर पर हरे रंग की एक तेज रोशनी धीरे-धीरे ऊपर की ओर उठी और स्पार्क करने लगी।

इंस्पेक्टर जयसिंह सोलंकी और उसके साथियों ने अपने-अपने हथियार संभाल लिए। उनकी व्यग्रता बढ़ती चली जा रही थी। मुठभेड़ की घड़ी निकट आ चुकी थी।

सहसा तभी पास ही नदी के मुहाने की दिशा में एक साथ कई मोटर बोटों के इंजनों के स्टार्ट होने की आवाजें अंधेरी रात के उस भयानक सन्नाटे को चीरकर गूंज उठीं। फिर चट्टानों के पीछे से निकलकर एक के पीछे एक पांच मोटर बोटें अपनी पूरी स्पीड से उस जहाज की ओर बढ़ने लगीं।

“क्या इन लोगों पर फायरिंग शुरू कर दी जाए?” पास ही खड़े सार्जेंट आलोक आप्टे ने बहुत धीमी और फुसफुसाती आवाज में पूछा।

“अभी नहीं। जब ये जहाज पर से माल लेकर वापस लौटने लगे तब धुआंधार फायरिंग शुरू कर देना।” इंस्पेक्टर सोलंकी ने धीमी आवाज में कहा, “माल मोटर बोटों के साथ अगर समुद्र में डूब गया, तो सुबह निकाल लिया जाएगा।”

पुलिस के तीस जूनियर अफसरों और जवानों की उस टुकड़ी ने अपनी-अपनी राइफलों और स्टेनगन की नालें समुद्र तल से लगभग एक फलांग दूर समुद्र में खड़े जहाज की ओर तेजी से बढ़ती हुई मोटर बोटों की ओर तान दीं और इंस्पेक्टर जयसिंह सोलंकी के आदेश की प्रतीक्षा करने लगे।

मोटर बोटें जहाज के करीब पहुंच कर रुक गईं।

जहाज के रेलिंग से बंधा एक रस्सा नीचे की ओर लटका दिया गया।

एक मोटर बोट पर सवार एक आदमी ने उस रस्से को पकड़ लिया। शायद वह केवल रस्सा नहीं, बल्कि रस्सों को बनी हुई सीढ़ी थी। वह आदमी उस सीढ़ी पर चढ़ता हुआ दो मिनट में ही जहाज के डेक पर पहुंच गया।

इंस्पेक्टर जयदेव सोलंकी और उसके जवान सांस रोके मोटर बोटों के लौटने की प्रतीक्षा करने लगे।

उन्होंने रस्सों के सहारे कई पेटियों को नीचे उतरते हुए देखा।

वे सभी पेटियां तख्ते हटाकर मोटरबोट के निचले हिस्से में छिपा दी गईं और फिर हटे हुए तख्त्तों को उसी स्थान पर फिट कर दिया गया।

जहाज पर गया आदमी रस्से के सहारे फिर मोटर बोट पर उतर आया। उसने हाथ उठाकर जहाज के डेक पर खड़े लोगों से विदा ली और मोटरबोटें घूम कर किनारे की ओर चल पड़ीं।

मोटर बोटें अभी किनारे से लगभग आधा फर्लांग दूर थीं कि इंस्पेक्टर जयसिंह सोलंकी का इशारा पाते ही उसके मातहत अफसरों और जवानों की स्टेनगन और राइफलें रात की खामोशी को चीरकर दहाड़ उठीं।

उन्हीं के साथ मोटरबोट पर सवार लोगों की दर्द-भरी चीखों के साथ उनके समुद्र में गिरने की आवाजें भी गूंज उठीं।

चौथे राउण्ड में ही मोटरबोटों की ओर से आती हुई दर्द-भरी चीखें मोटरबोटों के साथ ही समुद्र के गर्भ में समाकर शान्त हो गईं।

“शाबाश जवानों!” सवारियों सहित मोटरबोटों को समुद्र में समाते देख इंस्पेक्टर जयसिंह ने खुशी से चीख कर कहा—
“आज तुमने...”

लेकिन अभी उसका वाक्य पूरा नहीं हुआ था कि किसी

ओर से एक दनदनाती हुई गोली आई और उसकी गर्दन को चीरती हुई पार निकल गई।

वह किसी कटे हुए पेड़ की तरह चट्टानों के बीच जा गिरा।

उसे गिरते देख उसके साथी अफसर और जवान चट्टानों के पीछे से निकलकर उसकी ओर झपट पड़े।

लेकिन अभी वे चट्टानों के पीछे से निकलकर दो-चार कदम ही बढ़े होंगे कि सहसा धुआंधार गोलियों की बारिश होने लगी।

कुछ दर्दभरी चीखें उभरीं और फिर शान्त हो गईं।

और उन दर्द-भरी चीखों के शान्त होते ही गोलियों की बारिश थम गई।

इंस्पेक्टर जयसिंह सोलंकी के मातहत और जवानों के चट्टानों पर बिखरे लहलुहान बदन तड़पे और फिर हमेशा-हमेशा के लिए शान्त हो गए।

दूसरे ही पल सफेद लबादा पहने एक साया एक ऊंची चट्टान पर उभरा। उसके बदन पर बहुत ही महीन सफेद चमकीले कपड़े का लम्बा गाउन था। उसके लम्बे-लम्बे बाल हवा में उड़ रहे थे।

उसने टार्च की रोशनी चारों ओर बिखरी लहू में लथपथ पुलिस के जवानों और अफसरों की लाशों पर डाली और फिर उसने अपने साथियों को आदेश दिया, “इन लाशों को उठा कर समुद्र में फेंक दो इनके साथ पत्थर बांध देना, वरना समुद्र की लहरें इन्हें लाकर फिर किनारे पर पटक देंगी। यह मूसलाधार बारिश इन चट्टानों पर पड़े खून को साफ कर देगी। पुलिस विभाग कभी भी जान न पाएगा कि उसके अफसरों और जवानों की यह टुकड़ी कहाँ गई।”

उस औरत के साथियों ने पुलिस के अफसरों और जवानों की तीस लाशें उठाकर समुद्र में फेंक दीं और उनके हथियार जमा करके एक ओर रख दिए।

“वापिस चलो। समुद्र में डूबी मोटरबोटें फिर किसी समय

मौका पाकर निकाल ली जाएंगी।”

उस औरत ने कहा और फिर देखते-देखते चट्टानों के बीच न जाने कहाँ गुम हो गई।

बारिश की हलकी-हलकी बौछारें अब मूसलाधार बारिश में बदल गई थीं।

□□

रात-भर मूसलाधार बारिश होती रही थी। मौसम ठंडा था, लेकिन रमा को ठीक ढंग से नींद नहीं आ पाई। न जाने क्यों वह एक अजीब-सी बेचैनी महसूस करती रही। उसकी आंखें अपने कमरे की खिड़की के पार पुलिस स्टेशन के गेट पर हो लगी रही थीं।

सुबह के सात बज गए फिर भी वह बिस्तर पर पड़ी रही कई बार जी चाहा कि उठकर एक प्याला चाय बना ले, लेकिन फिर भी वह बिस्तर पर पड़ी रही।

सुबह जब एक अर्दली दूध देने आया तो उसने अपने पति के बारे में पूछा।

“साहब अभी तक नहीं लौटे। कोई खबर भी नहीं मिली।” अर्दली ने बताया, “उनका आखिरी मैसेज रात के बारह बजे के लगभग आया था। उसके बाद कोई मैसेज नहीं मिला। एस.आई. गुप्ते साहब कई बार वापस वायरलेस कान्टेक्ट करने की कोशिश कर चुके हैं, लेकिन कोई जवाब ही नहीं मिलता। जैसे ही कोई मैसेज मिलेगा आपको बता दूंगा।”

अर्दली के जाने के बाद रमा कुछ देर तक बिस्तर पर पड़ी-पड़ी कुछ सोचती रही, फिर उठकर टेलीफोन की मेज के पास चली गई।

उसने अपने पिता एस.पी. राजसिंह चौहान के बंगले का नम्बर मिलाया और फिर रिसीवर कान से लगा कर दूसरी ओर से आवाज आने का इन्तजार करने लगी।

थोड़ी देर के बाद दूसरी ओर से किसी ने रिसीवर उठाया और फिर एक भारी भरकम आवाज सुनाई दी, “हैलो! एस.पी.

चौहान स्पीकिंग।”

“डैडी, मैं रमा बोल रही हूँ।” रमा ने जल्दी से कहा।

“ओह रमा!” एस.पी. चौहान ने खुशी-भरे लहजे में कहा, “मैं तो अभी-अभी तुम्हें फोन करने वाला था। अच्छा हुआ तुमने ही कर लिया।”

“बताइए क्या बात है?” रमा ने उत्सुकता से पूछा।

“तुम्हारी बहन उमा के लिए मैंने एक लड़का पसन्द किया है। दोपहर को वह लड़का अपने माता-पिता के साथ लंच के लिए आ रहा है। तुम जय को लेकर आ जाओ। तुम लोग भी उस लड़के को देख लोगे।” एस.पी. चौहान ने कहा।

“वह तो शाम के गए हुए हैं। सारी रात बीत गई और अब सुबह के साढ़े सात बज रहे हैं। चौबीस घंटे से अधिक बीता चुके हैं, लेकिन न तो वह खुद ही लौटे और न उनका कोई मैसेज ही मिला है।” रमा ने चिन्तित स्वर में बताया।

“हो सकता है हेडक्वार्टर को मैसेज मिला हो।” एस.पी. चौहान की आवाज सहसा गम्भीर हो उठी।

“हेडक्वार्टर को भी कोई मैसेज नहीं मिला। कई बार वायरलेस द्वारा कान्टेक्ट करने की कोशिश की जा चुकी है। लगता है, उनका सैट आउट ऑफ ऑर्डर हो गया है।” रमा ने कहा।

“यह असम्भव है।” एस.पी. चौहान ने कहा और फिर एक मिनट रुककर बोले, “तुम चिन्ता मत करो। पुलिस की नौकरी ही ऐसी है। फिर भी मैं आ रहा हूँ। आधे घण्टे तक पहुंच जाऊंगा।”

“ठीक है आ जाइए।” रमा ने कहा और रिसीवर क्रेडिल पर रखकर बाथरूम में चली गई।

□□

नहाने के बाद उसे कुछ ताजगी महसूस हुई तो उसे याद आया कि उसके पिता भी इसी तरह कभी-कभी कई-कई दिन के लिए गायब हो जाया करते थे। जानते हुए भी क्या इतनी

अधीरता उसे शोभा देती है। पिताजी क्या सोचेंगे अपने मन में?

वह यह सब सोचती हुई ड्रेसिंग टेबल के सामने आ बैठी। उसने अपने बाल संवारे और हलका-सा मेकअप करने के बाद सिन्दूर की शीशी उठा ली। दो दिन पहले ही जयसिंह सिन्दूर की इस शीशी को पूना से लाया था।

सिन्दूर की शीशी अच्छी तरह पैक की गई थी, ताकि उसमें भरा हुआ सिन्दूर न तो सीलने पाए और न उसकी सुगन्ध ही उड़ने पाए।

रमा ने शीशी डिब्बे में से निकाली और शीशी की गर्दन तक धंसे कार्क को एक स्कू से खोलने लगी।

वह स्कू से कार्क खोलने की कोशिश कर ही रही थी कि तभी किचन से किसी भारी बर्तन के गिरने और कुछ चीनी के बर्तनों के टूटने की आवाज आई।

उसने चौंककर उस दरवाजे की ओर गर्दन घुमाई जिसके ठीक सामने किचन था।

गर्दन धुमाते ही स्कू की नुकीली नोक कार्क के ऊपर से गुजर कर उसके बाएं हाथ में घुसती चली गई और सिन्दूर से भरी शीशी हाथ से छूटकर फर्श पर जा गिरी और टूट गई। उसमें भरा हुआ सिन्दूर फर्श पर फैला चला गया।

रमा के हाथ में स्कू इतनी जोर से घुसा था कि वह सिन्दूर की शीशी के गिरकर टूट जाने की ओर ध्यान न देकर जल्दी से उठी और वाश बेसिन के पास पहुंच गई। उसने हथेली को नल के नीचे करके बहते हुए खून को रोका और थोड़ी-सी रुई डिटोल में भिगोकर उस बारीक सुराख के ऊपर रख ली, जिससे खून रिस रहा था।

वह दाएं हाथ के अंगूठे से बाईं हथेली पर रखी डिटोल से भीगी हथेली को दबाती हुई सोफे पर आ बैठी।

स्कू की नोक बहुत ही नुकीली थी। उसकी बायीं हथेली में जोरों का दर्द हो रहा था।

तभी दरवाजे पर आहट सुनाई दी।

उसने गर्दन मोड़कर दरवाजे की ओर देखा। उसकी मां और छोटी बहन उमा दरवाजे पर लटका पर्दा हटा कर अंदर आ रही थीं।

“आइए मम्मी।” वह झपट कर उठ खड़ी हुई, “डैडी नहीं आए?”

“वह जय के ऑफिस चले गए हैं।” रमा की मां ने कहा और दूसरे ही पल ठिठक कर रुक गई, “यह सिन्दूर किस तरह फैल गया?”

“शीशी का कार्क खोल रही थी। स्कू मेरी हथेली में घुस गया और शीशी फर्श पर गिरकर टूट गई।” रमा ने कहा और फिर दरवाजे की ओर गर्दन मोड़ते हुए उसने पुकार कर नौकरानी से कहा, “लक्ष्मी, यह सिन्दूर समेटकर किसी प्लेट में रख लो। बाद में इसे छानकर सिन्दूर के डिब्बे में भर देना। हो सकता है, इसमें कांच के टुकड़े मिल गए हों।”

रमा की बात सुनकर उसकी मां का ही नहीं उमा और लक्ष्मी का भी कलेजा धक से रह गया। किसी सधवा स्त्री के हाथ से सिन्दूर की शीशी का फर्श पर गिरकर टूटना... “भगवान मंगल करें।” उन तीनों ने मन-ही-मन कहा।

लक्ष्मी ने जल्दी-जल्दी एक कपड़े से समेट कर सिन्दूर एक प्लेट में भर लिया और फिर चाय बनाने के लिए किचन में चली गई।

□□

एस.पी. राजसिंह चौहान ने एस. आई. गुप्ते के साथ वायरलेस द्वारा अपने दामाद इंस्पेक्टर जयसिंह सोलंकी से कान्टेक्ट करने की बहुत कोशिश की, लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला।

उन्हें एस.आई. गुप्ते ने बता दिया था कि इंस्पेक्टर सोलंकी पिछली रात किसलिए और कहां गए थे।

“सर! वायरलेस सैट तो ठीक काम कर रहा है, फिर पता नहीं उधर से कोई रेस्पॉन्स क्यों नहीं मिलता। मैं सुबह छः बजे से सैट पर बैठा हूँ। कभी-कभी चिड़ियों के चहचहाने, लहरों

के टकराने और बादलों की गरज जरूर सुनाई देती है।" एस. आई. गुप्ते ने चिन्तित स्वर में कहा।

"मैं जरा रमा के पास जा रहा हूं। आप हेडक्वार्टर फोन करके क्राइम ब्रांच के इंचार्ज इंस्पेक्टर कुलकर्णी से कहिए कि वह फौरन यहां चले आए। हम खुद जयसिंह को खोजने जाएंगे।" एस.पी. राजसिंह चौहान ने उठते हुए गम्भीर आवाज में कहा।

"ठीक है सर!" एस. आई. गुप्ते ने कहा और क्रेडिल पर से रिसीवर उठाकर हेडक्वार्टर का फोन नम्बर डायल करने लगा।

"और हां, जयसिंह का अंतिम मैसेज क्या था?" अचानक एस.पी. चौहान ने कुछ याद करते हुए पूछा।

"उनका अंतिम मैसेज था कि एक बहुत बड़ा जहाज बड़ी तेजी से किनारे की ओर बढ़ा चला आ रहा है। हम अगली किसी भी घटना का सामना करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं।" एस. आई. गुप्ते ने बताया।

इस मैसेज को सुनकर एस.पी. चौहान और अधिक चिन्तित हो उठे। इस मैसेज से स्पष्ट था कि जयसिंह की टुकड़ी की उन लोगों से मुठभेड़ निश्चित थी, जो उस जहाज से उतरे थे या फिर जो उस जहाज से उतरने वाले माल को लेने आए होंगे।

और वह गहरी चिन्ता में डूबे हुए इंस्पेक्टर जयसिंह के प्लैट की ओर चल पड़े, जो पुलिस स्टेशन के अहाते में ही बना हुआ था।

एस.पी. राजसिंह चौहान क्राइम ब्रांच के इंचार्ज इंस्पेक्टर कुलकर्णी, कुछ गोताखोरों और कुछ जवानों को साथ लेकर एक मोटरबोट से समुद्र के किनारे वाली पुलिस की उस चौकी की ओर चल पड़े, जो सोनपुर की पहाड़ी से निकलने वाली नदी के मुहाने पर बनी हुई थी।

एस.पी. राजसिंह चौहान पुलिस के कुछ अफसरों और जवानों के साथ उस पुलिस चौकी के निकट पहुंचे, तो वहां चारों ओर मरघट जैसी खामोशी छाई हुई थी।

रात-भर मूसलाधार बारिश होती रही थी। इस समय भी हलकी-सी बूदाबांदी हो रही थी।

वे लोग मोटरबोट से उतरकर समुद्र के किनारे बिखरी हुई चट्टानों पर पांव जमा-जमाकर रखते हुए पुलिस चौकी की ओर बढ़ने लगे। बारिश में भीग जाने के कारण चट्टानों पर फिसलन हो गई थी। इसलिए उन्हें बड़ी सावधानी से एक-एक कदम जमाते हुए बढ़ना पड़ रहा था।

वे लोग चौकी के अन्दर पहुंचे, तो वह खाली पड़ी थी। जहां-तहां खाली लिफाफे और सिगरेटों के जले हुए टुकड़े बिखरे थे।

एक कोने में वायरलेस सैट रखा था, जो ऑन था।

उस वायरलेस सैट को ऑन देखकर एस.पी. राजवीर सिंह चौहान समझ गए कि पुलिस स्टेशन को अन्तिम मैसेज देने के बाद ही स्मगलरों के गिरोह के साथ इंस्पेक्टर जयसिंह सोलंकी की मुठभेड़ हुई थी; लेकिन प्रश्न था कि मुठभेड़ के बाद पुलिस के तीस अफसरों और जवानों की वह टुकड़ी कहां गई? मुठभेड़ होने पर दोनों पार्टियों के कुछ लोगों का मारा जाना निश्चित था, लेकिन वहां न तो कोई लाश ही दिखाई दे रही थी और न कहीं खून की एक बूंद ही नजर आ रही थी। रात-भर मूसलाधार बारिश होने के कारण चट्टानों पर पड़े खून का धुल जाना तो निश्चित था, लेकिन लाशें कहां गई? और यह भी तो आवश्यक नहीं कि तीस जवानों की पूरी टुकड़ी ही मारी जाती। कुछ लोगों का बच जाना निश्चित था।

"इंस्पेक्टर कुलकर्णी! आप जवानों को साथ लेकर इन चट्टानों की तलाशी लीजिए। शायद कुछ पता चल जाए।" एस.पी. राजसिंह चौहान की आवाज और भी भारी हो गई थी।

इंस्पेक्टर कुलकर्णी पुलिस के कुछ जवानों को लेकर दूर तक समुद्र के किनारे बिखरी हुई चट्टानों की तलाशी लेने लगा।

एस.पी. राजसिंह चौहान कुछ जवानों और गोताखोरों के साथ समुद्र के किनारे आ खड़े हुए।

इंस्पेक्टर कुलकर्णी और पुलिस के जवानों ने एक-एक चट्टान को छान मारा, लेकिन उन्हें न तो कोई लाश ही मिली और न कहीं मुठभेड़ होने का ही कोई चिन्ह मिला।

सहसा एस.पी. राजसिंह चौहान के साथ खड़े एक गोताखोर की नजर समुद्र किनारे से थोड़ी ही दूर लहरों के साथ उछलते-गिरते एक रस्से पर पड़ी।

उसने एक पल कुछ सोचा और फिर समुद्र में छलांग लगा दी।

थोड़ी देर में ही वह उस रस्से के पास पहुंच गया।

उसने उस रस्से को पकड़कर खींचा, तो उसे लगा, जैसे वह रस्सा किसी भारी चीज से बंधा या अटका हुआ हो।

उसने रस्से को पकड़े-पकड़े गोता लगाया और समुद्र की गहराई में उतरता चला गया।

समुद्र के किनारे-किनारे लहरों के नीचे-नीचे चट्टानों का एक सिलसिला काफी दूर तक चला गया। इसलिए यहां समुद्र की गहराई तीस-चालीस फुट से अधिक नहीं थी।

वह गोताखोर रस्से के सहारे नीचे पहुंचा, तो आश्चर्य से उसकी आंखें फटी रह गईं।

वह रस्सा एक मोटरबोट में बंधा हुआ था। उस मोटर-बोट के आस-पास कई लाशें पड़ी हुई थीं। वे लाशें पुलिस के जवानों की भी थीं।

वह तेजी से ऊपर की ओर चल दिया।

“नीचे एक मोटरबोट है और उसके आस-पास कुछ लाशें भी पड़ी हैं। वे लाशें पुलिस के जवानों की हैं।” गोताखोर ने किनारे पर आकर एस.पी. राजसिंह चौहान को बताया।

गोताखोरों को समुद्र की तली में जाकर लाशों को तलाश करने का आदेश देने के बाद एस.पी. राजसिंह ने इंस्पेक्टर कुलकर्णी से कहा, “इंस्पेक्टर! वायरलेस से हेडक्वार्टर को इन लाशों और मोटरबोट के मिलने की सूचना दो और कहो कि मोटरबोट को पानी में से निकालने के लिए समुद्री किनारे की

सफाई करने वाला कोई जहाज फौरन भेजा जाए, जिसमें क्रेन लगी हो। साथ ही कुछ सशस्त्र जवानों की एक टुकड़ी भी फौरन भेज दी जाए।”

इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने पास ही खड़े जवान से वायरलेस सैट ले लिया और हेडक्वार्टर से सम्पर्क करने की कोशिश करने लगा।

□ □

हेडक्वार्टर से जब तक पुलिस के सशस्त्र जवान और क्रेन लगा एक छोटा जहाज उस पुलिस चौकी तक पहुंचा गोताखोर पुलिस टुकड़ी के सभी लापता अफसरों और जवानों की लाशों को समुद्र से निकाल चुके थे। उनके साथ लगभग बीस ऐसी भी लाशें थीं, जो उन्हें डूबी हुई पांच मोटरबोटों के साथ ही मिली थीं।

उन लाशों में इंस्पेक्टर जयसिंह सोलंकी की लाश भी थी।

इंस्पेक्टर जयसिंह सोलंकी की लाश को देखते ही वहां मौजूद हर व्यक्ति की आंखें छलक उठीं।

एस.पी. राजसिंह चौहान ने बड़ी कठिनाई से अपने आपको संभाला और अपने सिर पर से कैप उतारकर इंस्पेक्टर जयसिंह सोलंकी की लाश को सेल्यूट दिया, जिसने ड्यूटी निभाते हुए अपनी जान निछावर कर दी थी। साथ ही अपने साथियों के साथ स्मगलरों की पांच मोटरबोटों को डुबोकर अपने साहस और पराक्रम का परिचय भी दिया था।

एस. पी. राजसिंह के बाद वहां मौजूद हर व्यक्ति ने इंस्पेक्टर जयसिंह सोलंकी को सेल्यूट दिया और उसकी लाश अन्य लाशों के साथ उठाकर पुलिस चौकी के सामने रख दी।

क्रेन द्वारा आधे घंटे में ही समुद्र में डूबी पांचों मोटरबोटें निकालकर किनारे पर पहुंचा दी गईं।

जब उनकी तलाशी ली गई, तो उन पांचों मोटरबोटों में लकड़ी की बीस बड़ी-बड़ी पेटियां भरी हुई थीं, जिनको प्लास्टिक की बनी चादरों से अच्छी तरह पैक किया हुआ था।

एस.पी. राजसिंह चौहान का खून अपने दामाद की लाश को देखते ही खौल उठा था। साथ ही उन्हें इस बात पर गर्व भी महसूस हो रहा था कि उनके दामाद ने अपने कर्तव्य को निभाते हुए अपनी जान देने से पहले स्मगलरों के गिरोह के बीस आदमियों को ठिकाने लगा दिया था और बीस पेटियों में भरे माल को देश के दुश्मन स्मगलरों के हाथों से छीन लिया था, जिसका मूल्य कई लाख या कई करोड़ रुपया हो सकता था।

आसपास के समुद्र को अच्छी तरह खंगालने के बाद पुलिस के जवानों और अफसरों की लाशों के साथ स्मगलरों के गिरोह के आदमियों की लाशें और माल से भरी पेटियां जहाज पर पहुंचा दी गईं। फिर वे सब बम्बई की ओर चल दिए।

अपने कर्तव्य की बलि वेदी पर प्राण निछावर करने वाले इंस्पेक्टर जयसिंह सोलंकी और उसके साथियों के बलिदान और सफलता की कहानी पलक झपकते ही पूरे महानगर में फैल गई थी।

रमा की आंखों के आंसू जैसे सूख गए थे। वह चुपचाप पति की लाश के पास बैठी उसके चेहरे को टकटकी बांधे देखे चली जा रही थी।

उसे लग रहा था, जैसे जयसिंह गहरी नींद सोया पड़ा है। वह कभी भी जागकर कह उठेगा, "रमा! जल्दी से मुझे एक प्याला चाय बनाकर पिला दो। मुझे जल्द-से-जल्द समुद्र तट पर पहुंचना है। खबर मिली है कि वहां आज रात को स्मगलिंग का कई करोड़ रुपये की कीमत का माल उतरने वाला है।"

हेडक्वार्टर की लम्बी-चौड़ी इमारत पत्रकारों, पुलिस और प्रशासन के अफसरों और शहर के सभ्रांत नागरिकों से भर गई थी।

लोगों की एक आंख में आंसू झिलमिला रहे थे; लेकिन दूसरी आंख में इंस्पेक्टर जयसिंह सोलंकी और उसके साथियों की सफलता तथा बलिदान पर गर्व से चमक रही थीं।

और जब उन बीसों पेटियों को खोला गया, तो उनमें जो

कुछ भरा हुआ था, उसे देखकर लोगों की आंखें आश्चर्य से फटी रह गईं।

वे बीसों पेटियां सौ-सौ रुपये के नये नोटों की अनगिनत गड़ियों से ठसाठस भरी हुई थीं।

लेकिन वे नोट असली नहीं थे।

महानगर बम्बई के पुलिस विभाग के अफसरों और प्रशासकीय अधिकारियों के चेहरे चिन्ता और आशंका से पीले पड़ते चले गए।

उन पेटियों के साथ खड़े एस.पी. राजसिंह चौहान के साथ-साथ बम्बई पुलिस के कमिश्नर मिस्टर देशपांडे तथा इंस्पेक्टर कुलकर्णी सोच रहे थे—काश! मेजर बलवंत यहां होता।

मेजर बलवंत उस समय अपने साथियों के साथ गुजरात के पवित्र और ऐतिहासिक भगवान सोमनाथ के मन्दिर के परकोटे पर खड़ा दूर क्षितिज तक बिछी सागर की लहरों की झिलमिलाती हुई नीली चादर को देख रहा था।

अन्ना कहां गई

अटलांटिक मर्चेन्ट नेवी का विशाल मालवाहक जहाज वैरावल बन्दरगाह से लगभग आधा मील दूर अरब सागर में लंगर डाले खड़ा था। मौसम बिल्कुल साफ था। दो-तीन दिन पहले वर्षा हो चुकी थी, इसलिए आसमान बिल्कुल साफ था और उसका नीलापन और भी अधिक गहरा हो उठा था। ऊपर नीला आकाश और चारों ओर बिछी अरब सागर की नीली जलराशि के बीच सफेद पेंट से पुता अटलांटिक मर्चेन्ट नेवी का वह विशाल मालवाही जहाज बहुत ही सुन्दर दिखाई दे रहा था। लगता था, जैसे कोई विशाल राजहंस नीले आकाश में उड़ते-उड़ते थककर सागर की नीली-नीली लहरों पर आ बैठा हो और एक ही स्थान पर रुककर दिनभर की लम्बी उड़ान की थकान उतार रहा हो।

पाटन के ऐतिहासिक भगवान सोमनाथ के मन्दिर के सदियों पुराने परकोटे पर खड़े मेजर बलवंत ने दूरबीन की सहायता से अटलांटिक मर्चेन्ट नेवी के उस विशाल जलपोत को देखा, तो उसकी आंखों में एक अजीब-सी प्रसन्नता भरी चमक जाग उठी।

मेजर बलवंत भले ही अपने पेशे से एक जासूस था, लेकिन उसे संसार की प्रत्येक ललित कला से गहरा लगाव था। क्योंकि वह सौंदर्य प्रेमी था। ऐसा सौंदर्य प्रेमी जिसे भयंकर विषैले नागों में भी सौंदर्य दिखाई दिया करता था। जिसकी पैनी नजरें क्षत-विक्षत लाशों के चेहरों में भी उस घनी पीड़ा के नीचे छिपे सौंदर्य को भी खोज लेती थीं।

“सोनिया! क्यों न हम लोग ट्रेन के बजाय किसी समुद्री जहाज से बम्बई चलें?” मेजर बलवंत ने अपनी आंखों से वाइनाक्युलर हटाकर सोनिया की ओर बढ़ाते हुए कहा, “वह देखो, वैरावल बन्दरगाह पर कोई मालवाही जहाज खड़ा है। जहाज बहुत बड़ा दिखाई दे रहा है। हम लोगों को इस जहाज में जरूर जगह मिल जाएगी, क्योंकि वैरावल पोर्ट के डायरेक्टर सिंधवानी मेरे बचपन के मित्रों में से हैं।”

सोनिया ने ही नहीं मेजर बलवंत के सभी साथियों ने वाइनाक्युलर की सहायता से लगभग दो-ढाई मील दूर समुद्र में खड़े उस विशाल जलपोत को देखा। दोपहर की तेज धूप में अटलांटिक मर्चेन्ट नेवी का वह विशाल पोत बहुत ही सुन्दर दिखाई दे रहा था।

“लेकिन, पता नहीं यह जहाज बम्बई के लिए कब रवाना हो?” सोनिया ने कहा, “और यह भी तो निश्चित नहीं कि यह जहाज बम्बई ही जा रहा है?”

“तुम्हें महानगर बम्बई में रहते इतने वर्ष बीत गए। बम्बई केवल भारत का ही नहीं एशिया और हिन्द महासागर के विशाल बन्दरगाहों में से एक है। तुमने हजारों बार समुद्री जहाजों को केवल देखा ही नहीं है, उनमें यात्राएं भी की हैं,

फिर तुम जहाज की स्थिति को देखकर यह नहीं पहचान पाई कि यह जहाज किधर से आया है और किधर जाएगा?” मेजर बलवंत ने कहा, “जहाज का अधिकांश खुला भाग जिस ओर होता है, वही जहाज का अगला हिस्सा होता है, फिर भी मैं संजीव को मिस्टर सिंधवानी के ऑफिस में भेज देता हूं। यों तो किसी-न-किसी जहाज में जगह मिल ही जाएगी; लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय जलपोतों में यात्रा करने का आनन्द ही कुछ और होता है। विभिन्न देशों के निवासियों से मिलने और उन्हें निकट से देख पाने का अवसर मिलता है।”

“ठीक है। आप मिस्टर सिंधवानी के नाम एक पत्र लिख दीजिए। मैं अभी चला जाता हूं।” संजीव ने खुश होकर कहा।

मेजर बलवंत ने जेब में से डायरी और कलम निकाली और मिस्टर सिंधवानी के नाम पत्र लिखकर संजीव को देते हुए कहा, “तुम मिस्टर सिंधवानी से पत्र का उत्तर लेकर सीधे ‘सोरठ निवास’ होटल में चले आना। हम लोग भी पाटन के प्राचीन नगर को देखने के बाद घंटे-डेढ़ घंटे में वहां पहुंच जाएंगे।”

संजीव ने पत्र लेकर जेब में रख लिया और परकोटे से उतरकर मन्दिर के प्रवेश द्वार की ओर चल दिया।

मेजर बलवंत भी अपने बाकी साथियों के साथ परकोटे पर से उतरा और भगवान सोमनाथ के मन्दिर के उस द्वार की ओर चल दिया जो प्रभास पाटन के प्राचीन और ऐतिहासिक नगर की ओर खुलता था।

□□

मेजर बलवंत और उसके साथियों को वैरावल पोर्ट के डायरेक्टर मिस्टर सिंधवानी की मदद से अटलांटिक मर्चेन्ट नेवी के जलपोत ‘मोनार्क’ में बम्बई तक के लिए दो ऐसे कैबिन मिल गए थे, जिनमें चार-चार आदमियों के सोने की व्यवस्था थी।

‘मोनार्क’ जलपोत नार्वे की राजधानी और सुप्रसिद्ध बन्दरगाह

ओस्लो से रवाना हुआ था और उसकी यात्रा का अन्तिम बन्दरगाह संयुक्त राज्य अमेरिका के पश्चिमी तट का विख्यात बन्दरगाह सेनफ्रांसिस्को था। इस जलपोत में यूं तो विभिन्न देशों के यात्रियों की संख्या काफी थी; लेकिन सबसे अधिक संख्या थी नार्वे के स्कूलों और कॉलेजों के छात्र-छात्राओं की, जो अपनी वार्षिक छुट्टियां बिताने के लिए इतनी लम्बी यात्रा पर निकले थे। इसीलिए 'मोनार्क' जब भी किसी देश के बन्दरगाह पर लंगर डालता था, वहां से तभी आगे बढ़ पाता था, जब तमाम छात्र-छात्राएं उस बन्दरगाह का अच्छी तरह और जी भरकर सैर-सपाटा कर लेते थे। इसीलिए 'मोनार्क' जब वैरावल बन्दरगाह से रवाना हुआ, तो शाम होने में थोड़ी ही देर रह गई थी।

फर्स्ट क्लास के केबिनों में अपना सामान रखने के बाद मेजर बलवंत और उसके साथी डेक पर पहुंचे, तो वहां लगभग तीन सौ छात्र-छात्राएं डेक पर खड़े अरब सागर में डूबते सूर्य का मनोहारी दृश्य देख रहे थे।

शाम के सूरज का रंग एकदम सुनहरी दिखाई दे रहा था। उसकी सुनहरी किरणों से अतिरंजित होकर सागर का नीला पानी भी सुनहरी दिखाई देने लगा था। लगता था, जैसे मोनार्क के चारों ओर पिघला हुआ सोना लहरें मार रहा हो।

सब लोग तो सूर्यास्त के उस मनोहारी दृश्य में खोए हुए थे; लेकिन मेजर बलवंत की नजरें नार्वे के स्कूल और कॉलेजों के उन तीन सौ छात्र-छात्राओं पर से फिसलती हुई एक ऐसी युवती पर पहुंचकर ठिठक कर रह गई थी, जिसके बदन का रंग न तो नार्वेजियन युवतियों के गोरे-गुलाबी रंग से मिलता था और न चेहरे के नाक-नक्श ही मिल रहे थे।

उसके गोरे और गुलाबी रंग में सांवले रंग की हलकी-सी मनोहारी झलक दिखाई देती थी। नाक-नक्श और चेहरे की बनावट भारतीय युवतियों से अधिक मिलती-जुलती थी।

वह कुछ ही देर तक चुपचाप खड़ा उस युवती को देखता

रहा और फिर धीरे-धीरे बढ़ता हुआ उस युवती के निकट पहुंच गया।

उसने निकट पहुंचकर उसके चेहरे को और अधिक ध्यान से देखा। उस युवती की उम्र उन्नीस-बीस वर्ष से अधिक नहीं थी; लेकिन उसके चेहरे पर किसी अबोध बच्ची जैसी मासूमियत थी।

सहसा उसकी आंखों की पुतलियों के काले रंग को देखकर मेजर बलवंत को पूरा-पूरा विश्वास हो गया कि वह युवती नार्वेजियन नहीं विशुद्ध भारतीय है या फिर उसके माता पिता में से कोई-न-कोई एक भारतीय जरूर है।

उसने अंग्रेजी में पूछा, "क्या आप भारतीय हैं मिस...?"

"मिस अन्ना फ्रेंकलिन—। मेरा नाम अन्ना फ्रेंकलिन है।" युवती ने मुसकराते हुए अपना नाम बताया, "और मैं भारतीय नहीं नार्वेजियन हूं।"

"क्षमा कीजिएगा मिस अन्ना! आपके चेहरे के नाक-नक्श और आपकी ये काली-कजरारी आंखें इस बात का ठोस प्रमाण हैं कि आपमें भारतीय रक्त का मिश्रण जरूर है।" मेजर बलवंत ने मुस्कराते हुए कहा।

"मेरा जन्म भारत में ही हुआ था। वह भी भारत के सुप्रसिद्ध महानगर बम्बई में। मेरी मम्मी लगभग छः सात वर्ष भारत में रही थीं। वह यहां भारत की प्राचीन भाषाओं संस्कृत और पाली का अध्ययन करने के लिए आई थीं। यहीं उन्होंने शादी भी कर ली थी। मेरे पिता भारतीय थे या नार्वेजियन, इस सम्बन्ध में मुझे कुछ पता नहीं। मम्मी ने भी मुझे इस सम्बन्ध में कभी कुछ नहीं बताया; लेकिन हमारी पड़ोसिनें कहती हैं कि जब मेरी मम्मी भारत से लौटी थीं, तो मैं उनके साथ थी। शायद दो ढाई साल की थी।" अन्ना ने कहा फिर एक पल खामोश रहने के बाद, जैसे अपने अतीत में झांकती हुई खोए-खोए स्वर में कहने लगी, "हालांकि मेरी मम्मी जब मुझे भारत से लेकर नार्वे गई थीं मैं बहुत छोटी थी, फिर भी भारत में बीते बचपन के कुछ

धुंधले चित्र मेरी आंखों के आगे आज भी नाच उठते हैं। हम जिस मकान में रहते थे, वह समुद्र के ठीक किनारे पर बना था। उस मकान में बहुत बड़ा बगीचा था जिसमें आम के पेड़ भी थे। सफेद पत्थरों का बना एक हौज था, जिसमें फव्वारा लगा था। रंग-बिरंगी मछलियां उस हौज में तैरती रहती थीं। उस मकान में मेरी जितनी बड़ी एक लड़की और भी थी। एक बहुत ही सुन्दर युवती। हम दोनों को उस बगीचे में तरह-तरह के खेल खिलाया करती थी। एक सुन्दर सजीला नौजवान था, जो हमें कार में बैठाकर घुमाने ले जाया करता था। मैंने बहुत याद करने की कोशिश की, लेकिन उस लड़की का नाम मुझे याद नहीं आया। मैं एक बार बम्बई जाकर उस मकान को जरूर ढूँढ़ूंगी, जिसमें मेरा बचपन बीता था। न जाने क्यों आज भी मुझे उस लड़की की, उस युवती और युवक की याद अक्सर आती रहती है। आपने देखा है बम्बई?"

"मैं तो बम्बई में ही रहता हूँ अन्ना!" मेजर बलवंत ने बड़े प्यार से कहा।

"तब तो आपने वह मकान जरूर देखा होगा?" अन्ना नन्ही बच्ची की तरह खुश होकर बोली।

"शायद देखा हो।" मेजर बलवंत ने कहा, "अगर तुम चाहोगी, तो मैं उस मकान को खोज दूंगा। तुम मुझे अपना पता दे दो।"

अन्ना ने मेजर बलवंत से डायरी और कलम मांगकर उस में अपना ओस्लो का पता लिख दिया।

"तुम्हारी मम्मी का क्या नाम है?" मेजर बलवंत की उत्सुकता बढ़ती चली जा रही थी।

"उनका नाम मिसेज सस्सी फ्रेंकलीन है।" अन्ना ने बताया, "वह ओस्लो विश्वविद्यालय में पूर्वी एशियन भाषा विभाग की अध्यक्ष हैं।"

"और तुम्हारे डैडी?"

"लगभग बीस वर्ष हुए उनकी मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के

बाद मेरी वजह से मम्मी ने दूसरी शादी नहीं की।"

"लेकिन अन्ना। योरोपियन स्त्रियां तो अर्धे उम्र हो जाने पर भी शादी कर लेती हैं, फिर मिसेज फ्रेंकलीन तो जवानी में विधवा हुई थीं। आश्चर्य है कि उन्होंने भरी जवानी में विधवा हो जाने के बाद भी शादी नहीं की। वह तुम्हें होस्टल में भेजकर बड़ी आसानी से दूसरा विवाह कर सकती थीं।" मेजर बलवंत ने कहा।

"मेरा खयाल है, पूर्वी एशिया की भाषाओं का अध्ययन करते-करते और काफी दिनों तक भारत में रहने के कारण उन पर भारतीय सभ्यता का गहरा प्रभाव पड़ा है। उनका रहन-सहन भी भारतीय नारियों जैसा ही है।" अन्ना ने बताया, फिर मेजर बलवंत के चेहरे की ओर देखते हुए बोली, "आपने तो मुझसे मेरे बारे में सब कुछ जान लिया, लेकिन अपने बारे में कुछ नहीं बताया। क्या मैं आपका परिचय जान सकती हूँ?"

"मुझे मेजर बलवंत कहते हैं। मैं बम्बई में ही रहता हूँ। जासूसी मेरा व्यवसाय है।" मेजर बलवंत ने कहा और अपना कार्ड जेब से निकालकर अन्ना की ओर बढ़ाते हुए बोला, "अगर कभी भारत आओ तो मुझसे जरूर मिलना अन्ना! न जाने क्यों तुम्हारी मम्मी के प्रति मेरे मन में एक विचित्र-सा कौतूहल जाग उठा है। न जाने क्यों ऐसा लगता है, जैसे तुम्हारी मम्मी के जीवन से एक नहीं अनेक रहस्य जुड़े हों! उन रहस्यों का आरम्भ होता है, उनके नाम से। 'सस्सी' योरोपियन नहीं विशुद्ध भारतीय नाम है। हमारे देश में सस्सी पुनू की प्रेम कहानी का वही स्थान है, जो यूरोप में रोमियो-जूलियट की गाथा का है।

अन्ना ने कोई उत्तर नहीं दिया मेजर बलवंत की इस बात ने उसे गहरे सोच में डाल दिया था।

"अन्ना! चलो, केबिन में चलें।" तभी अन्ना की समवयस्क एक युवती ने आकर अन्ना की विचारधारा छिन्न-भिन्न कर दी।

अन्ना ने चौंककर उस युवती की ओर देखा और फिर भारतीयों की तरह दोनों हाथ जोड़कर मेजर बलवंत को नमस्ते करती हुई केबिनों की कतारों की ओर बढ़ गई।

□□

जिस समय मेजर बलवंत अन्ना फ्रेंकलिन से डेक पर खड़ा उसके सम्बन्ध में पूछताछ कर रहा था, उन दोनों से केवल कुछ हाथ दूर ही एक इजीचेयर पर बैठा अधेड़ उम्र का एक लम्बा-तड़ंगा व्यक्ति बड़े ध्यान से उन दोनों की बातें सुन रहा था।

अधेड़ उम्र के उस आदमी के बदन पर ब्राउन रंग का सूट था। चेहरे पर छोटी-सी फ्रेंचकट दाढ़ी थी। उसने अपनी पीठ इजीचेयर की बैक से टिकाकर अपने सिर पर लगे फेल्ड हैट को आगे की ओर इस तरह झुका रखा था कि आसपास से गुजरने वाले व्यक्ति को उसकी दाढ़ी के अतिरिक्त उसके चेहरे का और कोई भाग दिखाई नहीं दे सकता था।

अन्ना फ्रेंकलिन के जाने के बाद जब मेजर बलवंत भी अपने साथियों के साथ रात हो जाने के कारण डेक पर से चला गया तब अधेड़ उम्र का वह लम्बा-तड़ंगा आदमी इजीचेयर पर से उठा। उसने स्टील के पाइपों की बनी इजीचेयर समेट कर अपने बाएं हाथ में उठा ली। और तेजी से केबिनों की कतारों की ओर चल दिया।

□□

‘मोनार्क’ जलपोत के विशाल विस्तृत तथा सुसज्जित डाइनिंग हॉल की लगभग सभी टेबलें भर चुकी थीं।

मेजर बलवंत और उसके साथी भी अपनी टेबल पर पहुंच चुके थे। इस बीच मेजर बलवंत अपने साथियों को नार्वेजियन छात्रा अन्ना और उसकी मम्मी मिसेज सरस्सी फ्रेंकलिन के बारे में विस्तार से वह सब कुछ बता चुका था, जो उसे अन्ना ने बताया था; लेकिन इस अधूरी जानकारी ने जहां मेजर बलवंत के मन में अन्ना और उसकी मम्मी मिसेज सरस्सी फ्रेंकलिन के बारे में उत्सुकता जगा दी थी वहां उसके साथी भी मां और बेटी

के सम्बन्ध में सब कुछ जानने के लिए उत्सुक हो उठे थे। उन सबकी उत्सुकता का एकमात्र कारण उन दोनों की नार्वेजियन नागरिकता थी उन लोगों का विचार था कि वे मां-बेटी नार्वेजियन नहीं भारतीय हैं, जिन्होंने किन्हीं विशिष्ट कारणों से नार्वेजियन नागरिकता ग्रहण कर ली है।

वे लोग अपनी टेबल पर बैठे नार्वेजियन छात्र-छात्राओं द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम देख रहे थे कि सहसा उनका ध्यान फिर अन्ना फ्रेंकलिन की ओर चला गया। उन लोगों ने पूरे डाइनिंग हॉल पर नजरें दौड़ाईं, लेकिन उन्हें अन्ना कहीं भी दिखाई नहीं दी।

मेजर बलवंत ने डेजी से कहा कि वह नार्वेजियन छात्र-छात्राओं की टेबलों और स्टेज की ओर चली जाए और पता करे कि अन्ना फ्रेंकलिन कहां है? कहीं अचानक उसकी तबीयत तो खराब नहीं हो गई।

डेजी अपनी सीट से उठकर गई और दस-पन्द्रह मिनट के बाद ही लौट आई। उसने बताया कि अन्ना अन्य लड़कियों के साथ डाइनिंग हॉल में आने की तैयारी कर रही होगी क्योंकि उसे स्टेज पर एक भारतीय नृत्य प्रस्तुत करना है, जिसने उसे नार्वे के स्कूल और कालेजों में ही नहीं आम जनता में भी पर्याप्त लोकप्रियता दिलाई है, लेकिन पता नहीं वह अभी तक अपने केबिन से क्यों नहीं निकली।

“अन्ना भारतीय नृत्य भी जानती है?” सोनिया ने सुखद आश्चर्य के साथ कहा और फिर डेजी की ओर देखते हुए उठ खड़ी हुई, “चलो डेजी! हम दोनों अन्ना के केबिन में चलें।”

“क्या तुमने अन्ना का केबिन देखा है!” मेजर बलवंत ने पूछा।

“मुझे अन्ना का केबिन नम्बर उस लड़की ने खुद ही बता दिया है जो अन्ना के साथ ही ठहरी हुई है। अन्ना का केबिन ग्राउण्ड फ्लोर पर ही है और उसका नम्बर है सोलह।” डेजी ने बताया।

“ठीक है। तुम दोनों चली जाओ।” मेजर बलवंत ने कहा ऐश-ट्रे पर से अधजला सिगार उठाकर सुलगाने लगा।

वह सिगार के हलके-हलके कश लेते हुए डाइनिंग हॉल में बैठे लोगों पर नजर डाल रहा था कि तभी सोनिया और डेजी लौट आईं। उनके चेहरे पर गहरी चिन्ता और घबराहट थी।

“क्या हुआ? तुम दोनों इतनी परेशान क्यों दिखाई दे रही हो?” मेजर बलवंत ने उन दोनों के चेहरों को देखते हुए पूछा।

“अन्ना के केबिन का दरवाजा खुला पड़ा है। उसके अटैची और एयर बैग की एक-एक चीज बिखरी पड़ी है, जिनपर अन्ना फ्रेंकलिन के नाम की चिट लगी हुई है।” सोनिया ने चिन्तित स्वर में कहा, “जबकि दूसरी लड़की का सामान ज्यों-का-त्यों रखा हुआ है।”

“लगता है, अन्ना के साथ कोई दुर्घटना हो गई है।” मेजर बलवंत ने कहा, और फिर एकदम उठ खड़ा हुआ। उसने अपने साथियों से कहा, “तुम लोग डेक पर चलो! मैं जहाज के कप्तान और सुरक्षा अधिकारी से मिलकर आता हूँ।”

“लेकिन मेरी राय है कि इन नार्वेजियन छात्र-छात्राओं के दल का जो भी लीडर हो, उससे पहले मिल लिया जाए।” सुधीर ने सुझाव दिया।

“हां, यह ठीक रहेगा।” मेजर बलवंत ने कहा और सोनिया तथा डेजी की ओर देखते हुए बोला, “तुम दोनों उस लड़की को जानती हो, जो अन्ना के साथ केबिन में ठहरी हुई थी, तुम उसे अच्छी तरह सारी बात समझा देना और फिर उसे उसके लीडर के पास ले जाना।”

“जी बहुत अच्छा!” सोनिया और डेजी ने कहा और तेजी से स्टेज की ओर चल पड़ी।

□□

“यह क्या कह रही हो तुम?” नार्वेजियन छात्र-छात्राओं के दल की लीडर मिसेज लूसी राबर्ट ने कहा जो ओस्लो के एक कालेज की प्रिंसिपल थीं।

“मैं सच कह रही हूँ मैडम। मैं अभी-अभी अपने केबिन में देखकर आई हूँ। अन्ना का सारा सामान फर्श पर बिखरा पड़ा है और अन्ना गायब है,” डेलिया ने कहा जो अन्ना के साथ एक ही केबिन में ठहरी हुई थी।

मिसेज लूसी राबर्ट के पैरों तले से यह सुनते ही जैसे जमीन खिसक गई। “अन्ना कहां गई।” उनके मुंह से वे शब्द एक चीख बनकर निकले और वह लड़खड़ाकर फिर अपनी कुर्सी में धंस गई। उनका सारा शरीर पसीने में डूब गया था। दिमाग में एक साथ अनगिनत तूफानों का शोर मचल उठा था।

और मिसेज लूसी राबर्ट की इस हालत ने पलक झपकते अन्ना फ्रेंकलिन के गुम होने की खबर जंगल की आग की तरह पूरे मोनार्क जलपोत में फैला दी।

“आप चिन्ता न कीजिए मैडम!” हम अन्ना को अभी खोजते हैं। जलपोत के कप्तान और सुरक्षा अधिकारी ने उन्हें तसल्ली दी और झपट कर डेक पर आ गए।

सुरक्षा अधिकारी के आदेश पर सुरक्षा कर्मचारी पूरे जलपोत में फैल गए। डेक पर और पूरे जलपोत पर लगी सर्वलाइटें जला दी गई थीं, जिनकी तेज दुधिया रोशनी में जलपोत के चारों ओर लगभग एक-डेढ़ फर्लांग तक सागर की लहरें रोशनी में नहा उठी थीं।

मेजर बलवंत ने अपने साथियों को जलपोत के चारों ओर रेलिंग के सहारे फैला दिया और खुद उस ओर चल दिया, जिस ओर जलपोत के कर्मचारियों के लिए केबिन बने हुए थे।

वह अभी उन केबिनों से कुछ दूर था कि उसने एक लम्बे तड़ंगे आदमी को अपनी पीठ पर कोई चीज लादे-लादे रेलिंग पर चढ़ते हुए देखा।

उसने जल्दी से अपनी जेब से रिवॉल्वर निकाल लिया और उस ओर भाग छूटा।

लेकिन लकड़ी के डेक पर होने वाली उसके बूटों की आवाज ने उस लम्बे-तड़ंगे आदमी का ध्यान अपनी ओर

आकर्षित कर लिया, जिसने अपने-आपको एक काले लबादे में छिपा रखा था। वह झपटकर रेलिंग के दूसरी ओर पहुंच गया और फिर मेजर बलवंत की नजरों से ओझल हो गया।

मेजर बलवंत ने अपनी पतलून के जेब में से दूसरा रिवॉल्वर निकाला और उसकी नाल आकाश की ओर उठाकर ट्रेंगर टका दिया। एक तेज आवाज के साथ गहरी सुर्ख रोशनी आकाश की ऊंचाइयों तक बिखरती चली गई।

मेजर बलवंत के साथी ही नहीं सुरक्षा कर्मचारी भी उस सुर्ख रोशनी को देखते ही उस ओर भाग छूटे जिधर से फायर की आवाज सुनाई दी थी।

मेजर बलवंत दौड़कर जहाज के उस स्थान पर पहुंच गया, जहां से रेलिंग पकड़ कर काले लबादे वाला वह लम्बा-तड़ंगा साया उसकी नजरों से ओझल हो गया था।

वह रेलिंग के पास पहुंचा, तो उसे रेलिंग में बंधा एक मोटा रस्सा दिखाई दिया।

उसने जल्दी से सामने की ओर नजरें उठाईं। दूसरे ही पल अपने रिवॉल्वर की नाल उस ओर झुकाकर एक साथ कई फायर झोंक दिए।

लेकिन उसके रिवॉल्वर से निकली गोलियां उस मोटर बोट तक नहीं पहुंच पाईं, जो बड़ी तेजी से जहाज से दूर होती चली जा रही थी।

मेजर बलवंत अपनी बेबसी पर झल्ला उठा, लेकिन वह कर भी क्या सकता था।

वह आंखों में विवशता भरा दुख लिए मोटरबोट की ओर देख रहा था कि तभी उसके साथी और सुरक्षा कर्मचारियों के साथ बहुत से लोग वहां पहुंच गए।

“मेरा विचार है कि अन्ना का अपहरण एक लम्बे-तड़ंगे आदमी ने किया है, जो इसी जलयान में यात्रा कर रहा था।” मेजर बलवंत ने कहा, “मैंने उसे अन्ना को कंधे पर लादे जहाज से समुद्र में उतरते देखा था।”

“लेकिन सवाल यह है कि उस लम्बे-तड़ंगे आदमी के पास मोटरबोट कहां से आ गई?” सुरक्षा अधिकारी ने आश्चर्य भरे स्वर में कहा।

मेजर बलवंत खुद इसी प्रश्न को लेकर परेशान था। इस प्रश्न का उत्तर खोजते-खोजते उसका दिमाग बुरी तरह थक चुका था।

कुछ देर वह चुपचाप सोच में डूबा खड़ा रहा, फिर उसने जहाज के कप्तान की ओर मुड़कर पूछा, “कप्तान साहब! आपके अनुमान से इस समय हम लोग बम्बई से कितनी दूरी पर होंगे?”

“लगभग सवा सौ मील।” जहाज के कप्तान ने उत्तर दिया, “अन्ना के गुम होने की खबर सुनते ही जिस समय मैंने लंगर डालने का आदेश दिया था, हमारा जहाज बम्बई हार्बर से लगभग सवा सौ मील दूर था।”

“और हमारा जहाज किनारे से कितनी दूर होगा?” मेजर बलवंत ने पूछा।

“हम लोगों को क्योंकि रात बम्बई में ही बितानी है, इसलिए जहाज की स्पीड भी बहुत धीमी है और जहाज समुद्री किनारे से लगभग चार मील की दूरी पर बम्बई हार्बर की ओर बढ़ रहा है।” जहाज के कप्तान ने बताया।

“चलिए पहले हम लोग उस लम्बे-तड़ंगे आदमी का पता लगायें कि वह कौन था? और किस केबिन में ठहरा हुआ था?” मेजर बलवंत ने पलटते हुए कहा।

“हमारे जहाज पर जितने भी यात्री हैं, उनमें केवल एक आदमी ही सबसे ज्यादा लम्बा-तड़ंगा था। मुझे अच्छी तरह याद है, वह दुबई से हमारे जहाज में सवार हुआ था। उसके बदन पर अरब के शेखों जैसी पोशाक थी, लेकिन आज शाम मैंने उसे ब्राउन कलर का सूट पहने हुए डेक पर घूमते देखा था। वह केबिन नम्बर 61 में ठहरा हुआ था।” सुरक्षा अधिकारी ने बताया।

“चलिए केबिन नम्बर 61 में चलें।” मेजर बलवंत ने कहा।

“आइए।” सुरक्षा अधिकारी ने कहा और भीड़ को हटाते हुए केबिन की कतारों की ओर चल दिया।

केबिन नंबर 61 खाली पड़ा था।

उसमें एक ओर एक अटैची और एक एयर बैग रखा हुआ था।

मेजर बलवंत ने उस अटैची को खोलकर देखा। अटैची में केवल एक जोड़ी ऐसे कपड़े थे, जैसे अरब के शेख पहना करते हैं। उन कपड़ों के अलावा उस अटैची में और कोई सामान नहीं था।

मेजर बलवंत ने एअर बैग खोलकर देखा, तो उसमें अरबी और अंग्रेजी में काहिरा, दुबई, बगदाद, अदन से प्रकाशित होने वाले पिछले सप्ताह के अखबार थे।

मेजर बलवंत ने उन अखबारों की तारीखें देखीं तो वह हैरान रह गया। सभी अखबार एक ही तारीख के थे।

वह सोचने लगा कि एक ही तारीख के अरबी और अंग्रेजी अखबारों को इकट्ठा करने का क्या कारण हो सकता है।

अचानक कुछ सोचकर अखबारों को खोल-खोलकर देखने लगा।

उसने देखा सभी अखबारों में से अलग-अलग पन्नों पर अलग-अलग कालमों में प्रकाशित किसी विज्ञापन या समाचार को काटकर अलग निकाल लिया गया था।

मेजर बलवंत सोचने लगा कि आखिर इन स्थानों पर ऐसा कौन-सा महत्वपूर्ण विज्ञापन या समाचार था, जिसे काटकर निकाल लिया गया है?

“कप्तान साहब! क्या मैं इन अखबारों को अपने साथ ले जा सकता हूँ? इससे शायद मुझे अन्ना का अपहरण करने वाले को खोजने में सहायता मिल जाए।” मेजर बलवंत ने फैले हुए अखबारों को इकट्ठा करते हुए पूछा।

“क्षमा कीजिएगा! आपकी तेज-तर्रारी और आपके अन्दाज

को देखकर मुझे ऐसा लगता है कि आप भारतीय पुलिस के कोई बहुत बड़े अफसर हैं?” मोनार्क जलयान के कप्तान ने पूछा।

“कप्तान साहब! मेरा नाम मेजर बलवंत है। मैं एक जासूस हूँ। मेरे साथ जो नौजवान लड़के-लड़कियाँ हैं मेरे असिस्टेंट हैं।” मेजर बलवंत ने कहा था।

“मेजर बलवंत!” मोनार्क जलयान का सिक्योरिटी आफिसर जल्दी से बोल उठा और फिर मेजर बलवंत के दोनों हाथों को थामकर बड़ी गर्मजोशी से बोला, “क्षमा कीजिए मेजर साहब! मैं आपको और आपके साथियों को नहीं पहचान पाया। पिछले दिनों मांटवीडियों में जब आपने ‘स्वर्ण दुर्ग’ नामक जलपोत का घेरा डाला था, हमारा यह मोनार्क मांटवीडियो बंदरगाह में लंगर डाले खड़ा था। मांटवीडियों के पुलिस कमिश्नर ने बंदरगाह में खड़े सभी जहाजों को आदेश दिया था कि वे स्वर्ण दुर्ग के चारों ओर इस तरह घेरा डालकर खड़े हो जाएं कि उनके बीच से स्वर्ण दुर्ग जैसा विशाल जलयान तो दूर मोटरबोट या नाव तक न निकल पाए। हमारे कप्तान साहब भी उस समय वहाँ मौजूद थे, लेकिन इन्हें आपको और आपके असिस्टेंटों को देखने का मौका ही नहीं मिला था। हाँ, मैंने आपके और आपके साथियों के स्वर्ण दुर्ग पर आपका कब्जा हो जाने के बाद दर्शन किए थे।”

मोनार्क जलपोत के सिक्योरिटी आफिसर से मेजर बलवंत और उसके साथियों का परिचय पाकर मोनार्क का कप्तान और अन्य सभी कर्मचारी और विभिन्न देशों के यात्रियों के चेहरे खुशी से चमक उठे।

“मेजर साहब! परिचय न होने के कारण अगर कोई अभद्रता हो गई हो, तो कृपया क्षमा कर दीजिएगा।” मोनार्क जलयान के कप्तान फ्रांसिस डिकोस्टा ने मेजर बलवंत के दाएं हाथ को अपने दोनों हाथों से थामकर बड़ी गर्मजोशी से हिलाते हुए कहा, “और साथ ही मैं आपसे प्रार्थना करूंगा कि आप अन्ना

को खोजिए। इस काम के लिए आपको मुंहमांगा पारिश्रमिक मिलेगा। हमारी कम्पनी कोई मामूली कम्पनी नहीं है। वह इस लांछन को हरगिज बर्दाश्त न कर पाएगी। जलयान से किसी यात्री का और वह भी एक कॉलेज की जवान छात्रा का अपहरण सामान्य बात नहीं। अगर अन्ना मिल गई तो कम्पनी के साफ-सुथरे माथे पर लग जाने वाला यह कलंक का टीका मिट जाएगा।”

“मेजर साहब! मैं भी अक्सर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले आपके शौर्य और साहस-भरे कारनामे पढ़ती रहती हूँ। मैं नहीं कह सकती कि इस घटना का इस जहाजरानी कम्पनी पर कितना प्रभाव पड़ेगा; लेकिन मैं अपने बारे में निश्चित रूप से जानती हूँ। मैं अन्ना के बिना अपने देश नहीं लौट सकती। मैं अपने दूसरे साथियों को अपनी जिम्मेदारियाँ सौंपकर बम्बई पोर्ट पर उतर जाऊंगी और जब तक आप अन्ना को खोजकर उसके अपहरणकर्ता को पुलिस और कानून के हवाले नहीं कर देंगे मैं बम्बई नहीं छोड़ूंगी। भले ही मुझे अपने घर-बार से दूर एक अनजाने देश के एक अनजाने नगर में कितने ही महीनों क्यों न रहना पड़े। और अगर अन्ना नहीं मिली तो, मैं अपने प्राण दे दूंगी, लेकिन लौटकर अपने देश नहीं जाऊंगी।” नार्वेजियन छात्र-छात्राओं के दल की लीडर मिसेज लूसी राबर्ट ने दृढ़ता भरे स्वर में अपना निर्णय सुना दिया।

“आप लोग बिल्कुल चिन्ता न करें। अपहरण करने वाला वह लम्बा-तड़ंगा आदमी अन्ना को लेकर भारतीय समुद्री किनारे की ओर गया है। उसे खोज निकालने में मुझे अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ेगा।” मेजर बलवंत ने दृढ़ता और विश्वास भरे स्वर में कहा और फिर जलयान के सिक्योरिटी आफिसर की ओर मुड़कर बोला, “क्या आपको अच्छी तरह याद है कि वह लम्बा-तड़ंगा आदमी अरब के शेख के रूप में दुबई से अकेला ही आपके जहाज में सवार हुआ था? और क्या आपने या

किसी दूसरे आदमी ने उसे जहाज के किसी दूसरे यात्री से बातचीत करते देखा था?”

“मुझे अच्छी तरह याद है दुबई से केवल बीस यात्री हमारे जहाज में सवार हुए थे, जिनमें से उन्नीस आदमी कांडला बंदरगाह पर उतर गए थे। केवल एक वही व्यक्ति रह गया था। वह आवश्यकता से अधिक गम्भीर और एकान्त प्रिय था। हमारे जलयान पर आज उसका चौथा दिन था, लेकिन उसने डाइनिंग हॉल में जाकर कभी खाना नहीं खाया था। वह अपना खाना अपने केबिन में ही मंगा लिया करता था।” सिक्योरिटी आफिसर ने बताया।

“साहब! उन शेख साहब की एक आदत बहुत ही अजीब थी।” एक बैरे ने सहसा आगे बढ़कर कहा।

“वह क्या?” मेजर बलवंत ने उत्सुकता से पूछा।

“मैं ही उनके लिए चाय, खाना या शराब लेकर उनके केबिन में जाया करता था और मैं जब भी उनके केबिन में गया मुझे ऐसा लगा जैसे वह किसी से बातें कर रहे हों। लेकिन केबिन में उनके अलावा और कोई नहीं होता था। मैं अगर कुछ कहने लगता था, तो वह हाथ के इशारे से मुझे रोक देते थे। फिर इस तरह बातें करने लगते थे जैसे वह किसी ऐसे व्यक्ति से बातें कर रहे हैं, जो उनके सामने बैठा हुआ है।”

“अक्सर वह किस तरह की बातें किया करता था।” मेजर बलवंत ने पूछा।

“आज शाम को उन्होंने बार से स्कॉच की एक बोतल मंगवाई थी। जब मैं बोतल लेकर उनके केबिन में पहुंचा था, तो वह कह रहे थे, ‘किम! सालों पहले खजाने की जिस कुंजी को मैं एक दिन अपनी बेवकूफी से तुम्हारी बातों में आकर खो बैठा था वह मुझे आज मिल गई है। जिन्दगी के इस लम्बे सफर ने मुझे बुरी तरह थका डाला है। अब मैं अपनी जिन्दगी के काफी दिन शान्ति और इतमीनान से बिताना चाहता हूँ। औरत ही नहीं मर्द को भी एक छत की जरूरत होती है, जिसकी ठंडी छांव

तले वह अपनी जिन्दगी की आखिरी सांसों से इतमीनान से ले सके और फिर गहरे सुकून के साथ अपनी आंखें मूंद ले हमेशा-हमेशा के लिए। मेरे खजाने की खोई हुई कुंजी मुझे मिल गई है। मैं इस खजाने को तुम्हें सौंपकर अब कभी न टूटने वाली नींद सो जाना चाहता हूँ। इस खजाने को पाकर तुम्हारी भी वे तमाम आरजूयें पूरी हो जाएंगी, जिन्हें पूरा करने की कोशिश में तुम अपना पसीना नहीं लहू बहाती रही हो। मैंने जैसा कहा वैसा ही करना। ठीक समय पर पहुंच जाना। मैं अपने खजाने की कुंजी लिए तुम्हारा इन्तजार करूंगा। अगर तुम ठीक समय पर न पहुंची, तो याद रखो तुम जिन्दगी भर पछताती रहोगी। और उस दौलत से हाथ धो बैठोगी, जो किसी भी समय उन हाथों में पहुंच जाएगी जो मेरे घावों पर मरहम लगाने का बहाना करके उनपर पड़ने वाले खुरंटों को अपने नुकीले नाखूनों से खुरच-खुरचकर उन्हें हरा बनाते रहे थे।" बैरे ने उस लम्बे तड़ंगे आदमी के बोलने के अंदाज की नकल करते हुए कहा, "साहब! मुझे सारी बातें याद नहीं रहीं। इनके अलावा भी वह न जाने क्या-क्या कहते रहे थे। मुझे बस इतना ही याद रह गया है। हां, आखिर में उन्होंने यह भी कहा था, "मैं आज रात का खाना तुम्हारे आशियाने में उसी चटाई पर बैठकर खाना चाहता हूँ, जिसे मैंने एक दिन शाही दस्तरख्वान का नाम दिया था।"

बैरे की बातें सुनकर मेजर बलवंत सोच में पड़ गया।

वह उन शब्दों के अर्थों की गहराई में उतरता चला जा रहा था और 'मोनार्क' जलयान बम्बई के हार्बर एरिया में प्रवेश करता चला जा रहा था।

□□

मेजर बलवंत अपने साथियों के साथ 'मोनार्क' जलयान के कप्तान तथा नार्वेजियन छात्र-छात्राओं के दल की लीडर मिसेज लूसी राबर्ट को एक बार फिर अन्ना को खोज निकालने का आश्वासन देकर अपने बंगले पर पहुंचा तो रात के दस बज चुके थे।

खाना खाने के बाद मेजर बलवंत अपने साथियों के साथ ड्राइंगरूम में आ बैठा। उसने एक नया सिगार निकालकर सुलगाया और हलके-हलके कश लेते हुए बोला, "मोनार्क जलयान के उस बैरे ने उस लम्बे-तड़ंगे आदमी के बारे में जो कुछ बताया था उस समय तो मैं उसका अर्थ समझ नहीं पाया था; लेकिन अब हर बात आईने की तरह साफ हो गई है। मैं उन शब्दों की वास्तविकता को ही नहीं, उस लम्बे-तड़ंगे आदमी की वास्तविकता को भी जान गया हूँ।"

मेजर बलवंत की बात सुनकर उसके साथी आश्चर्य भरी उत्सुकता लिए उसके चेहरे की ओर देखने लगे।

मेजर बलवंत ने सिगार का एक लम्बा कश लिया और फिर बोला, "बैरे ने बताया था कि वह लम्बा-तड़ंगा आदमी अकेला बैठा अपने-आपसे बातें करता रहता था। वह इस तरह बातें किया करता था जैसे कोई उसके सामने बैठा हो और वह उससे बातें कर रहा हो। वह लम्बा-तड़ंगा आदमी अपने-आपसे बातें नहीं किया करता था। वास्तव में वह किसी ऐसे व्यक्ति से बातें किया करता था, जो उससे कोसों दूर बैठा होता था। उसके पास निश्चित रूप से कोई ऐसा छोटा-सा ट्रांसमीटर सैट था, जिस तक आम आदमी की नजरें नहीं की जा सकतीं। हो सकता है, वह नन्हा-सा ट्रांसमीटर उसकी किसी उंगली में पहनी हुई अंगूठी या उसकी शर्ट में लगे किसी बटन में फिट हो। वह ट्रांसमीटर इतना संवेदनशील था कि उसकी धीमी से धीमी आवाज को और किसी भी ओर मुंह करके मुंह से निकली हुई आवाज को कैच करने की क्षमता रखता था। इसीलिए वह अपने केबिन में बिस्तर पर लेटा-लेटा या इजीचेयर में अधलेटा बैठा बातें करता रहता था। देखने वाले को ऐसा लगता था, जैसे वह अकेला बैठा अपने-आपसे बातें कर रहा हो।"

"ऐसी स्थिति में देखने वाला इसके अलावा और समझ भी क्या सकता है?" राजीव ने कहा।

“मेरा खयाल है, कल जिस समय नार्वे के स्कूल और कालेजों के छात्र-छात्राएं डेक पर खड़े सूर्यास्त का दृश्य देख रहे थे उसने अन्ना को देखा था। अन्ना को तो चार दिनों की यात्रा में उसने पहले भी कई बार देखा होगा; लेकिन उसे पहचान नहीं पाया होगा। मेरा खयाल है कल लम्बा-तड़ंगा व्यक्ति उस समय मेरे और अन्ना के आसपास ही कहीं था जब अन्ना मुझे अपने बारे में बता रही थी। और अन्ना ने मुझे अपने बारे में, जो कुछ बताया था, उसे सुनकर ही वह अन्ना को पहचान गया था।” मेजर बलवंत ने कहा, “और अन्ना को पहचानते ही उसने उसके अपहरण का प्लान बना लिया। उसने ट्रांसमीटर पर अपने साथियों को मोनार्क जलयान की स्थिति बताते हुए उन्हें आदेश दिया कि वे एक मोटरबोट लेकर ‘मोनार्क’ जलयान के पास पहुंच जाएं। क्योंकि शाम के बाद आमतौर पर सभी लोग डाइनिंग हॉल या रिक्रिएशन हॉल पर पहुंच जाते हैं। वही सबसे अधिक उपयुक्त समय था जब कोई मोटरबोट जहाज तक पहुंच सकती थी। बैरे द्वारा बताए उस लम्बे-तड़ंगे आदमी के मुंह से निकले शब्दों पर विचार करें तो सारी बात स्पष्ट हो जाती है।”

मेजर बलवंत इतना कहकर खामोश हो गया। उसने अपनी जेब में से डायरी निकाली। उसके एक पन्ने पर मोनार्क जलयान के बैरे द्वारा दोहराए गये वे वाक्य लिखे थे, जो उसने उस लम्बे आदमी के मुंह से निकलते सुने थे।

मेजर बलवंत ने डायरी खोलकर सामने रखते हुए कहा, “उस लम्बे-तड़ंगे आदमी ने कहा था, ‘सालों पहले जिस खजाने की कुंजी मैं एक दिन अपनी बेवकूफी से तुम्हारी बातों में आकर खो बैठा था, वह मुझे आज मिल गई है।’ मेरी समझ में खजाने की कुंजी से उस लम्बे-तड़ंगे आदमी का अभिप्राय अन्ना से है, जिसे वह वर्षों पहले किन्हीं हालात में खो बैठा था। उसने अन्ना के मिल जाने के बारे में किसी को बताने के बाद उसे अपनी योजना बताते हुए हिदायत की थी कि वह

इतने बजे मोटरबोट लेकर मोनार्क जहाज के पास पहुंच जाए। अगर वह ठीक समय पर न पहुंचा, तो वह व्यक्ति किसी बहुत बड़ी सम्पत्ति से हाथ धो बैठेगा।”

“इसका मतलब है कि अन्ना उसके लिए किसी बहुत बड़े खजाने से कम नहीं थी।” सुधीर ने कहा।

“अन्ना ने आपको अपनी थोड़ी-सी गाथा सुनाई थी। वह उसके अपहरणकर्ता की बात से मेल खा जाती है।” राजीव ने कहा, “अन्ना ने कहा था कि उसकी मां सस्सी फ्रेंकलिन उसे भारत से लेकर जिस समय लौटी थीं वह ढाई-तीन वर्ष की ही रही हो वह किसी तरह उस लम्बे-तड़ंगे व्यक्ति से बिछुड़ गई हो और सस्सी फ्रेंकलिन को मिल गई हो और वह उसे लेकर नार्वे चली गई हों।”

“तुम्हारा अनुमान बिल्कुल ठीक है राजीव। क्योंकि अन्ना के नाक-नक्श और आंखें इस बात का स्पष्ट प्रमाण हैं कि वह नार्वेजियन नहीं, भारतीय लड़की है।” मेजर बलवंत ने राजीव के विचार की पुष्टि की।

“मेरा खयाल है कि अन्ना किसी बहुत ही धनी-सम्पन्न व्यक्ति की बेटी है। उसकी अपार सम्पत्ति की एकमात्र वारिस भी।” संजीव ने कहा, “वह लम्बा-तड़ंगा आदमी अन्ना को उसके मां-बाप के हवाले करके या तो कोई मोटी रकम हथियाना चाहता है। या फिर अन्ना के भावमय से किसी बहुत बड़ी सम्पत्ति पर कब्जा करना चाहता है जिसे उसके मां-बाप उसके नाम वसीयत कर गए हों।”

“उस लम्बे-तड़ंगे आदमी को अन्ना का अपहरण करने पर निस्सन्देह कोई-न-कोई बहुत बड़ी चल-अचल सम्पत्ति मिल सकती है। इसमें तो दो राय हो ही नहीं सकती।” मेजर बलवंत ने कहा और फिर खामोश हो गया।

“अन्ना के माता-पिता कौन थे। कहां के रहने वाले थे? यह संदिग्ध है। अगर वे भारतीय थे तो इस बात का उत्तर मिसेज सस्सी फ्रेंकलिन ही दे सकती हैं।” सोनिया बोली,

“और शायद न भी दे सकें। अगर अन्ना उन्हें अचानक मिल गई थी तो अगर उन्हें उसके माता-पिता का पता होता तो वह उसके मां-बाप के पास जरूर पहुंचा देतीं, लेकिन शायद अन्ना के माता-पिता का पता न मिलने पर ही वह अन्ना को अपने साथ ले गई थीं।”

“लेकिन मेरी राय इस सम्बन्ध में कुछ और ही है।” अचानक डोरा ने कहा, “कोई भी विदेशी किसी दूसरे देश के बच्चे को आसानी से अपने साथ नहीं ले जा सकता। वह किसी बच्चे को किसी दूसरे देश से तभी ले जा सकता है जब वही उस बच्चे का जन्मदाता हो या फिर उस देश की सरकार से अनुमति लेकर उसने उस बच्चे को गोद लिया हो। हो सकता है मिसेज सस्सी फ्रेंकलिन ने भारत में अध्ययन के दौरान किसी भारतीय से विवाह कर लिया हो और फिर किसी कारण उसे छोड़कर अपनी दो-ढाई साल की बच्ची को लेकर स्वदेश वापस चली गई हो और जिस व्यक्ति के साथ उन्होंने विवाह किया था वह अपनी बेटी अन्ना के नाम कोई बहुत बड़ी सम्पत्ति छोड़कर मर चुका हो। या जीवित हो और उसने अपनी समस्त सम्पत्ति अपनी बेटी अन्ना के नाम वसीयत कर रखी हो।”

“इन तमाम बातों से मुझे ऐसा लगता है, मिसेज सस्सी फ्रेंकलिन के साथ कोई बहुत ही गहरा रहस्य जुड़ा हुआ है। उस रहस्य की कुंजी अन्ना है। वह लम्बा-तड़ंगा व्यक्ति उस रहस्य से भली-भांति परिचित था। उस रहस्य को सुलझाने के लिए ही उसने अन्ना का अपहरण किया है।” कल्याणी ने अपना विचार प्रगट किया।

“लेकिन अन्ना का अपहरण जिस ढंग से किया गया है उसने अन्ना के अपहरणकर्ता के बारे में स्पष्ट रूप से घोषित कर दिया है कि उस व्यक्ति का तस्करों या अपराधियों के किसी अन्तराष्ट्रीय गिरोह के साथ बहुत ही गहरा सम्बन्ध है। उस गिरोह का एक शक्तिशाली और प्रमुख सदस्य दिखाई देता है। जिसके हर आदेश का पालन करना गिरोह के सदस्य अपना

कर्तव्य समझते हैं। किसी विदेशी मालवाही जहाज के पास रात के अंधेरे में अकारण मोटरबोट लेकर आना खतरे से खाली नहीं था, लेकिन उसका आदेश पाते ही गिरोह के सदस्य मोटर बोट लेकर उसके दिए हुए समय पर मोनार्क जलयान के पास पहुंच गए।” डेजी बोली, “मेरा खयाल है, वह लम्बा-तड़ंगा आदमी किसी शक्तिशाली और हर प्रकार के साधनों से सम्पन्न उस अन्तराष्ट्रीय गिरोह का लीडर है। और उस गिरोह का कोई अड्डा उस स्थान के निकट ही है, जहां वह लम्बा-तड़ंगा आदमी अन्ना को लेकर फरार हुआ था।”

“तुम्हारा अनुमान बिल्कुल ठीक है डेजी।” मेजर बलवंत ने प्रशंसा भरे स्वर में कहा, “मेरा भी यही अनुमान था।” मेजर बलवंत ने कहा और फिर एक पल रुककर बोला, “अन्ना के अपहरण की यह घटना अन्तराष्ट्रीय महत्व की घटना है। अगर हम लोगों को अन्ना को खोज निकालने में सफलता मिल गई तो संसार में हमारे देश का यश और कीर्ति और भी बढ़ेगी।”

“लेकिन मेजर साहब! मेरा खयाल है कि केवल अन्ना को खोज लेने से ही यह केस समाप्त नहीं हो जाता।” सोनिया बोली, “अन्ना के अपहरण के पीछे कोई बहुत बड़ा रहस्य है जिसका सूत्रपात शायद उस दिन हुआ था, जिस दिन या तो अन्ना अपने मां-बाप से बिछुड़कर किसी तरह मिसेज सस्सी फ्रेंकलिन के पास पहुंची थी या फिर अपने भारतीय पति को छोड़कर या उसकी मृत्यु हो जाने के बाद मिसेज सस्सी फ्रेंकलिन अपनी बेटी अन्ना को लेकर नावें लौटी थीं।”

“इस रहस्य को सुलझाने से पहले हमें अन्ना को खोजना होगा। अन्ना का अपहरण हमारे देश की समुद्री सीमा में हुआ है इसीलिए हमारा केवल नैतिक ही नहीं, वैधानिक उत्तरदायित्व भी हो जाता है कि हम अन्ना को खोज करें। हालांकि मोनार्क जलयान के कप्तान फ्रांसिस डिकोस्टा को मैंने मशवरा दिया कि वह बम्बई हार्बर पर पहुंचकर अन्ना के अपहरण की रिपोर्ट पुलिस में कर दें। वैसे मिसेज लूसी राबर्ट भी बम्बई में ही उतर

गई हैं। वह भी अन्ना के अपहरण की सूचना पुलिस को देंगी; लेकिन हम उनका इन्तजार नहीं कर सकते। हम इस बात का भी इन्तजार नहीं कर सकते कि बम्बई के पुलिस कमिश्नर या महाराष्ट्र सरकार हमसे अन्ना की खोज करने के लिए अनुरोध करे।”

“अन्ना की खोज का आरम्भ आप कहां से करेंगे?” सुधीर ने पूछा।

“जिस स्थान पर वह लम्बा-तड़ंगा आदमी अन्ना को लेकर मोटरबोट से फरार हुआ था, वह स्थान बम्बई से सवा सौ और डेढ़ सौ किलोमीटर के बीच होगा। वहां से समुद्र का किनारा लगभग चार मील दूर था। इसलिए हमें बम्बई हार्बर से उत्तर की ओर के डेढ़ सौ मील तक के समुद्री किनारे को छानना होगा। मेरा खयाल है कि उस लम्बे तड़ंगे व्यक्ति के वे साथी समुद्र के किनारे के आसपास ही कहीं रहते हैं जो उसका आदेश पाकर मोटरबोट लेकर उसके पास पहुंच गए थे। अपराधी छोटा हो या बड़ा हर एक यही चाहता है कि अपराध करने के बाद वह जितनी जल्दी हो सके किसी सुरक्षित स्थान पर पहुंच जाए। इसलिए वह सुरक्षित स्थान समुद्र तट के निकट ही होना चाहिए।” मेजर बलवंत ने कहा।

“बम्बई से लगभग सौ मील उत्तर में पहुंचने पर हरी-भरी पहाड़ियों के सिलसिले शुरू हो जाते हैं। उन पहाड़ियों की घाटियां तथा पीछे की जमीन बहुत ही उपजाऊ है। इसलिए हर दो मील के बाद एक गांव आबाद है। पिछले पांच वर्षों में कई गांव कस्बों में और कस्बे शहर में बदल चुके हैं। अपराधी उन शहरों में जाकर छिप सकते हैं।” संजीव ने कहा, “उस ओर की पहाड़ियां और हरी-भरी घाटियां भी अपराधियों के लिए बहुत ही सुरक्षित शरण स्थल बन सकती हैं।”

“संजीव! अपराधियों को उन पहाड़ियों और घाटियों में छिपने में तो आसानी हो जाती है जो वीरान और निर्जन होती हैं; लेकिन जिन पहाड़ियों के आसपास की धरती उपजाऊ होती है

और जहां हर दस कदम के बाद ही छोटे-छोटे गांव आबाद हों, वहां अपराधी सुरक्षित नहीं रह सकता। इसी तरह छोटे-छोटे कस्बों और शहरों में किसी भी व्यक्ति का अधिक दिनों तक छिपे रहना भी असम्भव है। इसलिए उन लोगों ने किसी ऐसे स्थान में अपना अड्डा बनाया होगा जहां आमतौर पर लोग जाते ही नहीं होंगे। रास्तों और आबादी से दूर किसी निर्जन स्थान में ही हमें अपराधियों के अड्डे को खोजना होगा।” मेजर बलवंत ने कहा।

“अगर आपकी सलाह हो तो हम लोग एक मोटर बोट लेकर किनारे का चक्कर लगा आएंगे।” राजीव ने कहा।

“यह काम तो मैं अकेला ही कर लूंगा, क्योंकि समुद्र के किनारे के इतने निकट तो उन लोगों ने अड्डा बनाया नहीं होगा, जो समुद्र में से नजर आए।” मेजर बलवंत ने कहा, “तुम लोग कल सुबह ही शिकारियों के वेश में यहां से चल पड़ो और वापी पहुंचकर समुद्र के किनारे के आसपास की पहाड़ियों और जंगलों को छानना शुरू कर दो। अपनी कारें तुम लोग वापी स्टेशन पर या पी. डब्ल्यू. डी. के रेस्टहाउस में छोड़ देना। वापी यहां से लगभग एक सौ सत्तर किलोमीटर दूर है। तुम लोगों को वहां से छानबीन करते हुए बम्बई की ओर लौटना होगा।”

“ठीक है।” मेजर बलवंत के सभी साथियों ने उसके सुझाव का समर्थन किया।

“रात काफी बीत चुकी है। अब आराम करो।” मेजर बलवंत ने कहा और उठकर अपने बेडरूम में चला गया।

उसके साथी भी उठकर अपने बेडरूम में चले गए।

रहस्यमयी नारी

सेठ छबीलदास ने व्हिस्की का एक लम्बा घूंट-भरा और अपने पलंग के पायताने बेहोश पड़ी उस लड़की के अर्धनग्न

बदन की ओर ललचाई हुई नजरों से देखने लगे।

लड़की की उम्र उन्नीस-बीस वर्ष से अधिक नहीं थी। गठा हुआ सांवला बदन, तीखे नाक-नक्श और बड़ी-बड़ी कजरारी आंखें—लगता था विधाता ने उसे फुर्सत की घड़ियों में गढ़ा था। सेठ छबीलदास उसे जितना अधिक देखते जा रहे थे उनके सीने में धधकती वासना की आग उतनी ही बढ़ती चली जा रही थी।

यों तो उनकी जिंदगी में अठारह साल की उम्र से लेकर आज अड़तालीस साल की उम्र तक के इन लम्बे तीस वर्षों में कितनी औरतें आईं और चली गई थीं। उन्होंने जब भी जिस औरत को चाहा था कुछ घंटों के बाद ही उसे इतनी आसानी से पा लिया था, जैसे उनके खरीदे हुए गुलाम जैकी और बिल्ला ने बाजार से खरीदकर उनके पलंग पर ला डाली हो। आसानी से मिल जाने वाली औरतों के लिए उनके दिल में कभी कोई कोमल भावना पैदा ही नहीं हो पाई थी, लेकिन न जाने क्यों सोमा के प्रति उनके दिल में एक अजीब-सी भावना पैदा हो गई थी और वह पल-पल बढ़ती चली जा रही थी।

इस भावना में सोमा के प्रति जहां लगाव था वहां दया और सहानुभूति भी थी।

पहले उन्होंने सोचा था कि शायद सोमा की गिड़गिड़ाहट और उसके आंसुओं ने उनके दिल में उसके प्रति नमी और सहानुभूति पैदा कर दी है। इस नमी और सहानुभूति की भावना को कुचलने के लिए ही उन्होंने व्हिस्की की आधी बोतल अपने हलक में उंडेलने के बाद सोमा को पलंग पर डालकर बाकी बोतल जबरदस्ती उसके हलक में उडेल दी थी, जिसमें से कुछ व्हिस्की तो सोमा के पेट में पहुंच गई थी; लेकिन उसका अधिकांश भाग उसके कपड़ों पर गिर गया था, लेकिन उस थोड़ी-सी व्हिस्की के पेट में पहुंचते ही सोमा अपनी सारी सुध-बुध खो बैठी थी और अब बेहोश पलंग पर पड़ी थी।

अपनी इस सफलता पर सेठ छबीलदास को बड़ी खुशी हुई

थी। पहली बार किसी लड़की को काबू में करने के लिए उन्हें इतनी मेहनत करनी पड़ी थी और अपनी सफलता की खुशी में फूलकर उन्होंने एक पैग के बाद दूसरा पैग हलक में उंडेलना शुरू कर दिया था।

लेकिन अजीब बात थी। शराब का नशा ज्यों-ज्यों बढ़ता चला जा रहा था सोमा के लिए उनके मन में उतना ही अनुराग, ममता, दया तथा सहानुभूति पैदा होती चली जा रही थी। पहले तो ऐसा कभी नहीं हुआ है। न जाने कितनी अधखिली कलियों को उनकी रोने-चीखने और गिड़गिड़ाने की परवाह न करके उन्होंने उन्हें बेरहमी से कुचल डाला था, जिस बेरहमी से एक भेड़िया किसी मेमने को निगल जाता है।

फिर आज ऐसा क्यों हो रहा है? क्या उनपर वाकई बुढ़ापा आ गया है? लेकिन अड़तालीस साल की उम्र भी भला कोई उम्र है। आजकल के फैशन के अनुसार तो लोग इस उम्र में विवाह कर रहे हैं। बुढ़ापे का सवाल ही कहां पैदा होता है।

उन्होंने व्हिस्की का अन्तिम घूंट भरा और सोमा को अपनी बांहों में समेट लिया और उसके चेहरे को बड़ी ललचाई हुई नजरों से देखने लगे।

जबरदस्ती शराब पिलाने की कोशिश में सोमा का ब्लाउज जगह-जगह से फट गया था, जिससे उसकी गुलाबी-गुलाबी छातियों की गोलाइयां अनावृत हो गई थीं।

सेठ छबीलदास ने अपने दिमाग में रेंगती भावनाओं को झटककर दूर फेंक दिया। सोमा के चेतना हीन बदन पर झुकते चले गए।

लेकिन दूसरे ही पल उनकी मर्मन्तिक चीख से बेडरूम की छत और दीवारें कांप उठीं। उन्हें ऐसा लगा था, जैसे गर्म लोहे की कोई तपती हुई कील उनकी गर्दन से लेकर रीढ़ की हड्डी के निचले छोर तक पीठ को चीरती चली गई हो।

उनका समूचा बदन असहनीय पीड़ा से तड़प उठा था। उन्होंने सोमा को छोड़ दिया और जल्दी से पीछे हट गए।

फिर जैसे ही उन्होंने मुड़कर पीछे की ओर देखा उनके हलक से घुटी-घुटी सी चीखें निकलने लगी थीं। भय और आतंक से उनका समूचा बदन थर-थर कांपने लगा। हलक खुश्क हो गया और उसमें कांटे उभर आए। बड़ी कठिनाई से उन्होंने अपने सूखे होंठों पर जीभ फेरते हुए कहा, “तुम— इतने... इतने... सालों... के... बाद... तुम... तो... मर... चुकी... थीं... !”

“मैं कब कहती हूँ कि मैं जिंदा हूँ।” पीछे खड़ी स्त्री ने एक हलका-सा कहकहा लगाया, “मैं तो छबीलदास उसी दिन मर गई थी, जिस दिन तुमने धोखे से मेरा सब कुछ लूट लिया था। बेसहारा हो जाने पर अपने देश से हजारों मील दूर उस अनजाने देश में मैंने तुम्हारा केवल इसलिए सहारा लिया था कि तुम मेरे पति के गहरे और घनिष्ठ मित्र थे। मेरे पति तुम्हें मित्र नहीं अपने सगे छोटे भाई की तरह मानते थे। क्या नहीं किया था उन्होंने तुम्हारे लिए। इसीलिए मुझे तुम पर अटूट विश्वास था; लेकिन तुम तो वासना के भूखे भेड़िए थे। तुमने अपने बेरहम हाथों से उस विश्वास का गला घोट दिया। देवर-भाभी के पवित्र और महान रिश्ते की पीठ में छुरा भोंक दिया था और धोखे से मेरा सब कुछ लूटकर ऐसे प्रमाण जुटा लिए थे, ताकि तुम मुझे जीवन-भर ब्लैकमेल करते रहो। लेकिन रत्ना उतनी बेवकूफ नहीं थी जितनी तुम और तुम्हारे साथी समझते थे। धोखे से रत्ना की आबरू लुट जाने के बाद भी तुम वह नहीं पा सके, जिसे पाने के लिए तुम सबने मिलकर रत्ना की आबरू लूटी थी। और जब तुम्हारा उद्देश्य पूरा नहीं हुआ, तो तुम चारों दोस्तों ने मिलकर रत्ना को मार डाला। अब रत्ना की प्रेतात्मा तुम्हारे सामने खड़ी है। वह तुम चारों दोस्तों को इस तरह तड़पा-तड़पाकर मारेगी कि मौत का कलेजा भी दहल उठेगा।”

सफेद लबादे में लिपटी स्त्री ने एक जोरदार और भयानक कहकहा लगाया और फिर पलंग पर बेहोश और वस्त्रहीन सोमा की ओर उंगली उठाकर बोली, “तुम अपनी इन्हीं हरकतों के कारण अपने इकलौते बेटे और बहू को खो चुके हो; लेकिन

फिर भी तुम्हें होश नहीं आया। तुमने अपनी हरकतें अभी तक नहीं छोड़ी। तुमने न जाने कितनी असहाय और मजबूर नारियों की आबरू लूटी है। लेकिन तुम अब ऐसा न कर सकोगे। तुम जैसे पापी इस धरती का बोझ हैं। इस बोझ से धरती माता को जितनी जल्द मुक्त कर दिया जाए उतना ही अच्छा है।”

सेठ छबीलदास थरथर कांपते हुए सरक-सरककर सिरहाने की ओर पहुंच गए थे।

अचानक उन्होंने बड़ी फुर्ती से तकिए के नीचे से रिवॉल्वर निकाला और उस स्त्री के सीने को निशाना बनाकर एक साथ कई फायर झोंक दिए।

“बेकार है छबीलदास! प्रेतात्माओं पर इन मानवीय हथियारों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।” सफेद लबादे वाली स्त्री ने कहा और वह जैसे हवा में तैरती हुई पलक झपकते छबीलदास के ठीक सामने पहुंच गई। उसने फिर एक भयानक कहकहा लगाया और अपना दायां हाथ सेठ छबीलदास की गर्दन की ओर बढ़ा दिया।

उसकी उंगलियों के लम्बे-सुर्ख लपलपाते हुए नाखूनों को अपने गले की ओर बढ़ते देख सेठ छबीलदास ने चीखकर पीछे हटने की कोशिश की, लेकिन वह एक इंच भी पीछे की ओर न हट सके।

और तभी जैसे लोहे की एक तपती हुई कील उनके गले को चीरती हुई पेट के निचले भाग तक चली गई।

इस समय उनके बदन पर कोई कपड़ा नहीं था। इसलिए लोहे की उस तपती हुई कील जैसी दहकती हुई चीज को उनके पेट के अन्तिम छोर तक पहुंचने में कोई कठिनाई नहीं हुई थी।

सेठ छबीलदास तड़पकर किसी घायल भैंसे की तरह डकरा उठे। भयानक और असहनीय पीड़ा से उनका समूचा बदन तड़पने और छटपटाने लगा था। उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे उस औरत ने उनकी रीढ़ की हड्डियों, फेफड़ों और पेट में दहकते हुए अंगारे भर दिए हों और उनका समूचा बदन जलने लगा

हो।

जलते हुए गोश्त और खून की दुर्गंध उनके नथुनों से टकराने लगी थी।

“देखा, छबीलदास! दर्द से तड़पते और छटपटाते हुए कैसा महसूस होता है। उस रात मैं भी इसी तरह तड़पी और छटपटाई थी। और मर जाने के बाद भी मेरी आत्मा उसी तरह तड़प रही है, छटपटा रही है। उस रात तुमने मुझे जो पीड़ा दी थी मेरे शरीर पर जो अत्याचार किए थे उस शरीर के भस्म हो जाने के बाद भी उन अत्याचारों के चिन्ह मेरी आत्मा पर ज्यों के त्यों बने हुए हैं। मैं आज भी उस पीड़ा को उसी सीमा तक महसूस कर रही हूँ। मैं तुम्हें तड़पा-तड़पाकर मारूंगी। उसी तरह जिस तरह तुमने और तुम्हारे दोस्तों ने मुझे तड़पा-तड़पाकर मारा था जो किसी जमाने में मेरे दरवाजे पर रोटी का एक जूठा टुकड़ा पाने की आस लिए दुम हिलाते पड़े रहते थे।” सफेद लबादे वाली स्त्री ने कहा और उसके एक भयानक कहकहे के साथ ही सेठ छबीलदास की हृदयबेधी चीखें बेडरूम की छत और दीवारों को कंपाती हुई गूँज उठीं।

और उन दर्द-भरी चीखों को सुनते ही पलंग पर बेहोश पड़ी सोमा की बेहोशी दूर हो चुकी थी। कुछ देर तक तो वह आंखें मूंदें पड़ी रही। लेकिन सेठ छबीलदास की दर्द-भरी चीखों को अधिक बर्दाश्त न कर सकी। वह जल्दी से उछलकर बैठ गई और आंखें फाड़-फाड़कर फर्श पर मछली की तरह तड़पते, छटपटाते सेठ छबीलदास की ओर देखने लगी।

सेठ छबीलदास का समूचा बदन लहू से नहा गया था। उनके हलक से दर्द भरी चीखें निकल रही थीं। वह फर्श पर पड़े दर्द से छटपटाते हुए उठने की कोशिश कर रहे थे लेकिन उनसे उठा नहीं जा रहा था।

सोमा का समूचा बदन भय से कांप उठा। वह अपने फटे हुए कपड़ों की परवाह न करके पलंग से कूदकर फर्श पर आ गई। उसने आंखें फाड़कर उस स्थान की ओर देखा जहां वह

सफेद लबादे वाली स्त्री खड़ी थी। सोमा के बदन में झुरझुरी सी दौड़ गई। सफेद लबादे वाली स्त्री वहां नहीं थी। उसे लगा, जैसे सेठ छबीलदास की चीखने-कराहने और तड़पने-छटपटाने की ताकत उनका साथ छोड़ती चली जा रही है।

उसकी आंखों के आगे हथकड़ियां, जेल की कोठरी और फिर फांसी का फंदा नाच उठा। उसने पलंग पर बिछी चादर उठाकर अपने शरीर पर लपेट ली और बेडरूम का दरवाजा खोलकर बाहर निकल गई।

बेडरूम का दरवाजा खुलते ही सेठ छबीलदास की धीरे-धीरे धीमी पड़ती दर्द भरी चीखें रात के सन्नाटे में गूँजती हुई बाहर बरामदे में सोए पड़े ड्राइवर फूलसिंह के कानों से जा टकराईं। वह हड़बड़ाकर उठ बैठा।

चीखने और कराहने की घुटी-घुटी सी आवाजें सेठ छबीलदास के बेडरूम से आ रही थीं।

वह झपटकर उठा और बेडरूम की ओर भाग छूटा।

बेडरूम का दरवाजा खुला हुआ था। वह दौड़ता हुआ अन्दर चला गया।

और अन्दर पहुंचते ही उसके हलक से चीख निकल गई।

सेठ छबीलदास खून में लथपथ फर्श पर बिछे कालीन पर चारों खाने चित्त पड़े छटपटा रहे थे।

“सोमा कहां गई?” ड्राइवर फूलसिंह के दिमाग को एक जोरदार झटका लगा। उसने सारे बेडरूम पर नजरें दौड़ाई, “तो क्या सेठजी का यह हाल सोमा ने किया है?”

वह एक पल खड़ा-खड़ा सोमा के बारे में सोचता रहा और फिर मुड़कर तेजी से दौड़ता हुआ बेडरूम से निकल गया।

और फिर पलक झपकते ही इस दुर्घटना की खबर पूरे बंगले में फैल गई।

ड्राइवर फूलसिंह ने फेमिली डॉक्टर केवल कपूर को फोन कर दिया और सेठ छबीलदास को दो-तीन नौकरों की सहायता से उठाकर पलंग पर लिटाने के लिए सेठ छबीलदास की ओर

बढ़ा तो उसकी नजर पलंग पर पड़ी। पलंग पर चादर नहीं थी।

“पलंग पर बिछी चादर कहां गई?” उसने अपने-आपसे पूछा। जब उसने सोमा को कार में से लाकर एक पलंग पर डाला था, तो पलंग पर सिल्क की चादर बिछी हुई थी, जिसपर बसंती रंग के फूल और हरे रंग की पत्तियां छपी हुई थीं। वह समझ गया कि जरूर सोमा ही सेठजी को घायल करके भागते समय उस चादर को उठा ले गई होगी।

उसने वार्ड रोब में से एक चादर निकालकर पलंग पर बिछा दी और फिर सेठजी के लहलुहान बदन को उठाकर पलंग पर लिटा दिया जिसकी चेतना बड़ी तेजी से मौत की अंधेरी घाटी में डूबती चली जा रही थी।

सेठ छबीलदास की तेजी से बिगड़ती हुई हालत को देखकर ड्राइवर फूलसिंह ने इलाके के पुलिस स्टेशन को इस दुर्घटना की सूचना दे दी।

□ □

डॉक्टर केवल कपूर ने सेठ छबीलदास की हालत देखी तो उनके चेहरे पर चिन्ता और उदासी फैल गई।

“क्या बात है डॉक्टर साहब! क्या सेठजी की हालत ठीक नहीं है?” डॉक्टर केवल कपूर के चेहरे पर तेजी से छाती चली जाने वाली चिन्ता और उदासी को देखकर इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी ने व्यग्रता से पूछा।

“सेठजी को अस्पताल ले चलना पड़ेगा। उनके बदन पर इतने लम्बे और गहरे घाव हैं, जिनका इलाज घर में होना बिल्कुल संभव नहीं है।” डॉक्टर केवल कपूर ने चिन्तित स्वर में कहा।

इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी ने सार्जेंट डियेलो को आदेश दिया कि वह सेठ छबीलदास को एम्बुलेंस में लेकर सिटी क्लीनिक ले जाएं।

जब पुलिस के जवान सेठ छबीलदास को एम्बुलेंस में डालकर सिटी क्लीनिक ले जाने लगे तो ड्राइवर फूलसिंह ने सेठजी के

सबसे पुराने नौकर रामदास को भी उनके साथ भेज दिया ताकि उनकी देखभाल कर सके।

“इस दुर्घटना के बारे में तुम कुछ जानते हो फूलसिंह?” इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी ने पूछा।

“मुझे तो कुछ पता नहीं सरकार। मैं बरामदे में सो रहा था। दिन भर का थका-हारा होने के कारण शायद गहरी नींद आ गई थी। इसीलिए मैंने आक्रमणकारी के आने-जाने की आहट नहीं सुनी थी। इसके अलावा सेठजी का बेडरूम साउंड प्रूफ है। इसलिए अंदर की आवाजें बाहर सुनाई नहीं देतीं। मेरे कानों तक सेठजी की चीख उस समय पहुंची जब आक्रमणकारी बेडरूम का दरवाजा खोलकर निकल गया और जाते समय दरवाजा खुला छोड़ गया।” ड्राइवर फूलसिंह ने बड़ी विनम्रता से बताया, “मैं सेठजी की चीखें सुनकर बेडरूम में पहुंचा तो सेठजी फर्श पर पड़े थे। उनके लहलुहान शरीर को देखते ही पहले मैंने डॉक्टर साहब को फोन किया और जब सेठजी के चीखने-कराहने की आवाजें बंद हो गईं और उनपर बेहोशी-सी छा गई तो मैंने आपको फोन किया।”

“बंगले के बाहर सशस्त्र दरबानों का पहरा है। बंगले की इमारत के चारों ओर मर्करी बल्बों की तेज रोशनी फैली हुई है। ऐसी हालत में अगर कोई भी आदमी बंगले की इमारत से आता या जाता तो गेट पर तैनात दरबानों की नजर उस पर जरूर पड़ती। बंगले की चारदीवारी पांच फीट से कम नीची नहीं दिखाई दे रही, फिर आक्रमणकारी किस रास्ते से बंगले के अंदर आया और सेठजी पर आक्रमण करके साफ निकल गया।” इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी ने इस तरह कहा जैसे इस प्रश्न का उत्तर फूलसिंह से पूछ रहा हो।

लेकिन ड्राइवर फूलसिंह ने कोई उत्तर नहीं दिया वह इस तरह चुपचाप खड़ा रहा जैसे उसने इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी की बात सुनी ही न हो।

इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी महानगर बम्बई में जितने भी इंस्पेक्टर

थे, उनमें सबसे अधिक तेज-तरार और समझदार इंस्पेक्टर माना जाता था। ड्राइवर फूलसिंह के चेहरे को देखकर उसे ऐसा लग रहा था कि वह दुर्घटना के सम्बन्ध में कुछ-न-कुछ जरूर जानता है। लेकिन वह यह भी जानता था कि किस व्यक्ति पर कब दबाव डालना चाहिए।

“तुम्हारा नाम क्या है?” इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी ने पूछा।

“मेरा नाम फूलसिंह है हुजूर। मैं सेठजी का पर्सनल ड्राइवर हूँ।” फूलसिंह ने बड़े अदब से उत्तर दिया।

“क्या मतलब? क्या सेठजी के और भी ड्राइवर हैं?” इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी ने पूछा।

“सेठजी के यहां मेरे समेत पांच ड्राइवर हैं। एक मैं हूँ। मैं हमेशा सेठजी की गाड़ी पर रहता हूँ। दूसरा ड्राइवर रामसिंह है वह सेठजी के बेटे सेठ नगीनदासजी की कार ड्राइव किया करता था लेकिन दो महीने हुए जब से छोटे मालिक की मौत कार एक्सीडेंट में हुई रामसिंह भी बाकी तीनों ड्राइवरों की तरह ऑफिस की कारें और मेटाडोर चलाता है।” ड्राइवर फूलसिंह ने कहा।

“ओह! तभी यहां सेठजी के परिवार का कोई सदस्य दिखाई नहीं दे रहा।” इंस्पेक्टर अवस्थी ने चौंककर कहा, “क्या सेठजी के परिवार में उनके उस बेटे के अलावा और कोई नहीं है?”

“सेठानीजी का स्वर्गवास हुए लगभग अठारह बरस बीत चुके हैं। वह एक बेटे को जन्म देने के बाद ही स्वर्ग सिधार गई थीं। उस समय सेठजी की उम्र मुश्किल से तीस साल की थी। नाते, रिश्तेदार, दोस्तों और मिलने वालों ने सेठजी से बहुत कहा कि वह दूसरी शादी कर लें, लेकिन उन्होंने सबको यही कहकर टाल दिया कि अब तो इस बंगले में अगर किसी की शादी होगी तो सिर्फ उनके इकलौते बेटे नगीनदास की। इंस्पेक्टर साहब यही हुआ। आज से ठीक दो महीने पहले छोटे मालिक की शादी बड़ी धूमधाम से की थी बड़े मालिक ने; लेकिन

जिनके भाग्य में सुख नहीं लिखा होता उन्हें सुख मिलता ही नहीं। सेठजी अपने इकलौते बेटे की शादी करके नवसारी से लौट रहे थे। उस दिन मौसम बहुत ही सुहाना था। इसलिए बारातियों ने जिद की कि मेन रोड के बजाय समुद्र के किनारे-किनारे गुजरने वाली सड़क से बम्बई लौटेंगे।” फूलसिंह ने कहा और फिर थोड़ी देर खामोश रहने के बाद बोला, “सबसे आगे छोटे मालिक और उनकी दुल्हन रेखा की कार थी। छोटे मालिक का ड्राइवर रामसिंह कार ड्राइव कर रहा था। अचानक रास्ते में एक जगह जब उनकी कार किसी नदी के पुल की चढ़ाई पर चढ़ रही थी रामसिंह के हाथ से न जाने कैसे कार बेकाबू हो गई और अपनी साइड छोड़कर दूसरी साइड में खड़े बरगद के एक बहुत बड़े पेड़ से जा टकराई।”

“किसी के चोट आई थी?” इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी ने जल्दी से पूछा।

“इंस्पेक्टर साहब, इतनी जिंदगी बीत गई ड्राइविंग करते करते। सैकड़ों एक्सीडेंट देखे होंगे लेकिन ऐसा अजीब एक्सीडेंट मैंने नहीं देखा।” फूलसिंह ने कहा और एक पल रुककर दर्द भरी आवाज में बोला, “बरगद के पेड़ से टकराकर कार का इंजन ही नहीं पूरी कार इस तरह पिचक गई थी जैसे टिन की बनी बच्चों की खिलौना कार हो। सबसे ज्यादा हैरानी की बात तो यह है कि ड्राइविंग सीट पर बैठा रामसिंह तो बच गया लेकिन पिछली सीट पर बैठे दूल्हा-दुल्हन मारे गए। उनकी लाशें देखी नहीं जाती थीं। उन दोनों के सिर इस तरह फट गए थे जैसे किसी ने मुक्के मारकर तरबूज फोड़ दिए हों।”

सेठ छबीलदास के इकलौते बेटे नगीनदास और उसकी नवविवाहिता पत्नी की दुखद मृत्यु की कहानी सुनकर इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी का मन भारी हो गया। वह कुछ देर चुपचाप खड़ा रहा फिर उसने पूछा, “भगवान करे सेठजी स्वस्थ होकर घर लौट आएंगे। लेकिन अगर उन्हें कुछ हो गया तो उनकी इस करोड़ों की जायदाद का वारिस कौन होगा?”

“सेठजी का सगा भाई तो कोई नहीं था। दूर के रिश्ते का एक भाई था; लेकिन उसे लोग उनके भाई के बजाय उनके मित्र के नाते अधिक जानते थे। सेठजी ने एक दिन मुझे बताया था कि उनका वह भाई अफ्रीका के किसी शहर में रहता था। एक दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो गई थी। वह अपने भाई की विधवा पत्नी और उसके चारों बच्चों को लेने के लिए गए थे लेकिन वहां जाने पर पता चला कि उनके भाई की पत्नी की भी मृत्यु हो चुकी है और उन बच्चों को सरकार ने किसी अनाथालय में भेज दिया है। उन्होंने उस अनाथालय को बहुत खोजा, लेकिन उसका कोई पता नहीं चला। अन्त में निराश होकर वह भारत लौट आए।” फूलसिंह ड्राइवर ने बताया, “आप उन बच्चों का पता आसानी से लगा सकते हैं। क्योंकि सेठजी की करोड़ों की सम्पत्ति के वही एकमात्र कानूनी वारिस हैं।”

इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी कुछ देर खामोश खड़ा कुछ सोचता रहा। फिर उसने एस.आई. मेहता से कहा कि वह गेट पर तैनात दोनों दरबानों और दूसरे नौकर नौकरानियों के बयान कलम बन्द करे और बेडरूम तथा बंगले के बाहर आक्रमणकारी की उंगलियों तथा पैरों के निशानों को तलाश कराए।

एस.आई. मेहता अपने काम में लग गया तो इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी बेडरूम से निकलकर बरामदे में आ गया। ड्राइवर फूलसिंह भी उसके पीछे-पीछे चला आया था।

इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी कुछ देर तक बरामदे में खड़ा सामने की ओर दूर चारदीवारी तक नजरें दौड़ा-दौड़ाकर देखता रहा और फिर सीढ़ियों से उतरने लगा।

अचानक उसकी नजरें सीढ़ियों के सामने खड़ी कार की पिछली सीट पर पड़ गई। वह चौंका और फिर ठिठककर रुक गया।

“यह कार किसकी है फूलसिंह।” उसने ड्राइवर फूलसिंह को आगे आने का इशारा करते हुए पूछा।

“यह कार सेठजी की पर्सनल कार है। अभी तीन-चार

महीने पहले ही फ्रांस से मंगवाई है। बहुत ही शानदार कार है इंस्पेक्टर साहब। इसमें बैठकर ऐसा लगता है जैसे किसी कार में नहीं उड़न खटोले में बैठे हों।” ड्राइवर फूलसिंह ने कार के पास आकर कार के अगले दरवाजे के हैंडिल पर हाथ रखते हुए कहा।

उस कार की ड्राइविंग सीट दाईं ओर के बजाय बाईं ओर थी।

इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी तेजी से आगे बढ़ा और कार की पिछली सीट का दरवाजा खोलते हुए बोला, “फूलसिंह! मैं तो उस शानदार कार और खूबसूरत बंगले को मनहूस मानता हूं, जिसमें किसी खूबसूरत औरत के महावर लगे पांव न पड़ें।”

“यह तो आप ठीक कह रहे हैं साहब, लेकिन अगर घर में कोई औरत होती नहीं तो क्या किया जाए।” ड्राइवर फूलसिंह ने एक लम्बी सांस भरकर कहा, “भरी जवानी में सेठजी की पत्नी का स्वर्गवास हो गया था। उनकी मौत के बाद ही यह बंगला बनवाया था। पूरे अठारह साल तक इस बंगले में किसी औरत के पांव नहीं पड़े। सोचा था बेटे की बहू आ जाएगी तो यह नहूसत दूर हो जाएगी लेकिन भगवान को यह भी न मंजूर था। बेचारी बहू ससुराल की देहरी तक नहीं देख पाई और इस बंगले की तरह ही उस कार की किस्मत है। सेठजी ने तय कर रखा था कि इस कार को बहू के पांव छूने पर दे देंगे। लेकिन साहब, इंसान का सोचा होता कब है, होता तो वही है जो भगवान को मंजूर होता है।”

“फूलसिंह, इधर आओ,” इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी ने हाथ पकड़कर फूलसिंह को पिछली सीट के खुले दरवाजे के सामने खींच लिया और उसकी गर्दन बाएं हाथ से पकड़ ली और फिर उसकी गर्दन को हाथ का दबाव डालकर पिछले दरवाजे के अन्दर घुसेड़ते हुए बोला, “अगर ऐसी बात है तो फिर इस कार की इस पिछली सीट पर किसी औरत की चूड़ियों के ढेर सारे ये टुकड़े कहां से आ गए।”

चूड़ियों के उन टुकड़ों को देखते ही फूलसिंह को चक्कर आ गए। अगर उसकी गर्दन इंसपेक्टर सुरेश अवस्थी के हाथ में जकड़ी हुई न होती तो वह चक्कर खाकर जमीन पर जा गिरा होता।

उसका सारा बदन पसीने में डूब गया था और थर-थर कांपने लगा था। आंखों के आगे अंधेरा छाने लगा था।

“मैं तुम्हारी शक्ल देखकर और तुम्हारी बातें सुनकर ही जान गया था कि तुम इस वारदात के बारे में बहुत कुछ ही नहीं सब कुछ जानते हो; लेकिन मैं यह सोचकर चुप रह गया था कि इस बंगले में जितने भी नौकर-नौकरानियां, दरबान और ड्राइवर हैं उन सबमें तुम्हारा स्थान बहुत ऊंचा है, क्योंकि तुम मालिक के मुंह लगे पर्सनल ड्राइवर हो, “इंसपेक्टर सुरेश अवस्थी ने कहा और फूलसिंह की गर्दन की पकड़ और भी तंग करते हुए बहुत ही सपाट लहजे में बोला, “बताओ वह औरत कौन थी, जिसे शायद जबर्दस्ती इस कार में डालकर लाया गया था? चूड़ियों के टूटे हुए ये टुकड़े इस बात का जीता-जागता सबूत हैं कि उस औरत को जबर्दस्ती लाया गया था। वह अपनी मर्जी से नहीं आई थी। अगर वह अपनी मर्जी से आई होती तो चूड़ियों के टूटने का सवाल ही नहीं पैदा होता।”

“मैं सबकुछ सच-सच बता दूंगा हुजूर! मेरी गर्दन छोड़ दीजिए...। मेरी सांस घुटने लगी है।” ड्राइवर फूलसिंह ने अटक-अटककर छटपटाती आवाज में कहा।

इंसपेक्टर अवस्थी ने उसकी गर्दन छोड़ दी और सीट पर तथा सीट के नीचे पड़े चूड़ियों के टुकड़े बीनकर अपने रुमाल में रख लिए और फिर पलटकर एक कांस्टेबल को आवाज देकर बोला, “बापूराव, उंगलियों के निशानों के एक्सपर्ट से कहो पहले इस कार में से उंगलियों और पैरों के निशानों की खोज करें।”

कांस्टेबल को हिदायत देने के बाद उसने ड्राइवर फूलसिंह का हाथ पकड़ लिया और उसे लिए-लिए ड्राइंगरूम में आ

बैठा।

ड्राइवर फूलसिंह कुछ देर तो चुपचाप बैठ रहा फिर उसने सोमा के सम्बन्ध में सब कुछ बता दिया।

“तुम्हें पता है सोमा कहां रहती है?” इंसपेक्टर सुरेश अवस्थी ने पूछा।

“सोमा के पिता रेलवे में थे। दादर स्टेशन के पास ही रेलवे वालों की हाउसिंग सोसायटी के बने हुए फ्लैटों में ग्राउंड फ्लोर का 21 नम्बर फ्लैट सोमा का ही है। उसके पिता की मृत्यु हो चुकी है। मां पिता से भी पहले मर गई थी। घर में सोमा की एक छोटी बहन और दो छोटे भाई हैं। तीनों पढ़ते हैं। बड़ा भाई अशोक कालेज में शायद बी.ए. के पहले साल में है। उससे छोटी बहन सुधा हायर सेकेन्डरी में और सबसे छोटा भाई अजय आठवीं क्लास में है।” फूलसिंह ने बताया।

इंसपेक्टर सुरेश अवस्थी ने अपनी डायरी निकालकर सोमा का पता नोट कर लिया। चारदीवारी के उस ओर चल पड़ा जहां चारदीवारी पर फैली बेलें टूटी और कुचली हुई दिखाई दे रही थीं।

इंसपेक्टर सुरेश अवस्थी और ड्राइवर फूलसिंह वहां पहुंचे तो उन्होंने देखा, एक गार्डन चेयर उन टूटी हुई बेलों के बीच पड़ी थी। क्योंकि उसे टूटी हुई बेलों ने अपने आप में छिपा लिया था इसलिए वह उन्हें पास आ जाने पर भी दिखाई नहीं दी थी।

“लगता है सोमा सेठ छबीलदास को किसी नुकीले हथियार से घायल करने के बाद जब सेठजी के बेडरूम से निकलकर भागी, तो उसकी नजर पोर्टिको के सामने लॉन में पड़ी गार्डन चेयरों पर पड़ गई और वह उनमें से एक चेयर उठाकर यहां ले आई और फिर बेलों की आड़ लेकर उस चेयर पर पांव रखकर चारदीवारी की मुंडेर पर पहुंच गई और फिर दूसरी ओर कूद गई।” इंसपेक्टर सुरेश अवस्थी ने अपना अनुमान प्रकट किया।

“लेकिन इंसपेक्टर साहब! एक बात मेरी समझ में नहीं आ

रही।" ड्राइवर फूलसिंह ने सोचते हुए कहा, "मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि सोमा के पास कुछ भी नहीं था। वह तो उसी समय बेहोश हो गई थी जब कन्हैया और संजू ने उसे पकड़कर कार की पिछली सीट पर डाला था। मैं उसे जब कार की पिछली सीट पर से उठाकर सेठजी के बेडरूम में ले गया था उसके दोनों हाथ खाली थे। हाथों की चूड़ियाँ तक टूट चुकी थीं। सेठजी के बेडरूम में ऐसा नुकीला कोई हथियार था नहीं। सोमा ने जिस नुकीले हथियार से सेठजी को घायल किया था, वह आखिर गया कहाँ? उसे साथ लेकर जाने की मूर्खता कम-से-कम सोमा जैसी समझदार लड़की कभी नहीं कर सकती थी।" ड्राइवर फूलसिंह ने कहा और टूटी हुई बेलों को हटा-हटाकर उस नुकीले हथियार को खोजने लगा।

लेकिन वह नुकीला हथियार वहाँ नहीं मिला।

"फूलसिंह! तुमने मुझे सब कुछ सच-सच बता दिया है, इसलिए मैंने तुम्हें छोड़ दिया है। सोमा की कहानी सुनकर मुझे सेठ छबीलदास के चरित्र पर ही नहीं उसके समूचे व्यक्तित्व पर संदेह हो उठा है। इस समय तो रात के दो बज चुके हैं। तुम सुबह आठ बजे मेरे ऑफिस पहुँच जाना। मैं सेठ छबीलदास के सम्बन्ध में वह सब जानना चाहता हूँ, जो कुछ तुम जानते हो।" इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी ने कहा।

"जो हुक्म हुजूर! मैं ठीक आठ बजे हाजिर हो जाऊँगा।" ड्राइवर फूलसिंह ने बड़े अदब से कहा।

वे दोनों वापस सेठ छबीलदास के बेडरूम में लौट आए।

इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी ने अपने मातहत कर्मचारियों को आवश्यक निर्देश दिए और फिर अपनी जीप में बैठकर दादर की ओर चल दिया।

□ □

केंडीबीच से दादर सोमा पैदल किस तरह पहुँची उसी का दिल जानता था। उसके कपड़े जगह-जगह से फटे हुए थे। उनको उसने बेडशीट के नीचे छिपा रखा था लेकिन उसे बेडशीट

ओढ़े देख उस पर कोई भी सन्देह कर सकता था। आधी रात के समय इस वेश में एक जवान लड़की का पैदल जाना खतरे से खाली नहीं था।

जब वह अपने फ्लैट के दरवाजे पर पहुँच गई तब उसका जी में जी आया। उसने पहले इतमीनान की एक लम्बी सांस ली और फिर दरवाजे के पास लगा घंटी का बटन दबा दिया।

फ्लैट के अन्दर रोशनी हो रही थी उसकी बहन और दोनों भाई जाग रहे थे और परेशान हो रहे थे कि उनकी बड़ी बहन सोमा अभी तक अपने ऑफिस से क्यों नहीं लौटी।

"दीदी! क्या बात है? तुम्हें आज इतनी देर कैसे हो गई?" सुधा ने दरवाजा खोलते ही सोमा के चेहरे की ओर देखते हुए पूछा और फिर जैसे ही उसके बदन पर लिपटी बेडशीट और उसके कपड़ों पर उसकी नजर गई उसका कलेजा धक से रह गया।

"भगवान को धन्यवाद दो कि मैं सही सलामत घर लौट आई। वरना कल सुबह समुद्र के किनारे मेरी लाश ही पड़ी मिलती।" सोमा ने अन्दर आते हुए कहा, "सुधा जल्दी से एक प्याला चाय बनाओ तब तक मैं कपड़े बदल आऊँ।"

यह कहकर सोमा बाथरूम में चली गई।

□ □

नहा-धोकर और कपड़े बदल कर सोमा ने अभी चाय का एक ही घूंट भरा था कि फ्लैट के सामने किसी गाड़ी के इंजन की आवाज सुनकर उसके हाथ में पकड़ा प्याला कांप गया और चाय छलककर उसकी साड़ी पर आ गिरी।

उसने जल्दी से हाथ बढ़ाकर खिड़की का पर्दा जरा-सा हटा कर देखा। एक पुलिस इंस्पेक्टर जीप से उतरकर उसी के फ्लैट की ओर आ रहा था।

"अशोक! दरवाजा खोल दो।" सोमा ने अपने भाई से कहा और आने वाली स्थिति का सामना करने के लिए अपने आप को तैयार करने लगी।

अशोक ने आगे बढ़कर दरवाजा खोल दिया।

“मिस सोमा घर में हैं?” इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी ने दरवाजे पर पहुंचकर पूछा।

“जी हां! तशरीफ लाइए।” अशोक ने बड़े अदब से कहा और दरवाजे में से एक ओर हट गया।

सोमा ने उठकर इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी का दोनों हाथ जोड़कर अभिवादन किया।

“लगता है, आप अभी-अभी यहां पहुंची हैं।” इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी ने नहाने के बाद सोमा के बदन की ताजगी गीले बालों और हाथ में पकड़े प्याले को देखते हुए कहा।

“जी—!” सोमा चौंक पड़ी।

“मैं सेठ छबीलदास के बंगले से ही आ रहा हूं मिस सोमा!” इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी ने एक कुर्सी पर बैठते हुए कहा और फिर सोमा की छोटी बहन की ओर देखते हुए उसने मुस्कराते हुए पूछा, “तुम्हारा नाम सुधा ही है न?”

“जी हां।” सुधा ने हैरानी से उत्तर दिया। उसे इस बात पर हैरानी हो रही थी कि इस पुलिस इंस्पेक्टर को उसका और उसकी दीदी का नाम कैसे मालूम हो गया।

“सुधा बहन! हमको चाय नहीं पिलाओगी?” इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी की मुस्कराहट और भी गहरी हो गई थी।

“जरूर पीजिए।” सुधा ने उसकी मुस्कराहट से आश्चर्य होते हुए उत्तर दिया और एक प्याले में चाय बनाने लगी।

इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी के इस अपनत्व भरे व्यवहार से सोमा भी काफी आश्चर्य और संयत हो गई थी, उसकी घबराहट अब बिलकुल दूर हो चुकी थी और अब वह पुलिस इंस्पेक्टर के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए पूरी तरह अपने-आपको तैयार कर चुकी थी।

इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी ने चाय का प्याला उठाकर दो-तीन घूंट भरे और फिर सोमा की ओर देखते हुए बहुत ही शान्त और संयत स्वर में बोला, “सेठ छबीलदासजी की हालत अच्छी

नहीं है। मुझे तो उनके बचने की कोई उम्मीद नजर नहीं आती। वैसे मैंने उन्हें सिटी क्लीनिक में भर्ती करा दिया है। वर्षों बीत गए उनकी पत्नी का देहान्त हो चुका है। दो ढाई महीने हुए बेटा और बहू भी कार दुर्घटना में मारे गए। इतनी बड़ी दुनिया में सेठजी अकेले रह गए हैं। इस समय उन्हें घृणा नहीं दया चाहिए। मैं जानता हूं कि ये पूंजीपति अपने घर में या ऑफिस में काम करने वालों को अपना जर खरीद गुलाम समझते हैं। उनके साथ जानवरों से भी गया बीता व्यवहार करते हैं; लेकिन जब वक्त पड़ता है तो वे भी हम तुम जैसे सीधे-सादे इंसान बन जाते हैं। जिस परिस्थिति में तुम सेठजी को छोड़कर चली आई तुम्हारी जगह मैं होता तो मैं भी यही करता इसमें घबराने या चिन्तित होने की कोई जरूरत नहीं है। मैं जान गया हूं कि सेठजी को उस स्थिति में पहुंचाने वाला कौन है। तुम्हें उसके लिए चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। तुम मुझे बस इतना बता दो कि क्या तुमने उस व्यक्ति को देखा था?”

इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी की बातों में छिपे अर्थ को सोमा अच्छी तरह समझ गई थी। वह जान गई थी कि इंस्पेक्टर उस दुर्घटना के बारे में उसकी बहन और भाइयों के सामने स्पष्ट शब्दों में बताना नहीं चाहता। उसका मन इंस्पेक्टर के प्रति कृतज्ञता से भर उठा। माता-पिता की मृत्यु के बाद आज पहली बार ऐसे किसी व्यक्ति को देख रही थी, जिसे उसके सम्मान की इतनी चिन्ता थी, जो उसे अपने बहन-भाइयों की नजरों में भी गिराने के लिए तैयार नहीं था।

उसका मन भर आया वह कोई उत्तर न दे सकी।

इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी ने अपनी कलाई पर बंधी घड़ी पर नजर डाली और फिर बोला, “रात के तीन बजने जा रहे हैं। तुमने शायद अभी तक खाना भी नहीं खाया होगा सोमा।”

“जी हां!” सोमा ने धीरे से उत्तर दिया।

“दीदी के इन्तजार में हम सभी भूखे बैठे हैं।” सोमा के छोटे भाई अजय ने जल्दी से कहा।

“सुधा! खाना यहीं ले आओ। तुम सब खाना खाना। मैं चाय पीता रहूंगा।” इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी ने कहा। वास्तव में वह आत्मीयतापूर्ण व्यवहार से सोमा के संकोच और भय को दूर कर देना चाहता था, ताकि सेठ छबीलदास के सम्बन्ध में पूछताछ करने पर वह निस्संकोच और निर्भय होकर उसे सब कुछ बता दे।

सोमा, सुधा तथा अशोक और अजय ने इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी से खाना खाने का बहुत आग्रह किया। लेकिन उसने यह कहकर उनके आग्रह को टाल दिया कि वह फिर किसी दिन आएगा और खाना खाकर ही जाएगा।

खाना खाने के बाद सोमा ने कहा, “रात काफी बीत चुकी है। चलिए आपको आपकी जीप तक पहुंचा आऊं।”

“चलिए।” इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी सोमा का अभिप्राय समझकर उठ खड़ा हुआ।

जीप के पास रुककर सोमा ने जल्दी-जल्दी बिना पूछे ही सारी घटना इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी को सुनाते हुए कहा, “इंस्पेक्टर साहब! मेरी बेहोशी सेठजी की चीखें सुनकर खत्म हो गई थी। मैंने धीरे से आंखें खोली थीं तो मैंने देखा था कि सेठजी फर्श पर लहलुहान पड़े जोर-जोर से डकरा रहे थे और दूध जैसे सफेद और बहुत ही हलके-फुलके कपड़े का लबादा पहने हुए तीस-पैंतीस वर्ष की एक बहुत ही सुन्दर स्त्री उनसे कह रही थी, “मैं तुम्हें और तुम्हारे उन चारों दोस्तों को तड़पा-तड़पाकर मारूंगी जिनके साथ मिलकर एक दिन तुमने मेरा सब कुछ लूट लिया था।” एक स्त्री की उपस्थिति पाकर मेरी हिम्मत बंध गई थी और मैं जल्दी से उठकर पलंग पर बैठ गई थी। लेकिन मेरे उठने की आवाज सुनते ही सफेद लबादे वाली उस स्त्री ने नजर उठाकर देखा था और फिर जैसे हवा में तैरती हुई एक खिड़की के पास पहुंचकर इस तरह गायब हो गई थी, जैसे हवा में घुल गई हो। उसके गुम हो जाने के बाद मैं उस खिड़की की ओर देखती रही थी, जिसके पास पहुंचकर वह

आंखों से ओझल हो गई थी। वह खिड़की पहले की तरह बन्द थी। ऊपर और नीचे दोनों ओर की चटकनियां लगी हुई थीं। मैं समझ नहीं पाई कि वह औरत किस तरह बन्द कमरे से गायब हो गई।”

सोमा की बात सुनकर इंस्पेक्टर अवस्थी आश्चर्य में पड़ गया। बन्द कमरे में से किसी स्त्री का इस तरह गुम हो जाना वास्तव में आश्चर्य की बात थी।

वह कई मिनट तक गुमसुम खड़ा उस आश्चर्यमयी स्त्री के बारे में सोचता रहा फिर सोमा के कंधे को प्यार से थपथपाते हुए बोला, “जो भी कुछ हुआ तुम उसे भूल जाओ सोमा। इस घटना के बारे में सेठजी के ड्राइवर फूलसिंह के अलावा और किसी को कुछ पता नहीं है। इसलिए तुम सुबह को रोजाना की तरह अपने काम पर जाना। सेठजी पर आक्रमण करने वाले आक्रमणकारी को और अपनी नीच हरकतों के लिए सेठ छबीलदास को सजा दिलाने का काम मेरा है। उसके बारे में तुम्हें चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। हां, क्या तुम सफेद लबादे वाली स्त्री का हुलिया बता सकती हो?”

“इंस्पेक्टर साहब! वह स्त्री मुझे इस धरती की सामान्य स्त्रियों से बिल्कुल भिन्न दिखाई देती थी। उसके बर्फ जैसे गोरे रंग में गुलाब के फूलों जैसी हलकी लालिमा झलक रही थी। आंखों को देखकर ऐसा लगता था, जैसे बड़ जागते हुए भी कोई मीठा सपना देख रही हो। उसके भंवरों जैसे काले बाल उसके सफेद लबादे के ऊपर से उसकी एड़ियों तक लहरा रहे थे। विशेष रूप से उसकी उंगलियां बहुत ही सुन्दर थीं। कलाकारों जैसे लम्बी-लम्बी उंगलियां और नेल पालिश लगे सुर्ख लंबे और तराशे हुए नोकदार नाखून, उसके समूचे व्यक्तित्व में मुझे सबसे अधिक सुन्दर उसके नाखून ही लगे थे।” सोमा ने बताया।

“मुझे एक बार फिर सेठ छबीलदास के बंगले पर जाना पड़ेगा।” इंस्पेक्टर अवस्थी ने कहा और जीप की ड्राइविंग

सीट पर जा बैठा।

□□

महानगर की सूनी सड़कों को पार करती हुई इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी की जीप सेठ छबीलदास के बंगले पर पहुंची तो सारा बंगला गहरी खामोशी में डूबा हुआ था। बंगले में काम करने वाले सभी नौकर-नौकरानियां बाहरी बरामदे के फर्श पर खामोश बैठे हुए थे। उन सबके बीच रामदास नामक उस बूढ़े नौकर को देखकर इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी का सीना धक से रह गया। उसे तो सेठजी की देखभाल के लिए भेजा गया था, फिर वह उन्हें अस्पताल में अकेला छोड़कर कैसे चला आया?

पोर्टिको में पहुंचकर वह जीप से कूद पड़ा और रामदास की ओर तेजी से बढ़ते हुए उसने पूछा, “रामदास, तुम्हें तो सेठजी की देखभाल के लिए भेजा गया था लेकिन तुम...”

“इंस्पेक्टर साहब! अब सेठजी को देखभाल करने वाले की जरूरत नहीं है। वह अब इस दुनिया में नहीं रहे।” बूढ़े रामदास ने रुआंसी आवाज में कहा, “डॉक्टरों ने उन्हें बचाने की बहुत कोशिशें कीं। लेकिन उनके घावों में जहर फैल चुका था। यहां से अस्पताल पहुंचने के आधे घंटे बाद ही वह इस दुनिया से कूच कर गए।”

“क्या मरने से पहले उन्होंने पुलिस सार्जेंट या डॉक्टरों को कोई बयान दिया था?” इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी ने पूछा।

“जी नहीं। वह बोल ही नहीं सके थे।” रामदास ने उत्तर दिया।

इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी कुछ देर सन्नाटे में डूबा खड़ा रहा, फिर ड्राइवर फूलसिंह और रामदास को लेकर सेठ छबीलदास के बेडरूम की ओर चल दिया। दो कांस्टेबलों के साथ सार्जेंट डियेलो बेडरूम के बाहर रहे।

उसने बेडरूम में पहुंचकर एक-एक खिड़की और दरवाजे की जांच की। सभी खिड़कियां और दरवाजे अन्दर से बन्द थे। फूलसिंह से पूछने पर पता चला कि जिस समय उसने सेठजी

को चीख सुनी थी वह उसी दरवाजे से बेडरूम के अन्दर गया था, जिस पर अपनी कार्रवाई पूरी करने के बाद एस.आई. मेहता ने ताला लगा दिया था और चाबी सार्जेंट डियेलो को सौंपकर पुलिस स्टेशन चला गया था।

बेडरूम की बन्द खिड़कियों और दरवाजों को देखकर इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी की हैरानी और भी बढ़ गई। उसने मन-ही-मन कुछ निश्चय किया और बेडरूम से निकलकर पोर्टिको में खड़ी जीप की ओर बढ़ गया।

दो हत्यारे

मेजर बलवंत और उसके साथी गहरी नींद सोए पड़े थे कि अचानक कॉलबेल के सरगमी सुरों ने उन्हें जगा दिया।

मेजर बलवंत ने आंखें खोलीं तो बेडरूम में अभी रात का पिछले पहर का हलका-सा धुंधलका फैला हुआ था।

“इतने सवेरे-सवेरे कौन आ गया?” मेजर बलवंत ने कहा और अंगड़ाई लेकर उठ बैठा।

तभी उसे ड्राइंगरूम के दरवाजे के खुलने की आवाज सुनाई दी।

वह बेडरूम से निकलकर ड्राइंगरूम के दरवाजे पर पहुंचा, तो ड्राइंगरूम के दरवाजे में क्राइम ब्रांच का इंचार्ज इंस्पेक्टर एक अन्य इंस्पेक्टर के साथ खड़ा था।

“गुड मॉर्निंग इंस्पेक्टर!” मेजर बलवंत ने दरवाजे से निकलकर आगे बढ़ते हुए मुस्कराहट के साथ दोनों इंस्पेक्टरों का स्वागत किया, “इतने सवेरे-सवेरे आप लोग कैसे इधर भूल पड़े?”

“आप तो जानते ही हैं मेजर साहब! हम लोग तो तभी आपको कष्ट देने आते हैं, जब हम किसी कठिनाई में पड़ जाते हैं।” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने हंसते हुए कहा।

“मैं इसे स्वार्थ नहीं मानता। स्वार्थ तो नितान्त व्यक्तिगत हितों पर आधारित भावना होती है। उसमें जनहित का लेशमात्र

भी अंश नहीं होता। हम लोगों का सम्बन्ध व्यक्तिगत हितों पर नहीं जनहित पर आधारित है इसलिए इसे स्वार्थ नहीं कहा जा सकता।” मेजर बलवंत ने कहा, “आप निस्संकोच बताइए।”

“मेजर साहब! यह इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी हैं। केंडीबीच पुलिस स्टेशन के इंचार्ज।” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी का परिचय देते हुए कहा, “बीती हुई रात लगभग बारह बजे इनके इलाके में रहने वाले सुप्रसिद्ध उद्योगपति सेठ छबीलदास की किसी ने बहुत ही रहस्यपूर्ण ढंग से हत्या कर डाली है।”

“रहस्यपूर्ण ढंग से?” मेजर बलवंत ने हैरानी से कहा।

“जी हां, दरवाजे और खिड़कियां बन्द रहीं और हत्यारा सेठ छबीलदास के बेडरूम में आकर और उन्हें बुरी तरह घायल करके चला गया।” इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी ने कहा और फिर उसने सेठ छबीलदास पर किसी रहस्यपूर्ण स्त्री द्वारा किए गए आक्रमण, उनकी मृत्यु और सोमा के बारे में सबकुछ बता दिया।

“वास्तव में आपने बहुत ही रहस्यपूर्ण कहानी सुनाई है इंस्पेक्टर साहब! सेठ छबीलदास की हत्या जिस ढंग से की गई है, अनोखा ही ढंग है। हत्यारे ने उनकी गर्दन के पिछले भाग से लेकर रीढ़ की हड्डी के ऊपर-ऊपर उसके अन्तिम छोर तक किसी नुकीली चीज से पीठ चीर डाली और इसी तरह गर्दन की अगली ओर से पेट के निचले भाग तक चीरा लगा दिया। और मेरा खयाल है, जिस नुकीले हथियार से सेठ छबीलदास की पीठ और पेट को चीरा गया, वह जहर में बुझा हुआ था। वह जहर इतना घातक था कि वह इतनी तेजी से उनके बदन में फैलता चला गया कि अस्पताल पहुंचते-पहुंचते उनकी मृत्यु हो गई।” मेजर बलवंत ने सोच में डूबे स्वर में कहा।

“मेजर साहब! दरअसल हत्यारा सेठजी के बेडरूम में किस तरह पहुंचा और फिर बिना कोई खिड़की या दरवाजा खोले बेडरूम से निकल गया। यह एक ऐसा प्रश्न है, जिसने

इस हत्याकांड को रहस्यपूर्ण बना दिया है। मैंने इस केस की कहानी कमिश्नर साहब को सुनाई, तो उन्होंने मुझे यही आदेश दिया कि केस को हल करने के लिए मैं आपसे अनुरोध करूं, क्योंकि ऐसे रहस्यपूर्ण केसों को सुलझाना पुलिस के वश की बात नहीं है।”

“इंस्पेक्टर साहब! मुझे इस केस को हाथ में लेने में कोई आपत्ति नहीं; लेकिन इस समय मैं इससे भी अधिक महत्वपूर्ण केस को पहले हल करना चाहता हूं, जो इससे भी अधिक रहस्यपूर्ण और भयानक है।” मेजर बलवंत ने कहा और फिर दोनों पुलिस अधिकारियों को मोनार्क जलयान से बहुत ही दुस्साहसपूर्ण ढंग से होने वाले अन्ना के अपहरण की पूरी कहानी आरम्भ से अन्त तक सुना दी।

अन्ना के इस दुस्साहसपूर्ण अपहरण की कहानी सुनकर दोनों पुलिस अफसर अवाक रह गए।

“अन्ना नार्वे की रहने वाली थी, इसलिए यह केस अन्तराष्ट्रीय महत्व का केस बन जाता है। और क्योंकि अन्ना का अपहरण भारत की समुद्री जल सीमा के अन्दर हुआ है, इसलिए मिस अन्ना को खोजना हमारी नैतिक ही नहीं कानूनी जिम्मेदारी भी है।” मेजर बलवंत ने कहा, “क्योंकि यह घटना आज रात ही लगभग दस बजे हुई थी। मोनार्क जहाज को बम्बई हार्बर पर पहुंचते-पहुंचते आधी रात हो चुकी थी, इसलिए जहाज के कप्तान और नार्वेजियन छात्र-छात्राओं के दल की व्यवस्थापिका मिसेज लूसी राबर्ट ने अभी तक पुलिस में रिपोर्ट नहीं लिखाई है। सुबह होने पर वे दोनों पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करा देंगे। मिसेज लूसी राबर्ट ने तो निश्चय कर लिया है कि जब तक अन्ना नहीं मिलेगी, तो वह अपने देश वापस नहीं लौटेंगी और क्योंकि अपने देश की समुद्री सीमा में एक चलते हुए जहाज से किसी युवती का अपहरण हो जाना मामूली घटना नहीं है। सेठ छबीलदास की हत्या के केस को हल करने का प्रश्न केवल बम्बई पुलिस तक ही सीमित है, वहां किसी विदेशी युवती का

अपहरण हमारे देश की सम्पूर्ण न्याय और सुरक्षा व्यवस्था के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। इसलिए मेरी नजर में सेठ छबीलदास की हत्या का केस उतना महत्वपूर्ण नहीं है, जितना अन्ना का अपहरण कांड है। मैं उसी को प्राथमिकता दूंगा।”

“आपके इस निर्णय से मैं सहमत हूं।” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने कहा और फिर इजाजत लेकर इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी के साथ जाने लगा, तो मेजर बलवंत ने इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी की ओर मुड़कर कहा, “इंस्पेक्टर अवस्थी! अगर आपको कोई असुविधा न हो तो थोड़ी देर ठहर जाइए। मैं आपके साथ चलकर सेठ छबीलदास के उस बेडरूम को देखना चाहता हूं।”

“ठीक है। आप तैयार हो जाइए।” इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी ने कहा और बैठ गया।

इंस्पेक्टर कुलकर्णी के जाने के बाद मेजर बलवंत उठा और बाथरूम में चला गया।

□ □

मेजर बलवंत इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी के साथ केन्डीबीच में सेठ छबीलदास के बंगले में पहुंचा, तो पौ फट चुकी थी, लेकिन बंगले में गहरा सन्नाटा छाया हुआ था। गई रात तक जागते रहने के कारण और कोई कागजात न होने के कारण बंगले में काम करने वाले नौकर-नौकरानियां अभी तक सोए पड़े थे। जिस बंगले में पौ फटते ही चहल-पहल शुरू हो जाती थी, गहरी खामोशी में डूबा हुआ था।

केवल जाग रहे थे गेट पर तैनात दोनों दरबान। सेठ छबीलदास के बेडरूम के बाहर निगरानी पर तैनात पुलिस के दोनों जवानों के साथ सार्जेंट डियेलो भी गहरी नींद सोया पड़ा था।

इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी और मेजर बलवंत के कदमों की आहट सुनते ही सार्जेंट डियेलो और पुलिस के दोनों कांस्टेबल जाग गए। उन्होंने अपने अफसर और मेजर बलवंत को जल्दी-जल्दी उठकर सेल्यूट दिया और फिर अटेंशन की मुद्रा में खड़े

हो गए।

सार्जेंट डियेलो ने जेब से चाबी निकालकर बेडरूम का दरवाजा खोल दिया।

मेजर बलवंत के साथ इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी भी बेडरूम की एक-एक खिड़की और दरवाजे की बड़ी गहराई से जांच करने लगा। उन दोनों ने सारी खिड़कियों और दरवाजों को खूब अच्छी तरह ठोक-बजाकर देखा। उनकी चटखनियों और फ्रेम की जांच की लेकिन उन्हें किसी भी खिड़की का फ्रेम उखड़ा हुआ नहीं मिला।

“मेजर साहब! सोमा ने बताया था, सेठ छबीलदास ने और स्वयं उस आक्रमणकारी स्त्री ने कहा था कि वह वर्षों पहले मर चुकी है।” इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी ने कहा, “प्रेतात्माओं की गति तो अबाध होती है। दरवाजे और खिड़कियां बंद हों या खुली उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।”

मेजर बलवंत ने इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी की बात के उत्तर में कुछ नहीं कहा। वह बड़ी गम्भीरता से किसी समस्या पर विचार कर रहा था।

“इंस्पेक्टर साहब! चलिए सोमा के घर चलें। हो सकता है, उससे बातचीत करने पर हत्यारे के सम्बन्ध में कोई काम की बात मालूम हो सके।” मेजर बलवंत ने कहा और इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी को साथ लेकर सेठ छबीलदास के बेडरूम से निकल आया।

□ □

सोमा के भाई-बहन सो गए थे, लेकिन लाख कोशिश करने पर भी सोमा को नींद नहीं आई थी। सेठ छबीलदास की हत्या ने उसे बुरी तरह झकझोर कर रख दिया था उसने सेठ छबीलदास पर घातक आक्रमण करने वाली उस स्त्री की हलकी-सी झलक ही देखी थी। उसके बदन पर सफेद बुराक लबादा था, जो गाउन जैसा था। उस सफेद गाउन पर उसके काले-काले बालों की लहराती हुई लटें ऐसी दिखाई दे रही थीं, जैसे नगीने

लटका रही हों। उसका चेहरा बहुत सुन्दर था। लम्बोतरा चेहरा, नुकीली ठोढ़ी, तराशे हुए होंठ और बड़ी-बड़ी कजरारी आंखें। सोमा के दिल और दिमाग में उसकी मुखाकृति जैसे नक्श होकर रह गई थी, न जाने क्यों उसे ऐसा लग रहा था कि उसने उस चेहरे को पहले भी देखा है, लेकिन कब और कहां देखा है, यह उसे याद नहीं आ रहा था।

रात भर जागते रहने के कारण उसकी आंखों में जलन होने लगी थी। उसने तंग आकर पलकें मूंद लीं और फिर एक बार सोने की कोशिश करने लगी।

लेकिन उसे पलकें मूंदे अभी कुछ मिनट ही बीते थे कि फ्लैट के दरवाजे पर रुकने वाली कार और जीप की आवाज सुनते ही उसने फिर पलकें उठा लीं और सिरहाने वाली खिड़की पर पड़ा पर्दा हटाकर बाहर की ओर देखने लगी।

लॉन में लगे बल्ब की रोशनी में उसने जीप से इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी को तेजी से उतरते हुए देखा। उसके होंठों पर न जाने क्यों एक अजीब-सी मुस्कराहट नाच उठी, लेकिन वह मुस्कराहट दूसरे ही पल कार से उतरने वाले एक स्वस्थ और सुन्दर नौजवान को देखते ही न जाने कहां गुम हो गई जो जीप के पीछे-पीछे आने वाली कार से उतर रहा था।

सोमा के बदन में भय और आशंकाओं की ठंडी-ठंडी लहरें दौड़ने लगीं।

फिर दरवाजे पर दस्तक सुनकर उसने उठकर दरवाजा खोल दिया और एक ओर हट कर खड़ी हो गई।

“लगता है सोमा! तुमने आज की सारी रात जागते ही बिताई है।” इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी ने मुस्कराते हुए कहा।

सोमा ने इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी के साथ आने वाले नौजवान को हाथ जोड़कर नमस्ते की और फिर बोली, “सेठ जी के बंगले से लौटने के बाद से अब तक मैं केवल एक ही बात सोचती रही हूं कि दूध जैसे सफेद और चिड़िया के बच्चों के पैरों जैसे हलके-फुलके पंखों जैसे सफेद गाउन वाली वह

रहस्यपूर्ण स्त्री कौन थी? उसके बारे में सोचते-सोचते मुझे अब ऐसा लगने लगा है, जैसे मैंने उसे पहले भी कभी देखा है और एक बार नहीं अनेक बार देखा है। सेठ छबीलदास और स्वयं उस स्त्री के मुंह से यह सुनकर कि वह मर चुकी है और इस समय सेठ छबीलदास, जिसे देख रहे हैं यह केवल उसकी प्रेतात्मा है, मैं भयभीत हो उठी थी, लेकिन इस भय का स्थान एक जिज्ञासा ने ले लिया। मैं यह जानने के लिए बेचैन हो उठी कि वह स्त्री कौन थी!” सोमा के स्वर की गम्भीरता अनुभव करके मेजर बलवंत बड़े ध्यान से उसके चेहरे की ओर देखने लगा।

“सोमा! इनसे मिलो!” इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी ने मेजर बलवंत की ओर इशारा करते हुए कहा, “यह हमारे देश के ही नहीं, बल्कि विश्वविख्यात जासूस मेजर बलवंत हैं।”

सोमा मेजर बलवंत के नाम से तो परिचित थी, लेकिन उसे पहले कभी नहीं देखा था। उसने एक बार फिर दोनों हाथ जोड़कर मेजर बलवंत का अभिवादन करते हुए उल्लसित स्वर में कहा, “अपने देश के जासूस के दर्शन करने की इच्छा वर्षों से थी। तभी से जब मैं कॉलेज में पढ़ा करती थी। मैं और मेरी कई सहेलियां क्लासरूम में प्रोफेसरों की आंखों में धूल झोंककर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित आपके आश्चर्य और दुस्साहस भरे कारनामों को पढ़ा करती थीं आपको इतने निकट से देख पाकर भी मुझे जैसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो पा रहा है कि मेरे सामने जो व्यक्ति खड़ा है, वही विश्वविख्यात जासूस मेजर बलवंत है।”

सोमा की इस भावना के लिए धन्यवाद देने के बाद मेजर बलवंत ने उससे कहा कि वह सेठ छबीलदास के व्यक्तिगत जीवन और उनकी हत्या के सम्बन्ध में जो कुछ भी जानती है, बिना किसी भय या संकोच के बता दे।

सोमा ने सेठ छबीलदास के सम्बन्ध में जो कुछ इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी को बताया था, वही एक बार फिर दोहरा दिया।

बड़े ध्यान से सोमा की बातें सुनने के बाद मेजर बलवंत ने कहा, “सोमा! तुमने बताया है कि सेठ छबीलदास ने जबरदस्ती तुम्हारे मुंह में शराब उड़ेल दी थी जिसके हलक से उतरते ही नशे के बजाय तुम पर बेहोशी छा गई थी। तुम्हारी वह बेहोशी तब खत्म हुई, जब तुमने सेठ छबीलदास की दर्द-भरी चीखें सुनी।”

“जी हां।” सोमा ने धीरे से उत्तर दिया।

“मेरा अनुभव है कि जब दिल या दिमाग को लगने वाले किसी शॉक या जबरदस्त झटके के कारण बेहोशी दूर होती है, तो उस व्यक्ति की आंखें, तो एकदम खुल जाती हैं, लेकिन कुछ सेकिन्ड या एक-आध मिनट के लिए उसका दिमाग काम करना छोड़ देता है। जिस समय तुम्हारी बेहोशी दूर हुई, तुम्हारी भी ठीक यही हालत थी। उस स्त्री के बारे में यह सुनकर कि वह वर्षों पहले मर चुकी है और यह उसकी प्रेतात्मा है, तुम्हारे मस्तिष्क को एक और नया, लेकिन पहले से अधिक प्रभावकारी शॉक लगा और तुम्हारे मस्तिष्क के काम करने की शक्ति पहली बार की अपेक्षा इस बार कुछ और अधिक समय के लिए साथ छोड़ गई। इसी स्थिति में तुम यह नहीं देख पाई कि वह रहस्यमयी स्त्री उस बेडरूम से जिसकी सारी खिड़कियां और दरवाजे बंद थे किस तरह बाहर निकल गई?” मेजर बलवंत ने सोमा की मानसिक स्थिति का विस्तार से विश्लेषण करते हुए कहा।

सोमा ही नहीं इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी भी बड़ी तन्मयता से मेजर बलवंत के एक-एक शब्द को सुन रहा था।

“दरअसल वह स्त्री उस बेडरूम से बाहर नहीं गई थी। जैसे ही तुम तेजी से उठकर बैठीं, उस स्त्री की नजर तुम पर पड़ गई और वह अपने सफेद पंखों जैसे लबादे हो हवा में दूर तक लहराते हुए बड़ी फुर्ती से उस पलंग के नीचे सरक गई, जिस पर तुम बैठी हुई थीं। इस बात का प्रमाण है खून की वे नन्ही-नन्ही थोड़ी-सी बूंदें, जिन्हें मैंने पलंग के नीचे फर्श पर

पड़ा देखा है। अगर कालीन पूरे बेडरूम में बिछा होता, तो खून की वे नन्ही-नन्ही बूंदें मुझे कभी भी दिखाई न देतीं। मेरा खयाल है, खून की वे नन्ही-नन्ही बूंदें उस नुकीले हथियार की नोक से टपकी थीं, जिससे उसने सेठ छबीलदास की पीठ और पेट को ऊपर से लेकर नीचे तक चीर डाला था।”

मेजर बलवंत की इस बात को सुनकर सोमा और इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी की आंखें आश्चर्य से फैल गईं।

“वह स्त्री उस पलंग के नीचे से उस समय निकली, जब तुम सेठ छबीलदास की लहलुहान लाश देखकर वहां से भाग छूटी थीं। मेजर बलवंत ने कहा, “वह तुम्हारे पीछे-पीछे बेडरूम से निकली और फिर जिस रास्ते से तुम बंगले की बाउंड्री पार करके निकली थीं वह भी तुम्हारे पीछे-पीछे उसी रास्ते से फरार हो गई। वह कोई प्रेतात्मा नहीं थी। वह जीती-जागती हाड़-मांस की बनी औरत थी। हो सकता है, सेठ छबीलदास ने उसकी मौत के सम्बन्ध में झूठी खबर सुनी हो। यह भी हो सकता है कि किसी कारण उस स्त्री ने ही अपने मर जाने की झूठी खबर उड़ा दी हो और सेठ छबीलदास ने उस खबर को सच मान लिया हो।”

“लेकिन छबीलदास की हत्या क्यों हुई, यह स्पष्ट है।” सोमा बोली, “उस स्त्री ने सेठ छबीलदास से स्पष्ट शब्दों में कहा था कि तुमने और तुम्हारे चार मित्रों ने धोखे से मेरी आबरू लूटी थी। उस समय मैं जिस तरह तड़पी और छटपटाई थी ठीक उसी तरह तड़पा-तड़पा कर तुम्हें और तुम्हारे चारों मित्रों को मारूंगी। तुम्हें तड़पते-छटपटाते देख मेरी आत्मा को शान्ति मिलेगी।”

“यह तो ठीक है सोमा कि उस स्त्री ने अपनी आबरू लूटने वाले सेठ छबीलदास को मार डाला। अगर मेरे हाथ में कानून हो तो, मैं नारी समाज को अधिकार दे दूँ कि वह अपनी आबरू लूटने वाले को जी-भर कर तड़पा-तड़पाकर मार डाले और उसका यह बदला हत्या का अपराध न माना जाए, लेकिन

सोमा! मुझे सेठ छबीलदास और उसके चारों मित्रों द्वारा उस स्त्री के साथ किए गए सामूहिक बलात्कार के पीछे कोई बहुत ही गहरा रहस्य दिखाई दे रहा है सामूहिक बलात्कार के बाद ही उस स्त्री का अपने-आपको मृत घोषित, प्रसारित करने के पीछे अपने साथ बलात्कार करने वाले इन पांचों का भी कुत्तों की तरह हत्या ही उद्देश्य नहीं था। कोई और भी उद्देश्य था वरना वह स्त्री इन लोगों की हत्या उसी समय करके अपने सीने में धधकती बदले की आग बुझा सकती थी। उसे इतने वर्ष इन्तजार करने की क्या जरूरत थीं।” मेजर बलवंत ने सोच में डूबे स्वर में कहा, “उस स्त्री के शब्दों से स्पष्ट है कि जिस तरह उसने सेठ छबीलदास की हत्या की थी, उनके चारों मित्रों की भी हत्या कर डालेगी। सेठ छबीलदास के वे चारों मित्र कौन-कौन हैं और कहां रहते हैं, यह जानना बहुत जरूरी है। तभी हम उन चारों को मरने से बचा सकते हैं और यह पता लगा सकते हैं कि वह स्त्री कौन थी और उसके साथ इन पांचों अपराधियों ने जो अत्याचार किया था उसके पीछे वास्तविक कारण क्या था?”

सोमा और इंस्पेक्टर अवस्थी खामोश बैठे मेजर बलवंत के चेहरे की ओर देखते रहे, जिस पर एक उत्तेजना भरा संकल्प झलक उठा था।

“आइए, अब चलें।” कुछ सोचकर मेजर बलवंत उठ खड़ा हुआ।

“मेजर साहब! सोमा ने सेठ छबीलदास पर घातक वार करते हुए उस स्त्री को देख लिया था। हो सकता है, वह स्त्री अपने विरुद्ध प्रमाण मिटाने के लिए सोमा को मार डालने की कोशिश करे?” इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी ने कहा।

“नहीं, इंस्पेक्टर! उस स्त्री को अगर सोमा की ओर से अपने अहित की आशंका होती, तो वह सोमा को उसी समय ठिकाने लगा देती, जिस समय सोमा पलंग पर बेसुध पड़ी थी।” मेजर बलवंत ने कहा, “वह सोमा को अपनी तरह ही

पुरुष द्वारा शोषित और पीड़ित समझी थी। इसलिए सोमा के प्रति उसके मन में दया और सहानुभूति पैदा हो गई थी। फिर सोमा जैसी पीड़ित और शोषित लड़की उसे हानि भी क्या पहुंचा सकती है? मेरा विश्वास है कि वह सोमा के हित के लिए सेठ छबीलदास जैसे किसी भी व्यक्ति की जान तो ले सकती है, लेकिन सोमा के अहित के बारे में सोच भी नहीं सकती। इसलिए सोमा की चिन्ता करने की जरूरत नहीं। हां, सोमा! तुम्हें सेठ छबीलदास की हत्या के बारे में अपनी जबान बिल्कुल बंद रखनी होगी।”

“आप जैसा कहेंगे, मैं वैसा ही करूंगी।” सोमा ने उत्तर दिया।

मेजर बलवंत और इंस्पेक्टर सुरेश अवस्थी सोमा के फ्लैट से रवाना हुए तो सुबह के सूरज ने अपनी सुनहरी किरणों का जाल सागर की लहरों पर फैलाना शुरू कर दिया था।

□□

मेजर बलवंत अपने बंगले में पहुंचा, तो उसके साथी रात निश्चय किए गए कार्यक्रम के अनुसार शिकारियों के रूप में ड्राइंगरूम में बैठे सुबह की चाय पी रहे थे, वे शिकार पर जाने की सारी तैयारियां कर चुके थे।

“लगता है तुम लोग तैयार हो चुके हो?” मेजर बलवंत ने कहा और अपनी इजीचेयर पर आ बैठा।

“जी हां।” डोरा ने कहा और प्याले में चाय उड़ेलकर प्याला मेजर बलवंत की ओर बढ़ा दिया।

मेजर बलवंत ने चाय का एक लम्बा घूंट भरा और फिर केंडीबीच पर शहर के सुप्रसिद्ध उद्योगपति सेठ छबीलदास की हत्या की रहस्यपूर्ण कहानी सुनाने के बाद बोला, “मेरा खयाल है, तुमने रात जो कार्यक्रम बनाया था कम-से-कम आज के लिए स्थगित कर दिया जाए, क्योंकि सेठ छबीलदास के परिवार में अब उनके छोटे भाई के बच्चों के अलावा और कोई नहीं है, और वर्षों से उन लोगों से कोई सम्बन्ध नहीं है; लेकिन छबीलदास

की सम्पत्ति का उनके छोटे भाई के बच्चों के अलावा और कोई कानूनी वारिस नहीं है। सेठ छबीलदास के पुराने नौकर रामदास को जरूर मालूम होगा कि सेठ छबीलदास के छोटे भाई कहां रहते थे। उनकी मृत्यु के बाद उनके परिवार का क्या हुआ? सोनिया और कल्याणी और तुम दोनों नाश्ता करके सेठ छबीलदास के बंगले में चली जाओ और इसके बारे में पता करो। अगर पता मिल जाए, तो उनसे मिलकर कहना कि वे फौरन मुझसे आकर मिले।”

“जी बहुत अच्छा!” सोनिया और कल्याणी ने कहा और वे दोनों उठ कर कपड़े बदलने चली गईं।

“राजीव! सेठ छबीलदास की गिनती बम्बई के गिने-चुने उद्योगपतियों में की जाती थी, लेकिन उनके बेटे नगीनदास ने पिता के उद्योगों को अपने हाथ में लेने के बजाय अपना स्वतन्त्र कारोबार शुरू किया था। उसने बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन तथा आर्चीटेक्ट की शिक्षा प्राप्त की थी और उसने बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन का काम शुरू कर दिया था। उसे अफ्रीका के देश टांगानीका की सरकार ने कुछ इमारतें बनाने के ठेके भी दिए थे, दो-ढाई महीने पहले जब वह विवाह के बाद अपनी पत्नी को ससुराल से विदा कराकर लौट रहा था, उसकी कार का एक्सीडेंट हो गया और उसकी तथा उसकी नवविवाहिता पत्नी की दुर्घटनास्थल पर मृत्यु हो गई। नगीनदास का ऑफिस भी नरीमन प्वाइन्ट पर उसी सुमित्रा मेन्शन में था, जिसमें सेठ छबीलदास के उद्योग समूह के ऑफिस हैं। वह पूरी बिल्डिंग सेठ छबीलदास की ही है। तुम और संजीव ठीक दस बजे वहां पहुंच जाना। नगीनदास और छबीलदास के कारोबार और उनके जीवन के बारे में जितनी अधिक-से-अधिक जानकारी प्राप्त हो सकेगी, हमें इस केस को हल करने में उतनी ही सुविधा हो जाएगी।” मेजर बलवंत ने कहा।

“आपको सेठ छबीलदास के सम्बन्ध में यह जानकारी कहां से प्राप्त हुई।” डोरा ने पूछा।

“ये तमाम जानकारियां सेठ छबीलदास के ड्राइवर फूलसिंह से प्राप्त हुई हैं, लेकिन ये अधूरी हैं, क्योंकि ड्राइवर फूलसिंह को सेठ छबीलदास के यहां नौकरी करते हुए केवल ढाई तीन वर्ष ही हुए हैं। इसलिए सेठ छबीलदास, उनके छोटे भाई शिवदास उनके बेटे नगीनदास और उनके कारोबार के बारे में अधिक नहीं जानता।” मेजर बलवंत ने कहा, “सेठ छबीलदास के सम्बन्ध में सबसे अधिक जानकारी उनके पुराने नौकर रामदास को है, जो बचपन से ही सेठ छबीलदास के साथ रहा था, लेकिन उसे सेठ छबीलदास से इतना लगाव था कि उनकी मृत्यु का उसके दिमाग पर इतना गहरा असर पड़ा है कि वह अपनी सुध-बुध ही खो बैठा है। हो सकता है दो-एक दिन में वह सामान्य स्थिति में आ जाए।”

“ठीक है। हम दोनों नरीमन प्वाइन्ट पर सेठ छबीलदास के ऑफिस में चले जाएंगे।” राजीव ने कहा।

“मेरा खयाल है दोपहर तक तुम लोगों का काम समाप्त हो जाएगा। मेरी नजर में सेठ छबीलदास की हत्या का केस इतना महत्वपूर्ण नहीं है, जितना मोनार्क जलयान पर हुए अन्ना फ्रेन्कलिन का दुस्साहस पूर्ण अपहरण। तुम लोग दोपहर का खाना खाने के बाद ही अपने निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार यहां से रवाना हो जाना। सेठ छबीलदास के सम्बन्ध में जब तक पूरी जानकारी नहीं मिल जाती, तब तक उनकी हत्या करने वाली स्त्री के सम्बन्ध में यह पता नहीं चल जाता कि वह कौन थी, उसकी मृत्यु हुई या नहीं, इसके केस में कुछ नहीं हो सकता। इसके अलावा यह पता लगाना भी जरूरी है कि सेठ छबीलदास के वे चारों मित्र कौन थे और इस समय कहां हैं। सेठ छबीलदास की हत्या करने वाली उस रहस्यपूर्ण स्त्री ने कहा था कि वह उन्हीं की तरह उनके उन चारों मित्रों को भी तड़पा-तड़पाकर मार डालेगी, जिन्होंने उनके साथ ही उसकी आबरू लूटी थी। अगर सेठ छबीलदास के उन चारों मित्रों का पता न चला, तो वह रहस्यपूर्ण औरत उन चारों को भी मौत के

घाट उतार देगी।” मेजर बलवंत ने कहा और उठकर अपने ऑफिस में चला गया।

□□

दोपहर तक सोनिया और कल्याणी सेठ छबीलदास के बंगले से लौट आईं। रामदास की हालत सामान्य हो चुकी थी, लेकिन वह सेठ छबीलदास के छोटे भाई की पत्नी और बच्चों के बारे में कुछ नहीं बता सका। उसने सिर्फ इतना ही बताया कि लगभग पन्द्रह-सोलह साल पहले एक ट्रेन एक्सीडेंट में उनके छोटे भाई शिवदास की मृत्यु हो गई थी। जब बेसहारा हो जाने के बाद छोटे भाई शिवदास की पत्नी अपनी दो बेटियों और एक बेटे को लेकर उनके पास आई, तो उन्होंने उसे बुरी तरह फटकारकर घर से निकाल दिया। उसके बाद शिवदास की विधवा पत्नी अपने बच्चों को लेकर कहां गई मालूम नहीं।

लेकिन राजीव और संजीव ने सेठ छबीलदास और नगीनदास के कारोबार के बारे में जो रिपोर्ट प्रस्तुत की उससे मेजर बलवंत को सन्तुष्टि नहीं हुई। उसने निश्चय कर लिया कि वह फुर्सत मिलने पर खुद ही इस काम को करेगा, क्योंकि उस रिपोर्ट ने उसके मन में कई संदेह पैदा कर दिए थे।

सुबह से ही आकाश के सीमाहीन वक्षस्थल को रौंदती हुई काली-मटियाली दानवाकार घटाएं बढ़ती चली आ रही थीं। लगता था, जैसे दूर क्षितिज तक गहरे स्याह रंग का विशाल तम्बू तनता चला जा रहा हो। चारों ओर इतना घना अंधेरा छा गया था कि रात में बदलकर रह गया था।

मां और अमृता के अलावा नौकर-नौकरानियों ने भी अमित से आग्रह किया था कि इतने खराब मौसम में सोनपुर न जाए। अगर मौसम खुल जाए तो कल या परसों चला जाए, लेकिन अमित अपनी आदत से मजबूर था। बचपन से ही उसकी यह आदत रही थी कि वह एक बार जिस काम को करने का निश्चय कर लेता था, उसे हर हालत में पूरा करने का निश्चय कर लेता था, उसे हर हालत में पूरा कर के रहता था।

उसने सब लोगों के आग्रह, अनुरोध और सम्भावित आशंकाओं को अनसुना कर दिया था और बूँदा-बांदी की परवाह न करते हुए भी अपनी नयी कार द्वारा सोनपुर की ओर चल पड़ा था।

उसका खयाल था कि जब तक यह बूँदा-बांदी तेज बारिश में बदलेगी वह बड़े आराम से सोनपुर पहुंच जाएगा। सौ सवा सौ किलोमीटर का सफर भी भला कोई सफर होता है।

लेकिन अभी उसकी कार बसई रोड तक भी नहीं पहुंची थी कि हलकी-सी बूँदा-बांदी भीषण तूफान में बदल गई। जैसे-जैसे बारिश तेज होती गई थी, हवा में भी तेजी आती चली गई थी। अब तो ऐसा महसूस होने लगा था कि तूफानी हवा के ये थपेड़े या तो उसे उठाकर सड़क के बायीं ओर फैले सीमाहीन सागर की गरजती लहरों में फेंक देंगे या फिर सड़क के दायीं ओर दूर तक बिखरी विभिन्न आकार की नुकीली चट्टानों पर ले जाकर डूबो देंगे।

समुद्र के किनारे-किनारे चट्टानों की गोद में बनी उस ऊंची-नीची टेढ़ी-मेढ़ी सड़क ने नहर का रूप ले लिया था। उस बहती हुई पानी की धारा में इतनी तेजी थी, जैसे वह कोई पहाड़ी नदी हो।

वह बड़ी सावधानी से कार ड्राइव करता हुआ पालघर पहुंचा, उसके जी में आया कि वह सोनपुर जाने का प्रोग्राम स्थगित कर दे और रात किसी होटल में बिताकर सुबह सोनपुर जाए, लेकिन तभी उसे अपनी शर्ट की जेब में रखे उस पत्र की याद आ गई, जो उसे आज दोपहर की डाक से मिला था।

यह पत्र उसकी इस्टेट के पुराने और वफादार मैनेजर यशवंत पाटिल का था जिन्होंने अपने इस पत्र में लिखा था कि पिछले एक महीने से उन्हें बुखार आ रहा है। हालांकि सोनपुर में अच्छे डॉक्टरों और वैद्यों की कमी नहीं है, लेकिन सभी डॉक्टर और वैद्य उन्हें दवाइयां देकर थक चुके हैं। किसी की भी दवा से रक्ती भर भी आराम नहीं पहुंच रहा है। वह चाहते हैं कि

अगर कुछ दिनों के लिए अमित सोनपुर चला आए, तो वह बम्बई जाकर किसी नर्सिंग होम में एडमीशन ले लें, ताकि उनका इलाज ठीक ढंग से हो सके।

अमित को अपने पुराने मैनेजर यशवन्त पाटिल से उतना ही मोह और लगाव था, जितना एक पुत्र को अपने पिता से होता है। इसमें कोई सन्देह भी नहीं था कि यशवन्त पाटिल से उसे जो स्नेह और ममत्व मिला था वह अपने पिता से भी नहीं मिला था। उसने इस दुनिया में आने के बाद जब पहली-पहली बार आंखें खोली थीं, तो पिता के स्थान पर उसने यशवन्त पाटिल के चेहरे को ही देखा था। फिर पूरे पन्द्रह वर्ष उसने यशवन्त पाटिल के पिता तुल्य स्नेह की छांव में बिताए थे।

उसके पिता भूपेंद्र राव तो उसी दिन सोनपुर छोड़कर बम्बई चले गए थे, जिस दिन भारत सरकार ने जागीरदारी प्रथा की समाप्ति की घोषणा की थी। अमित की मां राजलक्ष्मी और मैनेजर यशवन्त पाटिल ने उन्हें बहुत समझाया था, लेकिन उन्होंने किसी की भी बात पर ध्यान नहीं दिया था। उन्होंने एक ही वाक्य में अपना निर्णय सुनाकर सबको खामोश कर दिया था। उन्होंने कहा था, "जिस सोनपुर पर पिछली तीन शताब्दियों से मेरे परिवार का शासन रहा हो। जिस सोनपुर में मैंने एक छत्र सम्राट की तरह दिन बिताए हों, उस सोनपुर में मैं एक सामान्य नागरिक की हैसियत से मैं नहीं रह सकता।"

उसी रात दो नौकरानियों और पांच नौकरों को लेकर वह बम्बई चले गए और अपने पाली हिल वाले बंगले में रहने लगे थे। अमित की मां राजलक्ष्मी तथा परिवार के अन्य लोग उनके पास बम्बई जाते रहते थे, लेकिन वह सोनपुर कभी नहीं आए। आई थी केवल एक कलश में उनकी चिता की मुट्ठी भर भस्म, जिसके ऊपर गढ़ी के दीवानखाने के सामने वाले बगीचे में संगमरमर की एक सुन्दर समाधि बनवा दी गई थी।

पिता की मृत्यु के बाद मैनेजर यशवन्त पाटिल ने अमित को एक पल के लिए भी पिता की कमी महसूस नहीं होने दी थी।

अगर यशवन्त काका न होते, तो वह बम्बई यूनीवर्सिटी से एम.एस-सी. करने के बाद डॉक्टरी की उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए अमेरिका न जा पाता।

आज दोपहर को यशवन्त काका का पत्र पाते ही अमित बेचैन हो उठा था। उसे अपनी सोनपुर की जमीन-जायदाद और पूर्वजों की गढ़ी की उतनी चिन्ता नहीं थी, जितनी चिन्ता अपने यशवन्त काका के स्वास्थ्य की थी। इसीलिए वह मां और अमृता के अनुरोध को ठुकराकर मौसम की भयानकता की परवाह न करके सोनपुर खाना हो गया था।

पालघर के एक रेस्तरां में गर्मागर्म कॉफी पीने के बाद वह फिर अपनी कार में आ बैठा था और फिर मूसलाधार बारिश और तूफानी हवा के भयानक थपेड़ों को चीरती हुई उसकी कार सोनपुर की ओर जाने वाली सड़क पर दौड़ने लगी थी।

□ □

अमित की कार सोनपुर से लगभग एक मील दूर नदी के पुल पर पहुंची ही थी कि अचानक आंधी-पानी के उस भयानक तूफानी शोर को चीरकर कई शक्तिशाली राइफलों की गोलियों की तड़तड़ाहट गूंज उठी। उस तड़तड़ाहट के साथ-साथ कई दर्द-भरी चीखें उन भयानक आवाजों को रौंदकर लहराती चली गईं।

अमित का पांव बड़ी तेजी से फुट ब्रेक पर चला गया और कार पुल के बीचोबीच रेलिंग के सहारे पहुंचकर रुक गई।

वह अपनी सीट पर बैठा-बैठा गोलियों की तड़तड़ाहट और दर्द-भरी चीखों को सुनने लगा, लेकिन आंधी-पानी के उस तूफानी शोर में वह यह निश्चय नहीं कर पाया कि गोलियों और दर्द-भरी चीखों की आवाजें किस ओर से आ रही हैं।

उसने डैशबोर्ड पर पड़ा सिगरेट का पैकेट और लाइटर उठा लिया और सिगरेट के हलके-हलके कश लेते हुए रेलिंग के पार अंधेरे में मीलों तक फैली बाढ़ भरी नदी की विकराल और क्रूर नागिन की तरह फुंकारती लहरों की ओर देखने लगा,

लेकिन अंधेरा इतना घना था कि उसे दूर तक बिछी एक मटमैली चादर के अलावा और कुछ दिखाई नहीं दे रहा था।

सहसा उसकी नजरें अपनी कलाई पर बंधी घड़ी की ओर घूम गई। शाम के सात बज रहे थे।

उसने विंडस्क्रीन के पार दूर तक नजरें दौड़ाकर देखा। चारों ओर घटाटोप अंधेरे और वीरानी के अलावा और कुछ न था।

उसने सिगरेट का आखिरी लम्बा कश लिया और डैशबोर्ड के साथ लगी ऐश-ट्रे में सिगरेट मसलकर कार के फुट ब्रेक पर से पांच हटा लिया।

कार एक झटके के साथ आगे बढ़ी और पुल पार करते अपनी पूरी रफ्तार से सोनपुर की ओर दौड़ने लगी।

कुछ सेकेंड के बाद ही कार बहुत ही तेजी से ढलान पर दौड़ रही थी।

लेकिन अभी ढलान आधी भी पार नहीं हो पाई थी कि सहसा अमित की नजरें सड़क से बाएं किनारे पर खड़े बरगद के सदियों पुराने विशाल वृक्ष की ओर अनचाहे ही घूम गई।

कार की दूर तक फैली हेडलाइट की तेज दूधिया रोशनी में उसने बरगद के उस पेड़ के नीचे एक युवक और एक युवती को पानी में भीगते खड़े देखा।

युवक के बदन पर घुटनों तक ऊंची धोती और कुर्ता था। कुर्ते के ऊपर कमर पर केसरिया रंग का एक दुपट्टा बंधा हुआ था। उसके होंठों पर पतली-पतली तलवार जैसी मूंछें थी।

लेकिन उसके साथ जो युवती थी उसके बदन पर गुलाबी रंग की जरी की साड़ी और उसी रंग का ब्लाउज था। उसने साड़ी का आंचल अपनी कमर पर लपेट रखा था। उसके गहरे काले बाल इतने लम्बे थे कि उसके घुटनों के नीचे तक लहरा रहे थे।

अमित ने सोचा, शायद वे लोग सोनपुर जा रहे हैं। उसने जल्दी से ब्रेक लगाए, ताकि उन दोनों को इस आंधी-पानी से बचाकर सोनपुर तक ले चले।

अमित ने इतनी फुर्ती से ब्रेक लगाए कि ब्रेकों के साथ-साथ कार के टायर भी चीख उठे और एक जोरदार झटके के साथ कार जैसे ही उस पेड़ के पास पहुंचकर रुकी, उस स्त्री की दर्द भरी चीख बाढ़ भरी नदी की क्रुद्ध नागिन सी फुंकारती लहरों और आंधी-पानी के उस भयानक शोर को चीरकर गूंज उठी, जिसे उसके पीछे खड़े युवक ने अमित की कार के उस पेड़ के करीब पहुंचते ही एक जोरदार धक्के के साथ कार के आगे धकेल दिया था और फिर पलटकर बरगद के विशाल पेड़ के नीचे फैले घटाटोप अंधेरे में भागता हुआ न जाने कहां गुम हो गया था।

मौसम में ठंडक होते हुए भी अमित के बदन से पीसने के सौते फूट पड़े। उसने एक नजर अपनी कार के टायरों के आगे बहते हुए खून पर डाली, जो बारिश के पानी के साथ मिलकर बड़ी तेजी से सड़क पर फैलता चला जा रहा था।

उसने जल्दी से ड्राइविंग सीट का दरवाजा खोला। बरसाती उसके साथ वालों सीट पर ही पड़ी हुई थी, लेकिन वह भीगने की चिन्ता किए बिना मूलसाधार बारिश में ही कार से निकला और झपटकर सामने की ओर पहुंच गया।

फिर उसके कांपते हुए होंठों से एक दबी-दबी सी चीख निकल गई। युवती का लहलुहान बदन कार के अगले टायरों के पीछे कार के नीचे पड़ा था।

उसने झुककर देखा। कार का बायां टायर उस युवती की पीठ पर से गुजरता चला गया था। उसकी रीढ़ की हड्डियां चकनाचूर हो गई थीं और उसकी दबी-दबी चीखें सुनाई दे रही थीं।

अमित पेट के बल कार के नीचे सरक गया। उसने उस घायल युवती को अपनी दोनों बांहों पर उठा लिया और फिर पेट के बल सरकता हुआ उसे बाहर ले आया।

युवती बुरी तरह छटपटा रही थी। उसकी पीठ से खून के साथ-साथ गोشت और हड्डियों के छोटे-छोटे टुकड़े सड़क पर

भरे पानी में मिलकर बहते चले जा रहे थे।

अमित ने उसे पलटकर अपनी गोद में समेट लिया और उसके चेहरे की ओर देखने लगा। उस युवती की उम्र उन्नीस बीस वर्ष से अधिक नहीं थी। वह असाधारण सुन्दरी थी, लेकिन इस समय उसके सुन्दर और आकर्षक चेहरे तथा झील जैसी गहरी और खूबसूरत आंखों की सतह पर मौत की भयानक परछाइयां डोल रही थीं।

युवती ने धीरे से कराहते हुए अपनी अधमंडी पलकों को थोड़ा-सा ऊपर उठाकर अमित की ओर देखा। वह कुछ सेकिन्ड एकटक उसके चेहरे को देखती रही फिर उसके पीड़ा से बोझिल सन्तरे की फांकों जैसे भरे-भरे तराशे हुए होंठों पर एक अजीब-सी मुसकान की धुंधली-सी रेखा खिंच गई। कुछ कहने के लिए उसके होंठ फड़फड़ाए, लेकिन हलकी-सी भी आवाज नहीं निकली। उसकी कांपती हुई बांहें अमित के चेहरे की ओर उठीं, लेकिन फिर गिर गईं। उसने तड़पते हुए एक हिचकी ली और फिर उसकी गर्दन अमित की गोद में ही एक ओर को दुलक गई।

अमित के होंठों से एक दर्द-भरी चीख निकल गई। उसे लगा, जैसे उसकी गोद में उस युवती ने अन्तिम सांस ली हो, जिसे वह संसार में सबसे अधिक प्यार करता था।

सहसा ही वह अपरिचित युवती उसे जन्म-जन्मान्तर की परिचित दिखाई देने लगी थी।

उसकी इस दुखद मौत पर वह अपने-आपको रोक नहीं पाया। उसने उस युवती की लहलुहान लाश को अपनी बांहों में जकड़कर अपने सीने से चिपटा लिया और बच्चों की तरह बिलख-बिलखकर रोने लगा।

रोते-रोते ही उसके होंठ उस युवती के बर्फ जैसे ठंडे होंठों की ओर झुकते चले गए।

अमित के गर्म-गर्म होंठों ने उस युवती के बर्फ जैसे ठंडे होंठों को छुआ-भर ही था कि उसकी चेतना बेसुधी में बदलती

चली गई और वह युवती की लहलुहान लाश को अपने सीने से चिपटाए-चिपटाए सड़क पर एक ओर को लुढ़कता चला गया।

उसकी समस्त चेतना उसका साथ छोड़ गई थी।

भयानक कार एक्सीडेंट

न जानें अमित कब तक उस मूसलाधार बारिश में पानी से भरी सड़क पर बेहोश पड़ा रहा। उसे जब होश आया, तो वह किसी कार की पिछली सीट पर पड़ा।

उसने कराहते हुए जब धीरे-धीरे आंखें खोलीं, तो उसकी नजरें कार के भीतर जलते हुए बल्ब की रोशनी में उन कई चेहरों पर पड़ी थीं, जो चिन्ता भरी नजरों से उसीकी ओर टकटकी लगाए देख रहे थे।

“भगवान का शुक्र है कि आपको होश आ गया।” उसके चेहरे पर झुके एक नौजवान ने सन्तोष की सांस लेते हुए कहा।

“अगर आपकी बेहोशी पन्द्रह-बीस मिनट और इसी तरह बनी रहती, तो हम आपको बम्बई ले जाते।” एक युवती हलकी-सी मुस्कराहट के साथ बोली, “आपकी कार में हमें आपका ड्राइविंग लाइसेंस मिल गया था। हम आपको ड्राइविंग लाइसेंस पर लिखे पते पर पहुंचा देते।”

“आप...लोग...कौन...हैं...?” अमित ने अपने ऊपर झुके चेहरों को ध्यान से देखने की कोशिश करते हुए रुक-रुक कर पूछा।

“हम लोग भी बम्बई के ही रहने वाले हैं। इधर सोनपुर के जंगल में शिकार खेलने आए थे, लेकिन दोपहर को जैसे ही जंगल में पहुंचे बारिश शुरू हो गई। शाम तक हम लोग सोनपुर के पुराने जागीरदारों की बनवाई हुई उस पुरानी इमारत के खंडहरों में बैठे बारिश रुकने का इन्तजार करते रहे, जिसमें वे लोग शिकार के दौरान ठहरा करते थे, लेकिन जब बारिश ने रुकने का नाम ही नहीं लिया, तो मजबूर होकर हम लोग वहां से चल पड़े। यहां पहुंचे, तो आपको आपकी कार के सामने

सड़क पर बहते पानी में बेहोश पड़े देखा।" अमित पर झुके हुए युवक ने बताया।

"और...और...वह...लाश...?" अमित ने खोये-खोये स्वर में अटक-अटककर पूछा।

"कौन-सी लाश?" उस नौजवान ने जल्दी से प्रश्न किया।

"उस यवुती की लाश, जिसे उसके साथी नौजवान ने मेरी कार के आगे धकेल दिया था और फिर मेरी कार का एक टायर उसकी रीढ़ की हड्डी को चकनाचूर करता हुआ गुजर गया था।" अमित ने जल्दी से बैठते हुए कहा।

"क्षमा कीजिए! हमने वहां कोई लाश नहीं देखी।" उस युवक ने उत्तर दिया।

"फिर वह लाश कहां गई? कौन उठा ले गया?" अमित ने चिन्ता भरे स्वर में जैसे-अपने-आपसे पूछा। फिर अपनी बांहों और अपनी सफेद शर्ट तथा सफेद पतलून को बड़े ध्यान से देखने लगा।

लेकिन उसकी उन बांहों और कपड़ों पर खून का नन्हा-सा दाग तक कहीं दिखाई नहीं दे रहा था, जो उस युवती की लाश से बहते गोشت के टुकड़ों और खून से भर गए थे।

वह अपने-आप में गुम-सुम बैठा रह गया। उसकी आंखें आश्चर्य से फैलती चली जा रही थीं। दिमाग में तरह-तरह की आशंकाएं जाग उठी थीं और उसका सारा बदन किसी अज्ञात भय से थरथर कांपने लगा था।

"उसके आस-पास बैठे तीनों युवक और तीनों युवतियां बड़े ध्यान से उसके चेहरे और आंखों से बरसते आश्चर्य, दुश्चिन्ताओं, भय तथा आतंक को देख रहे थे।

सहसा उस युवक ने आंख से अपने साथियों को कुछ इशारा किया और फिर अमित के पास पिछली सीट पर आ बैठा और उसके कंधे पर अपनी बांह रखकर उसके कांपते हुए हाथों को थामते हुए बोला, "अमित बाबू! रात के नौ बज चुके हैं। मेरे सभी साथी ड्राइविंग जानते हैं। अगर आप बम्बई चलना चाहें,

तो हम आपको बम्बई ले चलते हैं। वैसे आपकी कार का रुख देखकर, तो ऐसा लगता है कि आप बम्बई से आ रहे हैं और पास के ही किसी शहर जा रहे थे। हमें बताइए। हम आपको वहीं पहुंचा देंगे।"

"मैं सोनपुर जा रहा था।" अमित ने अपने-आपको संभालने की कोशिश करते हुए बताया, फिर एक पल रुककर प्रार्थना भरे स्वर में बोला, "यदि आप लोग मुझे सोनपुर पहुंचा दें, तो बड़ी कृपा होगी। सोनपुर यहां से मुश्किल से तीन-चार फर्लांग दूर होगा। शहर के शुरू होने से पहले ही, जो झील है, उसके दाएं किनारे पर एक बहुत बड़ी गढ़ी बनी हुई है। आप मुझे वहीं पहुंचा दीजिए।"

"ठीक है।" उस युवक ने कहा और फिर एक युवती की ओर देखते हुए बोला, "डोरा! तुम अमित बाबू की कार ले चलो। अपने साथ कल्याणी और डेजी को भी ले जाओ। मैं अमित बाबू को अपनी कार में लेकर आगे-आगे चलता हूं।"

तीनों युवतियां बरसते पानी में कार से निकलीं और अमित की कार में जा बैठीं।

युवक ने अमित को कंधों से पकड़कर अपनी कार की पिछली सीट पर लिटा दिया और फिर स्वयं ड्राइविंग सीट पर जा बैठा।

थोड़ी देर के बाद उन नौजवानों की तीनों कारें सोनपुर की ओर बढ़ चलीं।

अमित की कार उस नौजवान की कार के पीछे थी, जिसे वह युवती ड्राइव कर रही थी। जिसे युवक ने डोरा के नाम से सम्बोधित किया था।

□□

गढ़ी के विशाल फाटक के बाहर कार के हार्न की आवाज सुनकर दोनों दरबान चौंककर उठ खड़े हुए।

"इस आंधी-पानी में इतनी रात गए कौन आया है?" बूढ़े दरबान जगतसिंह ने फाटक की ओर बढ़ते हुए कहा और फिर

खिड़की के पास पहुंचकर उसने ऊंची आवाज में पूछा, “कौन?”

“फाटक खोलो दरबान! मैं अमित हूं।” अमित ने भी ऊंची आवाज में उत्तर दिया।

दरबान जगतसिंह ने जल्दी से अपने कुर्ते की जेब में से चाबियों का गुच्छा निकाला और फाटक खोल दिया।

चारों गाड़ियां एक-दूसरे के पीछे फाटक पार करके अंदर चली गईं।

“दीवानजी कहां हैं, जगतसिंह!” अमित ने बूढ़े दरबान से पूछा।

“यहीं हैं। मैं दीवानखाने का दरवाजा खोल देता हूं। आप वहां चलिए। तब तक रतनसिंह दीवानजी को बुला लाएगा।” जगतसिंह ने कहा और चाबियों का गुच्छा लिए हुए दीवानखाने की ओर चल दिया।

“जगतसिंह! कार में आ जाओ। वरना दीवानखाने तक पहुंचते-पहुंचते भीग जाओगे।” ड्राइविंग सीट पर बैठे नौजवान ने अपने साथ वाली सीट का दरवाजा खोलते हुए कहा।

जगतसिंह कार में आ बैठा और फिर कार दीवानखाने की इमारत की ओर चल पड़ी, जो रात के अंधेरे में किसी छोटी-सी पहाड़ी जैसी दिखाई दे रही थी।

□□

“आपने अपने आने के बारे में कोई सूचना नहीं दी।” दीवान यशवन्त पाटिल ने अमित के सिर पर बड़े प्यार से हाथ फेरते हुए शिकायत भरे स्वर में कहा, “भला ऐसे आंधी-पानी में आने की जरूरत ही क्या थी? मुझे एक कार्ड लिख दिया होता। मैं खुद ही चला आता। वैसे मैं दो-तीन दिन के बाद खुद ही बम्बई आने वाला था।”

अमित के मस्तिष्क को दीवान यशवन्त पाटिल को देखकर और उनकी बातें सुनकर झटके से लग रहे थे। वह सोच रहा था कि उसे आज दोपहर को दीवानजी का जो पत्र मिला था, उसमें उन्होंने लिखा था कि वह पिछले एक महीने से बीमार हैं,

लेकिन वह तो हमेशा जैसे ही हट्टे-कट्टे और तन्दुरुस्त दिखाई दे रहे थे और उनकी बातों से स्पष्ट हो गया था कि वह पत्र उन्होंने नहीं लिखा था। अगर उन्होंने वह पत्र लिखा होता, तो उस पत्र में दो-तीन दिन बाद अपने बम्बई आने के बारे में जरूर लिखते।

फिर वह पत्र किसने और क्यों लिखा?

वह दीवान यशवन्त पाटिल की लिखावट को बहुत ही अच्छी तरह पहचानता था। जिस लिखावट को वह बचपन से देखता आया था उसे न पहचानने का प्रश्न ही कहां उठता था।

लेकिन दीवान यशवन्त पाटिल की बातों से स्पष्ट हो गया था कि वह पत्र उन्होंने नहीं लिखा था।

कुछ सोचकर अमित उठा और एक कोने में रखी मेज के पास जा खड़ा हुआ, जिस पर उसकी अटैची रखी हुई थी।

उसने अटैची खोलकर वह लिफाफा निकाला और फिर उस पत्र की लिखावट को पहचानने के लिए उसकी तहों को खोलने लगा।

तभी अमित के मस्तिष्क को एक जोरदार झटका और लगा। वह कागज एकदम कोरा था। उस पर आगे या पीछे कुछ लिखा होना तो दूर कहीं रोशनाई का हल्का-सा धब्बा तक दिखाई नहीं दे रहा था।

उसने कोरा कागज तह कर लिफाफे में रख दिया और फिर लिफाफे पर लगी मोहरों तथा अपने नाम और पते को देखने लगा। उसके मस्तिष्क को इस बार इतनी जोर का झटका लगा कि अगर वह लिफाफे को अटैची में फेंककर जल्दी से मेज के किनारे को दोनों हाथों से थाम न लेता, तो निश्चय ही नीचे फर्श पर जा गिरता।

वह नौजवान और उसके साथी बड़े ध्यान से अमित की एक-एक हरकत और उसके चेहरे पर आते-जाते रंगों को देख रहे थे।

“पहले आप कपड़े बदल लीजिए। भीगे कपड़े ज्यादा देर

पहने रहे, तो तबीयत खराब हो जाएगी।" दीवान यशवन्त पाटिल ने कहा।

अमित ने अटैची में से कपड़े निकाले और कमरे से लगे बाथरूम की ओर बढ़ गया।

□ □

अमित कपड़े बदलकर कमरे में वापस पहुंचा, तो एक नौकरानी चाय लेकर आ चुकी थी।

अमित अपनी कुर्सी पर जा बैठा।

जब नौकरानी ने चाय का प्याला उसकी ओर बढ़ाया, तो अमित की आंखों में हलका-सा आश्चर्य उभर आया। उसे ऐसा लगा, जैसे उसने इस लड़की को पहले भी देखा है। उसका चेहरा उसे बहुत ही परिचित दिखाई दे रहा था, जैसे वह वर्षों से उस युवती को देखता चला आया हो।

उसने चाय का प्याला ले लिया और चाय के हलके-हलके घूंट भरते हुए याद करने की कोशिश करने लगा कि उसने इस लड़की को कब और कहाँ देखा है।

"छोटे मालिक! आपने अपने मित्रों से परिचय नहीं कराया?" दीवान यशवन्त पाटिल ने उस नौजवाना और उसके साथियों की ओर देखते हुए कहा।

"दीवान जी! बम्बई तो आप अक्सर जाते ही रहते हैं। शायद आपने अपने देश के विख्यात जासूस मेजर बलवंत का नाम सुना हो। हम लोग उन्हीं के असिस्टेंट हैं। मेरा नाम सुधीर है और..."

इतना कहकर सुधीर ने अपने साथियों का एक-एककर परिचय देने के बाद कहा, "दीवान जी! अमित बाबू का भाग्य अच्छा था, जो हम लोग वहां पहुंच गए। वरना पानी में भीगते-भीगते या तो इनकी मृत्यु हो जाती या फिर उधर से गुजरने वाला कोई जंगली जानवर इन्हें अपना शिकार बना लेता।"

"क्या मतलब?" दीवान यशवन्त पाटिल बुरी तरह चौंक पड़े।

"अमित बाबू! दीवानजी को पूरी घटना सुना दीजिए।" सुधीर ने कहा, "शायद बड़े-बूढ़े होने के नाते यह उस घटना के रहस्य पर कोई रोशनी डाल सकें हम लोगों का दिमाग तो उस घटना के संबंध में जितना अधिक सोचता है, उतना ही उलझता चला जा रहा है।"

अमित ने विस्तार से पूरी घटना दीवान यशवन्त पाटिल को सुना डाली।

सुधीर और उसके साथियों ने देखा था कि अमित ज्यों-ज्यों उस रहस्यपूर्ण घटना को सुनाता जा रहा था, दीवान यशवन्त पाटिल के चेहरे का रंग बदलता चला जा रहा था। उनके चेहरे पर आश्चर्य के स्थान पर आतंक तथा भय की छायायें डोलने लगी थीं।

अमित ने पूरी घटना सुना डाली, तो सुधीर ने दीवान यशवन्त पाटिल के चेहरे की ओर देखते हुए पूछा, "इस घटना के बारे में आपकी क्या राय है दीवान जी!"

दीवान यशवन्त पाटिल कुछ देर तक चुपचाप बैठे कुछ सोचते रहे, फिर बोले, "सुधीर बाबू! नदी के ढलान वाले उस बरगद के विशाल पेड़ के नीचे इससे भी पहले कई इसी तरह की आश्चर्यजनक और रहस्यपूर्ण घटनाएं हो चुकी हैं, लेकिन सोनपुर के निवासी और मैं खुद भी इन घटनाओं को एक्सीडेंट ही समझते रहे हैं मैं तो भगवान को धन्यवाद देता हूं कि आप लोगों के अचानक वहां पहुंच जाने से अमित की जान बच गई। वरना मेरा मुंह हमेशा के लिए काला हो जाता।"

"आप ठीक कह रहे हैं। दुनिया तो यही कहती कि अमित बाबू आपका पत्र पाने पर ही सोनपुर के लिए रवाना हुए थे। अगर आपका पत्र उन्हें न मिलता तो, न तो यह सोनपुर जाते और न यह दुर्घटना होती।" राजीव ने कहा, "वैसे इससे पहले कैसी आश्चर्यजनक और रहस्यपूर्ण घटनाएं हो चुकी हैं, इस बरगद के पेड़ के नीचे?"

दीवान यशवन्त पाटिल कुछ देर तक खामोश बैठे रहे, फिर

जैसे ही उन्होंने कुछ कहने के लिए मुंह खोला कि रात की खामोशी को चीरकर पुलिस वेन के सायरन के साथ लोगों के भागने-दौड़ने और चीखने-चिल्लाने की आवाजें गूंज उठीं।

दीवान यशवन्त पाटिल झपटकर उस खिड़की के सामने आ खड़े हुए, जहां से गढ़ी और शहर के बीच फैली हुई झील और उसके किनारे-किनारे शहर से पुल की ओर जाने वाली सड़क दिखाई देती थी।

लेकिन खिड़की के पार दूर तक घटाटोप अंधेरा छाया हुआ था। इसलिए शहर की ओर से पुल की ओर भागते हुए लोगों तथा पुलिस की गाड़ियों के साथ-साथ अन्य कारों और मोटर साइकिलों के दौड़ने की आवाजें भी केवल सुनाई दे रही थीं।

सुधीर और उसके साथियों के साथ-साथ अमित भी उस ओर खुलने वाली खिड़कियों के पास जा खड़े हुए थे।

वे लोग अभी उन आवाजों को सुनकर उनका कारण जानने की चेष्टा कर ही रहे थे कि तभी दीवानखाने की सीढ़ियों पर तेजी से चढ़ते हुए कदमों की आहटें सुनाई दीं। उन सबने दरवाजे की ओर पलटकर देखा। जगतसिंह दौड़ता हुआ कमरे के अन्दर आ रहा था।

“गजब हो गया दीवान जी!” जगतसिंह ने अपनी फूली हुई सांस को संभालने की कोशिश करते हुए कहा।

“क्या हुआ जगतसिंह! और ये आवाजें कैसी हैं?” दीवान यशवन्त पाटिल ने जल्दी-जल्दी पूछा।

“सुरेन्द्र राव विवाह के बाद अपनी दुलहन को लेकर बारात के साथ लौट रहे थे। अभी पन्द्रह-बीस मिनट पहले की ही बात है। वह अपनी दुलहन के साथ ससुराल से दहेज में मिली नई कार में बारात की दूसरी कारों और बसों से आगे-आगे थे कि अचानक ढलान पर उतरते समय कार उनके कन्ट्रोल से बाहर हो गई और ढलान पर सड़क के किनारे खड़े बरगद के पेड़ से जा टकराई और फिर उलट गई।” जगतसिंह ने दुख और भय भरे स्वर में बताया, “सुरेन्द्र राव और उनकी दुलहन

दोनों ही नहीं रहे।”

“हे भगवान! यह क्या किया तुमने?” अमित के मुंह से निकला और फिर दोनों हाथों में सिर थामकर खिड़की के पास ही फर्श पर बैठ गया।

उसकी आंखों में आंसू मचल उठे थे।

“कौन सुरेन्द्र राव?” सुधीर ने जगतसिंह की ओर देखते हुए पूछा।

“सुरेन्द्र राव हमारे बड़े मालिक भूपेन्द्र राव जी के छोटे भाई गजेन्द्रराव जी के इकलौते बेटे थे। दो साल पहले ही फ्रांस से केमिस्ट की ट्रेनिंग पूरी करके लौटे थे और बम्बई में दवाइयां बनाने की एक बहुत बड़ी फैक्टरी स्थापित कर ली थी। साल-डेढ़-साल में ही उनकी फैक्टरी की बनी हुई दवाइयों ने काफी अच्छा मार्किट बना लिया था।” जगतसिंह के बजाय दीवान यशवन्त पाटिल ने उत्तर दिया।

“चलिए हम लोग भी चलें।” सुधीर ने कहा।

अमित जल्दी से उठ खड़ा हुआ। उसके चेहरे से एक विचित्र सा पागलपन बरस रहा था। आंखें फैली हुई थीं, जिनमें आश्चर्य भय और आतंक के साथ गहरी पीड़ा और दुख की छाया भी थी।

“आपकी तबीयत ठीक नहीं है छोटे मालिक! आप आराम कीजिए।” दीवान यशवन्त पाटिल ने अमित को रोकने की चेष्टा की—“जगतसिंह और दो नौकर आपके पास रहेंगे।”

“नहीं, काका! मैं भी चलूंगा।” अमित ने कहा, “जमीन जायदाद का ही बंटवारा होना है काकाजी। लेकिन खून का बंटवारा आज तक कोई नहीं कर पाया। आखिर सुरेन्द्र राव मेरा भाई ही तो था। मां कुछ कहेंगी, तो मैं उन्हें समझा लूंगा।”

“आप ठीक कह रहे हैं छोटे मालिक!” दीवान यशवन्त पाटिल ने एक लम्बी सांस लेते हुए कहा, “काश! यह बात बड़े मालिक और उनके भाई समझ पाते।”

दीवान यशवन्त पाटिल की बात से कमरे का वातावरण और

अधिक बोझिल हो उठा था बारिश अब पूरी तरह थम चुकी थी।

□□

जिस समय मेजर बलवंत के सहयोगी अमित को लेकर सोनपुर की गद्दी की ओर रवाना हुए थे। उसके पन्द्रह-बीस मिनट के बाद ही गहरे सुर्ख रंग की एक कार नदी का पुल पार करके ढलान पर तेजी से उतर रही थी। उसके पीछे कारों और बसों का एक लम्बा काफिला था।

सुर्ख रंग की उस कार में अमित के चाचा गजेन्द्रराव का इकलौता बेटा सुरेन्द्र राव अपनी नवविवाहिता पत्नी निशा के साथ ससुराल से लौट रहा था। दो दिन पहले ही उन दोनों का विवाह बड़ी धूमधाम से पूना में हुआ था।

सुरेन्द्र राव ने पूना से बम्बई पहुंचते ही ड्राइवर दया भाई को कार की पिछली सीट पर भेज दिया था और स्वयं ड्राइविंग सीट पर आ बैठा था। उसने अपनी पत्नी निशा को भी अपने बराबर वाली सीट पर बुला लिया था।

उसकी कार के पीछे वाली कारों और बसों में उसके परिवार के लोग, रिश्तेदार, मित्र और सोनपुर के अनेक सभ्रान्त निवासी थे।

ड्राइवर दया भाई ने सुरेन्द्र राव को बहुत मना किया था, लेकिन वह नहीं माना था। मूसलाधार बारिश हो रही थी। सड़क भी जगह-जगह से टूट-फूट गई थी, लेकिन सुरेन्द्र राव बहुत ही एक्सपर्ट ड्राइवर था। इसी वर्ष की हिमालियन कार रैली में प्रथम पुरस्कार प्राप्त कर चुका था। इसलिए उसे कार चलाने में कोई परेशानी नहीं हो रही थी।

सुरेन्द्र राव की कार ढलान पर इतनी तेजी से उतर रही थी जैसे वह ब्रेकाबू हो गई हो। वह कार की स्पीड कम करने की कोशिश करने लगा लेकिन स्पीड थी कि कम होने के बजाय बढ़ती ही चली जा रही थी।

सहसा सुरेन्द्र ही नहीं उसकी पत्नी निशा और पिछली सीट

पर बैठे ड्राइवर दया भाई के मुंह से घुटी-घुटी-सी चीखें निकल गईं। अपनी कार के आगे कूदने वाले एक साए को बचाने के लिए सुरेन्द्र ने एकदम ब्रेक लगा दिए।

कार के ब्रेक जोर से चीख उठे और कार एक जोरदार झटके के साथ रुकते ही इस तरह उलट गई, जैसे किसी ने पिछले पहियों के सड़क से उठते ही प्लास्टिक की बनी कार की तरह पीछे की ओर से उठाकर सीधा इंजन की ओर उलट दिया हो।

कार में बैठे सुरेन्द्र, निशा और दया भाई की चीखें बाढ़ भरी नदी की तूफानी लहरों और आंधी-पानी के शोर को चीर कर गूंजने लगी।

कार प्लास्टिक की बनी कार की तरह ढलान पर बड़ी तेजी से लुढ़कती चली जा रही थी।

उस कार के पीछे-पीछे आने वाली कारें और बसें भी रुकती चली गई थीं और उनमें बैठे लोग उतरकर सुरेन्द्र की लुढ़कती हुई कार की ओर भाग छूटे थे।

सहसा ढलान पर गेंद की तरह लुढ़कती कार का पिछला एक दरवाजा खुल गया और ड्राइवर दयाराम उस दरवाजे से निकल कर सड़क पर आ गिरा।

कुछ लोगों ने दौड़कर उसे संभाला और बाकी लोग सुरेन्द्र की कार की ओर भागते रहे, जो ढलान पर अब और भी तेजी से लुढ़कती चली जा रही थी, लेकिन अब सुरेन्द्र और निशा की चीखें सुनाई नहीं दे रही थीं।

कार से निकलता हुआ खून सड़क पर भरे पानी में मिलकर तेजी से चारों ओर फैलता चला जा रहा था।

ढलान खत्म होते ही कार का लुढ़कना इस तरह रुक गया जैसे किसी के शक्तिशाली हाथों ने उसे पकड़कर लुढ़कने से रोक दिया हो और फिर उसे घुमाकर उसका रुख इस तरह मोड़ दिया हो, जैसे वह सोनपुर की ओर जा रही हो।

लोग दौड़ते हुए कार के पास पहुंचे। उन्होंने झपटकर कार के दरवाजे खोल दिए, लेकिन जैसे ही उनकी नजरें कार के

अन्दर पड़ीं, उनके हलक से अन्तिम चीखें फूट पड़ीं।

सुरेन्द्र के पिता गजेन्द्र राव के हलक को फाड़कर एक जोरदार चीख निकली और फिर वे किसी कटे हुए पेड़ की तरह कार की अगली सीट पर पड़ी अपने इकलौते बेटे सुरेन्द्र और उसकी नववधू निशा की लहू में लिथड़ी लाशों पर जा गिरे।

गजेन्द्र राव के छोटे भाई वीरेन्द्र राव के लड़के नरेन्द्र राव ने बड़ी कठिनाई से उन्हें संभाला और अपनी कार लेकर पुलिस को इस दुर्घटना की सूचना देने के लिए सोनपुर की ओर चल दिया।

□ □

अमित मेजर बलवन्त के साथियों, दीवान यशवंत पाटिल और कुछ नौकरों के साथ दुर्घटना स्थल पर पहुंचा तब तक स्थानीय पुलिस कर्मचारियों के साथ शहर के सैकड़ों लोग वहां पहुंच चुके थे। लोगों की भीड़ भी शहर की ओर दौड़ती चली आ रही थी।

सुरेन्द्र राव और उसकी पत्नी निशा की लाशों को देखकर ऐसा लग रहा था, जैसे उनके सिरों को किसी क्रूर हत्यारे ने हथौड़े मार-मार कर फोड़ा हो। इसी बात ने सुधीर और उनके साथियों के साथ अमित को चक्कर में डाल दिया। वे लोग अच्छी तरह जानते थे कि कार के फर्श और स्टेयरिंग आदि से टकराकर किसी का भी सिर इस तरह टुकड़े-टुकड़े नहीं हो सकता।

और जब लाशों के ऊपर बेहोश पड़े गजेन्द्र राव को हटाकर सुरेन्द्र राव और निशा की लाशें कार से निकाली गईं, तो उन लोगों की हैरानी और बढ़ गई।

सुरेन्द्र राव और निशा की लाशें ऊपर से देखने पर तो सामान्य लाशों की तरह ही दिखाई दे रही थीं। लेकिन जब पुलिस के जवानों ने उन्हें कार से निकालकर स्ट्रेचरों पर डाला तो ऐसा लगा, जैसे उनके बदन की हड्डियां चूर-चूर होकर

गिरत में समा गईं हैं।

सोनपुर पुलिस स्टेशन के इंचार्ज इंसपेक्टर विश्वजीत ने आनन-फानन में अपनी कार्रवाई पूरी की और बारात में शामिल लोगों को पुलिस स्टेशन आकर अपना-अपना बयान देने की ताकीद करके पुलिस के जवानों को आदेश दिया कि वे दोनों लाशों को उठाकर एम्बुलेंस में रख दें।

“ठहरिए इंसपेक्टर!” सहसा अमित ने आगे बढ़कर कहा, “एक मिनट के लिए लाशों को यहीं रहने दीजिए। मेरे दोस्त सुरेन्द्र भाई और निशा भाभी की लाशें देखना चाहते हैं।”

“आपके दोस्त लाशों को देखना चाहते हैं?” इंसपेक्टर विश्वजीत ने हैरानी से पूछा।

“जी हां।” अमित ने कहा और फिर सुधीर और उसके साथियों की ओर इशारा करके बोला, “आपका परिचय अपने दोस्तों से करा दूं। आपने अपने देश के सुविख्यात जासूस मेजर बलवन्त का नाम तो सुना ही होगा। यह उन्हीं के साथी सुधीर, राजीव, संजीव और मिस डोरा, कल्याणी और डेजी हैं।”

इंसपेक्टर विश्वजीत को हैरानी हुई कि वह इतने करीब होते हुए भी सुधीर और उसके साथियों को क्यों नहीं पहचान सका? उसने जल्दी से आगे बढ़कर सुधीर, राजीव और संजीव को एक साथ अपनी बांहों के घेरे में लेने का प्रयास करते हुए कहा, “क्षमा कीजिएगा! रोशनी कम होने और अपने काम में व्यस्त होने के कारण आप लोगों पर मेरी नजर ही नहीं पड़ी। चलिए, लाशों को देख लीजिए।”

सुधीर और उसके साथी अमित और इंसपेक्टर विश्वजीत के साथ लाशों के पास पहुंच गए।

सुधीर घुटने मोड़कर सुरेन्द्र राव और निशा की लाशों के पास बैठ गया।

सुरेन्द्र राव और निशा के सिरों के अलावा उनके बदन के किसी भी हिस्से पर मामूली-सी खरोंच तक नहीं थी। बस उन दोनों के सिर चार-चार टुकड़ों में इस तरह फटे हुए थे, जैसे

उन्हें कोई भारी हथौड़ा या घन मारकर फोड़ दिया गया हो।

फटे हुए सिरों से खून उबल-उबलकर स्ट्रेचरों पर फैलता चला जा रहा था।

सुधीर ने टटोल कर सुरेन्द्र और निशा के हाथ-पैरों को देखा। सचमुच ऐसा लग रहा था, जैसे उनके बदन हड्डी और मांस के बजाय फोम के बने हुए हों। टटोलते समय उसके बदन में जो गढ़े पड़ते थे, वहां से हाथ हटते ही पहले ही तरह ही भर जाते थे।

और यह देखकर इंस्पेक्टर विश्वजीत भी हैरानी में पड़ गया।

“इन लोगों के बदन की हड्डियां कहां गई?” इंस्पेक्टर विश्वजीत ने आश्चर्य भरे स्वर में जैसे अपने-आपसे कहा और फिर झुककर सुरेन्द्र राव और उसकी पत्नी निशा की लाशों को टटोल-टटोलकर देखने लगा।

सिर के अलावा उसके बदन के किसी भी हिस्से में हड्डी का नाम निशान तक नहीं था। यहां कि पसलियां तक नहीं थीं।

“मुझे ऐसा लगता है जैसे किसी ने इन दोनों को पूना से रवाना होते समय कोई ऐसा जहर पिला दिया था, जिससे इंसान की मौत तो नहीं होती; लेकिन उसके बदन की हड्डियां गलकर पानी-पानी हो जाती हैं।” इंस्पेक्टर विश्वजीत ने अपना अनुमान प्रकट किया।

“लेकिन इंस्पेक्टर साहब। जब किसी व्यक्ति को जहर दिया जाता है, तो जहर का प्रभाव उस व्यक्ति की केवल हड्डियों पर ही नहीं पड़ता। उसका असर शरीर के अन्य भागों पर भी पड़ता है। अगर आपकी बात को ही सच मान लिया जाए, तो सुरेन्द्र भाई और निशा भाभी की शरीर की हड्डियां कार के उलटने के दो-तीन मिनट के अंदर-अंदर ही कैसे गल गई? उन्हें तो काफी पहले से गलना शुरू हो जाना चाहिए था। और अगर हड्डियां पहले से गलनी शुरू हो जातीं तो सुरेन्द्र भाई ऐसे तूफान में इतनी उबड़-खाबड़ और टूटी-फूटी सड़क पर कार

डाइव करते हुए बम्बई से यहां तक की लगभग सौ किलोमीटर की यात्रा न कर पाते।” अमित ने कहा, “मैंने मानव शरीर पर विभिन्न प्रकार के जहरों के पड़ने वाले प्रभाव का गहराई से अध्ययन किया है। दुनिया में कोई ऐसा जहर नहीं है, जिसे खाने के इतने घंटों के बाद मानव शरीर पर एकदम इतना घातक प्रभाव पड़े।”

अमित की बात सुनकर वहां खड़े लोगों की हैरानी और अधिक बढ़ गई।

सुधीर कुछ देर खामोश खड़ा सोचता रहा। फिर उसके होंठों पर एक बहुत प्यारी-सी मुस्कराहट थिरक उठी। उसने इंस्पेक्टर विश्वजीत की ओर मुड़कर कहा, “इन लाशों का पोस्टमार्टम कराना बेकार है और इन्हें घर तक ले जाने से भी लाभ के बजाय हानि ही होगी। मेरी राय तो यह है कि इनका दाह संस्कार जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्द कर दिया जाए।”

“लेकिन साहब! इन लाशों को घर तक ले जाना बहुत जरूरी है। कम-से-कम परिवार की औरतें और सुरेन्द्र की मां तो अपने बेटे और बहू का चेहरा आखिरी बार देख ही लें।” अमित के छोटे चाचा वीरेन्द्र राव ने आगे बढ़कर कहा, “अगर हमने इन लाशों का दाह-संस्कार घर न ले जाकर सीधे श्मशान में ले जाकर कर दिया, तो सुरेन्द्र की मां ही नहीं, परिवार की अन्य औरतों को भी जिंती भर यही पछतावा रहेगा कि वे सुरेन्द्र और निशा के चेहरे तक नहीं देख पाईं।”

“चाचाजी! सुधीर बाबू ने कुछ सोच समझकर ही यह मशवरा दिया है। इस मशवरे की गहराई में छिपे भेद को मैं अच्छी तरह जान गया हूं। जाने वाले तो चले गए। अब जो रह गए हैं, हमें उनके कल्याण की ओर से तो आंखें नहीं मूंद लेनी चाहिए। आप लोग इन लाशों को लेकर श्मशान चलिए मैं और सुरेन्द्र परिवार की स्त्रियों को लेकर वहीं पहुंच जाएंगे। मैं बड़ी और छोटी चाचीजी को अच्छी तरह समझा दूंगा। आप विश्वास

कीजिए, उन्हें आपसे यह शिकायत कभी नहीं होगी कि आप उनके बेटे और बहू की लाश घर नहीं लाए।” अमित ने वीरेन्द्र राव को समझाने की चेष्टा करते हुए कहा।

वीरेन्द्र राव कुछ देर तक चुपचाप खड़े कुछ सोचते रहे, फिर बोले, “जैसा तुम ठीक समझो वही करो बेटा! मेरी तो अकल काम ही नहीं कर रही।”

अमित ने नरेन्द्र को साथ लिया और फिर वे दोनों अपनी-अपनी कार की ओर बढ़ गए।

खूनी दरिन्दा

सुरेन्द्र राव तथा उसकी नव विवाहिता पत्नी निशा का एक ही चिता पर दाह-संस्कार करने के बाद अमित, सुधीर और उसके साथियों तथा अपने साथ आए हुए अन्य लोगों के साथ गढ़ी में पहुंचा, तो आधी रात कभी की बीत चुकी थी। हालांकि उन लोगों ने रात का खाना नहीं खाया था, लेकिन उन्हें भूख बिल्कुल महसूस नहीं हो रही थी।

अमित के बेडरूम के साथ वाले दो कमरों में सुधीर और उसके साथियों के सोने की व्यवस्था कर दी गई थी।

सुधीर और उसके साथी तो बिस्तर पर लेटते ही सो गए थे लेकिन अमित की आंखों में नींद का नाम नहीं था। सुरेन्द्र राव की कार की पिछली सीट पर बैठे हुए ड्राइवर दया भाई ने जो कुछ बताया था उसे सुनकर अमित ही नहीं सुधीर और उसके साथी भी आश्चर्य में पड़ गए थे।

दयाराम ने बताया था कि जिस समय सुरेन्द्र राव की कार आंधी जैसी रफ्तार से ढलान पर उतरने लगी थी, सुरेन्द्र राव कार का नियन्त्रण खो बैठे थे। और जैसे ही कार बरगद के पेड़ के करीब पहुंची, उसने एक साए को पेड़ की आड़ से निकलकर कार के आगे कूदते हुए देखा था। फिर उसके हलक से फूटने वाली दर्द-भरी चीख भी सुनी थी; लेकिन उसे अब अच्छी तरह याद आ रहा था कि उसने बरगद के पेड़ की आड़ से

निकल कर कार के सामने जिस साए को कूदते देखा था, वह बीसेक वर्ष की एक सुंदर युवती थी, जिसके बदन पर शादी का सुर्ख जोड़ा था। जिसकी फूलों से सजी वेणी उसकी पीठ पर लहरा रही थी। हृदय बेधी चीख उसने साफ-साफ सुनी थी।

अगर ड्राइवर दया भाई का यह बयान सच था तो उस युवती की सुरेन्द्र राव की कार से कुचली हुई लाश कहां गई? वहां सैकड़ों आदमी मौजूद थे लेकिन किसी ने भी वहां किसी युवती की लाश नहीं देखी थी। इतने आदमियों के बीच से उसकी लाश अगर कोई उठाकर ले जाता, तो उस पर किसी-न-किसी की नजर तो जरूर ही पड़ती। जब लोगों की नजरें सुरेन्द्र राव की कार से निकलकर सड़क पर गिर जाने वाले ड्राइवर दया भाई पर पड़ गई थी, तो एक युवती की कुचली हुई लहलुहान लाश पर कैसे नहीं पड़ीं?

तो क्या वह लाश भी उसी युवती की लाश की तरह रहस्यपूर्ण ढंग से गायब हो गई, जो उसकी अपनी कार से कुचलकर मर गई थी और फिर उसकी लहलुहान लाश बहुत ही रहस्यपूर्ण ढंग से उसकी बांहों में से गायब हो गई थी। यही नहीं, उसके साथ ही उसके बदन और कपड़ों पर लगे खून के दाग तक गायब हो गए थे।

तो क्या—?

अमित इससे आगे सोच नहीं पाया था कि सहसा एक जोरदार खटाक की आवाज के साथ पलंग के बराबर वाली लंबी खिड़की के दोनों पट खुल गए। ठंडी हवा का एक तेज झोंका उसके समूचे बदन को सहलाता हुआ गुजर गया।

दूसरे ही पल उसे लगा, जैसे हवा के उस तेज झोंके के साथ ही सारे कमरे में, उसके चारों ओर, उसके बिस्तर और स्लीपिंग चूट पर किसी ने ढेर सारी खुशबुएं उंडेल दी हों। वह मीठी, मोहक और मादक गंध उसकी सांसों के द्वारा उसके अन्तर की गहराइयों तक बैठती चली जा रही हो।

फिर एक विचित्र-सा खुमार उसके तन-मन पर छाता चला

गया। उस पर बेसुधी सी छाने लगी।

उस बेसुधी में उसने अपने गर्म-गर्म होंठों पर किसी के बर्फ जैसे होंठों की ठंडी, नशीली छुअन महसूस की।

उसके साथ ही उसकी खुमार से बोझिल अधखुली पलकें मंदती चली गई।

लेकिन अमित को सोए हुए अभी घंटा-भर भी नहीं बीता होगा कि दरवाजे पर जोर-जोर की दस्तकें सुनकर उसकी आंख खुल गई।

उसने सिर घुमाकर बिस्तर पर लेटे-लेटे ही इधर-उधर देखा। उसकी नजरें सहसा पलंग के बराबर वाली खिड़की पर पहुंचकर रुक गई। खिड़की के दोनों पट धीरे-धीरे इस तरह बंद होते चले जा रहे थे, जैसे किसी के दो अदृश्य हाथ उन्हें बड़ी सावधानी से पीछे की ओर धकेलते हुए बंद करने जा रहे हों।

तभी किसी ने दरवाजे पर जोर से दस्तक देते हुए उसे पुकारा।

वह खिड़की पर टकटकी लगाए हड़बड़ाकर उठ बैठा।

उसके उठते ही खिड़की के दोनों पट खटाक की आवाज के साथ तेजी से बन्द हो गए।

अमित दरवाजे पर दी जाने वाली दस्तकों को भूल गया और आश्चर्य से आंखें फाड़े उस खिड़की की ओर देखता रह गया, जिसके दोनों पट अब पूरी तरह बन्द हो चुके थे।

तभी किसी ने उसका नाम लेकर फिर जोर से दरवाजा खटखटाया।

उसने पलंग से नीचे पैर लटकाए। पैरों में स्लीपर डाले और बढ़कर दरवाजा खोल दिया।

दरवाजे के सामने सुधीर और उसके साथियों के साथ नरेन्द्र खड़ा था।

“क्या बात है नरेन्द्र!” अमित ने नरेन्द्र के चेहरे पर गहराते हुए शोक और दुख को देखकर घबराए हुए स्वर में पूछा।

“जल्दी चलिए अमित भैया! ताऊजी को किसी जंगली जानवर ने बुरी तरह घायल कर दिया है। उनका बचना कठिन दिखाई देता है।” नरेन्द्र ने भारी आवाज में जल्दी-जल्दी कहा।

अमित पलटकर कमरे में आ गया। जल्दी-जल्दी कपड़े पहनकर उन लोगों के साथ चल दिया।

□□

गजेन्द्र राव की हवेली का लम्बा-चौड़ा आंगन ही नहीं पूरी हवेली स्त्रियों और पुरुषों से खचाखच भरी हुई थी।

पुलिस इंस्पेक्टर विश्वजीत भी अपने मातहत कर्मचारियों के साथ वहां पहुंच चुका था। वह अमित और उसके साथ सुधीर तथा उसके साथियों को देखते ही तेजी से चलता हुआ उनके पास पहुंच गया।

“सुधीर बाबू! आपकी आशंका सच ही साबित हुई।” इंस्पेक्टर विश्वजीत ने दुख भरे स्वर में कहा, “गजेन्द्रराव भी नहीं रहे।”

“लेकिन उनकी मौत कैसे हुई?” सुधीर ने उत्सुकता से पूछा।

“उनकी लाश दीवान खाने की पहली मंजिल पर उनके बेडरूम में पड़ी हुई है। आइए!” इंस्पेक्टर विश्वजीत ने कहा और भीड़ को हटाते हुए ऊपरी मंजिल की ओर जाने वाली सीढ़ियों की ओर चल दिया।

□□

गजेन्द्र राव की लाश एक लम्बे-चौड़े और सुसज्जित बेडरूम में एक शानदार और खूबसूरत पलंग पर पड़ी हुई थी।

उनके बदन के कपड़े तार-तार थे। केवल दो-चार चिथड़े ही उनके बदन से चिपटे दिखाई दे रहे थे। ऐसा लगता था, जैसे हत्यारे ने उनकी हत्या करने से पहले उनके कपड़े फाड़-फाड़कर फेंक दिए थे।

सुधीर और उसके साथियों ने बिस्तर पर पड़ी गजेन्द्र राव की खून में लथपथ लाश करीब जाकर देखी, तो उनके बदन में

झुरझुरी-सी दौड़ने लगी।

तब गजेन्द्र राव की हत्या किसी इन्सान ने नहीं की थी। बल्कि किसी शेर चीते जैसे मांस भक्षी जानवर ने अपने पैने और नुकीले लम्बे-लम्बे नाखूनों से उनके बदन का सारा गोشت उधेड़-उधेड़ कर खा डाला था या फिर पलंग के आसपास फर्श पर दूर-दूर तक बिखेर दिया था।

उनके शरीर की हड्डियां जगह-जगह से दिखाई दे रही थीं।

लेकिन उस मांस भक्षी जानवर ने उनके चेहरे को छुआ तक नहीं था। आश्चर्य और वेदना से फटी हुई उनकी आंखें छत पर टिकी हुई थीं। चेहरे पर असहनीय पीड़ा के चिन्ह स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। ऐसा लगता था कि उनकी मृत्यु असहनीय पीड़ा और अमानवीय आघातों के कारण हुई थी।

“क्या राव साहब अपने बेडरूम में अकेले ही सो रहे थे?” सुधीर ने उनके पलंग के पास खड़े उनके छोटे भाई राव वीरेन्द्र सिंह की ओर देखते हुए पूछा।

“हम लोग जब सुरेन्द्र राव और निशा का दाह-संस्कार करके लौटे थे, तो मंझले भैया होश में आ चुके थे। वह नीचे दीवान खाने में बैठे लोगों से लगभग आधे घंटे तक बातें करते रहे थे फिर उठकर अपने बेडरूम में चले आए थे। अन्य लोगों के जाने के बाद मैं नरेन्द्र को दीवानखाने में सोने की हिदायत करके अपनी हवेली में चला गया था, लेकिन मेरी आंख अभी अच्छी तरह लगी भी नहीं थी कि इस हवेली से उठती हुई लोगों की चीख पुकार और रोने-पीटने की आवाजें सुनते ही मेरी नोंद उचट गई और मैं दौड़ता हुआ आ गया।” राव वीरेन्द्रसिंह ने बताया, “मैं यहां पहुंचा तो मंझले भैया की उखड़ी-उखड़ी-सी सांसें चल रही थीं। नरेन्द्र को आप लोगों के पास भेजने के थोड़ी देर बाद ही मंझले भैया ने मेरी ओर देखते हुए कुछ कहने के लिए होंठ खोले, लेकिन वह कुछ नहीं कह पाए और फिर एक हिचकी के साथ ही उनके प्राण पखेरू उड़ गए।”

“सबसे पहले इस कमरे में कौन आया था?” सुधीर ने

आसपास खड़े लोगों पर नजर डालते हुए पूछा।

“सबसे पहले ताऊजी के बेडरूम में मैं ही आया था।” नरेन्द्र राव ने जल्दी से आगे बढ़कर कहा, “मैं इस बेडरूम के बाहर बरामदे में आ सोया था। मैंने ताऊजी को कह दिया था कि जब भी उन्हें किसी चीज की जरूरत हो, मुझे आवाज दे लें। मैं तो उनके पास बेडरूम में ही सोना चाहता था, क्योंकि मैं जानता था कि सुरेन्द्र भैया और निशा भाभी की इस दुखद मृत्यु के शोक और दुख को सह पाना मामूली बात नहीं है। हो सकता है, वह रात भर रोते रहें, लेकिन उन्होंने शायद मेरे मन की बात जान ली थी। उन्होंने बहुत ही दृढ़ स्वर में मुझसे कहा था, नरेन्द्र बेटा! मैंने उस राव परिवार में जन्म लिया है जिसमें पिता हंसते हुए अपने पुत्र को युद्ध में लड़ने के लिए भेजा करते थे। और जब उन्हें यह समाचार मिलता था कि उनके बेटे ने युद्ध क्षेत्र में वीरगति प्राप्त की है, तो उसकी मृत्यु पर शोक मनाने के बजाय वह राज्य भर में दीपावली मनाने का आदेश दिया करते थे। मैंने साफ-साफ देखा था। अगर सुरेन्द्र अपनी कार के सामने अचानक आ जाने वाली लड़की को बचाने के लिए अपनी कार में एकदम ब्रेक न लगाता, तो उसकी कार न उलटती। मुझे खुशी है कि सुरेन्द्र ने एक नारी के प्राण बचाने के लिए अपनी और अपनी नवविवाहिता पत्नी निशा के प्राणों की परवाह न की और उस लड़की को बचाने के लिए अपने प्राणों की बलि दे डाली।”

“तो क्या गजेन्द्र राव ने भी किसी लड़की को बरगद के पेड़ की आड़ से निकलकर सुरेन्द्र राव की कार के सामने आते हुए देखा था?” सुधीर ने हैरानी भरे स्वर में कहा—“खैर, नरेन्द्र बाबू! आप उनके बेडरूम में कैसे पहुंचे थे? क्या आपने किसी तरह की कोई आवाज सुनी थी?”

“जी नहीं। मैंने कोई आवाज नहीं सुनी थी, बल्कि ताऊजी की नौकरानी बिंदिया ने मुझे आकर जगाया था और कहा था कि ताऊजी मुझे बुला रहे हैं।” नरेन्द्र ने बताया।

“क्या कह रहे हैं आप?” गजेन्द्र राव के पलंग के पास खड़े-खड़े उनके पुराने नौकर हिम्मतसिंह ने हैरानी भरे स्वर में कहा, “बिंदिया नहीं, कोई दूसरी नौकरानी होगी छोटे मालिक!”

सुधीर उसके साथी और अमित ही नहीं वहां खड़े, सभी लोग आश्चर्य और अविश्वास भरी नजरों से नरेन्द्र की ओर देखने लगे।

“नहीं, मैं बिंदिया को अच्छी तरह पहचानता हूं।” नरेन्द्र ने दृढ़ता और विश्वास भरे स्वर में कहा, “अगर तुम्हें यकीन नहीं है, तो बिंदिया को बुलाकर पूछ लो। उसी ने आकर मुझे जगाया था और मैं उसके साथ ही इस कमरे में आया था।”

“बिंदिया को कहां से बुलाकर पूछेंगे छोटे मालिक!” हिम्मतसिंह ने एक लम्बी सांस भरकर भारी आवाज में कहा, “मेरी बेटी बिंदिया को तो इस दुनिया से गए हुए छः-सात महीने बीत चुके हैं।”

हिम्मतसिंह की बात सुनकर नरेन्द्र राव के बदन में सिर से पांव तक भय और आतंक भरी एक तेज लहर दौड़ती चली गई।

अमित के मस्तिष्क को एक जोरदार झटका और लगा। उसकी आंखों के सामने एक के बाद एक शाम से लेकर अब तक की सारी घटनाएं चलचित्र की तरह आती चली गईं।

सुधीर उन लोगों की बातें तो सुन रहा था, लेकिन उसकी नजरें राव गजेन्द्र राव की बड़ी बेदरदी से नोची-खसोटी लाश पर ही जमी हुई थीं। वह इस बात को मानने के लिए बिलकुल तैयार नहीं था कि राव गजेन्द्र राव की हत्या किसी मांस भक्षी जानवर ने की है।

राव गजेन्द्र राव की विशाल हवेली शहर के दक्षिणी भाग में झील के किनारे पर राव परिवार की प्राचीन और ऐतिहासिक गढ़ी के ठीक सामने बनी हुई थी। उसके बराबर ही उनके छोटे भाई राव वीरेन्द्र राव की हवेली थी। झील का पूरा उत्तरी किनारा इन दोनों हवेलियों ने घेर रखा था। हवेलियों के प्रवेश

द्वारों पर लकड़ी के मोटे-मोटे तख्तों के बने मजबूत और बड़े-बड़े फाटक चढ़े हुए थे। जिनमें से अक्सर एक ही फाटक खुला रहता था। रात के लगभग एक बजे सब लोगों के चले जाने के बाद उस फाटक को भी दरबानों ने अच्छी तरह बन्द कर दिया था और लोहे के बने बड़े-बड़े मजबूत ताले भी लगा दिए थे।

उस फाटक पर दो सशस्त्र दरबान थे और उनका कहना था कि उन्होंने किसी भी जंगली जानवर को आते-जाते नहीं देखा। अगर वह राव गजेन्द्र राव के शरीर का मांस नोच-नोचकर खाने के बाद उधर से जाता तो वे दोनों उसे जिन्दा न छोड़ते और उसे देखते ही मार डालते।

हवेली में से बाहर जाने के अन्य सभी रास्ते बन्द थे। फिर वह जंगली जानवर किस रास्ते से बाहर निकल गया?

सुधीर इसी प्रश्न का उत्तर खोज रहा था कि सहसा राजीव ने उसके पास आकर उसके कंधे पर हाथ रख लिया और इंस्पेक्टर विश्वजीत को अपने साथ आने का इशारा करते हुए सुधीर को लेकर बाहर खुली छत पर चला गया।

“इंस्पेक्टर साहब! आपने हवेली में उस जंगली जानवर की खोज कराई थी, जिसने गजेन्द्र राव की जान ली है?” राजीव ने इंस्पेक्टर विश्वजीत की ओर देखते हुए पूछा।

“हवेली का कोना-कोना छान डाला गया है।” इंस्पेक्टर विश्वजीत ने कहा, “और मिस्टर राजीव सबसे ज्यादा आश्चर्य की बात यह है कि जंगली जानवर तो दूर पूरी हवेली में हमें कहीं भी उसके पैरों का एक निशान तक नहीं मिला। समझ में नहीं आता कि वह किस रास्ते से राव गजेन्द्र राव के बेडरूम तक पहुंचा था और उनकी बोटी-बोटी नोचकर न जाने किस रास्ते से निकल गया। मैंने हवेली के बाहर खाली जगह में भी उस जानवर के पंजों के निशानों की खोज कराई थी। बारिश की वजह से गीली मिट्टी पर उसके पैरों या पंजों के निशान जरूर होने चाहिए थे, लेकिन एक भी निशान नहीं मिला।”

“लेकिन इंस्पेक्टर साहब! मेरा अनुमान कुछ और है।” राजीव ने कहा, “मैं इस विचार से बिल्कुल सहमत नहीं हूँ कि राव गजेन्द्र राव को किसी शेर या चीते जैसे मांसभक्षी जानवर ने मारा है। मेरा खयाल है कि राव गजेन्द्र राव की हत्या की गई है। हत्यारे ने उनकी हत्या इस ढंग से की है कि कोई यह सोच ही न सके कि उनकी हत्या की गई है। हत्यारे ने शेर या चीते के नाखूनों जैसे नुकीले हथियार से उनके शरीर का सारा गोشت नोच कर फेंक दिया। अगर उनपर किसी मांसभक्षी जानवर ने हमला किया होता तो वह उनके गोشت को अपने नुकीले पंजों से नोच-नोचकर खाता न कि बेडरूम के फर्श पर इधर-उधर बिखेर देता। गोشت के बेडरूम के फर्श पर बिखरे ये टुकड़े ही इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण हैं कि गजेन्द्र राव की हत्या की गई है।”

“तुम्हारा अनुमान बिल्कुल ठीक है राजीव! यह हरकत किसी जंगली जानवर की नहीं है। इस हवेली की चारदीवारी इतनी ऊंची है कि कोई जानवर उसे फलांग ही नहीं सकता। इस हवेली के पूर्व में राव वीरेन्द्र राव की हवेली है और पश्चिम में किसी सेठ की हवेली है। उत्तर और दक्षिण में सड़क है। अगर कोई जंगली जानवर हवेली से बाहर जाता, तो वह इन दोनों हवेलियों में या दोनों ओर की सड़कों पर ही कूदकर जा सकता था। वह अगल-बगल की हवेलियों में तो गया नहीं है। अगर दोनों ओर की किसी सड़क पर कूदा होता तो या तो उसकी लाश मिलनी चाहिए थी या फिर उसे घायल अवस्था में मिलना चाहिए था।”

सुधीर और राजीव की बातें सुनकर इंस्पेक्टर की आंखों में एक नई चमक जाग उठी। उसने हलकी-सी मुस्कराहट के साथ कहा, “अगर यह हरकत किसी आदमी की है तब तो उसे खोज निकालने में कोई कठिनाई नहीं होगी। जिस समय गजेन्द्र राव की हत्या हुई, उस समय हवेली में कौन-कौन था, इसका पता आसानी से लग जाएगा। अगर आप कहें, तो मैं इस

काम का अभी शुरू कर दूँ।”

“लेकिन क्या इतना जघन्य और बर्बरतापूर्ण अपराध करने के बाद अपराधी अभी तक हवेली में ही बैठा होगा?” अमित ने सोचते हुए कहा, “चाचाजी की मृत्यु का समाचार फैलते ही लोग हवेली में भर आए थे। इस समय कम-से-कम ढाई-तीन सौ बाहरी आदमी हवेली में होंगे। दरबानों को यह ध्यान भी नहीं होगा कि कौन आया और कौन चला गया। अब तक तो वह किसी-न-किसी सुरक्षित स्थान पर पहुंच चुका होगा।”

“लेकिन यह तो निश्चित है कि राव गजेन्द्र राव की हत्या उन्हीं लोगों में से किसी ने की है, जो हवेली का फाटक खुलने से पहले हवेली में मौजूद थे। अगर उनमें से कोई आदमी फाटक खुलने के बाद चला गया है, तो यह निश्चित है कि हत्यारा वही है।” इंस्पेक्टर विश्वजीत ने कहा।

“कोशिश कर देखिए, लेकिन मेरा खयाल है कि हत्यारा शायद ही मिल सके।” सुधीर ने कहा और उस कमरे की ओर चल दिया।

□ □

जिस समय सोनपुर में गजेन्द्र राव की हवेली में पुलिस इंस्पेक्टर विश्वजीत और मेजर बलवंत के सहयोगी हत्यारे की खोज में हवेली के एक-एक कोने की छानबीन कर रहे थे, पालघर की शिवाजी कालोनी की एक भीतरी सड़क पर काले रंग की एक इम्पोर्टेड कार बिना कोई आवाज किए सड़क पर तेजी से बहते पानी को चीरती हुई सड़क के दूसरे छोर की ओर बढ़ती चली जा रही थी।

मूसलाधार बारिश की तेजी में अभी तक रत्ती-भर भी अन्तर नहीं आने पाया था।

उस कार की ड्राइविंग सीट पर एक आदमी बैठा था, जिसे चारों ओर छाए हुए अंधेरे ने अपने आपमें छिपा लिया था। वह सड़क के दोनों ओर बनी कोठियों के गेट पर लगे नम्बरों को पढ़ता हुआ आहिस्ता-आहिस्ता सड़क के दूसरे छोर की ओर

बढ़ता चला जा रहा था।

शिवाजी कालोनी में जितनी भी कोठियां थीं, उनके नंबर और कोठियों के मालिकों के नाम कोठियों के गेट में बने झरोखे के अन्दर लगे शीशे पर काले पेन्ट से लिखे हुए थे, जिसके पीछे मर्करी बल्ब जल रहे थे। इसलिए उस अंधेरी बरसाती रात में भी कोठियों के नम्बर और उनके मालिकों के नाम साफ-साफ दिखाई दे रहे थे।

कुछ देर के बाद काले रंग की वह इम्पोर्टेड कार एक कोठी के गेट के सामने पहुंचकर और भी धीमी हो गई। ड्राइविंग सीट पर बैठे व्यक्ति ने उस कोठी का नम्बर और कोठी के मालिक का नाम पढ़ा और फिर कोठी की चारदीवारी के छोर के पास पहुंचते ही कार फुटपाथ पर चढ़ा दी और कोने पर पहुंचकर कार रोक दी।

जो व्यक्ति ड्राइविंग सीट का दरवाजा खोलकर कार से उतरा, उसने अपने आपको सिर से पांव तक एक स्याह लबादे में छिपा रखा था। केवल उसकी आंखों के सामने दो गोल सूराख उस लबादे में बने हुए थे जिनपर काली जाली लगी हुई थी। उसके पैरों में रबर के घुटनों तक के जूते थे, जिनके तले फोम के बने हुए थे।

कार से उतरने के बाद उस साए ने अपने लबादों की दोनों जेबों में हाथ डालकर कुछ टटोला और फिर कार के बोनट पर पांव रखकर कार की छत पर पहुंच गया।

उसने गुंडेर पर अपनी दोनों हथेलियां टिकाई और मुंडेर पर जा चढ़ा।

दूसरे ही पल वह कोठी के लॉन में पहुंच चुका था।

लॉन में खड़े एक पेड़ की आड़ लेकर उसने गेट की ओर देखा। गेट पर तैनात दरबान बारिश से बचने के लिए गेट के पास ही बने केबिन में चले गए थे।

साए ने अपने लबादे की जेब से रिवॉल्वर निकाल लिया और कोठी की इमारत की ओर चल दिया।

पोर्टिको के पास पहुंचकर उसने खम्भे की आड़ ले ली और पोर्टिको के सामने बने बरामदे की ओर देखने लगा। बरामदे में बल्ब जल रहा था, लेकिन वहां कोई आदमी नहीं था।

साए ने इत्मीनान की सांस ली और इमारत की बाईं दीवार के सहारे-सहारे आगे बढ़ने लगा।

उस दीवार में कई खिड़कियां थीं। साया एक-एक खिड़की पर हथेली का दबाव डालता हुआ आगे बढ़ता चला गया और फिर एक खिड़की के सामने पहुंचकर रुक गया।

इस खिड़की में अन्य खिड़कियों की तरह पट अन्दर की ओर नहीं, बल्कि बाहर की ओर लगे हुए थे। जो बाहर की ओर खुलते थे।

साए ने अपने लबादे की जेब से एक लम्बा पेचकश जैसा कोई औजार निकाला और खिड़की के फ्रेम और दाईं ओर के पट के बीच फंसा दिया। उसने उस लम्बे औजार के हैंडिल को पकड़कर घुमाना शुरू कर दिया।

कुछ देर के बाद अलमारी के पट और फ्रेम में उस स्थान पर एक लगभग आधा इंच चौड़ा गोल छेद बन गया।

साए ने जेब में से एक पतला-सा लम्बा औजार निकाला और उसका सिरा चटकनी में फंसाकर चटकनी ऊपर की ओर खिसकाकर खोल दी।

उसने अपने लबादे की जेब से छोटी सी टार्च निकाली और टार्च की रोशनी खिड़की से फेंकते हुए अन्दर झांककर देखने लगा।

वह एक ऐसा स्टोर था जिसमें घर की फालतू चीजें और टूटा-फूटा फर्नीचर भरा हुआ था। शायद उस कमरे में कोई कीमती चीज नहीं थी, इसीलिए उसका दरवाजा खुला हुआ था।

साए ने इत्मीनान से स्टोर का निरीक्षण किया और टार्च जेब में रखकर खिड़की की चौखट के ऊपरी सिरे को दोनों हाथों से जकड़कर अपना दायां पांव खिड़की के अन्दर डालने लगा।

लेकिन अभी उसका पाव खिड़की के उस पार पहुँचा भी न था कि अचानक उसके हलक से एक घुटी-घुटी सी चीख निकल गई। उसे लगा, जैसे कोई बहुत ही वजनी और विशालकाय चट्टान आकाश की ओर से टूटकर उसके सिर पर आ पड़ी हो।

उसके हाथों से खिड़की की चौखट का ऊपरी हिस्सा छूट गया और एक भयानक चीख के साथ वह जमीन पर जा गिरा।

उसका सिर खिड़की के दूसरी ओर दीवार के सहारे-सहारे बने सीमेंट और कंक्रीट की बनी डेढ़-दो फीट चौड़ी पट्टी से जा टकराया। उसकी आंखों के आगे रंग-बिरंगे दायरे नाचने लगे।

वह उस भारी-भरकम चट्टान के नीचे से निकलने की कोशिश करने लगा, लेकिन तभी उसे ऐसा लगा, जैसे उसकी गर्दन को चारों ओर से इस्पात की बनी हुई किसी मजबूत संडासी ने जकड़ लिया हो।

उसने पीड़ा से छटपटाते हुए उस संडासी को पकड़ने की कोशिश की, लेकिन उसके हाथ अपनी गर्दन तक नहीं पहुँच पाए।

और फिर उसकी गर्दन पर उस संडासी का कसाव बढ़ता चला गया। उसकी आंखें बाहर की ओर उबलने लगीं। उसे लगा जैसे उसके फेफड़ों में किसी ने ढेर सारी मिर्चों के साथ दहकते हुए अंगारे भर दिए हों।

उसके शरीर में एक बार एक जोर की थरथराहट उभरी और फिर धीरे-धीरे बेहरकत होता चला गया।

मूसलाधार बारिश के साथ-साथ रात के अंधेरे और अधिक गहरे हो गए थे।

□□

सुबह के सात बज रहे थे।

बारिश तो बन्द हो गई थी लेकिन आकाश पर छाई घटाएं और अधिक गहरी हो गई थीं। इसलिए यह पता ही नहीं चल पा रहा था कि सवेरा हो चुका है।

सोनिया जाग चुकी थी। चारों ओर छाए हुए अंधेरे को वह आंखें खोल-खोलकर बार-बार देख लेती थी और फिर आंखें मूंद लेती थी।

वह और मेजर बलवंत रात को लगभग ढाई बजे एक पार्टी से लौटे थे। इसलिए मेजर बलवंत अभी तक गहरी नींद सोया पड़ा था।

अचानक ड्राइंगरूम में से आती टेलीफोन की घंटी की आवाज ने सोनिया को उठने पर मजबूर कर दिया।

वह एक लम्बी अंगड़ाई लेती हुई उठी और ड्राइंगरूम में चली गई।

□□

“हैलो!” उसने रिसीवर कान से लगाकर अलसाई हुई आवाज में कहा, “कौन साहब बोल रहे हैं?”

“मैं पुलिस हेडक्वार्टर से इंस्पेक्टर कुलकर्णी बोल रहा हूँ।” दूसरी ओर से आवाज आई, “मेजर साहब कहां हैं?”

“एक सेकिंड होल्ड कीजिए। मैं उन्हें जगाती हूँ।” सोनिया ने कहा और रिसीवर मेज पर रखकर बेडरूम में चली गई।

□□

एक मिनट के बाद मेजर बलवंत ने ड्राइंगरूम में आकर मेज पर रखा रिसीवर उठा लिया। उसकी आंखों में अभी तक नींद भरी हुई थी। उसने अपनी कुर्सी पर बैठते हुए एक लम्बी जम्हाई ली और रिसीवर कान में लगाकर अलसाई हुई भारी आवाज में बोला, “फर्माइए इंस्पेक्टर साहब, सुबह-सुबह कैसे याद किया?”

“आज आप अभी तक सो रहे थे। तबीयत तो ठीक है?” दूसरी ओर से इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने पूछा।

“तबीयत तो ठीक है इंस्पेक्टर साहब! रात को एक पार्टी में से लगभग ढाई बजे लौटा था। सोते-सोते तीन बज गए थे। इसीलिए सुबह आंख नहीं खुली। फिर कोई काम भी नहीं था इसलिए इत्मीनान से सोता रहा।” मेजर बलवंत ने कहा, “खैर,

आप अपनी सुनाइए।”

“मेजर साहब! कंट्रोल रूम को अभी-अभी पालघर पुलिस स्टेशन से सूचना मिली है कि शिवाजी कालोनी की एक कोठी में दो ऐसी लाशें मिली हैं, जिन्हें देखकर ऐसा लगता है, जैसे उन्हें किसी मांसभक्षी जंगली जानवर ने मारा हो। उसने अपने लम्बे और नुकीले पंजों से उन दोनों आदमियों के बदन का गोشت इस सीमा तक उधेड़ डाला कि उनकी हड्डियां तक दिखाई देने लगी हैं। लाशों के आस-पास खून और गोشت के टुकड़ों के ढेर लगे हुए हैं। इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने एक झुरझुरी सी लेकर बताया, “उन दोनों लाशों में से एक लाश तो उस कोठी के मालिक और बिस्किट तथा टाफियां बनाने वाली सुप्रसिद्ध फैक्टरी ‘कापड़िया कंफेक्शनरी’ के मालिक सेठ रतनचंद कापड़िया की है, जो उनके बेडरूम में पड़ी हुई है। दूसरी लाश किसी अज्ञात व्यक्ति की है। वह लाश सेठ रतनचंद कापड़िया के बेडरूम की खिड़की के ठीक नीचे दीवार के पास पड़ी है। उसके अज्ञात व्यक्ति के बदन पर काले रंग का नायलोन का लबादा था। यह लबादा उसने शानदार सूट के ऊपर पहन रखा था। उस लबादे की जेब में लोहे के लम्बे-लम्बे ऐसे औजार मिले हैं, जो लकड़ी में सूराख करने या लोहे के सींखचों को काटने के काम आते हैं। उसके लबादे की एक जेब से 38 प्वाइंट का एक भरा हुआ रिवॉल्वर भी बरामद हुआ है।”

“इन चीजों के अलावा उसकी जेबों से और भी कुछ बरामद हुआ?” मेजर बलवंत ने पूछा।

“मुझे जितनी जानकारी मिली है वही बता रहा हूं। पूरी बात तो वहां जाने पर ही मालूम होगी। सेठ रतनचंद कापड़िया महाराष्ट्र के प्रमुख उद्योगपतियों में से थे। इसलिए कमिश्नर साहब ने मुझे आदेश दिया है कि मैं खुद इस केस की तफ्तीश करूं। मैं चाहता हूं कि आप भी मेरे साथ चलें। मैं आपके संबंध में मिस्टर देशपांडे से बातचीत कर चुका हूं। उन्होंने भी मुझे यही परामर्श दिया है कि आपसे रिव्क्वेस्ट करूं कि इस

रहस्यपूर्ण मर्डर केस की छानबीन का काम आप अपने हाथ में ले लें।” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने प्रार्थना और आग्रह भरे स्वर में कहा।

“आपकी किसी आज्ञा की अवहेलना कर सकूं भला मेरी मजाल हो सकती है।” मेजर बलवंत ने मुस्कराते हुए कहा, “आप पालघर कब जा रहे हैं?”

“सिर्फ आपके हुक्म का इन्तजार है।” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने हलकी-सी हंसी के साथ कहा, “पूरी तरह तैयार होने के बाद ही मैंने आपको फोन किया था, क्योंकि मैं जानता था कि आप फोन सुनते ही यही कहेंगे कि चले आइए।”

“तो फिर चले आइए। तब तक मैं तैयार हो जाता हूं।” मेजर बलवंत ने हंसते हुए कहा और रिसीवर क्रेडिल पर रखकर उठ खड़ा हुआ।

दौलत की भूख

मेजर बलवंत की कार इंस्पेक्टर कुलकर्णी की जीप के साथ पालघर की शिवाजी कालोनी में पहुंची तो सेठ रतनचंद कापड़िया की कोठी के सामने हलकी बूदाबांदी के बावजूद लोगों की भीड़ लगी हुई थी।

इंस्पेक्टर कुलकर्णी की जीप और उसके पीछे आती हुई मेजर बलवंत की कार को देखते ही इंस्पेक्टर राजेश ने पुलिस के दो जवानों को इशारा किया। उन्होंने जल्दी से आगे बढ़कर भीड़ को सड़क से हटा दिया।

इंस्पेक्टर राजेश अपने देश के विख्यात जासूस मेजर बलवंत से अच्छी तरह परिचित था। उसे देखकर उसकी प्रसन्नता की कोई सीमा न रही। उसे विश्वास हो गया कि इस अनोखे और रहस्यपूर्ण केस को हल करने में उसे अब कोई कठिनाई नहीं होगी। उसने आगे बढ़कर मेजर बलवंत और अपने सीनियर आफसर इंस्पेक्टर कुलकर्णी का बड़े तपाक से स्वागत किया और सेल्यूट देने के बाद उस कमरे की ओर चल दिया जिसमें

सेठ रतनचंद कापड़िया की लाश पड़ी हुई थी।

मेजर बलवंत ने देखा कि सेठ रतनचंद कापड़िया की लाश जिस पलंग पर पड़ी थी उसे घेरे हुए लगभग डेढ़ दर्जन लोग कुर्सियां डाले बड़े इत्मीनान से बैठे हुए थे। उनमें से अधिकांश लोग सिगरेट का धुआं उड़ाते हुए बातों में इतने खोये हुए थे कि उन्हें मेजर बलवंत और पुलिस के अफसरों के आने का पता ही नहीं चला।

मेजर बलवंत दोनों इंस्पेक्टरों के साथ पलंग के करीब पहुंचा तो उसे यह देखकर बड़ी झल्लाहट हुई कि उन लोगों ने अपनी कुर्सियां पलंग से इतनी सटाकर बिछा रखी थीं कि पलंग तक पहुंचना किसी भी तरह सम्भव नहीं था, क्योंकि डेढ़ दर्जन कुर्सियां पलंग की पाटियों के सहारे-सहारे नहीं बिछाई जा सकती थीं। इसलिए उन लोगों ने कुर्सियों को टेढ़ा-मेढ़ा डाल रखा था।

मेजर बलवंत उन लोगों को सेठ रतनचंद कापड़िया की लाश को घेरकर बैठे देख समझ गया कि ये सभी लोग सेठ रतनचंद कापड़िया के रिश्तेदार हैं, जिन्हें इस बात का भय है कि अगर वे लाश से दूर हो गए, तो उनके वारिस होने का दावा झूठा या हलका पड़ जाएगा।

उनकी इस भावना को भांपकर मेजर बलवंत की झल्लाहट और बढ़ गई। उसने इंस्पेक्टर राजेश की ओर देखते हुए सख्त लहजे में कहा, “इंस्पेक्टर! इन लोगों को इस कमरे में आने और यहां बैठने की इजाजत किसने दी?”

“मेजर साहब! सेठ रतनचंद कापड़िया की हत्या की खबर पाकर जब तक मैं यहां पहुंचा, ये लोग इस कमरे में घुस आए थे और लाश को घेरकर बैठ गए थे। मैंने इन्हें बहुत समझाया, लेकिन ये लोग यहां से हटने के लिए तैयार ही नहीं हुए।” इंस्पेक्टर राजेश ने बेबसी भरे स्वर में उत्तर दिया। ये लोग सेठ कापड़िया के रिश्तेदार हैं, जो पिछले दो हफ्ते से यहां ठहरे हुए हैं। दरअसल, ये लोग सेठ कापड़िया के इकलौते बेटे किशनचंद

कापड़िया के विवाह समारोह में भाग लेने के लिए आए थे, जिसकी एक सप्ताह हुआ विवाह के दूसरे ही दिन कार एक्सीडेंट में मृत्यु हो गई थी। उसके साथ-साथ उसकी पत्नी की भी मृत्यु हो गई थी।”

“क्या सेठ रतनचंद की कोई दूसरी संतान नहीं है?” मेजर बलवंत ने पूछा।

“जी नहीं।” इंस्पेक्टर राजेश ने उत्तर दिया।

“फिर उनकी करोड़ों की इस सम्पत्ति का वारिस कौन होगा?” मेजर बलवंत के स्वर में हलकी-सी रोशनी थी।

“उनके छोटे भाई किशनचंद कापड़िया की बेटी डॉली। जिसके माता-पिता उसके बचपन में ही मर गए थे। उसी वर्ष सेठ रतनचंद कापड़िया की पत्नी का भी देहांत हो गया था। तब सेठ रतनचंद कापड़िया ने अपने बेटे किशनचंद और अपने छोटे भाई की बेटी डॉली का लालन-पालन खुद ही किया था। डॉली उनके बेटे किशनचंद से लगभग तीन वर्ष छोटी है। उसकी उम्र उन्नीस-बीस वर्ष के लगभग होगी। सोफिया कॉलेज में एम.ए. के अन्तिम वर्ष में है।” इंस्पेक्टर राजेश ने बताया।

“जब सेठ रतनचंद कापड़िया की सम्पत्ति की वास्तविक वारिस मौजूद हैं तो इन लोगों की भीड़ लगाने का कोई मतलब नहीं है।” मेजर बलवंत ने कहा और फिर सेठ रतनचंद की लाश को घेरे बैठे लोगों की ओर देखकर ऊंची और सख्त आवाज में बोला, “क्या ये लोग यह नहीं जानते थे कि इनकी इस हरकत से पलंग के आसपास हत्यारे के पैरों के बने हुए निशान मिट जाएंगे? इन लोगों को सबूत मिटाकर हत्यारे की सहायता करने और पुलिस के काम में रुकावट डालने के अपराध में गिरफ्तार करके हवालात में पहुंचा दो। उसी के बाद यहां की कार्रवाई शुरू की जाएगी।”

मेजर बलवंत की कड़कती हुई आवाज और आदेश सुनते ही सेठ रतनचंद कापड़िया की लाश को घेरकर बैठे लोगों के बदन से पसीना फूट पड़ा। वे एकदम हड़बड़ाकर उठ खड़े हुए

और घबराई हुई नजरों से मेजर बलवंत की ओर देखने लगे।

मेजर बलवंत ने पुलिस कांस्टेबलों को इशारा किया वे लोग कुर्सियां उठाकर बाहर रख आए।

“आप सब लोग उस कोने में बैठ जाइए।” मेजर बलवंत ने सेठ रतनचंद कापड़िया के रिश्तेदारों को आदेश दिया और पलंग के पास आ खड़ा हुआ।

“मेजर साहब! फिंगर प्रिंट एक्सपर्टों को इस बेडरूम की इस खिड़की पर और खिड़की के नीचे कुछ ऐसे निशान मिले हैं, जो आदमी के पैरों के बजाय हाथी के पैरों के निशानों से मिलते-जुलते हैं।” इंस्पेक्टर राजेश ने बताया, “पलंग के पास इस तरह के केवल दो-तीन निशान ही मिल सके हैं, क्योंकि इन लोगों की भीड़ ने और निशानों को मिटा डाला था।”

मेजर बलवंत हमेशा से ही उन लोगों को वास्तविक अपराधी से भी बड़ा अपराधी मानता था, जो पुलिस के कामों में इस तरह की रुकावट पैदा कर देते थे। उसे उन लोगों पर पहले ही बहुत गुस्सा आ रहा था। इंस्पेक्टर राजेश की बात सुनकर उसका गुस्सा और भी बढ़ गया। उसने मन ही-मन निश्चय कर लिया कि लाश की जांच-पड़ताल समाप्त करने के बाद उन लोगों को ऐसी कड़ी सजा देगा कि वे भविष्य में भूलकर भी इस ओर आने का साहस न कर पाएंगे।

सेठ रतनचंद की लाश पीठ के बल पड़ी हुई थी। उनके सिर से लेकर पांव तक जगह-जगह से गोشت नोच डाला गया था। कहीं-कहीं तो गोشت इस सीमा तक नोच डाला गया था कि हड्डियां तक साफ-साफ दिखाई देने लगी थीं।

“इंस्पेक्टर राजेश! क्या इस कोठी में रहने वाले किसी आदमी ने सेठ रतनचंद कापड़िया की चीखें सुनी थीं?” मेजर बलवंत ने पूछा।

“जी नहीं।” इंस्पेक्टर राजेश ने उत्तर दिया, “इस कोठी में जितने भी कमरे हैं, सभी साउंड प्रूफ हैं। इसलिए सेठ कापड़िया की चीखें कमरे के बाहर पहुंची ही नहीं होंगी।”

सेठ रतनचंद कापड़िया की लाश को देखने से तो यही पता चलता था कि किसी शेर या चीते जैसे मांसभक्षी जानवर ने अपने नुकीले नाखूनों से सेठ रतनचंद कापड़िया पर उस समय आक्रमण किया जब वह अपने बिस्तर पर गहरी नींद सोये पड़े थे। उस जानवर ने पंजे मारकर उनके बदन का सास गोشت उधेड़कर उन्हें मार डाला।

लेकिन मेजर बलवंत का मन इस तथ्य को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था। दो ठोस कारण थे। पहला कारण तो यह कि शेर या चीते जैसा जानवर तीसरी मंजिल पर बने इस बेडरूम में खिड़की के रास्ते नहीं आ सकता। दूसरा कारण था सेठ रतनचंद कापड़िया के बदन से जगह-जगह से नोचकर फेंके हुए मांस के टुकड़े। अगर सेठ रतनचंद कापड़िया पर किसी शेर या चीते जैसे मांसभक्षी जानवर ने आक्रमण किया होता तो वह मांस को नोचने के बाद खाता, न कि इधर-उधर बिखेरता।

इन्हीं दो कारणों से मेजर बलवंत इस परिणाम पर पहुंच गया कि सेठ रतनचंद कापड़िया किसी मांसभक्षी जानवर के शिकार नहीं हुए, बल्कि उनकी हत्या इस ढंग से की गई कि देखने वाले इसी धोखे में आ जाएं कि सेठजी की हत्या किसी मांसभक्षी जानवर ने की है।

तभी फिंगर प्रिंट एक्सपर्ट ने आकर बताया कि हाथी जैसे पैरों के निशान उस लाश के पास से लेकर कोठी के गेट तक और अज्ञात व्यक्ति की लाश के पास पाए गए हैं, लेकिन बेडरूम में या बेडरूम के बाहर हाथों की उंगलियों का एक भी निशान कहीं नहीं मिला।

“इंस्पेक्टर साहब! सेठजी के नौकर-नौकरानियों और उनकी भतीजी को बुलाइए।” मेजर बलवंत ने कहा।

इंस्पेक्टर राजेश ने एक सार्जेंट की ओर इशारा किया। वह तेजी से बेडरूम से निकल गया और एक मिनट के बाद ही कोठी में काम करने वाले सभी कर्मचारियों और सेठजी की

भतीजी को बुला लाया।

मेजर बलवंत ने सेठ कापड़िया की भतीजी और नौकर-नौकरानियों के चेहरों को बड़े ध्यान से देखा। उन सभी के चेहरों पर शोक, दुःख और चिन्ता की गहरी छाया थी।

सेठ कापड़िया की भतीजी का तो बहुत ही बुरा हाल था। उसका चेहरा ही नहीं उसका समूचा बदन इस तरह सफेद पड़ गया था, जैसे उसके बदन का सारा खून किसी इंजेक्शन द्वारा निकाल लिया गया हो। उसकी बड़ी-बड़ी खूबसूरत आंखें रोते-रोते टेसू के फूलों की तरह सुख दिखाई दे रही थीं।

मेजर बलवंत ने सेठ कापड़िया के संबंध में नौकर-नौकरानियों से पूछताछ की तो सबने यही बताया कि सेठ रतनचंद कापड़िया बहुत ही सज्जन व्यक्ति थे। उसके मन में दया, स्नेह, सहानुभूति और परोपकार की भावनाएं कूट-कूटकर भरी हुई थीं। उनके दरवाजे से कभी कोई व्यक्ति निराश और खाली हाथ नहीं जाने पाता था। उनकी फैक्टरी में जिसमें लगभग दो हजार आदमी काम करते थे, हड़ताल की नौबत कभी नहीं आई थी। उन्हें कभी किसी ने गुस्सा तक होते हुए नहीं देखा था। इसलिए यह सोचना भी गलत था कि उनका कोई दुश्मन भी था।

नौकर-नौकरानियों के बयानों को कलमबन्द करने का आदेश देकर मेजर बलवंत सेठ की भतीजी को साथ लेकर एक खाली कमरे में चला गया और देर तक उनसे बातें करता रहा।

“डॉली! तुम किसी तरह की चिन्ता मत करो। मैं सारी स्थिति को अच्छी तरह समझ गया हूं।” मेजर बलवंत ने कहा, “लेकिन तुम्हें बहुत ही सावधान रहना पड़ेगा। सशस्त्र दरबानों के होते हुए जब तुम्हारे ताऊजी की हत्या हो सकती है, तो तुम्हें भी अपने रास्ते से हटाने में हत्यारे को कोई परेशानी नहीं होगी। अगर तुम्हें कोई खतरा महसूस हो तो तुम मुझे और इंस्पेक्टर राजेश को फोन कर देना। इंस्पेक्टर राजेश बहुत ही ईमानदार और कर्तव्य-परायण पुलिस अफसर हैं।”

यह कहकर मेजर बलवंत ने अपनी जेब से अपना विजिटिंग

कार्ड निकालकर डॉली की ओर बढ़ा दिया।

उस कमरे से निकलकर इंस्पेक्टर राजेश और इंस्पेक्टर कुलकर्णी को साथ लेकर वह नीचे उस स्थान पर आ गया, जहां कोठी की दीवार के पास एक लाश पड़ी हुई थी।

मेजर बलवंत ने लाश के पास खड़े होकर ऊपर की ओर मुंह उठाकर देखा। वह लाश सेठ रतनचंद कापड़िया के बेडरूम की एक खिड़की के ठीक नीचे पड़ी थी।

“तो क्या इसी आदमी ने सेठ रतनचंद की हत्या की थी? और हत्या करने के बाद जब यह खिड़की से किसी रस्सी के सहारे उतर रहा था, तो रस्सी टूट जाने या हाथ से छूट जाने पर तीसरी मंजिल से नीचे आ गिरा और मर गया?” मेजर बलवंत मन-ही-मन सोचने लगा, लेकिन अगर इस आदमी ने सेठ रतनचंद कापड़िया की हत्या की थी, तो फिर ठीक उसी तरह इस आदमी की हत्या किसने की थी?

यह सब सोचते हुए मेजर बलवंत ने उस आदमी के पैरों की ओर देखा। उसके पैरों में रबड़ के वाटरप्रूफ बूट थे। जिनके तले मोटे फोम के बने हुए थे।

जमीन पर चिथड़े-चिथड़े पड़ी उस अज्ञात व्यक्ति की लाश देखते-देखते अचानक मेजर बलवंत की नजर निचली मंजिल की उस लाश के पास वाली एक खिड़की पर पड़ गई, जो खुली हुई थी।

मेजर बलवंत जल्दी से झुककर लाश के पास बैठ गया और उसकी तलाशी लेने लगा।

उसे उस आदमी के चिथड़े-चिथड़े लबादे की एक जेब में लोहे के कई ऐसे औजार मिले, जिनकी सहायता से लोहे की सलाखें और तालों के कुंडे भी खोले जा सकते हैं।

लबादे की दूसरी जेब से साइलेंसर लगा 38 प्वाइन्ट का रिवाल्वर और दो इंच के फल वाला एक रामपुरी चाकू बरामद हुआ।

लबादे की जेबों की तलाशी लेने के बाद मेजर बलवंत ने

लाश की पतलून की जेबों की तलाशी ली।

पतलून की सामने वाली जेबों में किंग साइज का विल्स सिगरेट का पैकेट और एक सफेद रूमाल के अलावा और कुछ नहीं था।

पतलून की पिछली जेब में चमड़े का एक पर्स था।

मेजर बलवंत ने उस पर्स को खोलकर देखा। पर्स की जेब सौ-सौ रुपये के नोटों से भरी हुई थी।

मेजर बलवंत ने गिनकर देखा, वे कुल अठारह नोट थे। उनके अलावा पर्स की दूसरी जेब में छः रुपये की रेजगारी थी।

लेकिन तलाशी लेने पर मृतक की जेब या पर्स से ऐसी कोई चीज बरामद नहीं हुई जो उस व्यक्ति के नाम या पते पर कोई रोशनी डाल पाती।

“इंस्पेक्टर साहब! इस लाश से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि पिछली रात सेठ रतनचंद कापड़िया की हत्या करने के लिए एक के पीछे एक दो आदमी आए थे। पहला आदमी वह था, जो किसी बहुत ही रहस्यपूर्ण ढंग से तीसरी मंजिल की उस खुली खिड़की के रास्ते सेठ रतनचंद कापड़िया के बेडरूम में पहुंच गया और उसने सेठजी को इस ढंग से मौत के घाट उतार दिया कि देखने वाले यही समझें कि सेठजी को किसी इंसान ने नहीं, बल्कि मांसभक्षी जानवर ने मारा है।” मेजर बलवंत ने अपना अनुमान प्रकट करते हुए कहा, “मेरा खयाल है, जिस समय वह स्याह लबादे वाला सेठ रतनचंद कापड़िया की हत्या करने के इरादे से जाली काटने के बाद इस खिड़की में घुस रहा था सेठ कापड़िया का हत्यारा आ गया। वह शायद इससे परिचित था। हो सकता है, हत्यारे और इस स्याह लबादे वाले आदमी के बीच दुश्मनी रही हो। उसने ठीक उसी ढंग से इस आदमी को मार डाला जिस ढंग से उसने सेठ रतनचंद कापड़िया की बर्बरतापूर्ण हत्या की थी।”

“आपका अनुमान बिल्कुल सही मालूम होता है।” दोनों इंस्पेक्टर ने एक साथ कहा।

मेजर बलवंत कुछ कहने ही वाला था कि तभी एक मोटर-साइकिल धड़धड़ाती हुई कोठी के अहाते में दाखिल हुई। मेजर बलवंत और दोनों इंस्पेक्टरों ने देखा उस मोटरसाइकिल को एक नौजवान ड्राइव कर रहा था। मोटरसाइकिल की पिछली सीट पर एक कांस्टेबल बैठा हुआ था।

मोटरसाइकिल पोर्टिको में आकर रुक गई। वह नौजवान और कांस्टेबल मोटरसाइकिल से उतरे और उस ओर चल दिए जहां मेजर बलवंत और दोनों पुलिस इंस्पेक्टर खड़े हुए थे।

कांस्टेबल ने जल्दी-जल्दी आगे बढ़कर सेल्यूट दिया और इंस्पेक्टर कुलकर्णी की ओर देखते हुए बोला, “सर! यह साहब आपसे मिलने आए हैं।”

“मुझसे मिलने?” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने हैरानी से कहा। फिर उस नौजवान की ओर देखते हुए बोला, “आपको कैसे पता चला कि मैं यहां हूं।”

“मैं अमितराव के चाचा वीरेन्द्रराव का बेटा नरेन्द्रराव हूं। मैं आपके पास पुलिस हेडक्वार्टर गया था। वहां पता चला कि आप पालघर में आए हुए हैं। मैं सीधा यहां पुलिस स्टेशन चला आया। पुलिस स्टेशन में एक सार्जेंट ने बताया कि आप सेठ रतनचंद कापड़िया की कोठी पर हैं। वहां से यह कांस्टेबल मुझे पहुंचाने चला आया।” उस युवक ने उत्तर दिया और फिर अपनी जेब से एक लिफाफा निकालकर इंस्पेक्टर कुलकर्णी की ओर बढ़ाते हुए बोला, “मैं सोनपुर से आ रहा हूं। यह पत्र सोनपुर के भूतपूर्व जागीरदार भूपेन्द्रराव के सुपुत्र अमितराव का है, जो आपके बेटे शरद के क्लास फैलो रह चुके हैं।”

“ओह, हां! मैं अमित को बहुत अच्छी तरह जानता हूं।” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने कहा और लिफाफा खोलकर उसमें से पत्र निकालते हुए उन्होंने पूछा, “क्या अमित इन दिनों सोनपुर में हैं?”

“आप इस पत्र को पढ़ लीजिए। अमित के संबंध में आपको सब कुछ मालूम हो जाएगा।” नौजवान ने पत्र की ओर इशारा

किया।

इंस्पेक्टर कुलकर्णी जल्दी-जल्दी पढ़ने लगा।

मेजर बलवंत और इंस्पेक्टर राजेश बड़े ध्यान से उसके चेहरे की ओर देखने लगे, जिस पर एक के बाद एक भाव आते चले जा रहे थे।

पत्र पढ़ने के बाद इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने एक लम्बी सांस ली और फिर पत्र मेजर बलवंत की ओर बढ़ा दिया।

मेजर बलवंत ने पत्र ले लिया और पढ़ने लगा।

अमित ने अपने पत्र में लिखा था :

डियर अंकल!

यह पत्र मैं आपको सोनपुर से लिख रहा हूँ। मुझे सोनपुर में आए अभी 36 घंटे भी नहीं बीते हैं, लेकिन इन थोड़े से घंटों में ही इतनी घटनाएं हो चुकी हैं कि मेरी अक्ल ने काम करना बंद कर दिया है।

दरअसल इन रहस्यपूर्ण घटनाओं का सिलसिला तो उसी समय से शुरू हुआ था जब परसों दोपहर को मुझे अपनी स्टेट के पुराने मैनेजर यशवन्त पाटिल का एक पत्र मिला था कि वह सख्त बीमार हैं और मुझे पत्र मिलते ही फौरन सोनपुर पहुंच जाना चाहिए। उस पत्र को पाते ही, मैं सोनपुर चल पड़ा था।

रास्ते में एक ऐसी घटना हुई, जिसके बारे में मैं सोचता हूँ कि शायद मैंने जीते-जागते एक भयानक, लेकिन बहुत ही खूबसूरत सपना देखा था।

सोनपुर पहुंचकर पता चला कि मैनेजर यशवन्त पाटिल ने मुझे इस तरह का कोई खत नहीं लिखा था। वह किसी नौजवान की तरह पहले जैसे ही हट्टे-कट्टे और तन्दुरुस्त थे।

उसी रात गद्दी में फिर एक अजीब घटना हुई।

पिछली शाम सोनपुर के पास वाली नदी के ढलान पर मेरे चाचा गजेन्द्रराव के बेटे सुरेन्द्रराव की कार उसी

स्थान पर उलट गई, जहां मैंने वह भयानक लेकिन खूबसूरत सपना देखा था।

कार उलट जाने पर सुरेन्द्रराव और उनकी नवविवाहिता पत्नी निशा की मृत्यु हो गई।

सुरेन्द्र की मृत्यु के चौबीस घंटे बाद ही सुरेन्द्र के पिता और फिर आज रात मेरे चाचा गजेन्द्र राव पर किसी मांसाहारी जानवर ने आक्रमण कर दिया और उनके शरीर के चिथड़े-चिथड़े करके भाग गया।

लेकिन उनकी लाश और परिस्थितियों को देखकर मुझे इस बात पर विश्वास नहीं हो रहा कि उन पर किसी मांसाहारी जानवर ने आक्रमण किया था।

इन घटनाओं के अलावा दो ऐसी विचित्र बातें देखीं, जिन पर मैं हैरान रह गया हूँ।

पिछले लगभग ढाई-तीन महीने से गांव वालों को रात को अकसर गोलियां चलने, लोगों की चीख-पुकार और भागने-दौड़ने की आवाजें सुनाई देती हैं।

अकसर आए दिन सारा आकाश किसी तेज और बहुत ही चमकीली रोशनी से भर जाता है। ऐसा लगता है, जैसे सुर्ख रंग का कोई चक्र गांव के ऊपर बहुत ही तेजी से घूम रहा हो। उससे छिटकती चिंगारियां दूर-दूर तक दिखती चली जा रही हों।

पूछताछ करने पर पता चला कि पिछले ढाई-तीन महीने में नदी के ढलान पर खड़े बरगद के पेड़ के नीचे चार और कारें उलट चुकी हैं और दिलचस्प बात यह है कि इन चारों कारों में नवविवाहित पति-पत्नी थे और वे ही मारे गए थे, लेकिन ड्राइवरों के खरोंच तक नहीं आई थी।

मेरा खयाल है कि इन तमाम घटनाओं के पीछे कोई बहुत ही भयानक षड्यन्त्र पनप रहा है। हालांकि गांव वाले इन तमाम घटनाओं के पीछे किसी अतृप्त प्रेतात्मा

का हाथ मानते हैं।

मैंने आपको अक्सर अपने देश के ही नहीं, बल्कि विश्व विख्यात जासूस मेजर बलवंत के पास जाते देखा है। उनके साथ आपकी जितनी घनिष्टता है, मैं उससे भी परिचित हूँ। इसीलिए आप से प्रार्थना कर रहा हूँ कि आप इस सम्बन्ध में मेजर साहब से बात कीजिए। यदि उन्होंने इन घटनाओं की जांच का काम अपने हाथ में ले लिया तो यह मानवता की बहुत बड़ी सेवा होगी। न जाने कितने ऐसे विवाहित जोड़े असमय ही काल के गाल में जाने से बच जाएंगे, जो अच्छी तरह एक-दूसरे के चेहरे भी नहीं देख पाए होंगे।

इस काम के लिए मेजर साहब जितना भी पारिश्रमिक चाहेंगे मैं दूंगा।

मुझे पूरी-पूरी आशा है कि मेजर बलवंत जैसा मानवता का पुजारी मेरी प्रार्थना ठुकराएगा नहीं। आप जितनी भी जल्दी हो सके मेजर साहब को लेकर सोनपुर चले आइए। उन्हें यह भी बता दीजिए कि उनके सभी साथी मेरे साथ हैं, जो संयोग से सोनपुर आ निकले थे।

शरद से कहिए कि मैं यहां अकेला हूँ। उसे एडवेंचर से बहुत ही प्यार है। अगर हफ्ते-दो हफ्ते के लिए सोनपुर चला आए, तो मेरा अकेलापन समाप्त हो जाएगा और शरद की हॉबी पूरी हो जाएगी।

आंटीजी को मेरा प्रणाम निवेदन कर दें और शरद को नमस्ते!

आपका

—अमितराव

मेजर बलवंत ने पत्र मन-ही-मन पढ़ा और फिर इंस्पेक्टर राजेश को भी पढ़कर सुना दिया।

“फिर क्या खयाल है आपका?” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने पूछा।

“यहां का काम तो समाप्त हो ही चुका है। हम लोग सोनपुर चलेंगे।” मेजर बलवंत ने पत्र लिफाफे में रखकर इंस्पेक्टर कुलकर्णी को वापस देते हुए कहा।

“सेठ रतनचंद कापड़िया के बंगले में टेलीफोन है। मैं शरद को फोन कर दूँ। अमित सोनपुर में अकेला है। शरद उसके पास पहुंच जाएगा तो अमित को बहुत सहारा मिल जाएगा, क्योंकि वह भी अमित की तरह ही साहसी और निडर है।” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने कहा और टेलीफोन करने के लिए ड्राइंगरूम की ओर चल दिया।

“विचित्र बात है। एक ही रात में दो विभिन्न स्थानों पर एक ही ढंग से तीन व्यक्तियों की हत्या की गई हैं और दोनों स्थानों में लगभग दस किलोमीटर का फासला है। इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि कोई ऐसा गिरोह है, जिसके सदस्यों को एक ही ढंग से हत्या करने की ट्रेनिंग दी गई है।” मेजर बलवंत ने सोच में डूबे स्वर में कहा।

“मेजर साहब! यह भी तो हो सकता है कि ये तीनों हत्याएं किसी एक ही आदमी ने की हों, क्योंकि कार या मोटर साइकिल द्वारा दस किलोमीटर का सफर तय करने में समय ही कितना लगता है।” इंस्पेक्टर राजेश ने कहा, “पुलिस डॉक्टर के अनुसार सेठ रतनचंद कापड़िया और इस स्याह लबादे वाले अज्ञात व्यक्ति की हत्या रात के दो और तीन बजे के बीच की गई है। हो सकता है सोनपुर में गजेन्द्र राव की हत्या इससे पहले या बाद में की गई हो।”

“आपका अनुमान सही हो सकता है इंस्पेक्टर साहब!” सहसा मोटरसाइकिल पर आने वाला नौजवान जल्दी से बोल उठा, “मेरे ताऊजी की हत्या लगभग डेढ़ बजे की गई थी। मुझे अच्छी तरह याद है, जिस समय ताऊजी की चीख सुनाई दी थी, ठीक डेढ़ बजा था। सुरेन्द्र भैया और उनकी नवविवाहिता पत्नी की मौत ने मुझे बुरी तरह हिलाकर रख दिया था। मैंने निश्चय कर लिया था कि अब मैं सोनपुर में नहीं रहूंगा और

सुबह तड़के ही बम्बई चला जाऊंगा। मुझे रात को एक मिनट के लिए भी नींद नहीं आई थी। इसलिए मैं बार-बार घड़ी देखने लगता था कि कब सुबह हो और कब मैं बम्बई जाऊं।”

“इसका मतलब है कि जिस व्यक्ति ने गजेन्द्रराव की हत्या की थी उसके पास इतना समय था कि वह सोनपुर से पालघर आकर सेठ रतनचंद कापड़िया की हत्या कर सकता था।” मेजर बलवंत ने सोचते हुए कहा।

तभी हाथ-पैरों के निशान खोजने वाले एक एक्सपर्ट ने आकर कहा, “जिस आदमी की लाश खिड़की के नीचे पड़ी हुई है, इसके पैरों के निशान इस खिड़की से कोठी के उस कोने तक पाए गए हैं। कोठी के उस कोने के पीछे फुटपाथ पर एक कार के टायरों के निशान भी मिले हैं। मेरा अनुमान है कि यह स्याह लबादे वाला आदमी उस कार के द्वारा यहां तक पहुंचा था, क्योंकि जहां कार के टायरों के निशान हैं, वहीं से इस आदमी के जूतों के निशान शुरू होते हैं। मेरा खयाल है सेठ कापड़िया की हत्या करने के बाद हत्यारे ने इस स्याह लबादे वाले आदमी की हत्या की और फिर इसी की कार में बैठकर फरार हो गया। टायरों के निशानों से पता चलता है कि कार लम्बे साइज की थी।”

“अगर सेठ रतनचंद कापड़िया और इस स्याह लबादे वाले व्यक्ति का हत्यारा इस स्याह लबादे वाले व्यक्ति की कार में बैठकर फरार हुआ है, तो उसकी अपनी कार या मोटरसाइकिल कहां गई? या तो वह पैदल यहां तक आया था या फिर उसके साथ एक आदमी और भी था, जो उसकी कार लेकर उसके साथ चला गया।” मेजर बलवंत ने कहा, “और अगर हम यह मान लें कि वह यहां तक पैदल आया था, तो हमारा यह खयाल गलत हो जाता है कि गजेन्द्रराव और सेठ रतनचंद कापड़िया तथा इस स्याह लबादे वाले व्यक्ति की हत्या एक ही हत्यारे ने की है।”

“मेजर साहब! मुझे तो आपका दूसरा ही विचार सही दिखाई

देता है।” इंस्पेक्टर राजेश ने कहा, “जो अपराधी इतने योजनाबद्ध तरीके से हत्याएं करता है, वह ऐसे आंधी-पानी में पैदल कीचड़ और पानी से भरी सड़कों पर चक्कर नहीं काट सकता। यह अलग बात है कि उसने अपनी कार कोठी से दूर छोड़ दी हो और उसके बाद आने वाले इस स्याह लबादे वाले को दिखाई न दी हो।”

“हमने कोठी के आस-पास दूर-दूर तक देख लिया। हमें दूसरी कार के टायरों के निशान कहीं दिखाई नहीं दिए।” फिंगर प्रिंट एक्सपर्ट ने कहा।

तभी इंस्पेक्टर कुलकर्णी अपने बेटे शरद को फोन करके आ गया।

अचानक मेजर बलवंत को कोई बात याद आ गई। उसने सब लोगों को अपने साथ आने का इशारा किया और ड्राइंगरूम में पहुंच गया, जहां सेठ रतनचंद कापड़िया के रिश्तेदार दुख और उदासी की मूर्ति बने अपने-अपने विचारों में डूबे बैठे हुए थे। हर व्यक्ति आशंकित था कि पुलिस उसे गिरफ्तार करके हवालात में ठूस देगी और फिर उसे सेठ रतनचंद कापड़िया की हत्या के अपराध में या तो फांसी पर लटका दिया जाएगा या उम्र कैद हो जाएगी।

मेजर बलवंत ने सेठ कापड़िया की भतीजी डॉली को भी वहीं बुलवा लिया। उसने डॉली से कहा कि थोड़ी देर के बाद उसकी असिस्टेंट डोरा पहुंच जाएगी। वह उसकी सुरक्षा का पूरा-पूरा ध्यान रखेगी। उसके अलावा दो सशस्त्र कांस्टेबल भी कोठी की निगरानी के लिए तैनात कर दिए जाएंगे।

डॉली को तसल्ली देने के बाद मेजर बलवंत सेठ रतनचंद कापड़िया के रिश्तेदारों से कहा कि वे इसी समय अपना सामान उठाए और अपने-अपने घर चले जाएं।

फिर मेजर बलवंत ने अपने बंगले पर फोन करके डोरा को हिदायत दी कि वह भी सुधीर वगैरह के साथ चली जाए और पालघर में सेठ रतनचंद कापड़िया की भतीजी डॉली की सुरक्षा

का पूरा-पूरा ध्यान रखे।

उसके बाद वह इंस्पेक्टर कुलकर्णी और गजेन्द्रराव के साथ ड्राइंगरूम से निकल आया।

थोड़ी दूर के बाद ही नरेन्द्रराव की मोटरसाइकिल के पीछे-पीछे मेजर बलवंत की कार और इंस्पेक्टर कुलकर्णी की जीप सेठ रतनचंद कापड़िया की कोठी के गेट से निकलीं और सोनपुर जाने वाली सड़क पर मुड़ गईं।

जब नरेन्द्रराव की मोटरसाइकिल सोनपुर के निकट बहने वाली नदी के पुल को पार करके ढलान पर उतरने लगी, तो उसने मेजर बलवंत और इंस्पेक्टर कुलकर्णी को अपनी गाड़ियों की स्पीड कम करने का इशारा किया और फिर बरगद के पेड़ के पास पहुंचकर अपनी मोटरसाइकिल रोक दी।

उसके पीछे-पीछे आती हुई मेजर बलवंत की कार और इंस्पेक्टर कुलकर्णी की जीप भी रुक गई।

“मेजर साहब! यही वह जगह है, जहां मेरे ताऊजी के बेटे सुरेन्द्रराव की कार उस समय उलटी थी जब वह विवाह के बाद अपनी नवविवाहिता पत्नी निशा को लेकर गांव लौट रहे थे।” नरेन्द्रराव ने दुर्घटना स्थल की ओर उंगली से इशारा करते हुए कहा, “और इसी स्थान पर इससे पहले चार कारें और भी उलट चुकी हैं। सबसे बड़ी हैरानी की बात यह है कि वे कारें भी ऐसे नौजवानों की थीं, जो विवाह के बाद अपनी नववधू को लेकर अपने घर लौट रहे थे।”

मेजर बलवंत और इंस्पेक्टर कुलकर्णी काफी देर तक बरगद के उस विशाल पेड़ और उसके आस-पास की जमीन को देखते रहे और फिर अपनी-अपनी गाड़ी में जा बैठे।

थोड़ी देर के बाद उनकी गाड़ियां नरेन्द्रराव की मोटरसाइकिल के पीछे-पीछे राजपरिवार की तीन शताब्दी पूर्व बनी गढ़ी के विशाल फाटक में प्रवेश कर रही थीं।

“मेजर साहब! मैं विज्ञान का विद्यार्थी रहा हूं। बम्बई विश्वविद्यालय से एम.एस.-सी. करने के बाद मैंने शिकागो

मेडिकल कॉलेज से एम.बी.बी.एस. और फिर एफ.आर.सी.एस. किया है। मैं भूत-प्रेत के अस्तित्व को नहीं मानता; लेकिन यहां आते हुए मेरे साथ जो घटना हुई थी उसने मेरी समस्त मान्यताओं और विश्वासों की जड़ें हिला डाली हैं।” दोपहर का खाना खाने के बाद कॉफी पीते हुए अमित राव ने कहा।

उस समय डाइनिंग टेबल पर मेजर बलवंत, इंस्पेक्टर कुलकर्णी और नरेन्द्र राव के अलावा सुधीर, राजीव, संजीव, डेजी और शरद भी थे। डोरा और कल्याणी को मेजर बलवंत ने सोनपुर पहुंचते ही पालघर में सेठ रतनचंद कापड़िया की कोठी पर भेज दिया था।

“वह घटना आज भी मेरी आंखों के सामने नाच रही है। चाहे जिस वक्त नाच उठती है। उस लड़की की पीड़ा और वेदना भरी मौत की कभी न टूटने वाली नींद से बोझिल आंखें हर समय मेरी आंखों के आगे नाचती रहती हैं। हर रात मुझे ऐसा महसूस होता है, जैसे वह मेरी बांहों में लिपटी मेरे सीने से लिपटी हो—उसके उन खूबसूरत और तराशे हुए होंठों की छुअन मैं हर पल महसूस करता रहता हूं।” अमित ने दर्द भरे स्वर में कहा। उसकी आवाज में मचलती पीड़ा पल-पल गहरी होती जा रही थी। वह एक पल अपने आपको संयत करने की कोशिश करता रहा फिर उसने उस रात की दोनों घटनाएं विस्तार से सुनने के बाद कहा, “मैंने यह बात आज तक किसी को नहीं बताई है। केवल यह सोचकर कि लोग मुझे अन्धविश्वासी और बेवकूफ न समझ बैठें। भला आज के इस एटमिक युग में इस बात पर कौन विश्वास करेगा।”

मेजर बलवंत ने उसकी इस बात के उत्तर में अपना कोई विचार प्रकट नहीं किया। वह बड़ी गम्भीरता से इस घटना पर विचार कर रहा था।

“मेजर साहब! जब से मैं यहां आया हूं, अपने आपमें एक विचित्र परिवर्तन महसूस कर रहा हूं। कभी-कभी सोचता हूं कि अगर पूर्वजों की बनाई हुई इस गढ़ी में आते ही मुझे कोई

दिव्य दृष्टि प्राप्त हो गई है। यह बात सबसे पहले मैंने उस समय नोट की जब मेरे बड़े चाचाजी गजेन्द्र राव के बेटे सुरेन्द्र राव की कार का एक्सीडेंट हुआ। मैं अपने बेडरूम में बिस्तर पर सोया पड़ा था। मेरे बेडरूम के बाहर दामले सो रहा था। गद्दी का फाटक बंद था। उस पर दो सशस्त्र दरबान मौजूद थे। अचानक सोते-सोते मुझे ऐसा लगा कि मैं उस बरगद के पेड़ के नीचे खड़ा हूँ। मैंने ठीक उसी तरह सुरेन्द्र राव को कार के ब्रेक लगाते हुए देखा, जिस तरह मैंने लगाए थे। फिर मैंने सुरेन्द्र राव की कार को पलटकर ढलान पर लुढ़कते हुए देखा। सुरेन्द्र राव और निशा की दर्द-भरी चीखें सुनीं, जो मेरे कानों में आज भी गूँज रही हैं। उसके बाद मैंने सुरेन्द्र राव और निशा की लहलुहान लाशें देखीं। उन लाशों को देखकर मुझे ऐसा लगा था जैसे किसी ने हथौड़े मार-मारकर उनके सिरों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए हों।" अमितराव ने खोए-खोए स्वर में कहा फिर एक पल की खामोशी के बाद बोला, "और फिर मेरी आंखों के आगे कुछ देर के लिए घटाटोप अंधेरा छा गया; लेकिन कुछ देर बाद ही मेरी आंख खुल गई। मैंने देखा, मैं अपने बिस्तर पर पड़ा हुआ था और मेरा सारा शरीर पसीने में डूबा हुआ था। मैंने दामले को आवाज देने की कोशिश की थी; लेकिन मेरे मुंह से आवाज ही नहीं निकली थी।"

अमित राव की बातें सुनकर वहां बैठे सभी लोगों की हैरानी और भी बढ़ गई थी।

"थोड़ी देर के बाद ही दीवान यशवन्त पाटिल और गांव के कुछ लोग मेरे पास आए और तब उन्होंने सुरेन्द्र राव की मृत्यु की सूचना दी। मैं कुछ देर बाद उस जगह पहुंचा, जहां सुरेन्द्र राव और निशा की लाशें पड़ी हुई थीं।" अमित राव ने कहा, "और मेजर साहब! मैं यह देखकर हैरान रह गया कि सचमुच ही सुरेन्द्र राव और निशा के सिर इस तरह फटे हुए थे, जैसे हथौड़े मार-मार उनके सिर फोड़े गए हों।"

"वास्तव में आप जो कुछ कह रहे हैं, उस पर आज के युग

का तो कोई भी आदमी विश्वास नहीं कर पाएगा।" इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने कहा।

"मेजर साहब! इस सम्बन्ध में आपकी राय क्या है?" अमित राव ने मेजर बलवंत की ओर देखते हुए पूछा।

मेजर बलवंत कुछ देर चुपचाप बैठा कुछ सोचता रहा, फिर सोच भरे स्वर में धीरे-धीरे कहने लगा, "अमित बाबू! ये सारी घटनाएं जितनी असम्भावित और अविश्वसनीय भी हैं। आज का आधुनिक मानव भले ही इन घटनाओं पर विश्वास न कर पाए, लेकिन मैं दृढ़ता के साथ कह सकता हूँ कि आपके साथ जो भी घटनाएं हुई हैं वे सच थीं। उन पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं है।"

"वह कैसे?" शरद पूछ बैठा।

"शरद बाबू! लोगों का खयाल है कि आज के ऐटमिक युग में प्रेतात्माओं की धारणा अकल के दिवालिएपन के अलावा और कुछ नहीं है। भूत-प्रेत का कोई अस्तित्व नहीं होता। यह इंसान की अपनी अस्था, विश्वास और आन्तरिक भय की उत्पत्ति है।" मेजर बलवंत ने गम्भीर स्वर में कहा, "ऐसा कहने वाले वे लोग हैं, जो अपनी बुद्धि, विवेक और अनुभूतियों को ही सर्वोपरि मानते हैं। उनकी धारणा होती है कि जो वस्तु बुद्धि, विवेक और दृष्टि से परे है, उसका कोई अस्तित्व ही नहीं है; लेकिन हमारा इतिहास साक्षी है कि अनादि काल से संसार की प्रत्येक सभ्यता भले ही यूनानी सभ्यता हो या मिस्री, चीनी हो या भारतीय सभी ने प्रेतात्माओं के अस्तित्व को स्वीकार किया है। और उस युग में किया था, जब इन सभ्यता सम्पन्न देशों के बीच पारस्परिक विचारों के आदान-प्रदान के कोई साधन नहीं थे। यानी हम यह नहीं कह सकते कि किसी एक देश को धारणा या विचारों को दूसरे देश ने ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया था। खैर, यह एक लम्बा विषय है। इस सम्बन्ध में हम फिर कभी बात करेंगे। इस समय तो मैं सबसे पहले गजेन्द्रराव, सेठ रतनचंद कापड़िया और स्याह लबादे वाले उस

अज्ञात व्यक्ति की हत्या की गुत्थी को सुलझाना चाहता हूं।”

“इन हत्याओं के सम्बन्ध में पहला तो महत्वपूर्ण प्रश्न यही है कि सेठ रतनचंद कापड़िया और गजेन्द्र राव के बीच कोई सम्बन्ध था या नहीं? क्योंकि उन दोनों की हत्याएं एक ही रात में थोड़े समय के अन्तर पर एक ही ढंग से की गई हैं। इससे सन्देह होता है कि उन दोनों के बीच निश्चित रूप से कोई-न-कोई सम्बन्ध अवश्य था और जो भी सम्बन्ध था अत्यधिक गहरा था।” सुधीर ने कहा, “और दूसरा महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि सेठ रतनचंद कापड़िया का उस स्याह लबादे वाले व्यक्ति के अलावा दूसरा दुश्मन कौन था जिसने उसी दिन सेठ रतनचंद कापड़िया की हत्या की योजना बनाई जिस दिन उस स्याह लबादे वाले ने बनाई थी। लेकिन उसे उस स्याह लबादे वाले व्यक्ति से पहले सेठ रतनचंद कापड़िया की हत्या कर डालने में सफलता मिल गई थी?”

“सुधीर भाई! इस सम्बन्ध में एक और भी महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है कि क्या उस स्याह लबादे वाले व्यक्ति के साथ सेठ रतनचंद कापड़िया के हत्यारे की कोई दुश्मनी थी जो कि उसने सेठ रतनचंद कापड़िया की हत्या करने के फौरन बाद ही उस स्याह लबादे वाले को मार डाला।” राजीव ने कहा, “और इस बात से प्रमाणित हो जाता है कि सेठ रतनचंद कापड़िया का हत्यारा और उस स्याह लबादे वाले व्यक्ति को अच्छी तरह जानता था। इतनी अच्छी तरह के लबादे में अपने-आपको सिर से पांव तक छिपा लेने के बाद भी उसने उसे पहचान लिया था और मार डाला था।”

“मुझे तो ऐसा लगता है कि सेठ रतनचंद कापड़िया के दो दुश्मन थे।” संजीव ने कहा, “ये दो दुश्मन दो गिरोह भी हो सकते हैं। हो सकता है इन दोनों गिरोहों के साथ या इनमें से उस गिरोह के साथ गजेन्द्र राव का भी सम्बन्ध रहा हो, जिसने सेठ रतनचंद कापड़िया की हत्या की है।”

“अमित बाबू, आपके चाचाजी, गजेन्द्रराव या उनके बेटे

सुरेन्द्र राव की आमदनी के साधन क्या-क्या थे?” मेजर बलवंत ने पूछा।

“जागीरदारी प्रथा के समाप्त होने से पहले मेरे पिताजी ने अपने दोनों भाइयों गजेन्द्र राव और वीरेन्द्र राव को सोनपुर गांव में एक-एक हजार खेतिहर धरती और एक-एक गांव गुजारे के लिए दे रखा था। उन दोनों गांव की मालगुजारी से उन दोनों को हर साल दस-बारह हजार रुपये की आमदनी हो जाती थी।” अमित राव ने बताया, “लेकिन जागीरदारी प्रथा के समाप्त हो जाने पर मालगुजारी की आमदनी बंद हो गई थी। बस जमीन की आमदनी ही रह गई थी। वैसे सरकार से उन्हें उन गांवों का काफी मुआवजा मिला था।”

“छोटे ताऊजी ने लगभग पांच साल पहले बम्बई में होम्योपैथिक दवाएं बनाने वाली एक फैक्टरी स्थापित कर ली थी। बाद में एम.एस-सी. करने के बाद सुरेन्द्र भैया ने उस फैक्टरी का सारा काम संभाल लिया था और ताऊजी स्थायी रूप से खेती-बाड़ी का काम देखने लगे थे। नरेन्द्र राव ने बताया, “सुरेन्द्र भैया की शादी जिस लड़की के साथ हुई है उसके पिता की भी बम्बई में तरह-तरह की मशीनें बनाने वाली बहुत बड़ी फैक्टरी है।” शायद आपने कोल्हाटकर इंडस्ट्रीज का नाम सुना हो?”

“और आपके पिताजी आजकल क्या कर रहे हैं? मेरा मतलब है, क्या वह भी कोई कारोबार कर रहे हैं?” मेजर बलवंत ने पूछा।

“जागीरदारी समाप्त हो जाने के बाद उन्होंने बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन का काम शुरू किया था।” नरेन्द्र राव ने बताया, “हमारे गांव के पास जो नदी बहती है, इसका पानी बहुत ही मीठा और स्वास्थ्यवर्धक है। बम्बई में पानी की कमी रहती है और इस नदी का पानी बेकार ही समुद्र में चला जाता है, इसलिए सरकार गांव से लगभग एक मील दूर नदी पर एक बहुत विशाल बांध बनवा रही है। इस बांध का पानी मोटे-मोटे

पाइपों द्वारा बम्बई पहुंच जाएगा। पिताजी की कंस्ट्रक्शन कम्पनी ही इस बांध को बना रही है। इसीलिए पिताजी ने मुझे इंजीनियरिंग की शिक्षा दिलवाई थी। इंजीनियरिंग करने के बाद मैं दो वर्ष फ्रांस में रहकर बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन की उच्च शिक्षा प्राप्त कर चुका हूं और इस कंस्ट्रक्शन कम्पनी में चीफ इंजीनियर के पद पर काम कर रहा हूं। कम्पनी मुझे काफी अच्छा वेतन देती है।”

“यानी आप अपने पिता की कम्पनी में ही नौकरी करते हैं।” डेजी हंसते हुए बोली।

“नौकर तो पिताजी भी हैं। वह कम्पनी के मैनेजिंग डायरेक्टर हैं। उन्होंने अपना वेतन निर्धारित कर रखा है। कम्पनी के दूसरे कर्मचारी जिस तरह वेतन लेते हैं, वह भी लेते हैं।”

“इसका मतलब है कि यह लिमिटेड कम्पनी है।” डेजी बोली।

“लिमिटेड नहीं प्राइवेट लिमिटेड है।” नरेन्द्र राव ने कहा, “उसमें हमारी बड़ी ताईजी यानी अमित की माताजी के भी शेयर हैं।”

“मुझे पता नहीं।” अमित बोला।

“दीवानजी ने शायद आपको बताया नहीं। उन्होंने ताईजी के नाम से कम्पनी के दस प्रतिशत शेयर खरीद रखे हैं। सुरेन्द्र भैया और उनके पिताजी के भी दस प्रतिशत शेयर थे।” नरेन्द्र राव ने बताया।

अमित सोच में पड़ गया कि दीवान यशवन्त पाटिल ने उसे इन शेयरों के बारे में अभी तक क्यों नहीं बताया, जब कि वह अन्य कम्पनियों के शेयर सम्बन्धी कागजात तक उसे सौंप चुके थे। हो सकता है, इन शेयरों के बारे में उन्होंने मां को बता दिया हो और उसे बताना भूल गए हों।

“चलिए, हम लोग गजेन्द्र राव की हवेली पर चलें।” मेजर बलवंत ने कॉफी का प्याला रखकर एक नया सिगार सुलगाते हुए कहा और फिर उठ खड़ा हुआ।

उसके साथ-साथ और लोग भी उठ खड़े हुए।

मेजर बलवंत ने डेजी को कुछ हिदायतें देकर वहीं छोड़ दिया और अपने साथियों, इंस्पेक्टर कुलकर्णी, अमित और नरेन्द्र के साथ गजेन्द्र राव की हवेली की ओर चल दिया।

अनोखी गंध

रात के अभी केवल दस बजे थे, लेकिन राव घराने की वह विशाल गढ़ी अभी से रात के सन्नाटे में डूब गई थी। जाग रहे थे केवल गढ़ी के फाटक पर पहरा देने वाले दोनों सशस्त्र दरबान और अमित तथा मेजर बलवंत के साथी।

मेजर बलवंत ने अपना बिस्तर अमित के बेडरूम में ही बिछवाया था। उसने गढ़ी के अन्य भागों में जलने वाली बत्तियों की तरह साढ़े नौ बजे ही बेडरूम की बत्तियां बुझा दी थीं और बेडरूम की उत्तरी और पूर्वी दीवार में बनी सारी खिड़कियां बन्द कर दी थीं। आज आकाश पर घटाएं नहीं थीं। इसलिए उन बन्द खिड़कियों के शीशों से तारों की तेज रोशनी बेडरूम के अधिकांश भाग में फैली हुई थी।

अमित ने मेजर बलवंत को बताया था कि हर रात उसे ऐसा महसूस होता है कि कोई उसके पास आता है, लेकिन जैसे ही उसके होंठ अमित के होंठों से छूते हैं, अमित अपने होश-हवास खो बैठता है और सुबह को जब उसकी आंख खुलती है, तो बिस्तर पर एक भीनी-भीनी, लेकिन बहुत ही मादक गन्ध के अलावा उसे और कुछ नहीं मिलता।

मेजर बलवंत ने निश्चय कर लिया था कि आज की रात वह एक पल के लिए भी अपनी पलकें नहीं मूंदेगा। उसका विचार था कि शायद अमित को यहां से वापस बम्बई भेजने के लिए कुछ ऐसे लोग, जो इस गढ़ी या उसकी जमीन-जायदाद से अनुचित लाभ उठा रहे हैं, यह षड्यन्त्र रच रहे हैं। इस विचार के आते ही सबसे पहले उसका ध्यान अमित की इस्टेट के पुराने दीवान यशवन्त पाटिल की ओर गया था। उसने दोपहर

को गजेन्द्र राव की हवेली से लौटने के बाद दीवान यशवन्त पाटिल से भेंट की थी। उनसे भेंट करने और उनके अब तक के रिकार्ड को देखने के बाद वह इस परिणाम पर पहुंचा था कि दीवान यशवन्त पाटिल इस परिवार के लिए अपने प्राण तो दे सकता है, लेकिन अहित की कल्पना सपने में भी नहीं कर सकता।

दीवान यशवन्त पाटिल के परिवार के बारे में पूछने पर मेजर बलवंत को हवेली में काम करने वाले पुराने नौकरों ने बताया था कि दीवान यशवन्त पाटिल मूल रूप से बम्बई के रहने वाले थे। सोनपुर जागीर का दीवान बनने के बाद दीवान जी ने बहुत कोशिश की थी कि उनकी पत्नी भी बच्चों के साथ सोनपुर में ही आकर रहें, लेकिन बम्बईया वातावरण में पली-बढ़ी उनकी पत्नी अपनी शानदार नौकरी और बम्बई को छोड़कर सोनपुर जैसे छोटे नगर में रहने के लिए तैयार नहीं हुई। वह अपने बच्चों के साथ बम्बई में ही रहती रही। बाद में पता नहीं क्यों उन दोनों के बीच सम्बन्ध विच्छेद हो गया। दीवान साहब अपनी एक बेटी चंदा और बेटे प्रमोद को अपनी पत्नी के पास से ले आए थे और दो जुड़वां बेटियां उनकी पत्नी के पास ही रह गई थीं। कुछ दिनों के बाद एक दिन जब दोनों बच्चियां फालने में पड़ी सो रही थीं, कोई बदमाश एक बच्ची को उठा ले गया। उसी के गम में उनकी पत्नी का देहान्त हो गया। कुछ लोगों का कहना है कि वह अपनी बच्ची की खोज में घर से निकलीं, तो फिर कभी नहीं लौटीं। यह बात दीवानजी को लगभग पन्द्रह-सोलह वर्ष के बाद अभी पिछले ही दिनों मालूम हुई, क्योंकि उनके साथ सम्बन्ध-विच्छेद होते ही उनकी पत्नी ने उनका बंगला छोड़ दिया था और सस्ते दामों में एक पुराना बंगला खरीद लिया था। उस बंगले का दीवानजी को पता नहीं था। उन्होंने बहुत खोजा अखबारों से विज्ञापन भी प्रकाशित कराए, लेकिन उनकी उस बेटी का अभी तक कोई पता नहीं चला।

उनका बेटा अमेरिका में इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त कर रहा था, लेकिन दो-ढाई महीने हुए उनकी बेटी चंदा ने हवेली के सामने वाली झील में कूदकर आत्महत्या कर ली, लेकिन यशवन्त पाटिल का कहना था कि उनकी बेटी ने आत्महत्या नहीं की। उसे किसी भी चीज का अभाव नहीं था। वह अपूर्व सुन्दरी और पढ़ी-लिखी युवती थी। घर वाले ही नहीं बाहर वाले भी बीस वर्षीया चंदा को बेहद प्यार करते थे। वह झील की सीढ़ियों पर पानी में पांव लटकाए बैठी थी। अचानक न जाने कैसे अपना संतुलन खो बैठी और झील में जा गिरी, क्योंकि वह तैरना नहीं जानती थी, इसलिए पानी से नहीं निकल पाई और उसकी मृत्यु हो गई।

मेजर बलवंत ने चंदा की मृत्यु के बारे में गांव वालों का अनुमान भी सुना था और दीवान यशवन्त पाटिल ने तो स्वयं ही अपनी बेटी चंदा की मृत्यु के बारे में बताया था; लेकिन वह अभी तक इस सम्बन्ध में कोई निश्चित धारणा नहीं बना सका था।

मेजर बलवंत की आंखें खुली हुई थीं। वह अपने बिस्तर पर लेटा इन्हीं तमाम बातों पर बड़ी गम्भीरता और गहराई से विचार कर रहा था।

अचानक गद्दी के द्वार पर टंगे विशालकाय घंटे ने एक-एक कर बारह बजने की सूचना दी और उसी के साथ खटाक की आवाज के साथ अमित के पलंग के सिरहाने वाली खिड़की खुल गई।

मेजर बलवंत चौंककर जल्दी से उठ बैठा और तभी खिड़की से गुजरकर हवा का एक जोरदार झोंका उसके चेहरे से आ टकराया। ठंडी हवा के उस झोके से न जाने क्यों उसे एक अजीब-सी राहत महसूस हुई। उसके चारों ओर एक भीनी-भीनी मादक और मोहक गंध बिखरती चली गई। मेजर बलवंत ने महसूस किया, जैसे उस गंध में हजारों तरह के सुगंधित फूलों की गंध शामिल हो। वह गंध इतनी मोहक और मादक

थी कि मेजर बलवंत को यह महसूस तक न हो पाया कि उससे बोझिल होकर उसकी पलकें कब और किस तरह मुंदती चली गई थीं और वह कब बिस्तर पर लेटकर लम्बे-लम्बे खरटि भरने लगा था।

अमित भी मेजर बलवंत की हिदायत के अनुसार अपने बिस्तर पर लेटा जाग रहा था। उसने भी अपने पलंग के सिरहाने वाली बन्द खिड़की को हवा के एक तेज झोंके के साथ खुलते हुए देखा था और फिर बेडरूम में तेजी से बिखरती हुई वह भीनी-भीनी मादक और मोहक गंध भी महसूस की थी।

वह चौंककर मेजर बलवंत को आवाज देने ही वाला था कि तभी किसी के मादक गंध भरे पतले-पतले और बर्फ जैसे ठंडे होंठों ने उसके अधखुले होंठों को अपने आपमें समो लिया था। फिर एक गर्म, नाजुक और मीठा-मीठा दबाव उसके सीने पर बढ़ता चला गया था।

और फिर उस पर बेसुधी-सी छाती चली गई थी।

□ □

सुबह मेजर बलवंत और अमित की आंख तब खुली जब सुबह की चाय लाने वाली नौकरानी ने दरवाजे पर कई बार जोर-जोर से दस्तक दी।

अमित ने उठकर दरवाजा खोला तो दरवाजे पर चाय की ट्रे लिए सांवरी खड़ी थी।

सांवरी ने चाय की ट्रे मेज पर रख दी और जब दो प्यालों में चाय बनाने लगी तो अमित ने कहा, “सांवरी! बराबर वाले कमरे में कुछ और मेहमान सो रहे हैं। शायद वे लोग जाग गए हों। उन्हें चाय पीने के लिए यहीं बुला लाओ।”

“वे लोग तो कभी के चाय पी चुके। मैंने आपके बेडरूम का दरवाजा बहुत खटखटाया, लेकिन आपने दरवाजा नहीं खोला।” सांवरी ने चाय का प्याला मेजर बलवंत की ओर बढ़ाते हुए कहा।

मेजर बलवंत ने चाय का प्याला ले लिया और चाय का घूंट

भरते हुए सोच में डूब गया।

आज से पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था। वह कई-कई रातें जागते हुए बिता दिया करता था। आज पहली बार ऐसा हुआ था कि जागते रहने की लाख कोशिश करने पर भी उसे नींद आ गई थी और वह भी इतनी गहरी नींद कि दरवाजे को कई बार खटखटाने पर भी उसकी आंख नहीं खुली।

तो क्या यह उस भीनी-भीनी गंध का प्रभाव था, उसे इतनी गहरी नींद आ गई। उसे अच्छी तरह याद था कि उसने अमित के सामने ही खिड़कियां अच्छी तरह बन्द की थीं। उन्हें हैंडिल पकड़कर खींच-खींचकर अच्छी तरह से देख लिया था, फिर हवा के एक ही झोंके से अमित के पलंग के सिरहाने वाली खिड़की कैसे खुल गई?

क्या हवा का वह झोंका... ?

मेजर बलवंत अभी इतना ही सोच पाया था कि तभी सुधीर, राजीव, संजीव और डेजी वहां पहुंच गए।

“आप लोगों को रात को कोई परेशानी तो नहीं हुई?” अमित ने शिष्टाचार के नाते पूछा।

“जी नहीं, हम लोगों को कोई परेशानी नहीं हुई?” सुधीर ने उत्तर दिया, “बम्बई की अपेक्षा यहां का मौसम रात काफी ठंडा था। इसलिए बिस्तर पर लेटते ही इतनी गहरी नींद आई कि हम लोगों को ह्योश ही नहीं रहा। सुबह अगर सांवरी आकर हम लोगों को न जगाती तो पता नहीं हम लोग कब तक सोते रहते।”

“लेकिन मैंने तो तुम लोगों को हिदायत की थी कि...” मेजर बलवंत कहते-कहते रुक गया।

“हम लोगों को आपकी हिदायत याद थी; लेकिन बिस्तर पर लेटते ही एक अजीब-सी खुमारी हम लोगों पर छा गई थी।” संजीव ने कहा।

“तो क्या तुम लोग दस बजे ही सो गए थे?” मेजर बलवंत ने पूछा।

“नहीं। हम लोग लगभग पौने बारह बजे तक ताश खेलते रहे थे।” राजीव ने उत्तर दिया, “फिर जब हम लोग ताश रखकर लेटे थे घड़ियाल ने बारह के घंटे बजाए थे। उन घंटों की गूंज अभी खामोश नहीं हुई थी कि हम लोगों को नींद आ गई थी।”

“क्या तुम लोगों ने नींद आने से पहले अपने आसपास कोई भीनी-भीनी गंध महसूस की थी?” मेजर बलवंत ने पूछा।

“जी नहीं।” हम लोगों ने नीचे बगीचे से आने वाली फूलों की खुशबू के अलावा और कोई खुशबू महसूस नहीं की थी, डेजी बोली, “रात को शायद बगीचे में चम्पा और केवड़ा एक साथ फूले थे। रजनीगंधा और हरसिंगार के फूलों की गंध भी आ रही थी, ग्यारह बजे के बाद ठंडी हवा के धीमे-धीमे झोंके आने लगे थे। उनसे सारा कमरा खुशबू से भर गया था। सुबह भी जब मैं सोकर उठी थी मेरा सारा बिस्तर महक रहा था।”

और डेजी के यह कहते ही अमित ने घूमकर अपने सिरहाने रखा तकिया उठा लिया और उसे सूंघने लगा।

तकिये से सचमुच चम्पा, केवड़ा, रात की रानी और हरसिंगार के फूलों की भीनी-भीनी खुशबूएं आ रही थीं।

सहसा मेजर बलवंत चाय का प्याला मेज पर रखकर अपने बिस्तर पर लेट गया; लेकिन उसने अपने बिस्तर में किसी भी तरह की कोई खुशबू महसूस नहीं की।

वह सोचने लगा कि खुशबू अमित और डेजी के ही बिस्तरों से क्यों आ रही है। तो क्या रात डेजी ने भी वैसा ही अनुभव किया था जैसा अमित कई रात से अनुभव करता चला आया है।

“डेजी! रात को तुमने कोई सपना तो नहीं देखा? या जागते-जागते तुमने कोई अनोखी बात देखी हो?” मेजर बलवंत ने पूछा।

“मैंने रात सपने में अपनी बड़ी बहन मारिया को देखा था, जिसको दो-ढाई वर्ष पहले मेरे आ के कुछात तस्कर फर्नांडो

ने गोली से उड़ा दिया था, क्योंकि मारिया अनजाने में उसे दिल दे बैठी थी, लेकिन शादी से पहले ही उसे फर्नांडो की वास्तविकता का पता चल गया था। उसने फर्नांडो के तमाम ठिकानों और साथियों का पता पुलिस को बता दिया था। पुलिस को मारिया की सूचना पर करोड़ों रुपयों का विदेशी माल मिला था। फर्नांडो के सभी साथी इस पुलिस ऑपरेशन में मारे गए थे। केवल फर्नांडो बच गया था। वह जान गया था कि उसके गिरोह के सदस्यों और उसके ठिकानों का पता केवल मारिया को ही था। इसलिए उसने मारिया को गोली मार दी और फरार हो गया। तब से ढाई साल बीत गए। पुलिस उसे खोज रही है।” डेजी ने बताया।

“मुझे मारिया के दुखद अंत का पता है।” मेजर बलवंत ने पूछा, “खैर मारिया ने कुछ बातें की थीं?”

“नहीं, बस मुझसे लिपट कर रोती रही थी। फिर मुझे उठाकर मेरा हाथ पकड़कर इस गढ़ी के पिछले एक ऐसे हिस्से में ले गई थी, जहां घटाटोप अंधेरा छाया हुआ था। बस एक पल के लिए बिजली-सी चमक उठी थी और उस एक पल में ही मैंने उस सारी जगह को देख डाला था। वह एक बहुत बड़ा हॉल था। जिसकी एक ओर की दीवार के सामने युद्धरत योद्धा के रूप में भगवान विनायक की एक विशाल मूर्ति खड़ी थी। फिर मैंने अपने स्वभाव के अनुसार भगवान विनायक को हाथ जोड़कर जैसे ही प्रणाम किया था मेरी आंखें खुल गई थीं और लगभग आधे घंटे तक मैं बिस्तर पर पड़ी करवटें बदलती रही थी, फिर न जाने कब मुझे नींद आ गई थी।” डेजी ने बताया।

डेजी की बात सुनकर मेजर बलवंत हैरानी भरी नजरों से उसकी ओर देखता रहा। न जाने क्यों उसे आज डेजी अन्य दिनों की अपेक्षा कहीं अधिक सुन्दर दिखाई दे रही थी। उसके चेहरे पर एक अजीब-सी ताजगी भी नजर आ रही थी।

वह काफी देर तक बैठा-बैठा कुछ सोचता रहा और फिर उठकर बाथरूम में चला गया।

लगभग आधे घंटे के बाद मेजर बलवंत नहा-धोकर और पूरी तरह तैयार होकर बाथरूम से निकला तो उसने देखा बेडरूम खाली पड़ा था। अमित भी नहाने-धोने के लिए शायद बाहर चला गया था।

वह अपने रिवॉल्वर के चेम्बर को चैक करता हुआ अमित के पलंग के पास पड़ी एक खाली कुर्सी पर आ बैठा और रिवॉल्वर जेब में रखने के बाद अमित के पलंग की ओर देखने लगा।

अमित के बिस्तर पर सिल्क की एक चादर इस तरह फैली हुई थी, जैसे उसे ओढ़कर कोई लेटा हुआ हो, लेकिन वास्तव में उसके नीचे कोई भी नहीं था।

मेजर बलवंत किसी विचार में डूबा उस चादर की ओर देखने लगा।

सहसा उसे चादर में इस तरह की लहरें मचलती दिखाई दीं, जैसे किसी शान्त झील में किसी शरारती बच्चे ने कोई कंकड़ फेंक दिया हो और उस कंकड़ का दबाव पाकर झील की शान्त सतह पर लहरें पैदा हो गई हों और बड़ी तेजी से गोलाकार दायरों के रूप में किनारों की ओर दौड़ी चली आ रही हों।

वह बड़े ध्यान से बिस्तर पर फैली सिल्क की उस चादर में उठती-तरंगों को देखता रहा।

कुछ देर के बाद वे तरंगें शान्त हो गईं, तब मेजर बलवंत ने हाथ बढ़ाकर उस चादर को अपनी ओर खींच लिया।

उस चादर से सचमुच चम्पा, केवड़ा, रात की रानी और हर सिंगार के फूलों की भीनी-भीनी गन्ध आ रही थी।

उसने चादर पलंग पर डाल दी और उठकर कमरे से निकल आया।

मेजर बलवंत दीवान खाने से निकलकर हवेली के एक कोने पर बनी एक बारादरी में जा बैठा।

इन तीन-चार दिनों के अंदर इतनी घटनाएं घट चुकी थीं कि

उसके बारे में सोचते-सोचते उसका दिमाग बुरी तरह थक चुका था। सुबह की ठंडी-ठंडी हवा से उसके तन और मन को जब थोड़ी-सी ताजगी मिली, तो वह फिर उन्हीं केसों के बारे में सोचने लगा।

काफी देर तक सोचते रहने के बाद उसने इन तमाम घटनाओं को तीन भागों में विभाजित कर दिया—

1. मोनार्क जलयान पर हुआ अन्ना फ्रेन्कलिन का दुस्साहसपूर्ण अपहरण।
2. पालघर के सेठ रतनचन्द और सोनपुर के राव गजेन्द्रराव की हत्याएं जो एक ही ढंग से की गई थीं। सेठ रतनचन्द के साथ ही उस स्याह लबादे वाले अज्ञात व्यक्ति की भी ठीक उसी ढंग से हत्या की गई थी, जो या तो उनके बंगले में चोरी करने के इरादे से घुसा था या सेठ रतनचन्द की हत्या करने के इरादे से आ गया था।
3. सेठ छबीलदास के बेटे नगीनदास और राव गजेन्द्र राव के बेटे सुरेन्द्र राव की कारों के साथ सोनपुर के पुल के पास एक ही स्थान पर दुर्घटना हुई। उस दुर्घटना में उन्हीं दोनों की अपनी नवविवाहिता पत्नियों के साथ मृत्यु हो गई, जब कि दोनों कारों के ड्राइवरों के बदन पर खरोंच तक नहीं आई।

अमित राव के साथ भी बरगद के उसी पेड़ के नीचे रहस्यपूर्ण घटना हुई, लेकिन अमित राव को कोई नुकसान नहीं पहुंचा और उसके बाद से अमित राव के साथ जो घटनाएं घट रही थीं, वे भी कम रहस्यपूर्ण नहीं थीं।

हर घटना के साथ कई-कई प्रश्न जुड़े हुए थे और ये प्रश्न इतने पेचिदा थे कि उनके उत्तर खोजते-खोजते उसका दिमाग परेशान हो उठा।

अन्त में उसने निश्चय किया कि वह पहले अन्ना फ्रेन्कलिन को खोजने का प्रयास करेगा।

और यह निश्चय करके वह बारादरी से निकला और दीवान

खाने की ओर बढ़ गया।

उसने दीवान खाने में पहुंचकर अमितराव से विदा ली और अपने साथियों के साथ बम्बई की ओर चल दिया।

दिन दहाड़े लूट

कार्तिक मास का अभी एक सप्ताह ही बीता था। दीवाली में अभी एक सप्ताह की देर थी लेकिन जवेरी बाजार को देखकर ऐसा लग रहा था जैसे आज ही दीवाली हो।

जवेरी बाजार के शोरूमों को नए सिरे से सजाया गया था। दूकानों के अन्दर ही नहीं बाहर भी दूधिया ट्यूबें और रंग-बिरंगे बल्ब लगा दिए गए थे जिनकी मिली-जुली रोशनियों ने जवेरी बाजार की सजावट और खूबसूरती में चार चांद लगा दिए थे।

सेठ छगन भाई मगन भाई जवेरी के शोरूम में आज विशेष चहल-पहल और भीड़-भाड़ दिखाई दे रही थी। उस शोरूम को इस अनोखे ढंग से सजाया गया था कि जो भी उसके सामने से गुजरता था उसके बढ़ते हुए कदम अनचाहे और अनजाने ही ठिठक कर रुक जाते थे।

सेठ छगन भाई शोरूम के एक छोर पर अपनी गद्दी पर बैठे शोरूम में और शोरूम से बाहर लगी भीड़ को बड़ी प्रसन्नता और उल्लास भरी नजरों से देख रहे थे। उन्हें अपने छोटे बेटे रजनीकान्त पर बड़ा गर्व हो रहा था। जिसने पेरिस से लौटते ही शोरूम की काया पलटकर रख दी थी। आज पहली बार उन्होंने महसूस किया था कि उन्होंने रजनीकान्त को पेरिस में डेकोरेशन और बिजनेस मेनजमेंट की ट्रेनिंग दिलाने में जो कई लाख रुपये खर्च किए थे, अकारण नहीं गए। यह रजनीकान्त की सूझ-बूझ का ही कमाल था कि उनके शोरूम की सजावट और खूबसूरती के कारण जवेरी बाजार के तमाम शोरूम किसी कबाड़ी की दूकान बन कर रह गए थे।

शोरूम में सुबह से ही ग्राहकों का तांता लग रहा था। सेठ

छगन भाई ने मन-ही-मन हिसाब लगाया था कि दीवाली तक अगर यही हालत रही तो वे इस एक हफ्ते में ही इतना कमा लेंगे कि घर, शोरूम तथा कारखाने का पूरे साल का खर्चा निकल आएगा, क्योंकि सुबह से छोटे-बड़े नोटों को अलग-अलग करते-करते और गिन-गिनकर उनकी गड़ियां बांधते-बांधते उनके हाथ थकान महसूस करने लगे थे।

रात के आठ बज रहे थे; लेकिन जवेरी बाजार के शोरूम अभी तक खुले हुए थे।

काउंटर पर खड़ा रजनीकान्त हर दो-तीन मिनट के बाद पहले अपनी कलाई पर बंधी घड़ी पर नजर डालता और फिर शोरूम की दीवार पर लगे क्लॉक को देखने लगता। उसका जी चाह रहा था कि शोरूम अब बन्द कर दिया जाए। लेकिन शोरूम को बन्द कराने की वह हिम्मत नहीं कर पा रहा था, क्योंकि जब सात बजे एक सेल्समैन ने सेठ छगन भाई के पास जाकर शोरूम बन्द करने के बारे में पूछा था, तो वह उस पर एकदम बिगड़ पड़े थे। उन्होंने बड़ी सख्ती से आदेश दे डाला था कि जब तक जवेरी बाजार की सभी दुकानें बन्द नहीं हो जाएंगी, उनका शोरूम खुला रहेगा।

रजनीकान्त ने एक बार फिर अपनी कलाई पर बंधी घड़ी पर नजर डाली और जैसे ही वह सेठ छगन भाई की गद्दी की ओर मुड़ा उसने एक लम्बी खुली हुई कार को शोरूम के सामने रुकते देखा।

उस कार के बोनट पर राज भवन का छोटा-सा रेशमी झंडा लगा हुआ था। उस झंडे को देखते ही रजनीकान्त ने शोरूम में काम करने वाले कर्मचारियों को सतर्क होने का इशारा किया और खुद भी सावधानी की मुद्रा में खड़ा हो गया।

उस कार में तीन सीटें थीं। राजभवन की यूनीफार्म में सुसज्जित दो सशस्त्र गार्ड पिछली तीसरी सीट पर बैठे हुए थे। बावर्दी ड्राइवर के पीछे वाली सीट पर सफेद सिल्क की कीमती साड़ी और ब्लाउज पहने एक बहुत ही सुन्दर युवती बैठी हुई थी।

उसकी सुराहीदार गोरी और खूबसूरत गर्दन में बड़े-बड़े सफेद मोतियों का हार था। उस हार के मोती असाधारण बड़े साइज के थे जिनका मूल्य आंकना आसान नहीं था।

पिछली सीट पर बैठे दोनों गार्ड झपटकर उतरे और बीच वाली सीट का दरवाजा खोलकर दरवाजे के इधर-उधर बड़े अदब से खड़े हो गए।

बीच वाली सीट पर बैठी युवती कार से उतरी और बड़े शाहाना अंदाज में चलती हुई शोरूम की ओर बढ़ गई।

सेठ छगन भाई भी उस युवती को देखते ही गद्दी से उठकर काउंटर से बाहर आ गए।

उन्होंने बड़े तपाक से उस युवती का स्वागत किया और उसे साथ लेकर अपनी गद्दी के पास आ गए। उन्होंने युवती को बड़े आदर से गद्दी के पास पड़े सोफे पर बैठने का इशारा किया और फिर दोनों हाथ बांधकर बड़े अदब से बोले, “फर्माइए, क्या सेवा करूं?”

युवती ने कुछ जड़ाऊ जेवर देखने की इच्छा प्रकट की।

सेठ छगन भाई ने अपने बेटे रजनीकांत को इशारा किया और पलक झपकते ढेर सारे जड़ाऊ जेवर उस युवती के सामने रख दिए गए।

युवती ने एक-एक जेवर को उठाकर देखा और उनमें से कुछ जेवर चुनकर एक ओर रख दिए।

“इन जेवरों का कैशमीमो बनवा दीजिए।” युवती ने बड़ी लापरवाही से कहा और दरवाजे पर खड़े गार्डों की ओर देखने लगी।

दोनों गार्ड तेजी से शोरूम से निकल गए और कार में से एक काफी बड़ा और वजनी बक्सा निकालकर ले आए।

सेठ छगन भाई ने कैशमीमो बनवा कर युवती की ओर बढ़ा दिया। युवती ने कैशमीमो पर एक नजर डाली और फिर बक्स में से बड़े-बड़े नोटों की गड़ियां निकाल-निकालकर गद्दी पर रखने लगी।

बिल कुल अस्सी लाख रुपये का था।

“रुपयों की ऐसी जल्दी क्या थी मैडम! रुपये तो बाद में भी आ सकते थे।” सेठ छगन भाई ने गड़ियां उठाकर गद्दी के पास रखी तिजोरी के एक खाने में ठूंसते हुए बड़ी विनम्रता से कहा।

उत्तर में युवती मुस्करा दी।

जब सेठजी सारी गड़ियां तिजोरी में रख चुके, तो युवती ने कुछ गड़ियां अटैची से निकालकर गद्दी पर रखते हुए कहा, “सेठजी! अगर आपके पास कुछ छोटे नोट हों तो दे दीजिए।”

“अभी लीजिए।” सेठ छगन भाई ने कहा और दस-दस रुपयों की गड़ियां निकालकर युवती के सामने रख दीं।

युवती ने एक गार्ड को इशारा किया। गार्ड ने दस रुपयों की गड़ियां गिनकर बक्स में भर लीं।

“बहुत-बहुत धन्यवाद सेठजी!” युवती ने मुस्कराते हुए कहा और उठ खड़ी हुई।

दोनों गार्ड जेवरों के डिब्बे और नोटों से भरा बक्स उठाकर बाहर चले गए।

“क्षमा कीजिएगा मैडम! आपने आते ही जेवर देखने की इच्छा प्रकट कर दी थी। हम उस जल्दी में आपकी खातिर तवाजो करना ही भूल गए।” रजनीकांत ने बड़ी विनम्रता से कहा, “फर्माइए, आपके लिए क्या मंगाऊं?”

“आपके बिजनेस के ढंग से मुझे बड़ी खुशी हुई है,” युवती ने मुस्कराते हुए रजनीकांत की ओर देखते हुए कहा, “एक दाम का बोर्ड तो हर दूकान पर लगा होता है, लेकिन उस पर अमल करते हुए केवल आप ही को देखा है। मेरे लिए यही बहुत है।”

“इसे अपनी ही दूकान समझिए। जब भी किसी चीज की जरूरत हो फोन कर दीजिएगा मैं खुद लेकर राजभवन पहुंच जाऊंगा।” रजनीकांत ने बड़ी विनम्रता से कहा और युवती के पीछे-पीछे चलता हुआ कार तक चला आया।

युवती बड़े शाहाना अंदाज में चलती हुई कार की बीच

वाली सीट पर जा बैठी। उसने मुस्कराकर रजनीकांत की ओर देखा और ड्राइवर ने कार आगे बढ़ा दी।

रजनीकांत, कुछ देर फुटपाथ पर खड़ा उस जाती हुई कार की ओर देखता रहा। उसे युवती के व्यवहार पर आश्चर्य हो रहा था। युवती ने कई बार अपनी गर्दन मोड़कर उसकी ओर देखा और हाथ उठाकर इस तरह हिलाया था, जैसे रजनीकांत से उसका परिचय बहुत पुराना हो।

जब कार आंखों से ओझल हो गई रजनीकांत एक विचित्र-खुशी महसूस करता हुआ शोरूम की ओर मुड़ गया।

सेठ छगन भाई की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। उन्होंने युवती को जेवरों की जो भी कीमत बताई थी वह वास्तविक कीमत से डेढ़ गुनी थी। लेकिन युवती ने बड़ी लापरवाही के साथ उसी कीमत को स्वीकार कर लिया था।

“रजनीकांत, नोटों की गड़्डियों को एक बक्स में भरकर ले चलो। सुबह शोरूम में आते समय बैंक में जमा कराते आना।” सेठ छगन भाई ने कहा।

रजनीकांत ने एक बड़े बक्स में सारी गड़्डियां तिजोरी में से निकालकर भर दीं और फिर बक्स में ताले लगा दिए।

□ □

अगले दिन सुबह दस बजे रजनीकांत नोटों से भरा बक्स मुनीम शिवकुमार और गाड़ों के साथ लिए बैंक में पहुंच गया। गोरे गांव की सिंडीकेट बैंक की ब्रांच के मैनेजर के साथ रजनीकांत का घनिष्ठ परिचय था। वह कैशियर के काउन्टर पर न जाकर सीधा ब्रांच मैनेजर के कमरे में चला गया।

ब्रांच मैनेजर जयचन्द्र जैन ने मुस्कराते हुए रजनीकांत से हाथ मिलाया और अपने सामने रखा कॉफी का प्याला उठाकर उसकी ओर बढ़ाते हुए बोला, “लीजिए, पहले कॉफी पीजिए।”

रजनीकांत ने मुनीमजी से कहा कि वे फार्म भरकर रकम कैशियर को दे आएंगे। फिर कॉफी पीते हुए मैनेजर जयचन्द्र जैन के साथ इधर-उधर की बातों में मशगूल हो गया।

उन दोनों ने कॉफी के प्याले खाली करने के बाद सिगरेटें सुलगाई ही थीं कि तभी मुनीम शिवकुमार के साथ कैशियर अंदर आ गया।

मैनेजर जयचन्द्र जैन और रजनीकांत ने सिगरेट का हलका सा कश लेते हुए उन दोनों की ओर देखा और फिर उनके चेहरों पर उड़ती हुई हवाइयों को देखकर दोनों ने एक साथ पूछा, “क्या बात है? आप दोनों इतने परेशान क्यों हैं?”

“छोटे मालिक? कल राजभवन से आने वाली देवी जी, जो नब्बे लाख बड़े नोटों की गड़्डियां दे गई थीं, उनके ऊपर और नीचे लगे दोनों नोटों को छोड़कर बीच वाले सारे नोट नकली हैं।”

“क्या?” रजनीकांत की उंगलियों में फंसी सिगरेट निकलकर फर्श पर जा गिरी। वह एक झटके के साथ उठ खड़ा हुआ और झपटकर कैशियर के केबिन की ओर चल दिया।

मैनेजर जयचन्द्र जैन भी उसके पीछे-पीछे अपने कमरे से निकल आया।

रजनीकांत ने एक-एक गड़्डी को उठाकर देखा। आगे और पीछे लगे केवल दो नोट असली थे और बाकी सारे नोट नकली थे।

रजनीकांत की आंखों के आगे अंधेरा छा गया। उसे चक्कर आ गया। अगर मैनेजर जयचन्द्र जैन झपटकर उसे थाम न लेते तो वह फर्श पर जा गिरता।

□ □

“हाय राम! मैं लुट गया!” सेठ छगन भाई ने सिंडीकेट बैंक के मैनेजर जयचन्द्र जैन का फोन सुनते ही अपना सीना पीट डाला।

रिसीवर उनके हाथ से छूटकर नीचे गिर गया और वे अपनी गद्दी पर लुढ़ककर बेहोश हो गए।

□ □

सेठ छगन भाई जवेरी के शोरूम में हुई धोखेधड़ी की यह

घटना जंगल की आग की तरह सारे जवेरी बाजार में फैल गई।

जवेरी बाजार के सारे जौहरी अपनी-अपनी गदियों से उठकर उनके शोरूम में आ गए।

सेठ छगन भाई मगन भाई जवेरी के मुनीम शिवकुमार का फोन सुनते ही इंस्पेक्टर कुलकर्णी अपनी कुर्सी पर से इस तरह उछल पड़ा, जैसे कुर्सी में लगे स्प्रिंगों ने उसे अपनी पूरी ताकत से उछाल दिया हो।

नब्बे लाख की धोखा-धड़ी कोई मामूली बात नहीं थी और फिर राजभवन का झंडा लगी कार, राजभवन का यूनीफॉर्म पहने ड्राइवर और गार्ड, इतना बड़ा दुस्साहस करना किसी मामूली या मध्यम दर्जे के अपराधी के वश की बात नहीं थी।

एक-एक कर महानगर बम्बई के लगभग सभी छोटे-बड़े अपराधियों के चेहरे इंस्पेक्टर कुलकर्णी की आंखों के सामने नाच उठे। उसने मेज पर कुहनियां टिकाकर दोनों हाथों में सिर थाम लिया और गहरे सोच में डूब गया।

नब्बे लाख की धोखा-धड़ी करने वाले अपराधियों का यह गिरोह एक चुनौती बनकर उसकी आंखों के आगे आ खड़ा हुआ था। अपराधियों के इस गिरोह ने बड़ी चतुराई से एक लाख अस्सी हजार के नोटों के बदले में दस लाख रुपये के असली नोट और अस्सी लाख की कीमत के जेवर हथिया लिए थे।

इंस्पेक्टर कुलकर्णी काफी देर तक सोच में डूबा बैठा रहा और फिर कुछ सोचकर उसने हाथ बढ़ाकर क्रेडिल पर से रिसीवर उठा लिया और मेजर बलवंत का फोन नम्बर डायल करने लगा।

उसे मालूम था कि मेजर बलवंत और उसके साथी बम्बई में नहीं हैं। वे सब सोनपुर गए हुए हैं। लेकिन उस समय उसे सुखद आश्चर्य हुआ जब उसे फोन पर दूसरी ओर से मेजर बलवंत की आवाज सुनाई दी।

“आप सोनपुर से कब आए मेजर साहब?” इंस्पेक्टर

कुलकर्णी ने प्रसन्नता भरे स्वर में पूछा।

“बस अभी दस-पन्द्रह मिनट पहले ही पहुंचा हूं।” मेजर बलवंत ने बताया और फिर बोला, “आज तो आप बहुत खुश दिखाई दे रहे हैं। क्या बात है? क्या कोई बड़े केस में सफलता मिल गई है आपको!”

“यह खुशी तो इस बात की है कि आपसे फोन पर मुलाकात हो गई। वरना आपके मिलने की कोई आशा नहीं थी।” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने कहा, “मैं तो इस समय बहुत ही परेशान हूं क्योंकि घटना ही इतनी गम्भीर और भयानक हुई है।”

“कैसी घटना!” मेजर बलवंत ने उत्सुकता से पूछा।

“घटना बहुत लम्बी है। आकर ही सुनाऊंगा।” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने कहा।

“ठीक है। आ जाइए।” मेजर बलवंत बोला और फिर उसने रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया।

इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने फोन डिस्कनेक्ट किया और जल्दी से उठकर अपने ऑफिस से निकल आया।

थोड़ी देर के बाद उसकी जीप बड़ी तेजी से मेजर बलवंत के बंगले की ओर दौड़ी चली जा रही थी।

मेजर बलवंत अपने ड्राइंगरूम में बैठा इंस्पेक्टर कुलकर्णी का इन्तजार कर रहा था। उसके साथी अपना सामान यथा स्थान रखने में व्यस्त थे।

मेजर बलवंत ने बड़ी गर्मजोशी से इंस्पेक्टर कुलकर्णी का स्वागत करते हुए कहा, “इंस्पेक्टर साहब! पहली बार ऐसा हो रहा है कि मैं जब भी सबसे अधिक महत्वपूर्ण घटना की छान-बीन शुरू करने का प्रोग्राम बनाता हूं एक नई घटना सामने आ जाती है।”

“यह तो आप ठीक कहते हैं।” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने कहा, “लेकिन मेजर साहब! सेठ छगन भाई मगन भाई ज्वेलर्स के साथ जो घटना हुई है, उससे मुझे डर लग रहा है कि कहीं एक बार फिर हमारे देश की मुद्रा की अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में

मिट्टी खराब करने के लिए हमारे किसी दुश्मन देश ने अभियान शुरू कर दिया है। क्योंकि इतने जाली नोटों का एक ही स्थान पर मिलना साधारण बात नहीं है।”

“बलिए जवेरी बाजार चलें।” मेजर बलवंत ने कहा और उठकर इंस्पेक्टर कुलकर्णी के साथ ड्राइंगरूम से निकल आया।

□ □

मेजर बलवंत और इंस्पेक्टर कुलकर्णी जिस समय जवेरी बाजार में सेठ छगन लाल मंगनलाल के शोरूम के सामने पहुंचे शोरूम के अन्दर और बाहर लोगों की भीड़ लगी हुई थी। उनमें पुलिस के भी कुछ कर्मचारी दिखाई दे रहे थे।

मेजर बलवंत और इंस्पेक्टर कुलकर्णी को देखते ही जवेरी बाजार पुलिस स्टेशन के इंचार्ज इंस्पेक्टर अशोक मेहता ने भीड़ से निकलकर उनका अभिवादन किया और फिर उन्हें लेकर शोरूम के अन्दर चला गया।

सेठ छगनलाल अपनी गद्दी पर दोनों हाथों में सिर थामे गुम-सुम बैठे हुए थे। जवेरी बाजार के कई जौहरी उनके पास बैठे उन्हें तसल्ली देने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन नब्बे लाख की चोट कोई मामूली चोट नहीं थी जिसका घाव शाब्दिक सहानुभूति से भर जाता। यह एक ऐसा हादसा था, जो दिलो-दिमाग पर नक्श होकर रह गया था।

रजनीकान्त और मुनीम शिवकुमार नकली नोटों से भरे बक्स को लेकर शोरूम में पहुंच चुके थे।

मेजर बलवंत, इंस्पेक्टर कुलकर्णी और इंस्पेक्टर अशोक मेहता ने नकली नोटों की गड़ियों को उठाकर देखा और आश्चर्य में पड़ गए। इन नकली नोटों को पहचान पाना हर एक के लिए बहुत ही कठिन था। ये सभी सौ-सौ रुपये के नोट थे। और सामान्य रूप से देखने में उनमें और असली नोटों में रत्ती-भर भी अन्तर दिखाई नहीं दे रहा था।

इन नकली नोटों के रंग असली नोटों के रंगों की अपेक्षा कुछ अधिक गहरे और चटकीले थे। जिनकी ओर नोट नया

होने के कारण लोगों का ध्यान जाना कठिन था।

“रजनीकान्तजी! पूरी घटना मेजर साहब को विस्तार से सुनाइए।” इंस्पेक्टर अशोक मेहता ने सेठ छगनलाल के बेटे रजनीकान्त से कहा।

“मेजर साहब! दरअसल नब्बे लाख के नुकसान के लिए मैं अपने पिताजी को और अपने-आपको जिम्मेदार मानता हूं। जिस समय राजभवन का विशेष झंडा लगी हुई राजभवन की लम्बी कार शोरूम के सामने पहुंची थी, उससे लगभग आधे घंटे पहले ही किसी लड़की ने फोन किया था और मुझे स्पष्ट शब्दों में चेतावनी दे दी थी कि मैं अपना शोरूम फौरन बन्द करा दूं, वरना मुझे लाखों की रकम से हाथ धोना पड़ेगा। उस लड़की का फोन सुनकर मेरे मन में दो विचार पैदा हुए। पहला तो यह कि यह फोन जवेरी बाजार के ही किसी जौहरी ने अपने शोरूम में काम करने वाली किसी लड़की से कराया है, जो हमारे शोरूम में लगी भीड़ को देखकर जल रहा है। दूसरा विचार यह पैदा हुआ कि लुटेरे या डाकुओं का कोई गिरोह शोरूम को लूटने आ रहा है। मैंने इसके लिए पूरी तैयारी कर ली थी। शोरूम के दरवाजे पर दो की जगह चार सशस्त्र सन्तरी तैनात कर दिए थे। उन्हें सावधान कर दिया था कि जैसे ही वह शोरूम के अन्दर किसी संदिग्ध व्यक्ति को आते देखें उसे रोक दें और अगर वह जबरदस्ती अन्दर घुसने की कोशिश करे तो उसे फौरन गोली मार दें।” रजनीकान्त ने चिन्तित और उदास स्वर में कहा, “फिर भी मैंने पिताजी से कहलवाया कि शोरूम बन्द करवा दें, लेकिन कल शोरूम में ग्राहकों की भीड़ और बिक्री को देखकर पिताजी शोरूम बन्द करने के लिए तैयार नहीं हुए। मैंने उस लड़की के फोन की चर्चा उनसे या शोरूम में काम करने वाले किसी कर्मचारी से इसलिए नहीं की कि अगर कोई ऐसी घटना न हुई तो सब लोग मेरा मजाक उड़ायेंगे।”

“हां, यह स्वाभाविक था।” मेजर बलवंत ने कहा।

“शायद इसीलिए आप बार-बार अपनी कलाई पर बंधी

घड़ी और शोरूम की दीवार पर लगे क्लाक की ओर देखने लगते थे।" मुनीम शिवकुमार ने कहा।

"जी हां, क्योंकि उस लड़की ने मुझे फोन पर बताया था कि बदमाशों की टोली आधे घंटे के अन्दर-अन्दर शोरूम में पहुंच जाएगी। रजनीकान्त ने कहा, "मैं हर दो-तीन मिनट के बाद घड़ी देखने के बाद शोरूम के दरवाजे के पार सड़क की ओर देखने लगता था। जैसे-जैसे घड़ी की सुइयां आगे बढ़ती जा रही थीं, मेरी बेचैनी भी बढ़ती जा रही थी। अन्त में मैं हिम्मत करके शोरूम बन्द कराने के लिए पिताजी की ओर बढ़ने ही वाला था कि तभी शोरूम के सामने राजभवन की वह लम्बी कार आकर रुकी जिसे मैं अच्छी तरह पहचानता था, क्योंकि उस कार में बैठकर कई बार राजभवन के मेहमान हमारे शोरूम में आ चुके थे। उस कार के बोनट पर हमेशा की तरह राजभवन का रेशमी झंडा लगा हुआ था। ड्राइवर और दोनों गाड़ों के बदन पर राजभवन के ड्राइवरों और गाड़ों जैसी यूनीफॉर्म थी। दोनों गाड़ों का कद भी राजभवन के गाड़ों के कद के बराबर ही था और फिर उस कार से जो युवती उतरी थी उसकी पहली मुस्कान ने जैसे मेरी सारी चेतना ही छीन ली थी क्योंकि सिल्क की सफेद साड़ी-ब्लाउज में वह स्वर्ग की अप्सरा दिखाई दे रही थी। उसके गले में इतने बड़े-बड़े सफेद और सच्चे मोतियों की माला थी, जिसके एक मोती की कीमत पचास हजार से कम नहीं थी। उस युवती की शहजादियों जैसी चाल, बातचीत करने का शाहाना अंदाज और अप्सराओं जैसे सौन्दर्य को देखकर मैं सब कुछ भूलकर उसकी इच्छानुसार कीमती से कीमती जेवर निकालकर दिखाने लगा। मैं उस लड़की की फोन पर दी गई चेतावनी एकदम भूल गया था।"

"आपने यह कैसे अनुमान लगाया कि आपको फोन करने वाली कोई लड़की है?" मेजर बलवंत ने पूछा।

"मेजर साहब! मैंने लगभग चार वर्ष यूरोप के विभिन्न देशों में बिताए हैं। उस लड़की का उच्चारण भारतीय लड़कियों से

भिन्न था। वह भारतीय नहीं बल्कि किसी ऐसे योरोपियन देश की लड़की मालूम होती थी जो इंग्लैंड के अत्यधिक निकट के किसी देश में रहती है और अक्सर अंग्रेजी का प्रयोग करती रहती है।" रजनीकान्त ने कहा और फिर हलकी-सी झिझक के साथ धीमी आवाज में बोला, "यूरोप में इतने वर्ष रहने के कारण मैं किसी भी स्त्री की आवाज सुनकर आपको यह बता सकता हूं कि उस स्त्री की उम्र क्या होगी।"

"इसका मतलब है कि व्यापार के साथ-साथ आपने यूरोप में रहकर स्त्रियों का भी विशेष अध्ययन किया है?" मेजर बलवंत ने मुस्कराते हुए कहा और फिर इंस्पेक्टर अशोक मेहता की ओर देखकर बोला, "इंस्पेक्टर साहब! यों तो नोटों की गड़ियों पर सेठजी, मुनीमजी और सिन्डीकेट बैंक के कैशियरों की उंगलियों से उस युवती और उसके साथी गाड़ों की उंगलियों के निशान मिट चुके होंगे, फिर भी फिंगर प्रिंट एक्सपर्टों से कहिए कि वे नोटों की गड़ियों के अलावा अन्दर के नोटों को अलग-अलग करके उंगलियों के निशानों की खोजने की कोशिश करें। मुझे उम्मीद है कि इतने ढेर सारे नोटों पर उंगलियों के निशान जरूर मिल जाएंगे।"

"आपके आने से पहले ही मैं नकली नोटों की कुछ गड़ियां उन लोगों को दे चुका हूं। वे लोग अन्दर वाले कमरे में बैठे उन नोटों पर से निशान खोजने की कोशिश कर रहे हैं।" इंस्पेक्टर अशोक मेहता ने कहा।

"मिस्टर रजनीकान्त! उस युवती और उसके साथी ड्राइवर तथा दोनों गाड़ों के बारे में कोई विशेष बात बता सकते हैं?" मेजर बलवंत ने पूछा।

रजनीकान्त कुछ देर चुपचाप खड़ा सौचता रहा फिर बोला, "मेजर साहब, उस युवती के साथ राजभवन के गाड़ों की यूनीफॉर्म पहनने वाले दोनों आदमियों के कद सामान्य आदमियों के कद से अधिक लम्बे थे। उन दोनों के कद छः या सवा छः फुट से कम नहीं थे। उनके बदन भी काफी सुगठित और

शक्तिशाली दिखाई दे रहे थे। उन दोनों की उम्र चौबीस पच्चीस वर्ष से अधिक नहीं थी; लेकिन ड्राइवर का कद उन दोनों आदमियों से लगभग तीन इंच अधिक था। उसका बदन उन दोनों के बदन से कहीं अधिक हष्ट-पुष्ट और शक्तिशाली दिखाई दे रहा था। उसकी उम्र पैंतालीस वर्ष से कम दिखाई नहीं दे रही थी। उन तीनों आदमियों के चेहरे पर राजस्थानी राजपूतों जैसी तनी हुई नुकीली मूंछें थीं।" रजनीकान्त ने कहा, "लेकिन जहां दोनों गाड़ों का रंग सांवला था, वहां ड्राइवर का रंग काफी गोरा था। ठीक उस युवती की तरह जिसकी उम्र चौबीस-पच्चीस वर्ष से अधिक दिखाई नहीं दे रही थी।"

न जाने क्यों मेजर बलवंत की आंखों के आगे उस दुस्साहसी आदमी की आकृति घूम गई जो अन्ना फ्रेन्कलिन को एक नन्ही-सी बच्ची की तरह कन्धे पर डालकर विशालकाय मोनार्क जहाज से एक रस्से के सहारे लगभग तीस फुट नीचे समुद्र में खड़ी मोटरबोट में कूद गया था और फिर पलक झपकते ही फरार हो गया था।

"इंस्पेक्टर साहब! कन्ट्रोल रूम को फोन करके पूछिए कि किसी इलाके से कोई लावारिस कार मिलने की सूचना तो नहीं मिली है।" मेजर बलवंत ने इंस्पेक्टर कुलकर्णी से कहा, "और अगर कन्ट्रोल रूम के पास इस तरह की कोई सूचना न हो तो उनसे कहिए कि वह महानगर ही नहीं आसपास के डेढ़ सौ मील के एरिया में फैले पुलिस स्टेशनों से वायरलेस द्वारा सम्पर्क स्थापित करके इस संबंध में पूछताछ करे। मुझे पूरी-पूरी उम्मीद है कि अपराधियों ने वह कार शहर के बाहर किसी निर्जन स्थान में पहुंचकर जरूर छोड़ दी होगी। क्योंकि राजभवन के विशेष झंडे वाली खुली कार में अधिक देर तक सफर करना खतरे से खाली नहीं था।"

इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने शोरूम में इधर-उधर नजरें दौड़ाई और फिर काउंटर के एक तरफ रखे टेलीफोन की ओर बढ़ गया।

"इंस्पेक्टर मेहता! आप राजभवन में फोन करके पूछिए कि क्या उनकी कोई कार गुम है?" मेजर बलवंत ने इंस्पेक्टर अशोक मेहता से कहा, "अगर गुम है तो कब गुम हुई?"

"जी, बहुत अच्छा!" इंस्पेक्टर अशोक मेहता ने कहा और सेठ छगन भाई की गद्दी के पास रखे टेलीफोन की ओर बढ़ गया।

उसने टेलीफोन डायरेक्टरी में देखकर राजभवन के सिक्योरिटी विभाग का फोन नम्बर मिलाया। जब दूसरी ओर से किसी आदमी की आवाज सुनाई दी, तो उसने अपना परिचय देने के बाद पूछा, "क्या राजभवन की कोई कार गुम है?"

"जी नहीं। राजभवन की तो कोई कार गुम नहीं है। मैं सिक्योरिटी आफिसर बोल रहा हूं। अगर कोई कार गुम होती तो सबसे पहले मुझे ही सूचना मिलती।" दूसरी ओर से सिक्योरिटी आफिसर ने उत्तर दिया।

इंस्पेक्टर मेहता कुछ देर तक खामोश रहा, फिर उसने पूछा, "राजभवन की कोई लम्बी खुली हुई कार रिपेयर के लिए किसी गैरेज में तो नहीं गई हुई है?"

"आप होल्ड ऑन कीजिए। मैं ट्रांसपोर्ट सेक्शन से पूछकर बताता हूं।" सिक्योरिटी आफिसर ने कहा।

इंस्पेक्टर मेहता रिसीवर कान से लगाए इन्तजार करने लगा। लगभग एक मिनट के बाद दूसरी ओर से आवाज सुनाई दी, "हैलो इंस्पेक्टर!"

"जी, फर्माइए?" इंस्पेक्टर अशोक मेहता ने कहा।

"राजभवन की एक कार डिलाइट गैरेज में दो दिन हुए रिपेयर के लिए गई हुई है।" सिक्योरिटी आफिसर ने बताया, "वह सन् 1960 मॉडल की शेवरलेट कार है, लेकिन उस कार के बारे में आपको पूछताछ करने की कैसे जरूरत पड़ गई?"

"उस कार को अपराधियों के उस गिरोह से इस्तेमाल किया है, जिसने धोखे से कल शाम सेठ छगन भाई मगन भाई जवेरी के शोरूम से लाखों के जेवर और दस लाख नकद हथिया लिए

हैं। पता चला है कि नकली नोट बनाने वाले वे बदमाश राजभवन की कार में आए थे, जिस पर राजभवन का फ्लैग भी लगा हुआ था।" इंस्पेक्टर अशोक मेहता ने बताया।

"आप इस समय कहां से बोल रहे हैं?"

"जवेरी बाजार में सेठ छगन भाई मगन भाई के शोरूम से ही बोल रहा हूँ।"

"मैं अभी पन्द्रह मिनट में आपके पास पहुंच रहा हूँ।" सिक्योरिटी आफिसर ने जल्दी से कहा, "राजभवन की कार को किसी अपराध के लिए इस्तेमाल करना मामूली अपराध नहीं है। फिर इस बात का जवाबदेह तो डिलाइट गैरेज का मालिक है कि गैरेज में से कार बाहर कैसे निकल गई?"

"ठीक है आ जाइए। आपके साथ ही हम लोग डिलाइट गैरेज में चलेंगे।" इंस्पेक्टर मेहता ने कहा और फोन डिस्कनेक्ट करने के बाद सिक्योरिटी आफिसर ने जो कुछ कहा था, मेजर बलवंत को बता दिया।

वे लोग राजभवन के सुरक्षा अधिकारी की प्रतीक्षा करने लगे।

तभी उंगलियों के निशानों के विशेषज्ञों ने आकर बताया कि उन्हें उन नकली नोटों पर कुछ उंगलियों और अंगूठों के निशान मिले हैं। आधे घंटे में वे उनके फोटो प्रिंट तैयार करके दे देंगे।"

मेजर बलवंत उन लोगों से बातें कर ही रहा था कि तभी राजभवन का सिक्योरिटी आफिसर वहां पहुंच गया। वह मेजर बलवंत और इंस्पेक्टर कुलकर्णी को अच्छी तरह पहचानता था। उसने हाथ उठाकर दोनों इंस्पेक्टरों का अभिवादन किया और फिर मेजर बलवंत की ओर हाथ बढ़ाते हुए बोला, "मेजर साहब! मैं राजभवन का सुरक्षा अधिकारी हरजीतसिंह हूँ।"

मेजर बलवंत ने बड़े तपाक से हरजीतसिंह का हाथ अपने दोनों हाथों में थामकर हिलाते हुए कहा, "अच्छा हुआ आप आ गए। वरना थोड़ी देर के बाद हम लोग आपके पास आ रहे थे। चलिए हम लोग डिलाइट गैरेज चलें। यह गैरेज कहां है?"

आज पहली बार ही इस गैरेज का नाम सुन रहा हूँ, क्योंकि बम्बई के अधिकांश गैरेजों से तो अकसर वास्ता पड़ता रहता है, इसलिए मैं लगभग सभी प्रसिद्ध गैरेजों को जानता हूँ।"

"यह गैरेज चेम्बूर में है। मैं उसका पूरा पता ले आया हूँ।" हरजीतसिंह ने कहा और एक कार्ड जेब से निकालकर मेजर बलवंत की ओर बढ़ा दिया।

मेजर बलवंत ने कार्ड लेकर देखा। उस पर केवल गैरेज का नाम और पता छपा हुआ था। गैरेज के मालिक या रिप्रजेन्टेटिव का नाम नहीं था।

उसने कार्ड वापस हरजीतसिंह को दे दिया और इंस्पेक्टर अशोक मेहता को आवश्यक हिदायतें देने के बाद इंस्पेक्टर कुलकर्णी और सुरक्षा अधिकारी हरजीतसिंह के साथ शोरूम से निकल आया।

□□

वे लोग चेम्बूर में कार्ड पर लिखे पते के अनुसार डिलाइट गैरेज के सामने पहुंचे, तो गैरेज के बाहर लगा टिन की पुरानी चादरों का बना फाटक बन्द था। उसमें एक पुराना-सा ताला पड़ा हुआ था।

गैरेज के बराबर में ही एक टी-स्टाल था। इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने टी-स्टाल के मालिक से गैरेज के बारे में पूछा, तो उसने बताया कि यह गैरेज एक महीना पहले ही खोला गया था, लेकिन काम काज नहीं था, इसलिए कल गैरेज का मालिक गैरेज से औजार उठाकर और गैरेज की चाबी प्लाट के मालिक को देकर चला गया। सिर्फ उसका बोर्ड लगा रह गया है।

"आपको गैरेज के मालिक का नाम और पता-ठिकाना मालूम है?" मेजर बलवंत ने पूछा।

"जी नहीं। गैरेज में काम करने वाले लोग गैरेज के मालिक को साई कहकर पुकारते थे। हम सब पड़ौसी भी उसे साई ही कहते थे। उसका असली नाम क्या था? पता नहीं!" टी-स्टाल के मालिक ने बताया, "वह और उसके तीनों आदमी शायद

कहीं बाहर से आए थे, क्योंकि वे रात को भी गैरेज में ही रहा करते थे। खाना भी अपने हाथ से ही बनाया करते थे।”

“क्या तुमने सफेद रंग की एक लम्बी और खुली हुई कार गैरेज में देखी थी?” सिक्योरिटी आफिसर हरजीतसिंह ने ही टी-स्टाल के मालिक से पूछा।

“सफेद रंग की लम्बी खुली कार!” टी-स्टाल के मालिक ने सोचते हुए दोहराया और फिर एक पल रुककर बोला, “वह कार तो राजभवन की थी। कल शाम एक टैक्सी में बैठकर राजभवन से एक देवीजी आई थीं। उनके साथ राजभवन का एक ड्राइवर और दो सन्तरी भी थे। साईं ने उन लोगों के लिए चाय और नाश्ता मंगवाया था, क्योंकि वे लोग राजभवन से आए थे, इसलिए मैं खुद ही चाय-नाश्ता लेकर गया था। तभी मैंने उन लोगों को और भी पास से देखा था।”

“मेरा खयाल है तुम उन देवीजी को देखने गए थे, जो सफेद सिल्क की साड़ी और ब्लाउज पहने हुए थीं और जिन्होंने अपने गले में बड़े-बड़े सफेद मोतियों का हार पहन रखा था।” मेजर बलवंत ने एक आंख दबाकर मुस्कराते हुए कहा।

“सुन्दर चीज को देखने के लिए हर आदमी का जी ललचा जाता है।” टी-स्टाल के मालिक ने हलकी-सी हंसी के साथ कहा, “मुझे तो वह देवीजी इस धरती की नहीं स्वर्ग की देवी दिखाई देती थीं।”

“चिड़िया उड़ गई इंस्पेक्टर साहब!” मेजर बलवंत ने हलकी हंसी के साथ कहा और अपनी कार की ओर बढ़ गया।

सोच में डूबे इंस्पेक्टर कुलकर्णी और राजभवन का सुरक्षा अधिकारी हरजीतसिंह भी अपनी जीप और कार में जा बैठे।

सफेद शेवरलेट

मेजर बलवंत इंस्पेक्टर कुलकर्णी और हरजीतसिंह के साथ अपने बंगले में पहुंचा तो वे तीनों ही गहरी सोच में डूबे हुए थे।

“सिंह साहब! मुझे ऐसा लगता है कि राजभवन के ट्रांसपोर्ट

सेक्शन का कोई कर्मचारी डिलाइट गैरेज के मालिक से मिला हुआ था। हो सकता है, उसने कोई मोटी रकम देकर उसे अपनी ओर मिला लिया था।” मेजर बलवंत ने अपना अनुमान प्रकट करते हुए कहा, “मेरा खयाल है, सेठ छगन भाई मगन भाई जवेरी को लूटने की योजना उन लोगों ने काफी दिन पहले बनाई थी। उस योजना के अनुसार ही चेम्बूर में डिलाइट गैरेज खोला गया था। उस योजना के अनुसार ही राज भवन के ट्रांसपोर्ट विभाग के किसी आदमी को खरीदा गया था और फिर उसे इस बात पर राजी किया गया था कि वह राजभवन की उन कारों में से एक कार डिलाइट गैरेज में पहुंचा दे, जिन्हें केवल राज्यपाल, उनके परिवार के सदस्य या देश-विदेश से आने वाले विशिष्ट मेहमान इस्तेमाल करते हैं।”

“आपका अनुमान बिल्कुल सही मालूम होता है।” हरजीतसिंह ने कहा, “मैं अभी जाकर पता करता हूं कि डिलाइट गैरेज के मालिक से कौन आदमी मिला हुआ था।”

डेजी ने कॉफी की ट्रे लाकर सेंटर टेबल पर रख दी और उन तीनों के लिए कॉफी प्यालों में उंडेलने लगी।

इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने कॉफी का एक घूंट भरा और रैक पर रखा टेलीफोन उठाकर अपने सामने सेंटर टेबल पर रख लिया।

उसने कंट्रोलरूम का नम्बर मिलाया और रिसीवर कान से लगाकर दूसरी ओर से रिसीवर उठाए जाने की प्रतीक्षा करने लगा।

“इट इज पुलिस कंट्रोल रूम सर!” कुछ सेकंड के बाद दूसरी ओर से आवाज सुनाई दी।

“मैं इंस्पेक्टर कुलकर्णी बोल रहा हूं। कहिए राजभवन की उस कार के बारे में कुछ पता चला?” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने पूछा।

“जी हां। अभी-अभी वायरलेस से सोनपुर पुलिस-स्टेशन से सूचना मिली है कि सफेद रंग की एक शेवरलेट कार सोनपुर से लगभग एक मील दूर नदी के पुल की ढलान पर एक बरगद

के पेड़ के नीचे खड़ी पाई गई है। उस कार की सूचना रात को गश्त पर गए हुए कांस्टेबलों ने दी थी। कार रात को लगभग दस बजे ही सोनपुर के पुलिस स्टेशन ले जाई गई थी। सुबह स्टेशन इंचार्ज बम्बई कंट्रोलरूम को देना ही चाहते थे कि वहां पिछली रात को एक चारदात हो गई। जिसकी इन्क्वायरी में व्यस्त हो जाने के कारण उस कार के बारे में कंट्रोलरूम को सूचना नहीं दी जा सकी।”

“कैसी चारदात?” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने व्यग्रता से पूछा।

“सोनपुर के भूतपूर्व जागीरदार की हवेली में घुसकर किसी ने उनके दीवान पर गोली चलाकर उन्हें मार डालने की कोशिश की।”

“सूचना के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद!” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने कहा और रिसीवर क्रेडिल पर रखकर फोन उठाकर फिर रेक पर रख दिया।

“क्या रिपोर्ट है इंस्पेक्टर साहब!” मेजर बलवंत ने कॉफी खत्म करके सिगार का डिब्बा खोलते हुए पूछा।

हरजीतसिंह ने सिगार उठाकर सुलगा लिया। इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने अपनी जेब से सिगरेट का पैकेट निकालकर एक सिगरेट सुलगाते हुए मेजर बलवंत को कंट्रोलरूम से उस सफेद लम्बी कार के बारे में बताने के बाद कहा, “मेजर साहब! नई खबर यह है कि पिछली रात अमितराव की हवेली में यशवन्त पाटिल को किसी ने गोली चलाकर मार डालने की कोशिश की। गोली यशवन्त पाटिल को लगी या नहीं या गोली चलाने वाले का कुछ पता चला यह पता नहीं। कंट्रोलरूम के पास इससे अधिक जानकारी नहीं है।”

यशवन्त पाटिल की हत्या की कोशिश के बारे में सुनकर मेजर बलवंत सोच में पड़ गया। वह अमितराव के पूर्वजों की बनवाई हुई एक छोटे किले जैसी हवेली के हर हिस्से को अच्छी तरह देख चुका था। फाटक बन्द हो जाने के बाद हवेली में किसी ओर से घुसने का कोई रास्ता ही नहीं था। हवेली का

परकोटा किसी भी स्थान पर तीस-पैंतीस फीट से कम ऊंचा नहीं था। कहीं-कहीं तो वह चालीस-पैंतालीस फीट तक ऊंचा था। दिन में भी फाटक पर सशस्त्र दरबान रहते थे। उनकी नजरों से बचकर किसी का हवेली में घुस पाना सम्भव नहीं था। इसके अलावा यशवन्त पाटिल जिस छोटी हवेली में रहते थे, उसमें तो किसी का घुस पाना ही असम्भव था।

दीवान यशवन्त पाटिल को मार डालने की कोशिश के बारे में सोचते-सोचते अचानक मेजर बलवंत चौंक पड़ा।

सेठ छगन भाई मगन भाई को नकली नोट देकर असली नोट और लाखों रुपये की कीमत के जेवर ठग ले जाने वाले अपराधी, जिस कार में बैठकर उनके शोरूम तक गए थे, वह कार सोनपुर की नदी के पुल की ढलान पर उसी बरगद के पेड़ के नीचे खड़ी मिली थी, जो रहस्यपूर्ण घटनाओं के कारण भुतहा बरगद के नाम से मशहूर हो गया था।

और इस बात से स्पष्ट हो गया था कि उन अपराधियों का अड्डा भुतहा बरगद के आसपास ही कहीं होना चाहिए।

इस विचार के आते ही मेजर बलवंत ने सोनपुर जाने का निश्चय कर लिया।

“इंस्पेक्टर साहब! मैं सोनपुर जा रहा हूं। आप मिस्टर हरजीतसिंह के साथ राजभवन चले जाइए। मेरा खयाल है कि राजभवन के ट्रांसपोर्ट विभाग में वह आदमी जरूर मिल जाएगा, जो डिस्ट्रिक्ट गैरज खोलने वाले अपराधियों से मिला हुआ था। अगर वह आदमी मिल जाए, तो उसे गिरफ्तार करके हवालात में बन्द कर दीजिएगा। अगर सम्भव हुआ, तो मैं कल सुबह लौट आऊंगा।” मेजर बलवंत ने कहा।

“ठीक है।” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने कहा और राजभवन के मुख्य अधिकारी हरजीतसिंह के साथ उठकर ड्राइंगरूम से निकल आया।

थोड़ी देर बाद मेजर बलवंत ने सुधीर, राजीव, संजीव और इंदु को अपने साथ लिया और कारों में बैठकर सोनपुर की

ओर चल पड़ा।

इंस्पेक्टर कुलकर्णी और हरजीतसिंह राजभवन में पहुंचे, तो वहां किसी भी तरह का कोई हंगामा दिखाई नहीं दे रहा था। इसका मतलब था कि पुलिस कंट्रोल रूम ने इंस्पेक्टर कुलकर्णी को सूचना देने के बाद राजभवन को उस सफेद लम्बी खुली शेवरलेट के बारे में सूचना देना आवश्यक नहीं समझा था।

ट्रांसपोर्ट सेक्शन में भी सब लोग बड़े इत्मीनान से अपने-अपने काम में लगे हुए थे।

इंस्पेक्टर कुलकर्णी को लेकर हरजीतसिंह सीधा ट्रांसपोर्ट सेक्शन के इंचार्ज दिनशा बाटलीवाला के ऑफिस में चला गया।

ऑफिस के अन्दर पहुंचकर जब हरजीतसिंह पलटकर ऑफिस का दरवाजा बन्द करने लगा, तो दिनशा बाटलीवाला चौंककर उसकी ओर देखने लगा। उसकी हैरानी तब और भी अधिक बढ़ गई, जब उसकी नजर इंस्पेक्टर कुलकर्णी पर पड़ी जो टकटकी लगाए उसके चेहरे की ओर देख रहा था।

दरवाजे की चटखनी चढ़ाकर हरजीतसिंह दिनशा बाटलीवाला की मेज के सामने आ बैठा। इंस्पेक्टर कुलकर्णी भी उसके पास पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गया।

“सिंह साहब! क्या कोई बहुत ही खास बात है, जो आपने कमरे का दरवाजा बन्द कर दिया है?” दिनशा बाटलीवाला ने हैरानी भरे स्वर में पूछा।

“जी हां, बहुत ही खास बात है। जब तक उस बात की छानबीन पूरी न हो जाए, मैं नहीं चाहता कि वह बात हम तीनों के अलावा किसी चौथे आदमी के कान तक पहुंचे।” हरजीतसिंह ने धीमी आवाज में कहा।

दिनशा बाटलीवाला ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह हैरानी में डूबा हरजीतसिंह की ओर देखता रहा।

“जहां तक मुझे मालूम है ट्रांसपोर्ट सेक्शन में उन सभी गैरेजों की सूची मौजूद है, जो पिछले कई वर्षों से राजभवन की

कारों आदि की रिपेयर करते चले आ रहे हैं। जब कोई कार या अन्य गाड़ी खराब होती है, तो इन्हीं गैरेजों में से किसी गैरेज में भेज दी जाती है या गैरेज वाले खुद यहां आकर खराबी को ठीक कर जाते हैं।” हरजीतसिंह ने कहा।

“जी हां, जो गैरेज हमारी लिस्ट में हैं, हम कारों को रिपेयर के लिए उन्हीं में भेज सकते हैं, क्योंकि उन्होंने हर काम के लिए जो रेट दिए हैं, वे राजभवन के एडमिनिस्ट्रेशन ने तय किए हैं। इसलिए काम करने में कोई परेशानी नहीं होती।” दिनशा बाटलीवाला ने हरजीतसिंह की बात का समर्थन करते हुए कहा।

“चेम्बूर के डिलाइट गैरेज को इस सूची में शामिल करने के लिए क्या राजभवन के अधिकारियों की स्वीकृति ली गई थी?” हरजीतसिंह ने पूछा।

“कभी-कभी जब स्वीकृत गैरेजों में अधिक काम होता है और कोई इमरजेन्सी पैदा हो जाती है, तो हम उन बाहरी गैरेजों से भी काम करवा लेते हैं, जो हमारे निर्धारित रेट लेने के लिए तैयार हो जाते हैं। जहां तक मुझे याद है डिलाइट गैरेज में हमने इसी महीने दो-तीन कारों का ओवर हालिंग और रिपेयर कराई है।” दिनशा बाटलीवाला ने बताया।

“आपसे डिलाइट गैरेज से काम कराने की सिफारिश किसने की थी?” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने पूछा।

“जहां तक मुझे याद है, डिलाइट गैरेज की सिफारिश चीफ मैकेनिक वासुदेवन ने की थी।” दिनशा बाटलीवाला ने सोचते हुए कहा।

“वासुदेवन को बुलाइए।” हरजीतसिंह ने कहा और उठकर कमरे का दरवाजा खोल दिया।

दिनशा बाटलीवाला ने मेज में लगा घंटी का पुश बटन दबा दिया। कमरे के बाहर लगी घंटी की आवाज गूंज उठी।

“यस सर!” एक चपरासी ने अन्दर आकर कहा और प्रश्न भरी नजरों से दिनशा बाटलीवाला की ओर देखने लगा।

“चीफ मैकेनिक वासुदेवन को बुलाओ।” दिनशा बाटलीवाला ने चपरासी को आदेश दिया।

“वह तो साहब अभी आधा घंटा पहले ही अपने एक दोस्त के साथ कार में बैठकर बाहर गए हैं।” चपरासी ने बताया।

“उनके असिस्टेंट लक्ष्मण को बुलाओ।” दिनशा बाटलीवाला ने हल्की-सी झल्लाहट के साथ कहा।

चपरासी बिना कोई उत्तर दिए बाहर निकल गया। दो मिनट के बाद लौटा तो उसके साथ मैकेनिक की नीली यूनीफॉर्म पहने एक नौजवान था, जिसके हाथ में कोई औजार था।

“जी साहब!” उस नौजवान मैकेनिक ने अंदर आकर कहा और वहां बैठे तीनों व्यक्तियों का हाथ उठाकर अभिवादन करके एक ओर खड़ा हो गया।

“लक्ष्मण! वासुदेवन कहां है?” दिनशा बाटलीवाला ने पूछा।

“अभी-अभी अपने एक दोस्त के साथ सिटी क्लिनिक तक गए हैं। उनके दोस्त का लड़का स्कूल जाते हुए किसी कार से टकरा गया था। वह उसी को देखने गए हैं।” लक्ष्मण ने बताया।

“क्या वह दोस्त उन्हें लेने यहां आया था?” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने पूछा।

“जी हां, वह अपनी कार लेकर आया था। वे दोनों सिटी क्लिनिक गए हैं। वासुदेवन मुझसे कह गए थे कि वह आधे घंटे में लौट आएंगे। आप पूछेंगे तो मैं आपको बता दूँ।” लक्ष्मण ने कहा और अपनी कलाई पर बंधी घड़ी पर नजर डालकर बोला, “उन्हें गए 45 मिनट हो चुके हैं। हो सकता है बच्चे की हालत सीरियस हो।”

“मिस्टर लक्ष्मण! आप मेरे साथ सिटी क्लिनिक चलिए।” सहसा इंस्पेक्टर कुलकर्णी एकदम उठ खड़ा हुआ और फिर दिनशा बाटलीवाला की ओर देखते हुए बोला, “मिस्टर बाटलीवाला! अगर इस बीच वासुदेवन आ जाए, तो उसे मेरे

लौटने तक यहीं रोके रहना। वह बाहर न जाने पाए।”

“जी, बहुत बेहतर है।” दिनशा बाटलीवाला ने परेशान आवाज में कहा। उसके चेहरे पर गहरी परेशानी और चिन्ता उभर आई थी। उसने कुछ पूछने के लिए होंठ खोले लेकिन फिर खामोश रह गया।

इंस्पेक्टर कुलकर्णी बड़े ध्यान से दिनशा बाटलीवाला के चेहरे की ओर देख रहा था। उसकी आंखों में एक चमक-सी पैदा होती चली जा रही थी, लेकिन उसने दिनशा बाटलीवाला से कुछ न कहकर हरजीतसिंह की ओर मुड़कर कहा, “आप यहीं तशरीफ रखिए। मैं पन्द्रह-बीस मिनट में लौट आऊंगा।”

फिर वह लक्ष्मण को साथ लेकर दिनशा बाटलीवाला के ऑफिस से निकल गया।

थोड़ी देर के बाद उसकी जीप हवा से बातें करती हुई सिटी क्लिनिक की ओर दौड़ी चली जा रही थी।

□ □

इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने सिटी क्लिनिक के इमरजेंसी वार्ड के पास ही बने पुलिस बूथ में जाकर पूछताछ की, तो पता चला कि उनके पास एक्सीडेंट की कोई रिपोर्ट सुबह से अभी तक दर्ज नहीं कराई गई।

पुलिस बूथ के इंचार्ज सार्जेंट को साथ लेकर इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने इमरजेंसी वार्ड में जाकर पूछताछ की तो वहां से भी यही जवाब मिला कि आज सुबह से इमरजेंसी वार्ड में किसी भी कार से टकराए हुए बच्चे को दाखिल नहीं किया गया।

इंस्पेक्टर कुलकर्णी के मन में जो सन्देह पैदा हुआ था, वह सब साबित हो गया था। लक्ष्मण की जबानी यह सुनकर कि वासुदेवन अपने किसी दोस्त के साथ गया है, उसे न जाने क्यों ऐसा महसूस हुआ था कि वासुदेवन अब लौटकर यहां नहीं आएगा।

फिर भी उसने लक्ष्मण और पुलिस बूथ के इंचार्ज सार्जेंट के

साथ सारा अस्पताल जल्दी-जल्दी छान मारा, लेकिन लक्ष्मण को वासुदेवन कहीं भी दिखाई नहीं दिया।

“लक्ष्मण! तुम वासुदेवन के उस दोस्त को जानते हो?” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने राजभवन की ओर अपनी जीप मोड़ते हुए पूछा।

“मैंने तो साहब! उसे बस दो-चार बार ही देखा है। उसका नाम चन्दन है। मैं उसे देखकर तो पहचान सकता हूँ, लेकिन मुझे उसका पता ठिकाना मालूम नहीं। न यह मालूम कि वह कहां काम करता है। वैसे वासुदेवन ने एक दिन बताया था कि बहुत एक्सपर्ट मैकेनिक है और एक बहुत बड़े गैरेज में काम करता है।”

“चन्दन डिलाइट गैरेज में तो मैकेनिक नहीं है, जो चेम्बूर में है?” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने पूछा।

“जी, यह मुझे मालूम नहीं।”

“उसका हुलिया बता सकते हो?”

“उसकी उम्र मेरी उम्र के बराबर ही चौबीस-पच्चीस साल की होगी। मेरे जितना ही उसका कद है। बदन भी मेरे जैसा ही है, लेकिन वह मोटर मैकेनिक के बजाय कई मोटरों का मालिक दिखाई देता है। उसके पास अपनी पद्मिनी कार है। बता रहा था कि अभी तीन-चार महीने पहले ही ब्लैक से खरीदी है।”

लक्ष्मण ने कहा, “उसके हाथ में हमेशा 555 का डिब्बा रहता है। मैंने उस जैसा सिगरेट पीने वाला नहीं देखा। सिगरेट आधी नहीं जलने पाती वह नई सिगरेट निकालकर उसी से सुलगा लेता है। मैंने एक दिन उससे पूछा भी था कि वह पूरी सिगरेट क्यों नहीं पीता, तो उसने एक जोरदार ठहाका लगाकर मेरी बात उड़ा दी थी। बहुत ही शान से रहता है वह। और साहब! मेरा खयाल है कि वासुदेवन ने उसके साथ इसी वजह से दोस्ती की है कि वह बहुत पैसे वाला है। वासुदेवन को जो पगार मिलती है, उसमें उसके लम्बे-चौड़े परिवार का खर्च मुश्किल से ही चल पाता है।”

“वासुदेवन को शराब पीने की आदत भी है?” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने पूछा।

“पहले तो वह कभी-कभी, खासतौर पर जब उसे पगार मिलती थी या जब उसे बाहर कोई काम मिल जाता था, तब थोड़ी-बहुत पी लिया करता था, लेकिन अब तो वह रोजाना ही पीने लगा है। मुफ्त की मिल जाती है न।” लक्ष्मण ने घृणा भरे स्वर में कहा, “मैं वासुदेवन को अपना उस्ताद मानता हूँ। मैंने उसे समझाया था कि आज तो यह नया दोस्त मुफ्त में शराब पिला रहा है। अगर रोजाना पीने की आदत पड़ गई और इस नये दोस्त ने आंखें फेर लीं, तो क्या करोगे? ये पैसे वाले तोते की तरह कब आंखें फेर लें, इनका कोई भरोसा नहीं होता इंस्पेक्टर साहब!”

“तुम ठीक कहते हो लक्ष्मण!” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने मुस्कराते हुए कहा।

“लेकिन साहब क्या वासुदेवन से कोई लफड़ा हो गया है, जो आप उसे खोज रहे हैं?” लक्ष्मण ने पूछा, “वैसे वासुदेवन झगड़े-टंटे से दूर ही रहता है। अगर वह शराब न पिये, तो वह इंसान नहीं देवता है। इतने सीधे-सादे और हर एक की मदद के लिए हर वक्त तैयार रहने वाले लोग आजकल मिलते कहां हैं साहब!”

“लक्ष्मण! राजभवन की सफेद लम्बी और खुली हुई शेवरलेट कार कहां है?” अचानक इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने सीधा प्रश्न किया।

“वह तो तीन-चार दिन से ट्यूनिंग के लिए डिलाइट गैरेज गई हुई है। वासुदेवन खुद ही उस कार को वहां पहुंचाकर आया था।” लक्ष्मण ने बताया।

“वासुदेवन उस कार को किसी पुराने गैरेज में न ले जाकर इस नये गैरेज में क्यों ले गया?”

“इस गैरेज का मालिक वासुदेवन का पहचान वाला है साहब! उसी ने उस गैरेज का नाम लिस्ट में चढ़वाया है।”

लक्ष्मण ने बताया।

लक्ष्मण से बातें करके इंस्पेक्टर कुलकर्णी के सामने सारी कहानी स्पष्ट हो चुकी थी।

जब वे दोनों दिनशा बाटलीवाला के ऑफिस में पहुंचे तो पता चला कि वासुदेवन अभी तक वापिस नहीं आया।

“अब वह कभी लौटेगा भी नहीं।” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने एक कुर्सी पर बैठकर लम्बी सांस लेते हुए कहा।

“क्यों— ? क्यों नहीं आएगा ? उसकी नौकरी परमानेंट है। उसे काफी अच्छी पगार मिलती है। उसके बाल-बच्चे यहीं राजभवन के क्वार्टरों में रहते हैं। बम्बई में उसे इससे ज्यादा पगार की नौकरी भले ही मिल जाए, लेकिन दो कमरों का इतना शानदार क्वार्टर उसे पांच लाख पगड़ी देने पर भी नहीं मिलेगा, जिसमें छोटे-मोटे कमरों के बराबर स्टोर और किचन हैं। सामने इतनी खुली जगह है, जिसमें कम-से-कम बीस आदमी पलंग बिछाकर सो सकते हैं।” दिनशा बाटलीवाला ने हैरानी भरे स्वर में पूछा।

“मिस्टर बाटलीवाला”, अचानक इंस्पेक्टर कुलकर्णी का लहजा बदल गया। उसने ठेठ पुलिस इंस्पेक्टर के अंदाज में कहा, “मैं सोच रहा था कि आप वासुदेवन के बारे में इतनी पूछताछ और भाग-दौड़ देखकर खुद ही वासुदेवन और राज भवन की शेवरलेट कार के बारे में बता देंगे, लेकिन आपमें अपने मुंह अपने अपराध की कहानी सुनाने की हिम्मत नहीं है। अगर इस मामले में आपका हाथ न होता तो, आप शुरू में ही पूछते कि हम वासुदेवन को पाने के लिए इतनी पूछताछ और भाग-दौड़ क्यों कर रहे हैं, लेकिन आपने अब तक यह पूछा ही नहीं, क्योंकि इस मामले में आप भी उतने ही अपराधी हैं, जितना वासुदेवन। आपकी आंखें और आपका चेहरा बता रहा है कि आपको रोजाना शराब पीने की आदत है। आपने मुफ्त की शराब के लालच में पड़कर ही एक ऐसे मोटर गैरेज को राजभवन की मोटरों को रिपेयर करने वाले पुराने और एप्रूव्ड

मोटर गैरेजों की लिस्ट में शामिल किया, जिसका कोई वजूद ही नहीं था। आपने ही तीन-चार दिन पहले मुफ्त की शराब पिलाने वाले एक अनजान आदमी के कहने से राजभवन की सफेद शेवरलेट कार राजभवन के विशेष पलैंग के साथ उनके गैरेज में वासुदेवन के द्वारा भिजवाई। आपको पता नहीं कि उसी कार को थोखा देकर अपराधियों के एक खतरनाक गिरोह ने जवेरी बाजार के प्रसिद्ध जौहरी सेठ छगन भाई मगन भाई से लाखों के जेवर ठग लिए। पुलिस को वह कार मिल चुकी है। डिलाइट गैरेज के बारे में भी सब कुछ मालूम हो चुका है, जो पिछले दिन ही खाली कर दिया गया था।”

“यह आप क्या कह रहे हैं ? मुझे इसके बारे में कुछ पता नहीं। मैंने तो वासुदेवन के बहुत जोर देने पर ही डिलाइट गैरेज का नाम लिस्ट में शामिल किया था। उसने बताया था कि यह उसके एक नजदीकी रिश्तेदार का गैरेज है। अगर उसे लिस्ट में शामिल कर लिया गया, तो उसे भी हर महीने थोड़ी-बहुत आमदनी हो जाया करेगी।” दिनशा बाटलीवाला ने अपने आपको संभालने की कोशिश करते हुए कहा, “जिस दिन मैंने डिलाइट गैरेज का नाम लिस्ट में शामिल किया था, उस दिन वासुदेवन के उस रिश्तेदार ने एक होटल में पार्टी दी थी। वासुदेवन के बहुत आग्रह करने पर मैं भी उस पार्टी में चला गया था। उसके बाद आज तक मेरी उस आदमी से कभी मुलाकात नहीं हुई। आप मुझपर झूठा आरोप लगा रहे हैं।”

“मिस्टर बाटलीवाला ! अगर आप अपने बच्चों को यतीम और अपनी पत्नी को विधवा नहीं बनाना चाहते, तो अपना अपराध स्वीकार कर लीजिए। वरना जो हालत वासुदेवन की हुई होगी, वही आपकी भी हो जाएगी।” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने सख्त लहजे में कहा, “अपने भेद को छिपाए रखने के लिए नकली नोट बनाने वाले अपराधी अब तक वासुदेवन की लाश तक को किसी गटर के हवाले कर चुके होंगे और अब आपकी ताक में होंगे। हो सकता है, शाम को आप अपने घर भी न

पहुंच सकें और अपने बाल-बच्चों को फिर कभी न देख पाएं।”
इंस्पेक्टर कुलकर्णी की बात सुनकर दिनशा बाटलीवाला का समूचा बदन कांप उठा। उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं। गला और होंठ सूख गए। आंखें भय और आशंका से फटी रह गईं।

“मिस्टर सिंह! दिनशा बाटलीवाला को कुछ देर के लिए अपने ऑफिस के पास वाले किसी कमरे में बन्द कर दीजिए। थोड़ी देर बाद मेरा कोई असिस्टेंट आकर ले जाएगा। इसका हवालात में रहना इसकी सुरक्षा के लिए ही नहीं, हमारे लिए भी जरूरी है। वासुदेवन के बाद यही एकमात्र ऐसा गवाह है, जो अपराधियों के उस गिरोह के कुछ लोगों को पहचानता है।” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने कहा।

राजभवन के सुरक्षा अधिकारी हरजीतसिंह ने मेज पर रखे टेलीफोन का रिसीवर उठाकर अपने ऑफिस का नम्बर डायल किया और फिर अपने असिस्टेंट को आदेश दिया कि वह दो सशस्त्र संतरियों को लेकर फौरन दिनशा बाटलीवाला के ऑफिस में आ जाए।

दो मिनट बाद ही एक सुरक्षा अधिकारी दो सशस्त्र संतरियों को लेकर दिनशा बाटलीवाला के ऑफिस में पहुंच गया।

“मिस्टर गुप्ते! दिनशा बाटलीवाला को ले जाकर किसी कोठरी में बन्द कर दो और दरवाजे पर दो संतरी तैनात कर दो। याद रखिए यह किसी भी सूरत में भागने न पाए। थोड़ी देर में कोई पुलिस अफसर इसे गिरफ्तार करके ले जाएगा।” हरजीत सिंह ने अपने सहकर्मी को आदेश दिया।

दोनों संतरियों ने आगे बढ़कर दिनशा बाटलीवाला के दोनों बाजू कसकर जकड़ लिए और फिर उसे लेकर मिस्टर गुप्ते के साथ कमरे से निकल गए।

“अच्छा मिस्टर सिंह! अब मुझे इजाजत दीजिए। उम्मीद है आपसे जल्दी ही मुलाकात होगी।” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने उठकर हाथ मिलाते हुए कहा।

“आपका सहयोग देने के लिए मैं हमेशा तैयार रहूंगा।”
हरजीतसिंह ने बड़ी गर्म जोशी से हाथ मिलाते हुए कहा और इंस्पेक्टर कुलकर्णी के साथ बाहर निकल आया।

कुछ देर के बाद जब इंस्पेक्टर कुलकर्णी अपनी जीप में पुलिस हेडक्वार्टर की ओर लौट रहा था, तो उसका चेहरा प्रसन्नता और सन्तोष से चमक रहा था।

साथ ही उसके मन में अपनी इस सफलता की कहानी मेजर बलवंत को जल्द-से-जल्द सुनाने के लिए बेचैनी और बेकरारी भी जाग उठी थी।

भुतहा बरगद

मेजर बलवंत और सुधीर की कारें सोनपुर पहुंचकर अमितराव की हवेली की ओर न जाकर पुलिस स्टेशन की ओर मुड़ गईं।

जब उनकी कारें पुलिस स्टेशन के अहाते में पहुंचकर रुकीं, इंस्पेक्टर विश्वजीत अपने ऑफिस के सामने खड़ी सफेद शेवरलेट कार के पास था वह कार की अच्छी तरह तलाशी ले चुका था और स्टेयरिंग और दरवाजों के हैंडिलों आदि पर से उंगलियों के निशान भी उतरवा चुका था।

वह अभी-अभी उस कार को बम्बई पुलिस हेडक्वार्टर को भिजवाने वाला था कि तभी उसे हेडक्वार्टर से इंस्पेक्टर कुलकर्णी का वायरलेस मैसेज मिल गया था कि मेजर बलवंत आ रहे हैं। वह जब तक उस कार को अच्छी तरह न देख लें कार पुलिस स्टेशन में ही रहने दी जाए।

मेजर बलवंत और उसके साथियों को कारों से उतरते देख वह तेजी से उनकी ओर बढ़ आया। उसने बड़ी गर्म जोशी से उन लोगों का स्वागत किया और फिर उन्हें लेकर उस सफेद शेवरलेट कार के पास आ गया।

मेजर बलवंत ने घूमकर चारों ओर से कार को अच्छी तरह देखने के बाद इंस्पेक्टर विश्वजीत से पूछा कि क्या वह कार से उंगलियों के निशान तलाश करा चुका है। जब इंस्पेक्टर विश्वजीत

ने उसे बताया कि वह अपनी कारवाई पूरी कर चुका है, तो मेजर बलवंत ने ड्राइविंग सीट की ओर का दरवाजा खोला और उस हिस्से की तलाशी लेने लगा। डेश बोर्ड खाली पड़े थे। पैरों के नीचे बिछे लाल मखमली कार्पेट के नीचे भी कुछ नहीं था। उसने सीट को हिला-डुलाकर और जगह-जगह से हथेली से दबाकर अच्छी तरह देखा, लेकिन उसे एक तिनका तक दिखाई नहीं दिया।

ड्राइविंग सीट की तलाशी लेने के बाद वह बीच वाली दूसरी सीट की तलाशी ले रहा था कि सहसा उसकी नजर कागज के एक छोटे से टुकड़े पर पड़ी, जो सीट और उसकी बैक के बीच फंसा हुआ दिखाई दे रहा था।

उसने उस सीट को आगे की ओर खिसकाने की कोशिश की, लेकिन सीट टस-से-मस नहीं हुई। उसने इंस्पेक्टर विश्वजीत से पूछा, “क्या कोई चिमटी मिल जाएगी?”

इंस्पेक्टर विश्वजीत ने एक कांस्टेबल से कहा कि वह दौड़ कर किसी सुनार से चिमटी मांग लाए।

सुनार की दुकान शायद पुलिस स्टेशन के पास ही थी। वह कांस्टेबल एक-डेढ़ मिनट में ही चिमटी लेकर आ गया।

मेजर बलवंत ने चिमटी से कागज का कोना पकड़कर धीरे-धीरे खींचकर वह कागज बाहर निकाल लिया। वह आठ तह किया हुआ एक ट्रेसिंग पेपर था, जिस पर बैंगनी रंग की ट्रेसिंग पेंसिल से कुछ लकीरें बनी हुई थीं और बीच-बीच में जहां-तहां अंग्रेजी अक्षर लिखे हुए थे। कुछ अंग्रेजी में लिखे अंक भी थे।

मेजर बलवंत ने वह कागज तह करके अपनी शर्ट की जेब में रख लिया और कार की पिछली सीट तथा डिक्की की तलाशी लेने के बाद इंस्पेक्टर विश्वजीत के ऑफिस में आ गया।

“मेजर साहब! मेरा खयाल है कि जिन बदमाशों ने राज भवन की इस कार को इस्तेमाल किया था, उनका ठिकाना मेरे

ही इलाके में नदी के उस पुल के आसपास ही होना चाहिए। अगर उनका ठिकाना यहां न होता, तो वे इसको यहां तक लाने का खतरा कभी भी मोल न लेते। राजभवन की बिना नम्बर प्लेट लगी कार और उस पर लगे फ्लैग को देखकर किसी भी व्यक्ति के मन में सन्देह पैदा हो सकता था।” इंस्पेक्टर विश्वजीत ने कहा।

“आपका अनुमान बिल्कुल सही है।” मेजर बलवंत ने कहा, फिर उसने एक पल रुककर पूछा, “क्या आपने कार के आसपास कदमों के निशान तलाश कराए थे?”

“पिछले दिनों होने वाली मूसलाधार बारिश के कारण बरगद के उस पेड़ के नीचे की ओर आसपास की जमीन अभी तक गीली है। कई दिन तक बारिश होती रही थी, इसलिए पानी जमीन के नीचे काफी गहराई तक पहुंच गया है, जिससे जमीन पोली हो गई है। हमें कार से बरगद तक के उस भुतहा पेड़ तक जाते हुए विभिन्न साइज के जूतों के कुछ निशान मिले थे, लेकिन बरगद के तने से आगे चलकर किसी भी दिशा में हमें कोई भी निशान नहीं मिला।” इंस्पेक्टर विश्वजीत ने कहा, “सड़क के सहारे-सहारे लगभग तीस फीट छूटी हुई जमीन के बाद सड़क के दोनों ओर नदी के किनारे-किनारे लगभग दो-ढाई मील तक खेत फैले हुए हैं, जिनमें फसलें खड़ी हैं। हमने उन खेतों की भी पूरे ढाई मील तक की जमीन छान मारी, लेकिन हमें किसी चिड़िया के पैर तक का निशान नहीं मिला।”

“हो सकता है बरगद के पेड़ के नीचे उनकी कोई कार खड़ी हो और वे लोग राजभवन की कार से उतरकर उसमें जा बैठें हों।” मेजर बलवंत ने सम्भावना प्रकट की।

“मेजर साहब! अगर वहां कोई कार खड़ी होती तो उसके टायरों के निशान जरूर मिलते।” इंस्पेक्टर विश्वजीत ने कहा, “वहां राजभवन की कार के टायरों के निशानों के अलावा न तो किसी दूसरे प्रकार की किसी अन्य सवारी के पहियों के ही निशान थे।”

इंस्पेक्टर विश्वजीत की बात सुनकर मेजर बलवंत इसी नतीजे पर पहुंचा कि वे चारों पुलिस को धोखे में डालने के लिए कार से उतरकर पहले उस भुतहा बरगद तक गए होंगे और फिर अपने कदमों के निशानों पर ही कदम रखते हुए उलटे चलते हुए कार तक लौट आए होंगे और फिर कार की दाई ओर के दरवाजों से तारकोल की बनी सड़क पर उतरकर दूसरी दिशा में चले गए होंगे।

“मुझे सूचना मिली है कि कल रात पुरानी हवेली में घुसकर किसी ने दीवान यशवंत पाटिल पर गोलियां चलाकर उन्हें मार डालने की कोशिश की थी।” मेजर बलवंत ने कहा।

“जी हां, मैंने दीवान साहब पर चलाई गई तीन गोलियों के निशान देखे हैं। चौथी गोली उस पलंग की मोटी पांटी में घुसी हुई मिली है, जिस पर दीवान साहब सोए हुए थे। मेरा अनुमान है कि उस आदमी ने कमरे की दायाँ ओर की दीवार में बनी खिड़की में से गोलियां चलाई थीं, लेकिन दीवान साहब भाग्यशाली निकले। चार गोलियों में से कोई एक भी गोली बदन तो दूर उनके बिस्तर या ओढ़ी हुई रजाई तक को नहीं छू पाई। मुझे लगता है कि जिस आदमी ने भी दीवान साहब पर रिवॉल्वर से हमला किया था, शायद उसने पहली-पहली बार रिवॉल्वर अपने हाथ में लिया था।” इंस्पेक्टर विश्वजीत ने आक्रमणकारी की मजाक उड़ाते हुए कहा, “उससे अच्छा निशाना तो सोनुपर के सात-आठ साल के बच्चे लगा लेते हैं, जो मामूली-सी गुल्लक से भागते हुए तीतर और उड़ते हुए हरियल का शिकार कर लेते हैं।”

“सचमुच हैरानी की बात है। मैंने दीवानजी का बेडरूम देखा है उसकी चौड़ाई लगभग पन्द्रह-सोलह फीट और लम्बाई लगभग बीस फीट होगी उसकी उत्तरी और पश्चिमी दीवारों में बनी खिड़कियों से गोली चलाने का तो सवाल ही नहीं उठता, क्योंकि वहां तक सपाट दीवारें हैं, जो दूसरी मंजिल तक चली गई हैं। केवल पूर्वी और दक्षिणी दीवारों में बनी हुई खिड़कियों

में से ही हमला किया जा सकता था, लेकिन दीवान जी ने मुझे बताया था कि वे सोते समय उस ओर की खिड़कियों को बन्द कर दिया करते हैं।” मेजर बलवंत ने कहा, “तो क्या कल रात वे उन खिड़कियों को बन्द करना भूल गए थे?”

“यह बात मुझे मालूम नहीं थी।” इंस्पेक्टर विश्वजीत ने कहा, “उत्तरी दीवार पर बने हुए गोलियों के निशानों से स्पष्ट है कि गोलियां दक्षिण की ओर वाली उस खिड़की से चलाई गई थीं, जो पलंग के ठीक सामने थी।”

“क्या किसी ने गोलियां चलने की आवाजें नहीं सुनी थीं?” मेजर बलवंत ने पूछा।

“सुनी थीं। जो पहरेदार हवेली में गश्त दे रहे थे उन्होंने ही नहीं फाटक पर तैनात सन्तरियों ने भी सुनी थीं। हवेली के निचले हिस्से में सोई हुई दोनों नौकरानियों ने भी सुनी थीं। पहरेदारों के पहुंचने पर दोनों नौकरानियों ने हवेली का दरवाजा तो खोल दिया था, लेकिन वे ऊपरी मंजिल में जाने वाले जीने का दरवाजा तो नहीं खोल पाई, क्योंकि जीने का दरवाजा अन्दर से बन्द था। दीवान साहब ने बताया है कि जब गोलियां बन्द हुए कई मिनट बीत गए थे, तब वह अपने पलंग से उतरकर बेडरूम से निकले थे। तब उन्होंने जीने का दरवाजा खोला था, लेकिन तब तक आक्रमणकारी फरार हो चुका था।” इंस्पेक्टर विश्वजीत ने बताया, “दीवान साहब पर 38 प्वाइंट के रिवॉल्वर से गोलियां चलाई गई थीं।”

“क्या दीवानजी के परिवार में कोई नहीं है?” मेजर बलवंत ने जान-बूझकर पूछा।

“मुझे यहां आए अधिक दिन नहीं हुए हैं। इसलिए मुझे इस शहर में रहने वालों के बारे में अधिक जानकारी नहीं है, लेकिन शहर के खास-खास लोगों के बारे में, क्योंकि जानना जरूरी होता है, इसलिए दीवान साहब के बारे में भी थोड़ी-सी जानकारी है। मैंने सुना है कि उनका एक ही लड़का है, जो अमेरिका में रह रहा है। उस लड़के से बड़ी एक लड़की थी, जिसकी हाल

ही में हवेली के सामने वाली झील में डूब जाने से मृत्यु हो गई थी।" इंस्पेक्टर विश्वजीत ने बताया।

"और उनकी पत्नी?"

"उनके बारे में लोगों के अलग-अलग विचार हैं। कुछ लोग कहते हैं कि वह बम्बई में अकेली अपनी दो बच्चियों के साथ रहा करती थीं। एक लड़का और एक लड़की दीवान साहब के साथ रहती थी। दीवान साहब और उनकी पत्नी के सम्बंध किन्हीं कारणों से हमेशा के लिए समाप्त हो गए थे। एक दिन दोनों बच्चियों में से एक को कोई उठा ले गया। बेटी के गम में मां की मृत्यु हो गई, क्योंकि दीवान साहब की पत्नी ने मरने से पहले दीवान साहब के दिए हुए बंगले को बेचकर दूसरा बंगला खरीद लिया था, इसलिए पत्नी के मर जाने के बाद दीवान साहब ने अपनी बेटी को बहुत खोजा। अखबारों में विज्ञापन भी प्रकाशित कराए, लेकिन उस बच्ची का कोई पता नहीं चला।"

इंस्पेक्टर विश्वजीत से दीवान यशवन्त पाटिल की कहानी सुनकर मेजर बलवंत का मन भारी हो गया।

"कोई पुरुष कितना ही धनी, सुन्दर, स्वस्थ और सुशिक्षित क्यों न हो। इसी तरह कोई स्त्री कितनी ही योग्य और रूपवती क्यों न हो, आवश्यक नहीं कि उनका विवाहित जीवन सुखमय सिद्ध हो।" मेजर बलवंत ने एक लम्बी ठंडी सांस भरकर कहा, "मैंने तो यही देखा है कि अक्सर उन्हीं स्त्री-पुरुषों का विवाहित जीवन दुख में बीतता है, जो हर दृष्टि से सम्पूर्ण होते हैं।"

"इसे भाग्य की विडम्बना के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है?" इंस्पेक्टर विश्वजीत की आवाज में उदासी शामिल हो गई थी।

मेजर बलवंत कुछ देर खामोश बैठा सोचता रहा फिर बोला "अपराधियों को खोजने का जो भी कार्यक्रम बनाऊंगा, आपको सूचित कर दूंगा। आप भी हमारे साथ चलिएगा।"

"आपके निर्देशन में कोई भी काम करके मुझे बहुत खुशी होगी।" इंस्पेक्टर विश्वजीत ने उल्लसित स्वर में कहा।

मेजर बलवंत अपनी कुर्सी से उठा ही था कि सहसा उसे कोई बात याद आ गई। वह फिर बैठ गया और इंस्पेक्टर विश्वजीत की ओर देखते हुए धीमी आवाज और अर्थपूर्ण अंदाज में बोला, "इंस्पेक्टर साहब! राजभवन की इस कार में जो कागज मुझे मिला है, बहुत ही महत्वपूर्ण दिखाई देता है। अपराधियों में से कोई व्यक्ति या तो गलती से इसे कार में छोड़ गया है या फिर उसने उस सीट के नीचे उस कागज को छिपाया था। खैर, कुछ भी हो वह व्यक्ति याद आते ही इस कागज को पाने की कोशिश जरूर करेगा। आप अपने मातहत कर्मचारियों को कड़ी हिदायत कर दें कि कोई भी व्यक्ति इस कार के पास न जाने पाए। अगर कोई आदमी छिपकर या धोखा देकर कार के पास जाने की कोशिश करे, तो उसे फौरन गिरफ्तार कर लिया जाए।"

"जी, बहुत बेहतर। मैं अभी सब लोगों को बुलाकर हिदायत किए देता हूं। एक जवान की ड्यूटी लगाए देता हूं कि वह किसी भी आदमी को कार के करीब न जाने दे।" इंस्पेक्टर विश्वजीत ने कहा।

"अच्छा, मैं पुरानी हवेली जा रहा हूं। जैसा भी प्रोग्राम निश्चित होगा आपको सूचित कर दूंगा।" मेजर बलवंत ने कहा और उठकर दरवाजे की ओर बढ़ गया।

इंस्पेक्टर विश्वजीत भी उसे उसकी कार तक छोड़ने चला आया।

□□

मेजर बलवंत अपने साथियों के साथ पुरानी हवेली में पहुंचा, तो हवेली का वातावरण बहुत ही बोझिल दिखाई दे रहा था। हर आदमी भयभीत और सहमा-सहमा-सा दिखाई दे रहा था।

कार से उतरकर उसने एक नौकर से दीवान यशवन्त पाटिल के बारे में पूछा और फिर उस नौकर के पीछे-पीछे उनकी

हवेली की ओर चल दिया, जो पुरानी हवेली के पश्चिमी परकोटे में लगभग पचास फीट हटकर बनी हुई थी। यह पूरी हवेली सुर्ख रंग के पत्थरों को तराशकर बनाई गई दो मंजिल की बहुत ही सुन्दर और शानदार थी। राव परिवार के दीवान तब ही से इस हवेली में रहते चले आए थे, जब यह हवेली बनी ही थी।

लाल पत्थरों की विशाल डयोढ़ी को पार करके मेजर बलवंत और उसके साथी पहली मंजिल पर दीवानजी के बेडरूम में पहुंचे, तो वहां अमित और नरेन्द्र बैठे हुए थे। बिस्तर पर लेटे हुए दीवानजी धीमी आवाज में अमित को कुछ समझा रहे थे।

मेजर बलवंत ने देखा, "इस घटना के कारण कुछ घंटों में ही दीवान यशवन्त पाटिल का गोरा और दमदमाता चेहरा पीला पड़ गया था। उस पर झुर्रियां दिखाई देने लगी थीं। उनका पहलवान जैसा कसरती और हृष्ट-पुष्ट बदन भी मुरझाया-सा दिखाई दे रहा था।

दरवाजे में मेजर बलवंत और उसके साथियों के कदमों की आहट सुनते ही दीवानजी ने अपनी बात अधूरी छोड़ दी और गर्दन को तकिये पर से थोड़ा-सा उठाकर दरवाजे की ओर देखने लगे।

अमित और नरेन्द्र की नजरें भी दरवाजे की ओर घूम गईं, वे दोनों जल्दी से उठ खड़े हुए।

"अच्छा हुआ आप आ गए। मैं अभी-अभी नरेन्द्र को आपके पास बम्बई भेजने वाला था।" अमित ने हाथ जोड़कर नमस्ते करने के बाद मेजर बलवंत से कहा।

"मुझे दीवानजी के साथ जो घटना कल रात हुई उसका पता सुबह ही चल गया था और मैं उसी समय सोनपुर रवाना हो गया था।" मेजर बलवंत ने दीवान यशवन्त पाटिल के पलंग के पास पड़ी कुर्सी पर बैठते हुए कहा और फिर दीवानजी के उदास, चिन्तित और मुरझाए हुए पीले चेहरे की ओर देखते हुए बोला, "दीवानजी, जहां तक मेरा अनुमान है इस शहर में तो

आपका कोई ऐसा दुश्मन है नहीं जो आपके अहित की कामना कर सके।"

"मैं भी परेशान हूं मेजर साहब! जिंदगी के इस आखिरी दौर में मेरा इतना कट्टर दुश्मन कौन पैदा हो गया। आज इस जागीर की सेवा करते हुए मुझे पैंतीस-छत्तीस साल हो गए। मालिक की गैरमौजूदगी में सारी जमीन-जायदाद का मालिक बनकर रहा हूं। ऐसी हालत में इंसान में घमंड पैदा हो जाना स्वाभाविक होता है और घमंड में आकर वह कमजोरों पर जुल्म करने लगता है। उसके मन में बेईमानी और विश्वासघात की भावनाएं भी पैदा हो जाती हैं। लेकिन पूरा सोनपुर और हवेली में काम करने वाले गवाह हैं कि मैंने इतनी बड़ी जागीर का दीवान होते हुए भी आज तक किसी को मारना-पीटना तो दूर डांटा-फटकारा तक नहीं। लोगों के बड़े-बड़े अपराधों को क्षमा कर दिया, फिर पता नहीं मेरा दुश्मन कौन बन बैठा है।" दीवान यशवन्त पाटिल ने दुख और चिन्ता भरे स्वर में कहा। फिर कुछ देर खामोश रहने के बाद बोले, "मेजर साहब! पिछले एक महीने से मुझे कभी-कभी ऐसा महसूस होने लगता था, जैसे मेरे आसपास कोई मौजूद है। जब मैं फार्म के खेतों के बीच घूमता था, तो मुझे ऐसा महसूस हुआ करता था, जैसे खेतों के बीच मुझसे कुछ दूर मेरे साथ-साथ कोई चल रहा हो। कभी-कभी कदमों की आहटें अपने बहुत ही करीब सुनकर मैं चौंककर पूछ बैठता था, "कौन है!" मेरी आवाज सुनकर कदमों की आहटें तो रुक जाती थीं, लेकिन उत्तर नहीं मिलता था, फिर कुछ देर इधर-उधर देखने के बाद मैं जब फिर चलने लगता था तो कदमों की आहटें फिर से सुनाई देने लगती थीं। लगातार कई दिन से मैं ऐसा महसूस कर रहा था और कल तो मैं यह सोचकर हंस पड़ा था कि शायद मैं सठिया गया हूं।"

"आपने यह बात पहले तो मुझे बताई नहीं थी?" मेजर बलवंत ने कहा।

"मैंने इस बात का जिक्र इसलिए किसी से नहीं किया कि

कोई मेरी इस बात पर विश्वास नहीं करेगा। सुनकर लोग हंसेंगे और मुझे डरपोक समझ लेंगे, जबकि पैंतीस साल इतनी लम्बी-चौड़ी हवेली में अकेला रहते हुए मुझे कभी डर नहीं लगा। हमारे फार्म के चारों ओर बीहड़ पहाड़ और जंगल है। अक्सर चोर डाकू और बड़े-बड़े अपराधियों ने वहां अड्डे बना रखे थे लेकिन कभी-कभी मैं अकेला ही फार्म पर रुक जाता था।” दीवान यशवन्त पाटिल ने कहा।

“क्या आपकी पत्नी और बच्चे यहां नहीं रहते थे?” मेजर बलवंत ने पूछा।

मेजर बलवंत के इस प्रश्न को सुनकर दीवान यशवन्त पाटिल ने अपने होंठ सख्ती से भींच लिए।

मेजर बलवंत को ऐसा महसूस हुआ, जैसे उनके अन्दर-अन्दर दर्द की एक ऐसी लहर दौड़ गई हो, जिसे वह सह नहीं पा रहे हों।

वह असहनीय पीड़ा उनके चेहरे पर स्पष्ट दिखाई देने लगी थी।

कमरे में काफी देर तक खामोशी छाई रही। दीवान यशवंत पाटिल और मेजर बलवंत के प्रश्न का उत्तर देने में शायद अपने-आपको असमर्थ महसूस कर रहे थे।

वह काफी देर तक अपने होंठों को सख्ती से भींचे छत की ओर टकटकी लगाए देखते रहे फिर उन्होंने धीरे से अपना दायां हाथ अपने सिर के नीचे लगे तकिये के नीचे डाला और ब्राउन चमड़े की जिल्द वाली एक डायरी निकालकर मेजर बलवंत की ओर बढ़ा दी।

मेजर बलवंत ने डायरी उनके कांपते हाथ से ले ली और प्रश्न-भरी नजरों से उनके चेहरे की ओर देखने लगा।

“मेजर साहब! लगता है मेरा आखिरी वक्त अब करीब आ गया है। मैं जानता हूं आप कितने महान हैं। जहां दूसरों के रहस्यों को उजागर करने की आपमें शक्ति है, वहां दूसरों के दोषों को छिपाए रखने की क्षमता भी है। इसीलिए यह डायरी

आपको देता हूं।” दीवान यशवन्त पाटिल ने कहा और आंखें इस तरह मूंद लीं, जैसे उमड़ते हुए आंसुओं को रोकने की कोशिश कर रहे हों।”

मेजर बलवंत ने, अमित, शरद और अपने साथियों को इशारा किया और दीवान यशवन्त पाटिल के बेडरूम से निकल आया।

□□

इंस्पेक्टर विश्वजीत से दीवान यशवन्त पाटिल पर चलाई गई गोलियों के बारे में सुनकर मेजर बलवंत ने यह अनुमान लगाया था कि शायद किसी कारण से दीवानजी ने अपने हाथ से गोलियां चलाकर लोगों को यह दिखाने की कोशिश की है कोई उन्हें मार डालना चाहता है। शायद वह ऐसा करके अपने किसी अपराध को छिपाना चाहते हैं। उसके इस अनुमान की पुष्टि उस समय हो गई थी जब वह दीवानजी के बेडरूम में पहुंचा था और उसने उनके साथ बात करते-करते पलंग के साथ वाली दीवार में बने गोलियों के निशानों को देखा था। जहां-जहां गोलियां लगी थीं, वहां पत्थरों के निशान बन गए थे। उन निशानों के आसपास से पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े टूट-टूटकर इधर-उधर बिखर गए थे।

लेकिन दीवान यशवंत पाटिल की हालत देखकर मेजर बलवंत अपना यह विचार बदल देने पर मजबूर हो गया था। दीवान जी पर सचमुच किसी ने आक्रमण किया था; लेकिन वह शायद उन्हें जान से मारना नहीं चाहता था। केवल डराना चाहता था। वरना यह हो ही नहीं सकता था कि इतने पास से तीन गोलियां चलाने पर एक भी गोली दीवानजी के न लगती।

ऐसा आदमी कौन हो सकता था, जो दीवानजी को डराना चाहता था और दीवान जी के डराने का कारण क्या हो सकता था?

हवेली में पुराने और वफादार नौकरों के अलावा अमित और उसका मित्र शरद ही थे। इनमें से किसी पर भी यह संदेह किया

नहीं जा सकता था, क्योंकि हवेली में जितने भी नौकर थे, उनमें से कुछ तो उतने ही पुराने थे, जितने दीवानजी थे। जो चार-छः नए नौकर थे उन्हें दीवानजी से कोई शिकायत होने की सम्भावना नहीं थी। उन्हें समय पर वेतन मिलता था। रहने के लिए अच्छी जगह मिली हुई थी। जहां वे अपने परिवार के साथ बड़े सुख से रह रहे थे। उन्हें हर प्रकार की सुविधाएं प्राप्त थीं। वे सभी दीवानजी को अपने परिवार का एक बुजुर्ग समझते थे और इसी नाते उनका केवल सम्मान ही नहीं करते थे, बल्कि बेहद प्यार भी करते थे।

मेजर बलवंत हवेली के हर कर्मचारी से भली-भांति परिचित हो चुका था। उनमें या उनके परिवार में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जिस पर सन्देह किया जा सकता। फिर भी मेजर बलवंत ने एक बार फिर हवेली में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को चेक करने का निश्चय कर लिया साथ ही यह भी निश्चय कर लिया कि वह एक बार फिर हवेली के कोने-कोने का बहुत ही बारीकी से निरीक्षण करेगा। आखिर कोई न कोई ऐसा रास्ता जरूर होगा जिससे आक्रमणकारी हवेली के अन्दर घुसा था और दीवानजी पर गोलियां चलाकर सुरक्षित रूप से निकल भी गया था।

मेजर बलवंत के साथ-साथ अमित और शरद भी दीवान जी के बेडरूम से उठकर आ गए थे।

“अमित बाबू! हमारे यहां से जाने के बाद कोई नवीन घटना तो नहीं हुई?” मेजर बलवंत ने पूछा।

“मेजर साहब! पता नहीं क्यों दीवानजी की तरह मुझे भी हर पल ऐसा महसूस होता रहता है कि एक छाया हर पल मेरे आसपास मंडराती रहती है। कभी-कभी जागते-जागते मेरी आंखों के सामने किसी बहुत ही सुन्दर लड़की का धुंधला-सा चेहरा नाच उठता है। मैं उस चेहरे को पहचानने की कोशिश करता हूं; लेकिन पहचान नहीं पाता, फिर भी ऐसा लगता है कि उस चेहरे से जन्म जन्मान्तर से परिचित हूं। कभी-कभी ऐसा

लगता है, जैसे यह चेहरा उसी युवती का है, जिसे भुतहा बरगद के नीचे से एक आदमी ने धक्का देकर मेरी कार के आगे फेंक दिया था। समझ में नहीं आ रहा कि यह सब क्या है? एक दिन मैंने शरद से कहा कि चलो एक-दो दिन के लिए बम्बई चलें। हो सकता है आंखों और मन का यह भ्रम दूर हो जाए, लेकिन दूसरे ही पल किसी की आंसुओं में डूबी आवाज मेरे कानों में गूंज उठी, “नहीं-नहीं, तुम यहां से अब कहीं नहीं जाओगे। मैं उन्हें अब कभी भी यहां से नहीं जाने दूंगी। तुम्हारे चारों ओर संकट मंडरा रहे हैं। मैं इन संकटों से तुम्हारी रक्षा करूंगी। मेजर साहब! मुझे लगता है जैसे ये आवाजें मेरे मन की गहराइयों में से ही उठ रही हों। ये आवाजें अजनबी न हों, बल्कि इन आवाजों को जैसे मैं युग-युगों से सुनता चला आ रहा हूं।” अमित ने भावुकता से भरे खोए-खोए स्वर में कहा, “मैं विज्ञान विद्यार्थी रहा हूं मेजर साहब! विज्ञान के मूल सिद्धान्त के अनुसार केवल उसी वस्तु के अस्तित्व को हम स्वीकार करते हैं जो आंखों से दिखाई देती है। मेडिकल साइन्स का छात्र होने के कारण जानता हूं कि भावनाएं मेरे निकट मनुष्य के मस्तिष्क की सामयिक और अस्थायी अनुभूत के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं, लेकिन इस समय मेरी जो मानसिक स्थिति है उसका विश्लेषण मैं स्वयं नहीं कर पाता। बहुत कोशिश करता हूं अपनी इस स्थिति को समझने की, लेकिन जितना अधिक अपने बारे में सोचता हूं, उतना ही उलझता चला जाता हूं।”

“मेजर साहब! मुझे ऐसा लगता है कि अमित के दिमाग में ये बातें घुसकर बैठ गई हैं। जब तक यह सोनपुर से नहीं जाएगा ये बातें इसके दिमाग से नहीं निकलेगी।” शरद जल्दी से बोल उठा, “मैं रात दिन इसके साथ रहता हूं, लेकिन मुझे न तो इसके आसपास कोई साया मंडराता रहता है न किसी तरह की कोई आवाज ही सुनाई देती है। हां, रात को इसकी बड़बड़ाहट जरूर कभी-कभी सुनाई दे जाती है। जिसे सुनते ही मेरी नींद उचट जाती है और फिर घंटों मुझे नींद नहीं आ पाती।”

मेजर बलवंत ने अमित और शरद की बातों के प्रत्युत्तर में कुछ नहीं कहा। वह उनकी बातें भी सुन रहा था और उन पर विचार भी करता चला जा रहा था।

सहसा उसके दिमाग में एक शब्द एक जोरदार गूँज की तरह थरथरा उठा, "भुतहा बरगद, जो अनेक रहस्यपूर्ण दुर्घटनाओं के साथ-साथ राजभवन की सफेद शेवरलेट कार के साथ भी जुड़ा हुआ था।"

उसने मन-ही-मन निश्चय किया कि वह उस भुतहा और रहस्यपूर्ण बरगद की पूरी-पूरी छानबीन करेगा।

लेकिन उससे पहला और महत्वपूर्ण प्रश्न उसके सामने था। और वह था दीवान यशवंत पाटिल के साथ-साथ हवेली में रहने वालों की सुरक्षा का प्रश्न जिनमें अमित और इंस्पेक्टर कुलकर्णी का बेटा शरद भी शामिल थे।

अपने कमरे में आकर उसने सोनिया से कहा कि वह किचन में जाकर उसके लिए एक प्याला कॉफी बना लाए।

सोनिया के जाने के बाद उसने अपनी अटैची में से वह कागज निकाला जो उसे राजभवन की सफेद शेवरलेट कार में मिला था।

वह शाम तक उस ट्रेसिंग पेपर पर बनी लकीरों और अंग्रेजी अक्षरों तथा अंकों को समझने की कोशिश करता रहा लेकिन उसके पल्ले कुछ नहीं पड़ा। थककर उसने ट्रेसिंग पेपर तहकर के फिर अपनी अटैची में रख दिया और उठकर अमित के बेडरूम के साथ वाले ड्राइंगरूम में आ गया जहाँ उसके साथियों के अलावा अमित, शरद, नरेन्द्र और दीवान यशवंत पाटिल भी थे।

अमित ने सुरक्षा के विचार से अपने बेडरूम के बराबर वाले कमरे में दीवान यशवंत पाटिल के सोने की व्यवस्था कर दी थी।

वह काफी देर तक अमित, नरेन्द्र और दीवान यशवंत पाटिल से राव परिवार की जागीर, परिवार के सदस्यों, राव गजेन्द्र राव,

उनके बेटे सुरेन्द्र राव तथा उस भुतहा बरगद के पास घटी रहस्यपूर्ण घटनाओं और दुर्घटनाओं के बारे में बातें करता रहा।

भुतहा बरगद उसके सामने एक जीता जागता प्रश्न चिन्ह बनकर आ खड़ा हुआ था।

अमृता का अपहरण

अमृता के मन में कई दिन से बुरे-बुरे खयाल उठ रहे थे। अमित को सोनपुर गए हुए एक सप्ताह से अधिक हो चुका था। उसने अमित को रोकने की बहुत कोशिश की थी। अपने प्यार का वास्ता भी दिया था लेकिन अमित ने उसकी कस्मों और आंसुओं की कोई परवाह नहीं की थी और सोनपुर चला गया था। जाते समय उसने अमृता से वायदा किया था कि वह हर रोज उसे एक पत्र लिखा करेगा, लेकिन एक सप्ताह से भी अधिक बीत जाने पर भी अभी तक उसे अमित का एक भी पत्र नहीं मिला था।

अमित की मां भी चिन्तित थीं। अमित ने उन्हें भी कोई पत्र नहीं लिखा था और न किसी आदमी के हाथ कोई संदेश ही भेजा था। दीवान यशवंत पाटिल हर सप्ताह सोनपुर से फल और सब्जियां भेजते रहते थे; लेकिन उन्होंने भी कुछ नहीं भेजा था।

जिस समय अमित सोनपुर रवाना हुआ था अमृता और अमित की मां को न जाने क्यों ऐसा लगा था जैसे वे अमित को अन्तिम बार देख रही हैं आज के बाद उसे फिर कभी नहीं देख पाई थीं।

अमित के जाने के बाद अमृता दो-तीन दिन तो कॉलेज गई थी। लेकिन फिर उसने कॉलेज जाना बन्द कर दिया था। क्योंकि उन्हीं दिनों उसकी सहेली ने भी कॉलेज आना बन्द कर दिया था इसलिए कॉलेज में भी उसका मन नहीं लगता था।

अमित की मां ने उससे बहुत आग्रह किया था कि जब तक अमित सोनपुर से न आए वह उसी के पास रहे। आखिर शादी

के बाद भी तो उसे इसी घर में रहना है। लेकिन अपनी आया अनुराधा की वजह से अमृता ने इनकार कर दिया था, क्योंकि कई दिन से अनुराधा की तबीयत खराब थी।

आज भी अन्य दिनों की तरह अमृता सारे दिन अमित के पत्र की प्रतीक्षा करती रही थी। सुबह से उसने चार-पांच बार चाय और कॉफी तो ले ली थी लेकिन खाना नहीं खाया था। न जाने क्यों आज उसकी भूख उड़ गई थी। अनुराधा के बार-बार आग्रह करने पर भी उसने कुछ नहीं किया था।

बेडरूम में आकर वह बिस्तर पर लेट गई और आंखें मूंद कर सोने की कोशिश करने लगी। लेकिन जैसे ही उसने पलकें बंद की अमित का चेहरा उसकी आंखों के आगे फिर नाच उठा।

उसने घबराकर आंखें खोल दीं और टेबल लैम्प जला लिया उसने शेल्फ से एक उपन्यास निकाल लिया और उसे पढ़ने लगी।

लेकिन तीन-चार पन्ने पढ़ने के बाद उसका मन ऊब गया। उसने किताब बंद करके शेल्फ में रख दी और टेबल लैम्प बुझाकर फिर पलकें बंद कर लीं।

और फिर अमित के बारे में सोचते-सोचते न जाने कब उसे नींद आ गई।

□ □

बेडरूम की एक खिड़की के पीछे खड़े साए के कानों से जैसे ही अमृता के धीमे-धीमे खरटे टकराए उसके होंठों पर मुस्कराहट और आंखों में चमक नाच उठी।

वह गिछले एक डेढ़ घंटे से उसी खिड़की के पीछे इश्क पैचा की उस घनी और दूर तक फैली बेलों के पीछे छिपा खड़ा था, जो जमीन से बंगले की ऊपरी छत से लटकते लोहे के तारों के सहारे-सहारे पहली मंजिल की छत पर फैली हुई थी और जिन्होंने इस ओर की अधिकांश दीवार और कई खिड़कियों को अपने आप में छिपा लिया था।

साए ने खुली खिड़की के पटों पर हथेली का हलका-सा दबाव डाला। दोनों पट खुल गए।

उसने खिड़की की चौखट पर एक हाथ टिकाया और बिना कोई आवाज किए बेडरूम के अंदर पहुंच गया।

अमृता अपने बिस्तर पर पड़ी गहरी नींद सो रही थी।

साए ने अपने लबादे की जेब में से एक छोटी-सी शीशी निकाली और बड़ी-फुर्ती से उसका कार्क खोलकर अमृता की नाक के नथुने से उसका मुंह सटा दिया।

अमृता को अपनी सांस घुटती-सी महसूस हुई। साथ ही उसे लगा जैसे उसकी नाक के नथुनों से कोई सख्त चीज सटी हुई है। उसने जल्दी से आंखें खोल दीं।

लेकिन अपने ऊपर झुके एक काले साए को देखते ही उसके हलक से घुटी-घुटी-सी चीख निकल गई और उस चीख के साथ ही उसके आश्चर्य और भय से भरी आंखें फिर मूंद गईं। शेष चीखों ने उसके हलक में दम तोड़ दिया।

साए ने झपटकर उसे उठाया और उसे किसी नन्ही बच्ची की तरह कन्धे पर डालकर उस खिड़की से कूद कर बाहर आ गया।

अमृता के हलक से चीख निकलते ही उसके बेडरूम के साथ वाले कमरे में सोई उसकी आया अनुराधा और बेडरूम के सामने वाले बरामदे में सोमा; घर का सबसे बूढ़ा नौकर मोती भी जाग गया था।

सायें के कानों तक उनके दौड़ते हुए कदमों की आहटें पहुंच चुकी थीं अमृता को लेकर बंगले में एक पल भी रुकना खतरे से खाली नहीं था। वह अमृता को कन्धे पर लिए-लिए बंगले की उस चारदीवारी की ओर भाग छूटा जो एक ऊंची चट्टान पर बने बंगले के पश्चिमी भाग में समुद्र की ओर बनी हुई थी।

चारदीवारी के पास पहुंचकर उसने एक उछाल भरी और चारदीवारी की मुंडेर पर पहुंच गया।

उसके दौड़ते हुए कदमों की आवाजें सुनकर बंगले के बाहरी

बरामदे में सोया माली और दरबान अपनी-अपनी लाठियां संभालकर उस ओर भाग छूटे थे। उन्होंने अमृता को कन्धे पर डाले हिरन की तरह कुलांचे भरते हुए साए को देख लिया था।

लेकिन अभी वे दोनों लॉन के किनारे तक ही पहुंचे थे कि उस साए ने एक उछाल भरी और अमृता को लिए-लिए चार-दीवारी से नीचे छलांग लगा दी।

बूढ़े माली और दरबान के हलक से दर्द-भरी चीखें निकलीं और रात के सन्नाटे में दूर तक गूंजती चली गई।

वे दोनों लड़खड़ाती, कांपती टांगों से दौड़ते हुए उस चार-दीवारी के पास पहुंचे तो उन्होंने एक मोटरबोट को देखा जो सागर की उत्ताल तरंगों को रौंदती हुई बड़ी तेजी से किनारे से दूर होती चली जा रही थी।

“हे भगवान! तूने यह क्या किया?” बूढ़े माली हरीराम के होंठों से छटपटाती हुई आवाज निकली और वह धम से चारदीवारी के सहारे ही बैठ गया और दोनों घुटनों में सिर छिपाकर बच्चों की तरह बिलखकर रो पड़ा।

अनुराधा और मोती जब तक उस चारदीवारी के पास पहुंचे सागर की लहरों पर मोटरबोट आंखों से ओझल हो चुकी थी।

□ □

सोनपुर की पुरानी हवेली के दीवान खाने की पहली मंजिल पर अपने पलंग पर सोए हुए अमित के होंठ एक पल थरथराए और उनसे घुटी-घुटी-सी एक चीख निकल गई।

वह हड़बड़ाकर उठ बैठा।

उसका समूचा बदन पसीने में डूबा हुआ था। दिल इतनी जोर-जोर से धड़क रहा था जैसे उछलकर हलक के रास्ते बाहर आ जाएगा।

“क्या हुआ अमित?” उसकी चीख सुनते ही शरद की आंख खुल गई और वह झपटकर उठ बैठा।

बेडरूम में सितारों की हलकी-हलकी रोशनी फैली हुई थी। अमित को अपने बिस्तर पर बैठा देख शरद अपने बिस्तर से

उतरा और झपटकर अमित के पास पहुंच गया।

“क्या हुआ अमित? तुम सोते-सोते क्यों चीख उठे थे?” शरद ने उसके दोनों कन्धे थामकर उसके चेहरे की ओर देखते हुए पूछा।

अमित ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह इस तरह हांफ रहा था जैसे कई मील से दौड़ता चला आ रहा हो।

अमित की चीख मेजर बलवंत और उसके साथियों के कानों तक भी पहुंच चुकी थी। उन्होंने अपने सिरहाने रखे रिवाल्वर उठाए और अमित के बेडरूम की ओर भाग छूटे। दीवान यशवन्त पाटिल भी थके-थके कदमों से लड़खड़ाते हुए अमित के बेडरूम में आ गए।

मेजर बलवंत ने बेडरूम में घुसते ही दरवाजे के पास ही लगे स्विच को ऑन कर दिया और फिर दौड़ता हुआ अमित के पलंग के पास पहुंच गया।

“क्या बात है अमित?” मेजर बलवंत ने अमित के पसीने से तर चेहरे को ध्यान से देखते हुए पूछा, “क्या तुमने कोई डरावना सपना देखा था?”

“हां—!” अमित के मुंह से बड़ी कठिनाई से निकला।

सोनिया ने पलंग के पास सुराही में से गिलास में पानी उंडेला और गिलास अमित के होंठों से लगा दिया।

पानी पीने के कुछ देर बाद अमित के होश-हवास कुछ ठिकाने हुए। उसने पलंग पर पड़ी चादर उठाकर उसके कोने से अपने माथे और चेहरे पर छलकती पसीनों की बूंदों को पोंछने के बाद कहा, “मेजर साहब! मैंने सपना नहीं देखा क्योंकि मैं जाग रहा था। केवल मैंने आंखें मूंद रखी थीं। इसलिए मैं इसे सपना नहीं कह सकता, लेकिन मैंने अपनी मुंदी पलकों के पीछे जो कुछ देखा है बहुत ही भयानक है। आप मेरे साथ अभी बम्बई चलिए।”

“पहले आप यह तो बताइए कि आपने क्या देखा था?” मेजर बलवंत ने अमित के सामने पलंग पर बैठते हुए पूछा।

“मेजर साहब! मुझे ऐसा लगता है कि अमृता खतरे में है।”
अमित ने कहा और पलंग से उतरने लगा।

“एक मिनट ठहरिए।” मेजर बलवंत ने उसका कांपता हुआ हाथ थामकर उसे रोक दिया, “मुझे पूरी बात तो बताइए। आपको ऐसा कैसे महसूस हुआ कि अमृता खतरे में है?”

“मेजर साहब! जब से मैं सोनपुर आया हूँ। मुझे न जाने क्या हो गया है। जो भी घटना होती है, मुझे स्पष्ट दिखाई दे जाती है। जो कुछ भी मैं देखता हूँ, सच साबित होता है।” अमित ने बेचैनी से कहा, “मेरे चाचा गजेन्द्र राव और उनके बेटे सुरेन्द्र राव की जिस तरह मृत्यु हुई थी मैंने इस पलंग पर लेटे-लेटे ही देख ली थी। उनके बारे में खबर आने से पहले ही मैंने यहां लोगों को बता दिया था।”

“अमित बाबू ठीक कह रहे हैं मेजर साहब!” दीवान यशवंत पाटिल ने कहा, “इनकी दोनों बातें सच निकली थीं और सच पूछिए तो मेरे मन में परेशानी और डर उसी दिन से पैदा हुआ है। मैं खुद परेशान हूँ कि आखिर इन्हें हो क्या गया है? उन घटनाओं के बाद से मैं कितनी बार इनसे बम्बई लौट जाने के लिए आग्रह कर चुका हूँ, लेकिन यह अपनी जिद पर अड़े हुए हैं कि अब यह सोनपुर छोड़कर बम्बई नहीं जाएंगे।”

“हां, तो अमित बाबू! बताइए न आपने क्या देखा था?”
मेजर बलवंत ने अमित की ओर देखते हुए एक बार फिर पूछा।

“मैंने अमृता के पलंग की ओर एक साए को बढ़ते हुए देखा जिसने अपने-आपको काले रंग के एक लबादे में छिपा रखा था।” अमित ने उदासी और दुख भरी आवाज में बताया, “फिर देखते-देखते उस साए ने अमृता को उठाकर अपने कन्धे पर किसी मासूम बच्चे की तरह डाल लिया और दौड़ता हुआ चारदीवारी के पास पहुंच गया, फिर उसने चारदीवारी पर खड़े होकर अमृता को लिए-लिए समुद्र में छलांग लगा दी और यह देखते ही मेरे हलक से चीखें फूट पड़ीं।”

“आप अक्सर अमृता के बारे में सोचते रहते हैं। रात-दिन

हम जिसके बारे में सोचते रहते हैं, अक्सर सोये-अधसोये ही नहीं कभी-कभी जागते हुए भी हमें ऐसा दिखाई देने लगता है जैसे वह व्यक्ति हमारे सामने खड़ा है।” मेजर बलवंत ने समझाने की कोशिश की, “इस समय आधी रात हो चली है। हम सुबह होते ही यहां से चल पड़ेंगे। बम्बई यहां से दूर ही कितनी है। हम लोग सुबह की चाय अमृता के साथ उसके बंगले पर ही पिएंगे।”

“नहीं मेजर साहब! अब हम अमृता के हाथ की बनी हुई चाय कभी नहीं पी सकेंगे। वह अब इस दुनिया में नहीं है।” अमित ने अपने सीने को दोनों हाथों से थामकर भर्राई हुई आवाज में कहा और फिर शरद के रोकते-रोकते भी पलंग से उतर आया।

मेजर बलवंत ने कलाई पर बंधी घड़ी पर नजर डाली। उसने राजीव की ओर देखते हुए कहा, “राजीव! अपनी कार निकालो! मैं और तुम अमित के साथ इसी तरह बम्बई चल रहे हैं।”

थोड़ी देर के बाद अमित और शरद मेजर बलवंत के साथ उसकी कार में बैठे हुए थे।

□□

मेजर बलवंत की कार बम्बई में मालावार हिल पर अमृता के बंगले के गेट पर पहुंची तो गेट पर खड़े पुलिस के दो सशस्त्र जवानों को देखते ही कार में सवार हर व्यक्ति बुरी तरह चौंक पड़ा।

एक जवान दौड़ता हुआ कार के पास आ गया और खिड़की में गर्दन डालकर अन्दर बैठी सवारियों को देखने लगा।

“बंगले में तुम्हारे कौन-कौन अफसर हैं?” मेजर बलवंत ने पूछा।

“इस एरिया के इंस्पेक्टर खान हैं। हेडक्वार्टर से कुलकर्णी साहब भी आ गए हैं।” पुलिस कांस्टेबल ने उत्तर दिया।

“उनसे जाकर कहो कि मेजर बलवंत आए हैं।” ड्राइविंग सीट पर बैठे राजीव ने कहा।

उसने दौड़कर गेट पूरा खोल दिया। राजीव ने फुट ब्रेक से पैर हटाया और कार एक हलके से झटके के साथ आगे बढ़ गई।

□ □

“आप—?” बाहरी बरामदे में खड़ा इंस्पेक्टर कुलकर्णी, मेजर बलवंत, अमित, शरद और राजीव को देखते ही चौंक पड़ा, “आप इस समय कैसे यहां पहुंच गए? क्या किसी ने फोन द्वारा आपको मिस अमृता के बारे में सूचना दे दी थी?”

“क्या हुआ मेरी अमृता को?” अमित ने झपटकर इंस्पेक्टर कुलकर्णी के दोनों बाजू थाम लिए, “जल्दी से बताइए अंकल! अमृता कहां है? कैसी है?”

□ □

ड्राइंगरूम में अमित की मां मौजूद थीं। अनुराधा ने पुलिस स्टेशन फोन करने से पहले अमृता के अचानक बीमार हो जाने का बहाना करके उन्हीं को फोन करके बुला लिया था।

अमित की मां को जब वास्तविकता का पता चला, तो उन्हें ऐसा लगा, जैसे उनके बदन में जान ही न रही हो। वह खड़ी न रह सकी थीं और अनुराधा को थामकर धम से सोफे पर लुढ़क गई थीं।

उनकी हालत देखकर अनुराधा अपना दुख भूल गई थी और उन्हें तसल्ली देने की कोशिश कर रही थी।

“अमित बेटा—।” बेटे को देखते ही उनके मुंह से चीखती हुई आवाज निकली, “अमृता—।”

मेजर बलवंत जानता था कि जब तक ये मां-बेटे जी-भर कर रो नहीं लेंगे, इनका जी हलका नहीं होगा। उसने अनुराधा, इंस्पेक्टर कुलकर्णी और इंस्पेक्टर खान को अपने साथ आने का इशारा किया और ड्राइंगरूम से निकल आया।

अमित ने रास्ते में उसे अनुराधा के बारे में बहुत कुछ बता दिया था।

“अनुराधाजी! जल्दी-जल्दी सारी घटना मुझे सुना दीजिए।”

मेजर बलवंत ने बाहरी बरामदे में पहुंचते ही कहा।

“आइए, आपको अमृता के बेडरूम में ले चलूं।” अनुराधा ने कहा और बंगले के सदर दरवाजे की ओर मुड़ते हुए बोलीं, “साहब! जैसे भी हो अमृता का पता लगवाइए। वरना तीन जानें मुफ्त में चली जाएंगी।”

“तीन जानें—?” अमित बुरी तरह चौंक पड़ा।

“मैं अच्छी तरह जानती हूं कि अगर अमृता का जल्द-से-जल्द पता न चला तो अमित बाबू और उनकी मम्मी ही नहीं, मैं भी जिन्दा न रह पाऊंगी।” अनुराधा ने दुख-भरे स्वर में कहा, “अमृता की मां के गुम हो जाने के बाद उन्हीं के आग्रह पर मैंने अमृता को अपनी कोख से जाई बेटे की तरह पाला था। इन सोलह सालों में मैंने क्या कुछ नहीं झेला। कितनी मुसीबतों से अमृता को पाल-पोसकर इतना बड़ा किया था। मैं ही जानती हूं। फिर इस भरी दुनिया में अमृता के अलावा मेरा और है ही कौन? अब अगर अमृता न मिली तो मैं मर जाऊंगी। कोई भी तो नहीं जिसके लिए मैं इस जिंदगी के बोझ को ढोती रहूं।” वह कहकर अनुराधा फूट-फूटकर रोने लगी।

अमृता के अपहरण की कहानी सुनकर मेजर बलवंत की आंखों के आगे मोनार्क जलयान में हुई अन्ना फ्रेंकलिन के अपहरण की घटना नाच उठी। अन्ना फ्रेंकलिन का अपहरण ठीक इसी तरह किया गया था।

“क्या आप में से किसी ने उस आदमी को अच्छी तरह देखा था, जो अमृता को कन्धे पर लिए-लिए समुद्र में कूद गया था?” अचानक कुछ याद आते ही मेजर बलवंत ने अनुराधा और बंगले में काम करने वाले नौकरों की ओर देखते हुए पूछा।

“जी हां, हमने उसे खूब अच्छी तरह देखा था।” बूढ़े माली हरीराम और दरबान ने एक साथ उत्तर दिया।

“क्या उसका चेहरा भी देखा था?”

“तारों की मद्धिम रोशनी में मैंने उसके चेहरे की एक ही झलक देखी थी। जब वह बिटिया को कन्धे पर डाले चारदीवारी

पर खड़ा हुआ था तब उसने हमारे कदमों की आवाज सुनकर हम लोगों की ओर मुड़कर देखा था। बस तभी देखा था, उसका चेहरा। उस वक्त उसका चेहरा नंगा था। उसकी उम्र पचास बरस से कम नहीं थी। आंखें बड़ी-बड़ी और लाल-लाल थीं। चेहरा भरा हुआ था। होंठों पर नुकीली मूँछें थीं। माथा चौड़ा था। उसका कद साढ़े छः फुट से ज्यादा भले ही हो कम नहीं था। उसके भरे हुए चेहरे को देखकर साफ मालूम होता था कि काले लबादे में छिपा उसका बदन काफी तगाड़ा और मजबूत है।” हरीराम ने बताया, “हम लोगों को अपने पास पहुंचते देख उसने बिटिया को कन्धे पर लिए-लिए इस तरह तीस फीट ऊंची दीवार पर से समुद्र में छलांग लगा दी थी, जैसे उसकी पूरी जिंदगी समुद्र में ही बीती हो। दीवार के नीचे ही एक मोटरबोट खड़ी थी। हम लोग जब दीवार के पास पहुंचे, तो हमने उस मोटरबोट को बड़ी तेजी से भागते हुए देखा था।”

“वह मोटरबोट किस ओर जा रही थी?” मेजर बलवंत ने पूछा।

“पहले तो वह सीधी हो गई थी, लेकिन कुछ दूर जाकर उत्तर की ओर मुड़ती चली गई थी।” दरबान ने बताया, “उस मोटरबोट की खास बात यह थी कि उसके इंजन की आवाज हमें सुनाई नहीं दी थी। या तो उसका इंजन आवाज नहीं करता था और अगर करता भी था तो इतनी धीमी कि लहरों के शोर के कारण उसे सुन पाना कठिन था।”

सहसा मेजर बलवंत के होंठ गोल हो गए और फिर वह जोर-जोर से सीटी बजाने लगा। इंस्पेक्टर कुलकर्णी और राजीव को छोड़कर बाकी सब लोग आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगे।

“लगता है, आप अमृता का अपहरण करने वाले को पहचान गए हैं?” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने उत्सुकता से पूछा।

“इंस्पेक्टर साहब! अभी मैं निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता, लेकिन अमृता का पता लगाने के लिए मुझे एक लाइन

जरूर मिल गई है। हल्की-सी रोशनी जिसके सहारे-सहारे मैं अपराधी की ओर बढ़ सकता हूं।” मेजर बलवंत ने कहा और अमित, उसकी मां तथा अनुराधा की ओर देखते हुए बोला, “आप लोग बिलकुल चिन्ता न करें। अमृता सुरक्षित है। बहुत जल्द मैं उसे खोज लाऊंगा।”

“अनुराधाजी! आप इस घर में कितने दिनों से हैं?” मेजर बलवंत ने पूछा।

“मुझे इस घर में आए लगभग सत्रह वर्ष बीत चुके हैं। यानी मैं अमृता की मां के गुम होने से एक साल पहले इस घर में आई थी। एक बस दुर्घटना में मेरे पति और मेरी एकमात्र बच्ची की मृत्यु हो गई थी। मेरा कोई सहारा नहीं था। मेरे मैके में केवल मेरे पिताजी थे जिनका देहांत मेरे विवाह के बाद ही हो गया था। ससुराल में बूढ़े ससुर थे। वह रिटायर हो चुके थे। मामूली-सी पेंशन मिलती थी। उस पेंशन में उनका और मेरी सास का गुजारा होना ही कठिन था। ट्यूशन करके दो-तीन महीने तो उन्होंने किसी तरह घर का खर्च चलाया; लेकिन ज्यादा मेहनत करने के कारण वह बीमार रहने लगे। तब मुझे मजबूर होकर आया की नौकरी करनी पड़ी। अमृता की मां एक कॉलेज में प्रिंसिपल थीं। उनकी एक बच्ची को कोई बदमाश उठा ले गया था। बस अमृता रह गई थी। इसलिए उन्हें एक ऐसी औरत की जरूरत थी, जो रात दिन उनकी बेटी अमृता की देखभाल भी कर सके और उसे पढ़ा-लिखा भी सके। उन्होंने अमृता को पूरी तरह मुझे सौंप दिया। अपनी बच्ची के गुम हो जाने के कारण वह बहुत दुखी रहने लगी थीं। लगभग एक बरस तक वह अमृता की जुड़वां बहन अपर्णा को न जाने कहां-कहां खोजती रही थीं और फिर एक दिन बिना किसी को कुछ बताए अचानक ही न जाने कहां गुम हो गईं। तब से लगभग सोलह वर्ष बीत चुके हैं। न तो वह घर लौटकर आई और न उनकी ओर से कोई पत्र ही मिला।” अनुराधा ने बताया।

“क्या वह कुछ रुपया छोड़ गई थीं?” मेजर बलवंत ने

पूछा।

“नकद रकम तो एक-डेढ़ लाख से अधिक नहीं थी। वह उस रकम को अमृता के नाम बैंक में जमा कर गई थीं। प्रिंसेज स्ट्रीट पर उनके पिता की छोड़ी हुई जमीन का एक छोटा-सा टुकड़ा था, जिसे वह मेरे नाम कर गई थीं। मैंने बैंक से लोन लेकर वहां एक इमारत बनवा ली थी। नीचे उसी बैंक की ब्रांच है। लोन की किस्त देने के बाद इतनी रकम बच जाती है कि हम लोगों का सारा खर्च, नौकरी की तनख्वाह और अमृता की पढ़ाई-लिखाई का सारा खर्च उसी से चल जाता है। इन सोलह सालों में अमृता के नाम जमा रकम लगभग चार गुना हो चुकी है। अनुराधा ने बताया, “अमृता के अलावा मेरा और कोई नहीं है। मैंने वह इमारत भी अमृता के नाम ही कर दी है। यह बंगला भी अमृता के ही नाम है।”

“आपको अमृता के पिता के बारे में कुछ मालूम है?” मेजर बलवंत ने प्रश्न किया।

“एक बार अमृता की मां ने बताया था कि अमृता के पिता ने अपने किसी मित्र की विधवा और बेसहारा पत्नी के साथ विश्वासघात किया था। उनके मित्र की पत्नी अमृता की मां की सहेली थी उसने उन्हें उनके पति की करतूत बता दी थी। उस विश्वासघात में अमृता के पिता के कुछ अन्य मित्र भी शामिल थे। जब उस स्त्री ने सारी बात अमृता के पिता को बता दी और अमृता की मां ने उन्हें बुरा-भला कहा, तो उन्होंने अमृता की मां से हमेशा के लिए रिश्ता तोड़ लिया और उसके बाद वह फिर कभी नहीं आए। वह कौन थे? कहां रहते थे इस सम्बन्ध में मुझे कुछ मालूम नहीं।” अनुराधा ने बताया।

“और उनके मित्र की पत्नी कहां है?”

“कुछ लोग कहते हैं कि अमृता के पिता और उनके मित्रों ने केवल इस बात पर नाराज होकर कि उसने उनकी करतूत का भंडाफोड़ क्यों किया, उसका गला घोटकर उसे मार डाला और फिर उसकी लाश बम्बई से बहुत दूर समुद्र के किनारे निर्जन

पहाड़ियों में फेंक आए; लेकिन अमृता की मां और उसके भाई का विश्वास था कि गला घोंटे जाने पर भी उसकी मृत्यु नहीं हुई थी।”

“क्या अमृता की मां का कोई भाई भी था? वह कहां है?” मेजर बलवंत ने पूछा।

“वह उनका सगा भाई नहीं, दूर के रिश्ते का भाई था। वह उन्हीं के पास रहा करता था, लेकिन उसकी आवारागर्दी, बुरी आदतों और गैरकानूनी कामों से तंग आकर उन्होंने उसे फटकार कर घर से निकाल दिया था। घटना मेरे यहां आने से कुछ दिनों पहले की है। अमृता की मां ने कई साल बाद एक बार बताया था कि राजन विदेश की किसी जेल में है। उसे उम्र कैद की सजा हो गई है। लेकिन उसे उम्र कैद की सजा क्यों हुई और वह कहां है इस सम्बन्ध में उन्होंने कुछ नहीं बताया था। मैंने भी पूछने की जरूरत नहीं समझी थी।” अनुराधा ने कहा।

अनुराधा मेजर बलवंत की टांगों से लिपटकर बिलख-बिलखकर रो पड़ी।

उसका रोना सुनकर वहां मौजूद हर व्यक्ति की आंखें गीली हो उठीं।

मेजर बलवंत ने उसकी दोनों बांहें पकड़कर उसे उठाया और सोफे पर बैठा दिया फिर तसल्ली देने के बाद उसने पूछा, “अनुराधाजी, क्या राजन को आपने देखा था?”

“जी हां। देखा तो था। लेकिन जब भी देखा था रात के समय ही देखा था। क्योंकि वह हमेशा रात को ग्यारह बजे के बाद घर लौटता था और सुबह मुंह अंधेरे ही घर से चला जाता था। उसे इस घर को छोड़े हुए सोलह साल से अधिक हो चुके हैं। इसलिए अगर अब वह मेरे सामने आ भी जाए, तो मैं उसे पहचान नहीं पाऊंगी। वह गठे हुए बदन का लम्बा-तड़ंगा नौजवान था। गोरा चिट्ठा और सुन्दर। उसने जब इस घर को छोड़ा था, तो उसकी उम्र सत्ताईस-अट्ठाईस साल के लगभग थी। पता नहीं, अब कहां और किस हाल में होगा।” अनुराधा

ने दर्द भरे स्वर में कहा।

“अमृता की मां और उसके भाई राजन का घर में कोई फोटो है?”

“अमृता की मां के तो ढेर सारे फोटो हैं। हो सकता है, किसी एलबम में राजन का फोटो भी मिल जाए। मैं कल दिन में पुराने एलबम निकालकर देखूंगी।”

“ठीक है।” मेजर बलवंत ने कहा और उठ खड़ा हुआ।

“यह ठीक रहेगा।” मेजर बलवंत ने कहा और फिर इंस्पेक्टर कुलकर्णी की ओर देखते हुए बोला, “आइए इंस्पेक्टर साहब! जरा उस जगह को देखें जहां से अपहरण करने वाले आदमी ने अमृता को कन्धे पर लिए-लिए समुद्र में छलांग लगा दी थी।”

मेजर बलवंत ने चारदीवारी के पास पहुंचकर उसके पार फैले सीमाहीन समुद्र की ओर देखा।

मेजर बलवंत ने सितारों की मद्धिम रोशनी में उस दीवार को देखा। यह दीवार पत्थरों की बनी हुई थी और बिल्कुल सीधी थी। इस ओर से कोई बंगले में घुस आया होगा ऐसी कोई सम्भावना ही नहीं थी, क्योंकि दूर तक दीवार पर कहीं कोई रस्सा बंधा दिखाई नहीं दे रहा था।

सहसा कुछ सोचकर मेजर बलवंत तेजी से मुड़ा और राजीव से बोला, “राजीव! तुम फौरन बंगले पर चले जाओ। जितनी जल्दी हो सके स्कॉरपियन को ले आओ।”

राजीव तेजी से मुड़ा और दौड़ता हुआ पोर्टिको की ओर चला गया, जहां मेजर बलवंत की कार खड़ी हुई थी।

मेजर बलवंत को मुंडेर पर मिट्टी में सने जूतों के निशान दिखाई दिए। मुंडेर की चौड़ाई डेढ़ फीट से कम नहीं थी, इसलिए जूतों के निशान साफ-साफ दिखाई दे रहे थे। ये निशान 12 नम्बर साइज से भी बड़े जूतों के निशान थे, जो मिट्टी लग जाने के कारण और भी अधिक बड़े दिखाई दे रहे थे।

इसका मतलब था कि जो भी आदमी अमृता को उठाकर ले गया था, उसका कद साढ़े छः फीट से कम नहीं था और बदन

भी काफी हट्टा-कट्टा और मजबूत था।

मेजर बलवंत झुककर लॉन पर बने उन जूतों के निशानों को खोजने लगा। कुछ देर के बाद उसे उन जूतों के निशान मिल गए और वह उन निशानों के पीछे-पीछे चलते हुए बंगले की उस दीवार में बनी एक खिड़की के पास पहुंच गया, जिसे ऊपर से नीचे तक इश्क पेचां की फूलों के गुच्छों से लदी बेलों ने अपने आप में छिपा रखा था।

खिड़की के पास ही दीवार के नीचे गीली जमीन पर कदमों के ढेर सारे निशान थे। जिनसे स्पष्ट था कि वह आदमी काफी देर तक वहां खड़ा रहा था।

मेजर बलवंत उन निशानों को देख ही रहा था कि तभी राजीव स्कॉरपियन को लेकर आ गया।

मेजर बलवंत को देखते ही स्कॉरपियन ने कार में से छलांग लगाई और दो-तीन छलांगों में ही उसके पास पहुंच गया।

मेजर बलवंत ने उसके सिर पर हाथ फेरा और पीठ थपथपाकर उसके गले में बंधा पट्टा पकड़कर उसे खिड़की के साथ वाली उस दीवार के पास ले आया, जिसके नीचे जूतों के ढेर सारे निशान बने हुए थे।

स्कॉरपियन कुछ देर बाद वहां खड़ा-खड़ा उस दीवार को सूंघता रहा और फिर खिड़की की चौखट पर अपनी दोनों अगली टांगें टिकाकर कमरे के अन्दर कूद गया।

वह कुछ देर तक कमरे की दीवार के साथ पड़े पलंग के पास खड़ा रहा और फिर उसी खिड़की ओर चल दिया।

वह छलांग लगाकर खिड़की से निकला और फिर छलांगें भरता हुआ समुद्र की ओर बनी उसी चारदीवारी के पास पहुंच गया, जहां से अमृता का अपहरण करने वाला आदमी उसे लिए हुए समुद्र में कूद गया था।

मेजर बलवंत कुछ देर चुपचाप खड़ा स्कॉरपियन को देखता रहा और फिर उसका पट्टा पकड़कर एक बार फिर उसी खिड़की के पास आ गया।

उसने स्कॉरपियन को फिर उसी दीवार के सामने खड़ा कर दिया।

स्कॉरपियन कुछ देर तक उस दीवार को नीचे से लेकर काफी ऊंचाई तक सूंघता रहा और फिर पलटकर छलांगें भरता हुआ दूर लॉन के बीचोंबीच बने संगमरमर के एक छोटे से हौज की एक सीढ़ी के पास पहुंचकर रुक गया, जिसके बीचोंबीच संगमरमर की बनी हुई एक स्त्री की मूर्ति खड़ी थी, जिसके बाएं कंधे पर एक गागर थी। गागर थोड़ी-सी आगे की ओर झुकी हुई थी और उसमें से पानी की एक धारा निकल कर हौज में गिर रही थी।

स्कॉरपियन उस सीढ़ी पर आकर बैठ गया और अपनी जीभ निकालकर इतमीनान से सांस लेने लगा। उसके इस अन्दाज को देखकर मेजर बलवंत समझ गया कि वह अब और कहीं जाने के लिए तैयार नहीं है। वह घुटने मोड़कर नीचे बैठ गया और सीढ़ियों के नीचे हरी-हरी घास से भरे लॉन पर उन जूतों के निशान खोजने लगा।

उसे सीढ़ियों से बंगले की उस खिड़की की ओर जाते हुए कदम तो दिखाई दे रहे थे; लेकिन वे कदम किस ओर से आए थे यह पता नहीं चल रहा था।

मेजर बलवंत उठकर टहलता हुआ लॉन को पार करके उस ओर की चारदीवारी के पास आ खड़ा हुआ।

उसने चारदीवारी के ऊपर से उचककर दूसरी ओर देखा।

उस ओर एक पतली सड़क थी जो दो बंगलों के बीच से गुजरती हुई समुद्र के किनारे तक चली गई थी। वह ढलानदार सड़क चारदीवारी के अगले सिरे पर तो चारदीवारी से केवल छः फुट नीची थी लेकिन फिर लगातार नीची होती चली गई थी और चारदीवारी के दूसरे छोर तक पहुंचते-पहुंचते तो वह लगभग तीस फीट के लगभग नीची हो गई थी। उस चारदीवारी पर आधी दूर तक तीन फीट की ऊंचाई तक कंटोले तारों की जाली लगी हुई थी। इसी तरह की कंटोले तारों की जाली सामने

वाली चारदीवारी पर लगी हुई थी, जिसे हरे-सुर्ख रंग के फूलों वाली बेलों से अच्छी तरह ढक दिया गया था।

मेजर बलवंत ने बंगले के चारों ओर घूमकर कोई ऐसी जगह खोजने की कोशिश की जहां से चारदीवारी पार करके किसी के अन्दर आने की सम्भावना हो सकती थी; लेकिन उसे ऐसी कोई जगह दिखाई नहीं दी।

ट्रेसिंग पेपर

मेजर बलवंत राजीव और स्कॉरपियन के साथ अपने बंगले पर पहुंचा तो रात के दो बज चुके थे।

उसने दिल बहादुर से दो प्याले कॉफी बनवाई और कॉफी पीते हुए राजीव के साथ इस नई घटना के बारे में बातें करने लगा।

कुछ सोचते-सोचते सहसा राजीव ठहाका मारकर हंस पड़ा।

मेजर बलवंत हैरानी भरी नजरों से उसकी ओर देखने लगा।

“क्या हुआ राजीव, तुम हंस क्यों रहे हो?” मेजर बलवंत ने हैरानी भरे स्वर में पूछा।

“मेजर साहब, मुझे इस बात पर हंसी आ रही है कि इस केस में जब भी हम किसी घटना की छानबीन करने का निश्चय करते हैं, एक नई घटना सामने आ जाती है। उस घटना के कारण हमारा प्रोग्राम धरा-का-धरा रह जाता है। इसका परिणाम यह निकला है कि इतनी घटनाएं हो जाने के बाद हम आज तक एक भी घटना की छानबीन नहीं कर पाएंगे।” राजीव ने कहा, “मेरा सुझाव है कि आप हर घटना की छानबीन के लिए दो-दो व्यक्तियों को लगा दीजिए।”

“तुम ठीक कहते हो राजीव! ऐसा ही करना पड़ेगा।” मेजर बलवंत ने कहा और उठकर अपने बेडरूम में चला गया।

□□

सुबह हो चुकी थी और मेजर बलवंत अभी-अभी डॉली से फोन पर बात कर चुका था।

मेजर बलवंत उठकर अपने ऑफिस में चला गया और उस ट्रेसिंग पेपर को उठा लाया जो उसे राजभवन की सफेद शेवरलेट कार में मिला था।

उसने वह ट्रेसिंग पेपर अपने सामने सेंटर टेबल पर फैला लिया और उसे ध्यान से देखने लगा।

और उस ट्रेसिंग पेपर पर बनी लकीरों को देखते ही उसकी आंखें खुशी से चमक उठीं।

वह जिन लकीरों शब्दों और अंकों को अब तक अर्थ हीन समझता रहा था उनके अर्थ स्पष्ट होकर उसकी आंखों के आगे नाच उठे थे।

वह एक ऐसे बंगले का नक्शा था, जिसे वह अच्छी तरह देख चुका था, लेकिन कब और कहाँ! यह उसे याद नहीं आ रहा था।

वह उसकी एक-एक रेखा, एक-एक बिन्दु, एक-एक शब्द, एक-एक अंक और एक-एक संकेत को बड़े ध्यान से देखने लगा।

दूसरे ही पल उसके होंठ गोल हो गए और वह जोर-जोर से सीटी बजाने लगा।

□ □

मेजर बलवंत की सीटी की आवाज अभी ड्राइंगरूम में गूंज ही रही थी कि तभी दरवाजे पर कुछ कदमों की आहटें सुनाई दीं। डॉली कापड़िया दिलबहादुर के साथ अन्दर आ रही थी।

डॉली कापड़िया के चेहरे पर उदासी, चिन्ता, भय और आशंकाओं की गहरी रेखाएं उभरी हुई थीं।

“मेजर साहब! रात में आधी रात तक तो हम लोगों को कुछ भी महसूस नहीं होता। दिन भर ताऊजी की मृत्यु पर शोक संवेदना प्रकट करने वालों का तांता लगा रहता है। उनकी बर्बर हत्या के कारण बंगले के नौकर-चाकरों को भी गहरा सदमा पहुंचा है। सारे दिन की भाग दौड़ उन लोगों को और भी निढाल कर देती है। हम लोग आधी रात से पहले सो नहीं पाते और

आधी रात के बाद जैसे ही सोते हैं पूरे बंगले की जमीन के नीचे धड़धड़ाती हुई लहरें इस तरह दौड़ने लगती हैं जैसे जमीन के अन्दर भूचाल की लहरें दौड़ रही हों और उन्हीं के साथ बंगले की दीवारें और छतें इस तरह कांपने लगती हैं, जैसे वे ताश की बनी हों। दरवाजे और खिड़कियां जोर-जोर से बजने लगती हैं। छतों पर लटके हुए झाड़-फानूस इस तरह हिलने लगते हैं, जैसे उन्हें रस्सी से बांधकर कोई खींच रहा हो। मेजों और अलमारियों में रखी चीजें लुढ़ककर फर्श पर गिरने लगती हैं जैसे कोई उन्हें उठा-उठाकर फेंक रहा हो।” डॉली कापड़िया ने भयभीत स्वर में कहा, “रात के बारह बजे से लेकर सुबह चार बजे तक यही हालत रहती है और चार बजते-बजते फिर पहले की तरह सब कुछ इस तरह शान्त हो जाता है जैसे कुछ हुआ ही न हो। केवल कांच और चीनी के टूटे हुए बर्तन या अन्य चीजें उस भयानक भूचाल की गवाही देने के लिए रह जाती हैं।” डॉली ने आते ही भय और चिन्ता भरे स्वर में लगातार कहना शुरू कर दिया था।

“यानी यह सिलसिला सेठ रतनचंद की मृत्यु के छः-सात दिन के बाद शुरू हुआ है।” मेजर बलवंत ने हिसाब लगाते हुए कहा।

“जी हां।” डॉली धीरे से बोली, “बंगले में काम करने वाले नौकर-नौकरानियां कहते हैं कि सेठजी की हत्या अकाल मृत्यु थी, इसलिए उनकी आत्मा बंगले में मंडराती रहती है। हमारे रिश्तेदारों ने भी ताऊजी के भूत बन जाने की अफवाह उड़ा दी है। सभी रिश्तेदार और परिचित यही सलाह दे रहे हैं कि मैं उस बंगले को खाली करके पालघर से दूर किसी दूसरी कॉलोनी में जाकर रहने लगूं लेकिन न तो किराये पर ही इतनी जल्दी कोई मकान मिल सकता है और न खरीदा ही जा सकता है, क्योंकि अभी ताऊजी के बैंक एकाउंट, मिल और दूसरी जायदाद मेरे नाम ट्रांसफर नहीं हुई।”

“मैं कोशिश करूंगा। दो-चार दिन में ही सेठजी की छोड़ी

हुई सारी चल-अचल सम्पत्ति तुम्हारे नाम ट्रांसफर करा दूँ।” मेजर बलवंत ने डॉली को तसल्ली देते हुए कहा।

“उसकी तो मुझे जल्दी नहीं है। समस्या है रहने की। ताऊजी की मौत की खबर सुनकर मेरी एक मौसी आ गई हैं। प्रिंसेज पार्क में उनका बहुत बड़ा बंगला है। वह मुझ पर दबाव डाल रही हैं कि मैं इस बंगले को छोड़कर उनके बंगले में चली जाऊँ। रहने वाली केवल मौसीजी हैं। उनके दो लड़के हैं। वे दोनों जर्मनी में हैं और मौसीजी भी महीने में दो-चार दिन ही बम्बई में रहती हैं। फिर तीर्थ यात्रा पर चली जाती हैं। लेकिन मैंने अपनी इन मौसीजी को न तो अपने घर में कभी आते देखा और न इनके बारे में किसी से कुछ सुना।”

“क्या घर का कोई पुराना नौकर या नौकरानी भी उन्हें नहीं पहचानते?” मेजर बलवंत ने पूछा।

“हमारे घर में सबसे पुराना नौकर श्यामू है। उम्र में वह ताऊजी से भी बड़े थे। बचपन से ही हमारे परिवार में रह रहे हैं। उन्होंने भी मौसीजी को कभी नहीं देखा।” डॉली ने बताया।

“इस समय तुम्हारी मौसीजी कहां हैं?” मेजर बलवंत ने पूछा।

“बंगले में ही छोड़ आई हूँ। पहले तो वह मेरे साथ ही आ रही थीं। लेकिन जब उन्हें यह पता चला कि मैं आपसे मिलने जा रही हूँ, तो कहने लगीं, पुलिस वालों और जासूसों से उन्हें सख्त चिढ़ है, क्योंकि दुनिया में जितने भी अपराध होते हैं। वे सब पुलिस और जासूसों की मिली भगत से ही होते हैं। ऐसे कसाइयों का मुंह देखना भी पाप है और इतना कहकर वह कार से उतर गई।” डॉली ने मौसी के बोलने के अन्दाज की नकल करते हुए कहा।

“अरे!” डॉली बुरी तरह चौंक पड़ी और फिर उसने सेंटर टेबल पर फैला हुआ ट्रेसिंग पेपर उठा लिया और उसे बड़े ध्यान से देखने लगी।

मेजर बलवंत चौंककर डॉली की ओर देखने लगा। डॉली

जैसे-जैसे उस ट्रेसिंग पेपर पर बनी रेखाओं को देखती जा रही थी, उसकी आंखों में एक विचित्र-सी चमक पैदा होती जा रही थी।

मेजर बलवंत को ऐसा महसूस हुआ, जैसे डॉली उस ट्रेसिंग पेपर पर बनी लकीरों, शब्दों और संख्याओं का अर्थ अच्छी तरह जान गई है।

“तुम जानती हो डॉली! यह क्या चीज है?” मेजर बलवंत ने पूछा।

“मेजर साहब! शायद आपको पता नहीं। मेरी मंगनी एक ऐसे नौजवान के साथ हुई है, जो इंजीनियर है। उसी के कहने से मैंने भी इंजीनियरिंग कॉलेज में एडमिशन ले लिया था। यह एक बंगले का नक्शा है। वह बंगला मेरी सहेली अमृता का है।” डॉली ने कहा।

“ओह!” मेजर बलवंत की आंखें खुशी से चमक उठीं, “तुम्हें पूरा-पूरा विश्वास है कि यह नक्शा अमृता के बंगले का ही है?”

“मैंने इस बंगले को सैकड़ों बार देखा है।” डॉली ने कहा और फिर ट्रेसिंग पेपर को सेंटर टेबल पर फैलाकर उंगली रख-रखकर बताने लगी, “देखिए, यह इस बंगले की उत्तरी बाउंडरीवॉल है। इसके पीछे यह ढलवां सड़क है, जो समुद्र के किनारे तक चली जाती है और यह दक्षिणी बाउंडरीवॉल है जिसके पीछे मालावार हिल के चर्च के पुराने फादर जोन का बंगला है। बंगले के पूर्व में यह सड़क है। दक्षिणी बाउंडरीवॉल के नीचे यह समुद्र है। इसके पास लिखी हुई 30 की संख्या यह बताती है कि बंगले की दक्षिणी बाउंडरीवॉल समुद्र से 30 फीट ऊंची है। और यह बंगले की मुख्य इमारत है। और यह है संगमरमर का बना आठ कोनों वाला हौज, जिसके बीचोबीच संगमरमर का बना एक औरत का बहुत ही खूबसूरत स्टेच्यू खड़ा है, जिसके कन्धे पर रखी गागर में से ढलकर पानी इस हौज में गिरता रहता है।”

मेजर बलवंत डॉली की बात सुनकर हैरान रह गया। डॉली ने जो कुछ बताया था, एकदम सच था। उसे अच्छी तरह याद आ गया था।

“लेकिन डॉली! एक बात समझ में नहीं आ रही।” मेजर बलवंत ने समुद्र की ओर वाली बाउंडरी की लकीर पर एक जगह उंगली रखकर पूछा, “यह बताओ! इस निशान का क्या अर्थ है? वैसे यह सांकेतिक निशान किसी दरवाजे या खिड़की का ही हो सकता है; लेकिन समुद्र की सतह से तीस फीट ऊंची दीवार में कोई दरवाजा या खिड़की बनाने की तुक क्या है? जहां तक मुझे याद है, मैंने इस दीवार को काफी देर तक देखा था। मुझे तो कोई दरवाजा या खिड़की दिखाई नहीं दी थी।”

“आपने यह दीवार कब देखी थी?” डॉली ने उत्सुकता से पूछा, “क्या आप अमृता को जानते हैं? आप कब गए थे उसके बंगले पर? मैंने तो आज सुबह उसे फोन किया था। अमृता की नौकरानी रधिया ने बताया था कि अमृता कुछ दिनों के लिए कहीं बाहर चली गई है। मैं तो हैरान हूं कि मुझे बताए बिना ही वह बम्बई से बाहर कैसे चली गई?”

मेजर बलवंत सोचने लगा कि डॉली को अमृता के अपहरण की सूचना दी जाए या नहीं? अन्त में उसने यही निश्चय किया कि अमृता के सम्बन्ध में डॉली को यह दुःखद समाचार सुनाना उचित नहीं होगा, क्योंकि वह पहले ही कम परेशान नहीं है। इसलिए उसने जल्दी से कहा, “मैं अमृता से बहुत वर्षों से परिचित हूं। अमृता कल ही बाहर गई है। जाते समय उसने मुझे बुलाया था। वह और अनुराधा अपने बंगले की देखभाल की जिम्मेदारी मुझे सौंप गई हैं।”

डॉली कुछ देर किसी सोच में डूबी बैठी रही, फिर बोली, “हां, तो मेजर साहब! बताइए, मैं क्या करूं?”

“डॉली! मैं जैसा कहता हूं तुम वैसा ही करना।” मेजर बलवंत सोचते हुए बोला, “तुम अपनी मौसी जी को यह मत बताना कि मुझसे तुम्हारी मुलाकात हुई थी। उनसे कह देना कि

मेजर बलवंत कहीं बाहर गया हुआ है, इसलिए उससे भेंट नहीं हुई। पता नहीं बाहर से कब लौटेगा। मैं रात को आधी रात से पहले ही किसी-न-किसी तरह उस बेडरूम तक पहुंच जाऊंगा, जिसमें सेठ रतनचंदजी की हत्या की गई थी। तुम मुझे उस बेडरूम के पास ही मिल जाना।”

“ठीक है।” डॉली ने कहा।

“मैं तुम्हें एक पुड़िया दे रहा हूं। इसमें थोड़ा-सा पाउडर है। रात को खाने या दूध में डालकर अपनी मौसीजी को दे देना। इससे कम-से-कम बारह घंटे तक वह गहरी नींद सोती रहेंगी।” मेजर बलवंत ने कहा और उठकर स्टोर में चला गया। थोड़ी देर के बाद उसने एक पुड़िया लाकर डॉली को दे दी।

मेजर बलवंत कुछ देर सोचता रहा फिर बोला, “ठीक है। मैं आज शाम तक किसी भी समय सोनिया के साथ तुम्हारे बंगले में तुम्हारे एक करीबी रिश्तेदार के रूप में पहुंच जाऊंगा। वैसे तुम्हारे ताऊजी मूलरूप से कहां के रहने वाले थे।”

“वह राजकोट के रहने वाले थे। हमारी एक बहुत बड़ी हवेली अभी भी राजकोट में है। ताऊजी के साथ मैं तीन-चार महीने पहले ही राजकोट गई थी।” डॉली ने बताया।

“तब ठीक है। तुम मौसीजी को यही बताना कि हम लोग राजकोट से आए हैं और तीन-चार महीने हुए जब तुम अपने ताऊजी के साथ राजकोट गई थीं, हमारे घर पर ही ठहरी थीं। तुम्हारे ताऊजी मेरे गहरे दोस्तों में से थे।” मेजर बलवंत ने कहा।

डॉली मेजर बलवंत से इजाजत लेकर चली गई, तो मेजर बलवंत ने राजीव से कहा, “राजीव! सोनपुर की पुरानी हवेली का फोन नम्बर तुम्हारे पास है। कॉल बुक कराकर सोनिया से कह देना कि वह शाम को ठीक छः बजे संजीव और डेजी को लेकर पालघर स्टेशन पर पहुंच जाए।”

□□

मेजर बलवंत की कार जसलोक अस्पताल की ओर जाने

वाले फ्लाई ओवर के करीब पहुंची ही थी कि न जाने किधर से एक गोली सनसनाती हुई आई और विंडस्क्रीन को तोड़ती हुई उसके साथ वाली सीट में समा गई।

गोली की आवाज तो मेजर बलवंत को सुनाई नहीं दी थी लेकिन विंडस्क्रीन के टूटने की आवाज के साथ ही कांच के टुकड़ों को बदन से टकराने पर उसके हाथ स्टेयरिंग व्हील पर एक पल के लिए बहक गए और कार रोकते-रोकते भी फुटपाथ पर चढ़ती चली गई।

और जैसे ही मेजर बलवंत की कार फुटपाथ पर पहुंची, उसने जल्दी से ब्रेक लगाए और दूसरी ओर का दरवाजा खोलकर कार से फुटपाथ पर लुढ़क गया।

तभी कई गोलियां एक साथ उसकी कार से आकर टकराईं। कुछ गोलियां कार के अंदर भी पहुंच गई थीं।

मेजर बलवंत जानता था कि उसकी कार पर काफी दूर से गोलियां चलाई जा रही हैं। और राइफल की गोलियों का जवाब वह रिवॉल्वर से नहीं दे सकता था।

वह सरकता हुआ कार के पिछले हिस्से के पास पहुंच गया। उसने सामने की ओर नजरें उठाकर देखा। उस ओर सड़क के किनारे लोगों की भीड़ लगी हुई थी और गुजरने वाला ट्रेफिक रुकता चला जा रहा था।

सहसा उसकी नजर गहरे नीले रंग की उस कार पर पड़ी जो तीर की तरह उड़ती हुई चली जा रही थी और सड़क के दूसरे किनारे पर खड़े लोग उस कार की ओर हाथ उठाकर चीख-चिल्ला रहे थे।

मेजर बलवंत ने दो-तीन छलांगों में ही पूरी सड़क पार कर ली और सामने वाले फुटपाथ पर वहां पहुंच गया, जहां एक कार को लोगों की भीड़ ने घेर रखा था।

फुटपाथ से गुजरने वाले कुछ लोगों ने सड़क के किनारे खड़ी कार में से मेजर बलवंत पर चलाई गई गोलियों को देख लिया था। जैसे ही रिवॉल्वर हाथ में लिए छलांगें लगाते हुए वह

उस कार के पास पहुंचा, वे लोग एक साथ बोल उठे, “साहब! आप बड़े भाग्यशाली हैं। उस नीली कार वाली औरत को धन्यवाद दीजिए, जिसने आप पर गोलियां चलाने वाले चारों आदमियों को भून डाला।”

“सफेद साड़ी वाली वह औरत शायद आपको जानती थी। उसने इन लोगों को आप पर गोलियां चलाते हुए देखा था। तभी तो वह दाम देने के बाद भी बिना गुलदस्ते लिए जल्दी से अपनी कार में जा बैठी थी और फिर उसका ड्राइवर पलक झपकते ही अपनी कार लेकर इस कार के पास पहुंच गया था।” फुटपाथ पर गुलदस्ते बेचने वाले एक आदमी ने मेजर बलवंत से कहा।

मेजर बलवंत ने उन लोगों की बातों का कोई उत्तर नहीं दिया। वह भीड़ को चीरता हुआ उस कार के पास पहुंच गया, जिसकी अगली और पिछली सीट पर खून में लिथड़ी हुई चार लाशें पड़ी थीं।

गोलियां उन चारों आदमियों की खोपड़ियों को फोड़ती हुई निकल गई थीं और पहली गोली में ही वे दम तोड़ गए थे।

मेजर बलवंत मन-ही-मन वाह-वाह कह उठा। पलक झपकते ही इतनी तेज रफ्तार से दौड़ती हुई कार से गोलियां चलाकर चार आदमियों की खोपड़ियों को निशाना बना लेना साधारण बात नहीं थी। उसने कार की सीटों पर पड़ी लाशों को ध्यान से देखा।

वे लाशें ऐसे लोगों की थीं जिनके कद असाधारण रूप से लम्बे थे और बदन काफी हृष्ट-पुष्ट और शक्तिशाली दिखाई दे रहे थे और जिस आदमी की लाश ड्राइविंग सीट पर पड़ी थी उसका चेहरा उसे पहचाना हुआ-सा दिखाई दे रहा था।

वह सोच ही रहा था कि उसने इस आदमी को कब और कहां देखा था कि तभी भीड़ की आवाजों को चीरकर पुलिसवैन के सायरन की आवाज गूंज उठी। शायद भीड़ में से या आस-पास के बंगलों में से किसी आदमी ने पुलिस को फोन कर दिया था। कुछ सेकंड के बाद ही पुलिसवैन एक जीप और एम्बुलेंस

के साथ वहां पहुंचकर रुक गई।

इंस्पेक्टर कुलकर्णी को जीप से उतरते देखकर मेजर बलवंत भीड़ में से निकलकर बाहर आ गया।

“ओह, मेजर साहब! अच्छा हुआ आप मिल गए।” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने तेजी से आगे बढ़कर मेजर बलवंत की ओर अपना दायां हाथ बढ़ाते हुए कहा, “मैंने यहां आने से पहले आपको फोन किया था। राजीव ने बताया था कि आप अमृता के बंगले पर गए हुए हैं।”

“इस कार में जिन लोगों की लाशें पड़ी हुई हैं, उन लोगों ने मुझे अमृता के बंगले तक जाने ही नहीं दिया। यहीं रुकने पर मजबूर कर दिया।” मेजर बलवंत ने हलकी-सी हंसी के साथ कहा।

“क्या मतलब?” इंस्पेक्टर कुलकर्णी चौंक पड़ा।

“इंस्पेक्टर साहब, इस कार में जो लोग सवार थे उन्होंने इन साहब पर गोलियां चलाकर इन्हें मार डालने की भरपूर कोशिश की थी। लेकिन यह तो किस्मत अच्छी थी कि बच गए पर जिन लोगों ने इनकी जान लेने की कोशिश की थी; उन्हें एक औरत ने पलक झपकते ही मौत की नींद सुला दिया।” एक आदमी ने कहा, “इसी को तो कहते हैं कि ‘जाको राखे साइयां मार सके न कोय’।”

“वह औरत कौन थी?” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने पूछा।

“साहब, यह तो पता नहीं कि वह औरत कौन थी। वैसे तो उसकी उम्र चालीस साल से कम नहीं थी; लेकिन वह भरपूर जवान दिखाई दे रही थी। उसका बदन बेहद गठा हुआ था। कहीं से भी नहीं ढलका था। उसके नाक नक्श बहुत ही तीखे थे। सुतवां नाक, भरे-भरे होंठ और बड़ी-बड़ी गहरी काली आंखें और सुराहीदार गर्दन।” गुलदस्ते बेचने वाले ने चटखार लेते हुए कहा, “यह काले रंग की कार जिसमें ये चार बदमाश बैठे हुए थे, जैसे ही इस फुटपाथ के पास आकर रुकी थी उसके एक-दो मिनट के बाद ही उस सफेद साड़ी वाली औरत की

कार भी इससे थोड़ा पीछे आकर रुक गई।”

इंस्पेक्टर कुलकर्णी के आदेश पर एक एस.आई. ने वहां खड़े उन लोगों के बयान लिख लिए जो वारदात के समय वहां मौजूद थे। जिन्होंने उन चारों को मेजर बलवंत की कार पर गोलियां चलाते हुए और फिर उस सफेद साड़ी वाली औरत की शक्तिशाली पिस्तौल से गोलियां खाकर मरते हुए देखा था।

“आप इन लाशों को इस कार सहित पुलिस हेडक्वार्टर ले चलिए। इन लोगों की शिनाख्त का मुझे एक उपाय सूझ गया है। मुझे पूरी आशा है कि इन चारों की ही शिनाख्त हो जाएगी।” मेजर बलवंत ने इंस्पेक्टर कुलकर्णी को मशवरा दिया।

□ □

पुलिस हेडक्वार्टर में पहुंचकर मेजर बलवंत की हिदायत के अनुसार इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने कार से चारों लाशें उठवाकर अपने ऑफिस के सामने वाले बरामदे में चार लम्बी मेजों पर रखवा दीं और उन्हें सफेद चादरों से ढकवा दिया।

मेजर बलवंत ने एक सार्जेंट से कहा कि वह उस काली कार का नम्बर नोट करके ट्रांसपोर्ट विभाग के कार्यालय में जाकर यह पता करने की कोशिश करे कि इस कार का मालिक कौन है? फिर वह इंस्पेक्टर कुलकर्णी के साथ उसके ऑफिस में आ बैठा। उसने क्रेडिल पर से रिसीवर उठा लिया और अपनी डायरी में देखकर कोई नम्बर डायल करने लगा।

थोड़ी देर के बाद जब दूसरी ओर से किसी की आवाज सुनाई दी तो मेजर बलवंत ने कहा, “मैं मेजर बलवंत हूं और सिक्योरिटी ऑफिसर हरजीतसिंह से बात करना चाहता हूं।”

“होल्ड ऑन प्लीज!” दूसरी ओर से आवाज आई और फिर एक मिनट के बाद राजभवन के सिक्योरिटी ऑफिसर हरजीतसिंह की आवाज सुनाई दी, “गुड मॉर्निंग मेजर साहब! कहिए कैसे याद किया?”

“क्या आप राजभवन के ट्रांसपोर्ट विभाग में काम करने वाले मैकेनिक लक्ष्मण को लेकर यहां आ सकते हैं?”

“क्यों नहीं। मैं अभी पन्द्रह-बीस मिनट में लक्ष्मण को लेकर आपके पास पहुंच रहा हूं।” हरजीतसिंह ने उत्तर दिया।

“आइए।” मेजर बलवंत ने कहा और रिसीवर रख दिया।

“इंस्पेक्टर साहब! किसी सार्जेंट को चेम्बूर में डिलाइट मोटर गैरेज के साथ वाले टी-स्टाल पर भेजिए। वह टी-स्टाल के मालिक को अपने साथ ही लेता आए।” मेजर बलवंत ने कहा और तत्काल सार्जेंट डिमेलो को वहां भेज दिया।

थोड़ी देर के बाद ही राजभवन का सिव्योरिटी ऑफिसर हरजीतसिंह मैकेनिक लक्ष्मण को लेकर इंस्पेक्टर कुलकर्णी के ऑफिस में पहुंच गया।

“मिस्टर लक्ष्मण! मेरे साथ आइए।” मेजर बलवंत ने उठकर दरवाजे की ओर बढ़ते हुए कहा। मैकेनिक लक्ष्मण के साथ-साथ हरजीतसिंह और इंस्पेक्टर कुलकर्णी भी बाहर निकल आए।

मेजर बलवंत के इशारे पर लाशों की निगरानी करने वाले कांस्टेबल ने चारों लाशों के चेहरों पर से चादरें हटा दीं।

मैकेनिक लक्ष्मण ने एक-एक कर चारों लाशों को बड़े ध्यान से देखा और फिर एक लाश की ओर इशारा करके बोला, “मेजर साहब! मैं सिर्फ इस लाश को पहचानता हूं। यह लाश वासुदेवन के उसी दोस्त की है, जो अकसर उससे मिलने के लिए आता रहता था और फिर जिस दिन आप राजभवन पहुंचे उसी दिन यह आदमी वासुदेवन को बुलाकर ले गया था। तब से वासुदेवन अभी तक लौटा नहीं है।”

मेजर बलवंत उस लाश को बड़े ध्यान से देखने लगा। तभी मोटरसाइकिल के आने की आवाज सुनाई दी। वह मोटरसाइकिल सार्जेंट डिमेलो की थी, जिसकी पिछली सीट पर टी-स्टाल का बिहारी मालिक बैठा हुआ था।

इतने करीब से एक साथ चार लाशों को देखकर टी-स्टाल का मालिक बिहारी नौजवान भयभीत होकर कांप उठा। उसका चेहरा पीला पड़ गया। आंखें भय से फटी रह गईं। उसका सारा

बदन भय से थर-थर कांप उठा था।

“तुम इनमें से किसी को पहचानते हो भैया?” मेजर बलवंत ने बिहारी नौजवान के कंधे पर हाथ रखकर पूछा।

टी-स्टाल के मालिक बिहारी नौजवान ने मेज पर पड़ी चारों लाशों के उघड़े हुए चेहरों को ध्यान से देखा और फिर उस लाश की ओर उंगली उठाई, जिसकी शिनाख्त लक्ष्मण ने की थी।

“साहब! यह लाश डिलाइट गैरेज के मालिक की है, जिसे सब लोग साई कहकर पुकारा करते थे।” बिहारी नौजवान ने कहा और फिर बाकी तीनों लाशों की ओर इशारा करके बोला, “ये तीनों आदमी भी इसी के साथ गैरेज में रहा करते थे; लेकिन मालिक इन्हें किसने मारा है?...क्यों मारा है?”

“ये चारों बहुत बड़े बदमाश थे और अपराधियों के एक बहुत बड़े गिरोह के सदस्य थे,” मेजर बलवंत ने कहा, “इन लोगों को इन्हीं के गिरोह की एक औरत ने गोली से उड़ा दिया।”

“क्यों—?” बिहारी नौजवान चौंककर बोल उठा।

“ये लोग उस आदमी को ठिकाने नहीं लगा सके जिसे इनके गिरोह की सरदार ठिकाने लगवा देना चाहती थीं।” मेजर बलवंत ने कहा।

असफल आक्रमण

मेजर बलवंत पुलिस की जीप में अपने बंगले में पहुंचा।

“सोनिया! मैंने तो राजीव से फोन कराया था कि तुम संजीव और डेजी के साथ मुझे शाम को ठीक छः बजे पालघर स्टेशन पर मिलना। फिर तुम यहां क्यों चली आई!” मेजर बलवंत ने पूछा।

“दरअसल जिस समय राजीव से मैं फोन पर बात कर रही थी रिसीवर पर मुझे किसी की दबी-दबी-सी कराहने की आवाज सुनाई दी थी। वह आवाज किसी औरत की थी। लगा था जैसे वह औरत बहुत ही तकलीफ में हो और दर्द से तड़पती हुई

कराह रही थी। कराहने की उस आवाज को सुनकर मैं समझ गई थी कि हमारे फोन को बीच में कोई सुन रहा है, इसलिए मैंने राजीव को चुप कर दिया था। मैं नहीं चाहती थी कि बीच में से फोन सुनने वाले को हमारे प्रोग्राम के बारे में पता चले। मैंने अपने साथियों से कहा कि सुधीर और डोरा तो सोनपुर में पुरानी हवेली में रहकर दीवान यशवन्त पाटिल की देखभाल कर और संजीव, डेजी को लेकर रोडवेज की बस से मेरे रवाना होने के बाद ही बम्बई के लिए चल पड़े। मैं कल्याणी को लेकर चली आई। संजीव और डेजी भी थोड़ी देर में यहां पहुंचने वाले होंगे।" सोनिया ने बताया।

मेजर बलवंत कुछ कहने ही वाला था कि तभी दिलबहादुर के साथ बीस-इक्कीस वर्ष की एक युवती ने ड्राइंगरूम में प्रवेश किया। उसके बदन पर खादी का सफेद ब्लाउज और खादी की सफेद साड़ी थी। उसके खुले हुए लम्बे घने काले बाल उसकी पीठ पर बिखरे हुए थे। सौन्दर्य की उस साकार और सजीव मूर्ति के चेहरे पर उदासी के साथ-साथ एक दृढ़ संकल्प की छाया भी थी।

मेजर बलवंत उस युवती को देखते ही चौंक पड़ा। उसे उसका चेहरा जाना पहचाना-सा दिखाई दे रहा था।

"मैंने आपको कहीं देखा है।" युवती के अभिवादन का उत्तर देने के बाद मेजर बलवंत ने धीमी आवाज में कहा, "आप...!"

"मैं एस.पी. राजसिंह चौहान की बेटी और शहीद हो गए इंस्पेक्टर जयसिंह सोलंकी की पत्नी रमा हूं मेजर साहब!" युवती ने गम्भीर और उदास, लेकिन दृढ़ता भरे स्वर में कहा, "पिताजी ने बताया कि आप ही जय की शहादत की घटना की छानबीन करेंगे, इसलिए मैं आपके पास आई हूं। मैंने प्रतिज्ञा की है कि जिस व्यक्ति ने मेरी मांग का सिन्दूर पोंछ डाला है, मैं स्वयं उससे अपने पति की मृत्यु का बदला लूंगी। जब तक मैं अपनी आंखों से उसकी लहलुहान लाश न देख लूंगी मेरे मन

को शान्ति नहीं मिलेगी। मैं चाहती हूं कि आप इस अभियान में मुझे भी हिस्सा लेने का मौका दें?"

"रमा बहन! तुम्हें इतना परेशान होने की जरूरत नहीं है।" मेजर बलवंत ने दृढ़ता भरे स्वर में कहा।

"विश्वास कीजिए, मैं आपके लिए बोज़ नहीं बनूंगी, बल्कि मेरे रहने से आपको सुविधा हो जाएगी।" रमा ने आग्रह भरे स्वर में कहा, "मेजर साहब! अगर जय की उम्र में आज का दिन और बढ़ जाता तो आपको अपराधियों को खोजने तक का कष्ट न उठाना पड़ता। जय को भी जासूसी का पागलपन की सीमा तक शौक था। पुलिस की रिपोर्टों के अनुसार भले ही महानगर बम्बई और उसके आसपास के इलाके में घटनाओं का आरम्भ आठ-दस दिन पहले हुआ हो, लेकिन जय का कहना था कि इन घटनाओं का आरम्भ उस दिन हुआ था, जिस दिन सोनपुर की पुरानी हवेली के दीवान यशवन्त पाटिल की बेटी चन्दा की हत्या करने के बाद उसकी लाश हवेली के सामने वाली झील में डाल दी गई थी।"

"जयसिंह को इस घटना के बारे में कैसे पता चला?" मेजर बलवंत ने आश्चर्य और उत्सुकता भरे स्वर में पूछा।

"उन दिनों सोनपुर पुलिस स्टेशन के इंचार्ज इंस्पेक्टर विश्वजीत अपने विवाह के सिलसिले में लम्बी छुट्टी पर थे। हेडक्वार्टर ने जय को उनके स्थान पर भेज दिया था। लेकिन जैसे ही जय अपराधियों की वास्तविकता को जान पाए कि इंस्पेक्टर विश्वजीत की छुट्टियां समाप्त हो गईं और उन्हें वापस बम्बई लौट आना पड़ा था। अगर वह एक सप्ताह सोनपुर में और रह जाते तो चन्दा के हत्यारों के साथ-साथ उन अपराधियों को भी खत्म कर देते, जो केवल बम्बई ही नहीं पूरे देश को ही तबाह और बर्बाद करने की योजना बना चुके हैं। हमारे कुछ दुश्मन देशों की उन्हें भरपूर सहायता मिल रही है।" रमा ने दृढ़ता और उत्तेजना भरे स्वर में कहा, "सोनपुर से लौटने के बाद जय ने बिना किसी को बताए इन अपराधियों को खत्म कर डालने की

योजना बना ली थी। समुद्र तट पर छापे का वह अभियान भी जय की उसी योजना का एक अंश था।”

तभी कल्याणी कॉफी ले आई। वह कॉफी पीते हुए रमा के साथ लगभग आधे घंटे तक बातें करता रहा, फिर दृढ़ता, संकल्प और स्नेह भरे स्वर में बोला, “रमा! तुम्हारे पिताजी के साथ मेरे वर्षों पुराने सम्बन्ध हैं, लेकिन तुमसे मेरा अनुरोध है कि कानून को अपने हाथों में मत लो। मुझे अपना काम करने दो। तुम घर में ही रहकर मेरी सहायता कर सकती हो। जिस तरह तुमने मुझे आज ढेर सारी जानकारियां दी हैं। तुम्हारी दी हुई जानकारी पर मैं अपराधियों को आज भी गिरफ्तार करके हवालात में ठूस सकता हूं, लेकिन मैं उन्हें प्रमाणों और ठोस प्रमाणों के साथ गिरफ्तार करना चाहता हूं। उन्हें रंगे हाथ गिरफ्तार करना चाहता हूं। अगर मैंने जल्दबाजी से काम लिया और अपराधियों के इस गिरोह के सरदार को गिरफ्तार कर लिया तो शेष सभी अपराधी भाग जाएंगे। अगर वे अपराधी हमारे शिकंजे से निकल गए तो हम यह जानने से वंचित रह जाएंगे कि वे राष्ट्र कौन-कौन से हैं, जो आर्थिक संकट पैदा करके हमारे देश के टुकड़े-टुकड़े कर देना चाहते हैं।”

सोनिया रमा को लेकर किचन में चली गई तो मेजर बलवंत ड्राइंगरूम से निकल कर अपने ऑफिस में आ बैठा और अपनी डायरी में जल्दी-जल्दी कुछ लिखने के बाद उसने दीवान यशवंत पाटिल की दी हुई डायरी निकाल ली और उसे जल्दी-जल्दी पढ़ने लगा।

उस डायरी को पूरा पढ़ते ही मेजर बलवंत का सिर चकराया। सच क्या है और झूठ क्या है, वह निर्णय नहीं कर पाया। उसने दोनों डायरियां उठाकर अलमारी में बन्द कर दीं और उठकर डाइनिंग रूम में चला। उसने देखा संजीव और डेजी भी सोनिया, कल्याणी, रमा और राजीव के साथ डाइनिंग रूम में बैठे उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

“आइए मेजर साहब,” अमित ने आगे बढ़कर मेजर बलवंत

और उसके साथियों का स्वागत करते हुए कहा, “हम लोग तो सुबह से आपका इन्तजार कर रहे थे।”

मेजर बलवंत ने एक खाली कुर्सी पर बैठते हुए कहा, “कल रात सोनपुर के इलाके में एक बहुत ही भयानक घटना हुई है।”

“सोनपुर के इलाके में?” अमित ने हैरानी से पूछा, “लेकिन अभी थोड़ी देर पहले ही नरेन्द्र राव का फोन आया था। उसने तो कुछ बताया नहीं। सिवा इसके कि दीवानजी पर पिछली रात फिर किसी ने आक्रमण किया। वह तो बच गए लेकिन गोली बूढ़े दरबान जगतसिंह के कंधे को छेदकर निकल गई। उसे पालघर के सरकारी अस्पताल में भर्ती करा दिया गया है।”

“क्या सोनपुर में अस्पताल नहीं है?” मेजर बलवंत ने हैरानी से पूछा।

“सोनपुर में तो बहुत पुराना और बहुत बड़ा अस्पताल है।”

अमित की बात सुनकर मेजर बलवंत सोच में पड़ गया। फिर जल्दी से बोला, “मिस्टर अमित, आप अपनी मां अनुराधाजी और इस बंगले में काम करने वाले नौकर-नौकरानियों को लेकर इसी समय सोनपुर चले जाइए। वहां सुधीर और डोरा हैं। मैं आपको एक पत्र दे रहा हूं इसे सुधीर को दे दीजिएगा। मैं पालघर जा रहा हूं जगतसिंह की सुरक्षा की व्यवस्था मैं खुद कर दूंगा। अब आप लोग जल्दी से तैयार हो जाइए और जितनी जल्दी हो सके यहां से चल पड़िए।”

□□

मेजर के साथ सोनिया और रमा थीं। उसने स्कॉरपियन को भी अपने साथ ले लिया था। वे तीनों इस समय ठेठ गुजरात के रहने वाले दिखाई दे रहे थे।

जिस समय मेजर बलवंत अमृता के बंगले के गेट के ताले बन्द कर रहा था बराबर वाले बंगले की पहली मंजिल की एक खिड़की से झांकती हुई दो जोड़ी आंखें उसी पर टिकी हुई थीं। वे दो जोड़ी आंखें राजीव और कल्याणी की थीं।

मेजर बलवंत की धूल और कीचड़ से अटी कार सेठ रतनचंद कापड़िया के बंगले के पोर्टिको में पहुंचकर रुकी तो शाम का सूरज छिपने की तैयारी कर चुका था।

मेजर बलवंत की कार को पोर्टिको में रुकते देख डॉली और मुनीम रणछोड़दास चौंककर उस कार की ओर देखने लगे।

जैसे ही कार से मेजर बलवंत, सोनिया और रमा उतरे डॉली दौड़ती हुई सीढ़ियों से उतरी और मेजर बलवंत से लिपटकर जोर-जोर से रोने लगी।

उसके रोने की आवाज सुनकर बंगले में काम करते हुए नौकर-नौकरानियां काम छोड़कर पोर्टिको में आ गए। डॉली को रोते देख सोनिया और रमा की ही नहीं नौकरानियों की आंखें भी गीली हो उठी थीं, “साहस से काम लो बेटी।” सोनिया ने आगे बढ़कर डॉली को अपने सीने से लगा लिया।

“हां बेटी! तुम यह समझ लो कि तुम्हारे ताऊ रतनचंद की हत्या नहीं हुई। हत्या हुई है तुम्हारे काका धरमचंद की।” मेजर बलवंत ने डॉली के सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए भरे गले से कहा, “जब तक मैं जिन्दा हूं तुम्हें किसी भी तरह की चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। अब मैं तुम्हें अकेले यहां नहीं रहने दूंगा। तुम्हें राजकोट ले चलूंगा। वहीं अपनी काकी के पास रहना। हम लोग एक पल के लिए भी तुम्हें रतनचंद की कमी महसूस नहीं होने देंगे।”

“ऐसा ही कीजिए सेठजी। बिटिया अकेली रहती हैं। जो रिश्तेदार आते हैं वे इन्हें जिंदा ही निगल जाना चाहते हैं ताकि सेठजी की दौलत उन्हें मिल जाए।” बूढ़े मुनीम रणछोड़दास ने कहा, “अब तो उन लोगों ने इस बंगले को भूत बंगला कहना शुरू कर दिया है और वैसे ही उत्पात भी होने लगे हैं। आप जब जाएं बिटिया को अपने साथ लेते जाएं। मैंने आपके बारे में सेठजी के मुंह से बहुत कुछ सुन रखा है। सेठजी तो आपको अपना दोस्त नहीं छोटा भाई समझते हैं। यहां की आप चिन्ता

मत कीजिए। बस दो-चार दिन में ही सेठजी की सारी दौलत बिटिया के नाम ट्रांसफर हो जाएगी। मैं बराबर उसी दिन से कोशिश कर रहा हूं।”

“मुनीमजी! आपको तो इस घर में रहते हुए; मेरा खयाल है पचास साल तो बीत चुके होंगे। आपने रतन का बचपन भी देखा था और जवानी भी देखी थी। आपके खयाल से ऐसा कौन आदमी हो सकता है, जिसने रतन की जान ली।” मेजर बलवंत ने धीमे और गम्भीर स्वर में पूछा।

मुनीम रणछोड़दास काफी देर तक चुपचाप खड़े रहे, फिर जल्दी से बोले, “आप सफर से हारे-थके आ रहे हैं। अंदर चलकर चाय-पानी लीजिए। मैं रात को आठ-नौ बजे आऊंगा। तब आपको बताऊंगा कि सेठजी की हत्या की वजह क्या हो सकती है?”

मुनीम रणछोड़दास रात को आठ बजे आने का वायदा करके अपने घर चले गए।

लकिन आठ बजते ही आकाश पर इधर-उधर तैरते बादलों के टुकड़ों ने विकराल घटाओं का रूप ले लिया और मूसलाधार बारिश शुरू हो गई।

“बारिश बहुत तेज हो रही है। मुनीमजी शायद ही आ सकें।” डॉली ने ड्राइंगरूम की दीवार पर लगे क्लाक पर नजर डालते हुए कहा।

“मुझसे गलती हो गई। मुझे मुनीमजी से सब कुछ उसी समय पूछ लेना चाहिए था।” मेजर बलवंत ने सिगार का कश लेते हुए कहा, “न जाने क्यों मेरा मन कहता है कि मुनीमजी से शायद ही मुलाकात हो।”

“मेजर साहब! मुनीमजी को अगर कुछ हो गया तो मैं बे-मौत मारी जाऊंगी। ताऊजी के कारोबार और लेन-देन के बारे में उनके सिवा कोई कुछ नहीं जानता।” डॉली सहसा चिंतित हो उठी।

“उनका मकान यहां से नौ किलोमीटर ही तो है। चलो हम लोग कार से चलें।” मेजर बलवंत ने कहा।

मेजर बलवंत ने सोनिया और रमा को वहीं छोड़ दिया और डॉली के साथ कार में बैठकर केल्वे रोड की ओर चल दिया।

□□

मुनीमजी का फार्म केल्वे रोड स्टेशन से लगभग एक फर्लांग दूर था। रेलवे क्रासिंग पर पहुंचकर जब डॉली ने फार्म की ओर उंगली उठाई तो मेजर बलवंत ने देखा रेलवे क्रासिंग से फार्म तक एक पतली-सी सड़क बनी हुई थी, लेकिन उस पर रोशनी की कोई व्यवस्था नहीं थी। साथ ही फार्म और फार्म हाउस भी अंधेरे में डूबा हुआ था।

कुछ सोचकर मेजर बलवंत ने कार रेलवे क्रासिंग पर रहने वाले चौकीदार की गुमटी के पास रोककर उससे कहा, “हम लोग इस सामने वाले फार्म तक जा रहे हैं। अभी थोड़ी देर में ही लौट आएंगे। तुम जरा हमारी कार का ध्यान रखना।”

चौकीदार ने कहा, “अभी-अभी मुनीमजी के फार्म में एक कार और गई है। आप भी कार से ही चले जाइए। वैसे मुझे कोई ऐतराज नहीं। आप कार छोड़ जाइए। मैं देखता रहूंगा।”

“मुनीमजी के फार्म में जो कार गई है उसमें कौन था?” मेजर बलवंत ने जल्दी से कार से उतरते हुए पूछा।

“उसकी पिछली सीट पर सफेद साड़ी पहने हुए कोई औरत बैठी थी। और बस ड्राइवर था।” चौकीदार ने बताया, “ड्राइवर तो बहुत ही लम्बा-तडंगा और पहलवान जैसा हट्टा-कट्टा था।”

मेजर बलवंत ने कार का पिछला दरवाजा खोलकर डॉली से उतरने के लिए कहा और कार को बिना लॉक किए ही तेजी से फार्म की ओर चल दिया।

दोनों पांच मिनट में ही मुनीमजी के घर के पास पहुंच गए।

वे अभी मुनीमजी के घर के दरवाजे पर पहुंचे ही थे कि सहसा उन्हें ऐसी आवाज सुनाई दी, जैसे बारिश की तेज बूंदें कहीं पास ही किसी टीन की छत पर पड़ रही हों।

मेजर बलवंत ने मुड़कर आवाज की दिशा में देखा। अंधेरे में एक बहुत ही गहरा काला धब्बा-सा धीरे-धीरे बिना कोई आवाज किए दरवाजे की ओर बढ़ता चला आ रहा था।

मेजर बलवंत ने जल्दी से डॉली का हाथ पकड़ा और झपटकर पास ही बनी सीढ़ियों पर चढ़कर एक कमरे की छत पर पहुंच गया, जिसके ऊपर एक अध बने कमरे की अधूरी दीवार खड़ी थी।

उसने अपने दोनों रिवॉल्वर निकाल लिए और मकान के दरवाजे की ओर उनकी नालें झुकाकर अंधेरे में धीरे-धीरे दरवाजे की ओर बढ़ती हुई कार का इन्तजार करने लगा।

कार मकान के पास पहुंचते-पहुंचते बिना आवाज किए घूमी और एक छोटा-सा चक्कर काटकर फार्म के गेट की ओर रुख मोड़कर खड़ी हो गई।

मेजर बलवंत और डॉली ने चारों ओर छाए गहरे अंधेरे में कार से दो सायों को उतरकर मकान की ओर बढ़ते हुए देखा।

सहसा मेजर बलवंत ने मन-ही-मन कुछ निश्चय कर लिया। उसने सोचा कि अगर ये दोनों साए दरवाजे पर पहुंच गए और मुनीमजी ने दरवाजा खोल दिया, तो इन दोनों पर काबू पाना कठिन हो जाएगा। फायरिंग होने पर कोई गोली मुनीमजी या उनके घर के किसी व्यक्ति को भी लग सकती है।

इसलिए जैसे ही वे दोनों साए उसके रिवॉल्वरों की रेंज में आए उसने दोनों रिवॉल्वरों के ट्रिगर दबा दिए।

दो घुटी-घुटी-सी चीखें बारिश के शोर को चीरकर गूंज उठीं, फिर मेजर बलवंत ने उन दोनों सायों को जमीन पर गिरकर सड़क की ढलान पर लुढ़कते देखा उसने दोनों रिवॉल्वरों की नालें उस ओर उठाई और फिर ट्रिगर दबाता चला गया।

लेकिन इस बार एक भी चीख सुनाई नहीं दी।

मेजर बलवंत के दोनों रिवॉल्वरों के चेम्बर खाली हो चुके थे। वह उन्हें भरता हुआ अधबने कमरे से निकला और सीढ़ियों की ओर बढ़ने लगा।

दोबारा की गई फायरिंग में किसी की चीख न सुनकर मेजर बलवंत को विश्वास हो गया था कि उसकी धुआंधार फायरिंग ने उन दोनों का काम तमाम कर दिया, जबकि वह उन्हें केवल जखमी करके अपनी पकड़ में लेना चाहता था।

लेकिन जैसे ही वह सीढ़ियों से उतरकर नीचे पहुंचा बुरी तरह चौंक पड़ा। उसने देखा वह कार न जाने कब बिना कोई आवाज किए स्टार्ट हो गई थी और अब अंधेरे और मूसलाधार बारिश की परवाह किए बिना बहुत ही तेज स्पीड से गेट की ओर दौड़ी चली जा रही थी।

मेजर बलवंत ने जल्दी से अपनी जेबों से दोनों रिवॉल्वर निकाल लिए और उनकी नालें भागती हुई कार की ओर उठाकर फिर फायरिंग शुरू कर दी।

लेकिन कार उसके रिवॉल्वरों की रेंज से बाहर जा चुकी थी।

उसने ट्रेगर पर से उंगलियां हटा लीं और एक लम्बी सांस भरकर रुक गया। निराशा और असफलता से उसकी उदासी और अधिक बढ़ गई।

तभी दरवाजे के ऊपर लगा सौ वाट का बल्ब जल उठा।

चीखों और कार के भागने की आवाज सुनकर मुनीमजी और उनके दोनों लड़के दरवाजा खोलकर निकल आए।

“अरे, डॉली बेटी—!” बल्ब की रोशनी में दरवाजे के सामने खड़ी डॉली को पहचान कर मुनीमजी आश्चर्य से उछल पड़े और फिर झपटकर उसके पास पहुंच गए।

थोड़ी देर के बाद वे सब एक छोटे से ड्राइंगरूम में बैठे हुए थे।

कुछ देर के बाद डॉली गीले कपड़े बदलकर लौटी, तो उसके साथ मुनीमजी की पत्नी और दोनों बहुएं भी ड्राइंगरूम में आ गईं।

मेजर बलवंत ने उन्हें अपने आने का कारण बताने के बाद पूरी घटना सुना दी।

“सेठजी! आपका यह उपकार मैं और मेरे बेटे जिन्दगी-भर

नहीं भूलेंगे। आप अगर समय पर न पहुंच जाते तो इस समय यहां हम लोगों की लाशें पड़ी होतीं।” मुनीमजी ने कहा। उनकी आवाज बुरी तरह कांप रही थी।

“इसके लिए तो मुनीमजी! आप डॉली को धन्यवाद दीजिए। अगर यह मुझे पगडंडी के रास्ते लेकर यहां न आ जाती तो हम लांग मौके पर न पहुंच पाते।” मेजर बलवंत ने कहा।

“काका! अब जल्दी चलिए। वहां काकी और रमा हम लोगों की राह देख रही होंगी।” डॉली ने सहसा चिन्तित स्वर में कहा।

मेजर बलवंत कुछ देर तक चुपचाप बैठा कुछ सोचता रहा और फिर बोला, “मुनीमजी! आप मकान में ताला लगाइए और हमारे साथ चलिए। हो सकता है, वे दोनों अपने साथियों को लेकर दोबारा यहां चले आएंगे।”

मुनीमजी की पत्नी ने जल्दी-जल्दी कमरों के ताले बंद किए और फिर सब लोग मकान से बाहर निकल आए।

मेजर बलवंत कार की ड्राइविंग सीट पर जा बैठा। डॉली मुनीमजी की पत्नी और दोनों बहुओं के साथ पिछली सीट पर बैठ गई। मुनीमजी और उनके दोनों बेटे भी एक-दूसरे से सटकर अगली सीट पर बैठ गए।

थोड़ी देर बाद मेजर बलवंत की कार मूसलाधार बारिश की तेज बौछारों की घनी चादर को चीरती हुई पालघर की ओर दौड़ी चली जा रही थी।

मेजर बलवंत को मुनीमजी के फार्म तक जाने और वहां से लौटने में लगभग एक घंटा ही लगा था। इसलिए परेशान होने की कोई जरूरत नहीं, फिर भी सोनिया और रमा के चेहरे पर सोच की रेखाएं उभरी हुई थीं।

“क्या बात है तुम दोनों कुछ परेशान दिखाई दे रही हो?” मेजर बलवंत ने एक सोफे पर बैठते हुए पूछा।

“हम दोनों परेशान बिल्कुल नहीं हैं। हां, कुछ सोच जरूर रही हैं।” सोनिया ने कहा और फिर एक पल रुककर बोली,

“अभी एक मिनट पहले ही किसी औरत ने फोन किया था। मैंने फोन रिसीव किया, तो उसने समझा कि मैं डॉली बोल रही हूँ। मैंने भी उसे अपना नाम नहीं बताया और डॉली के नाते ही उसकी बात सुनती रही।”

“यह तो तुमने बहुत अच्छा किया।” मेजर बलवंत ने कहा, “अगर तुम अपना नाम बता देतीं तो हमारा सारा प्लान ही चौपट हो जाता। खैर, यह बताओ कि उस औरत ने फोन पर क्या कहा?”

“मेरा खयाल है, वह औरत अपनी आवाज बदलने की कोशिश करती हुई बोल रही थी, लेकिन आवाज बदल नहीं पा रही थी।” सोनिया ने बताया, “वह कह रही थी, डॉली! हमने पहले यह निश्चय किया था कि तुम्हें बख्श दिया जाए, क्योंकि तुमसे हमारी कोई दुश्मनी नहीं है, लेकिन तुमने मेजर बलवंत तक पहुंचकर अपनी मौत को खुद ही दावत दे डाली है। अगर तुम्हें जिंदगी प्यारी है तो मेजर बलवंत को फोन कर दो कि तुम्हें उसकी सहायता की कोई जरूरत नहीं है।”

मेजर बलवंत कुछ देर चुपचाप बैठा कुछ सोचता रहा, फिर मुनीम रणछोड़दास की ओर देखकर बोला, “मुनीमजी! शाम को आपने कहा था कि आपकी कई पीढ़ियों ने इस घर का नमक खाया है। आप अपनी जान दे सकते हैं, लेकिन ईमान नहीं दे सकते।”

“सेठजी! क्या आप मेरी वफादारी का इम्तहान लेना चाहते हैं?” मुनीमजी ने बड़ी विनम्रता से कहा।

“अगर ऐसी बात है, तो सुनिए!” मेजर बलवंत ने इतमीनान की सांस लेते हुए कहा, “मैं ही वह मेजर बलवंत हूँ, जिससे सहायता न लेने पर फोन करने वाली औरत ने जोर दिया है।”

“आप—? आप मेजर बलवंत हैं?”

“मुनीमजी! मैं नहीं चाहता कि दुश्मन को यह पता चल सके कि मैं इस बंगले में आ गया हूँ। इसीलिए हम लोगों को वेश बदलकर आना पड़ा।” मेजर बलवंत ने कहा और फिर

सहसा चौंककर उसने पूछा, “अरे हां, मुझे तो याद ही नहीं रहा। तुम्हारी मौसीजी कहां हैं? जिन्हें मेरे नाम तक से चिढ़ है।”

“मेजर साहब! जब मैं आपसे मिलकर यहां लौटी तो नौकरों ने बताया कि मौसी को किसी ने फोन किया था कि बंगले के सदर दरवाजे का ताला खुला पड़ा है। या तो आप जाते समय ताला बन्द करना भूल गई थीं या फिर किसी चोर ने खोला है। इस फोन को पाते ही वह यहां से चली गई।” डॉली ने बताया।

मेजर एक पल कुछ सोचता रहा; फिर मुस्कराते हुए बोला, “डॉली! मुझे उनकी इस बात को सुनकर कि उन्हें मेरे नाम तक से चिढ़ है, उन पर शक हो गया था; लेकिन उनके यहां से चले जाने से और फिर उस औरत के फोन से मेरा शक विश्वास में बदल गया है। क्योंकि तुम मुझसे मिलने गई हो इस बात को तुम्हारी उस तथाकथित मौसी के अलावा और कोई नहीं जानता था। वह औरत तुम्हारी मौसी नहीं थी। वह सेठजी के हत्यारे के गिरोह की ही सदस्या थी। मुझे तो ऐसा लग रहा है कि सोनिया ने जिस औरत का फोन रिसीव किया था वह तुम्हारी वही मौसी थी।”

वे सब लोग चुपचाप बैठे उस रहस्यपूर्ण स्त्री के बारे में सोच रहे थे कि तभी ड्राइंगरूम के एक कोने में मेज पर रखे टेलीफोन की घंटी बज उठी।

और जब सोनिया ने मेज के पास पहुंचकर रिसीवर उठा लिया, तो मेजर बलवंत भी उसके पास पहुंचा।

“हैलो—!” सोनिया ने डॉली की आवाज से मिलती-जुलती आवाज में कहा।

“मैंने अभी-अभी तुम्हें फोन किया था और तुम्हें हिदायत दी थी कि तुम मेजर बलवंत को फोन कर देना। क्या तुमने मेजर बलवंत को फोन कर दिया था?” दूसरी ओर से उस औरत ने पूछा। उसकी झल्लाहट और क्रोध भरी आवाज में हल्की-सी सख्ती भी शामिल हो गई थी।

“मैंने फोन किया तो था, लेकिन मेजर साहब के बंगले पर लगता है कोई है नहीं, क्योंकि देर तक घंटी बजते रहने के बाद भी किसी ने रिसीवर उठाया नहीं था।” सोनिया ने अपनी आवाज में और भी नमी लाते हुए उत्तर दिया।

“तुम झूठ बोल रही हो डॉली। मुझे अच्छी तरह मालूम है कि तुमने पिछले दो घंटे में किसी को फोन नहीं किया।” दूसरी ओर से उस औरत की और अधिक झल्लाहट भरी कठोर आवाज सुनाई दी।

“मेरा विश्वास करो मौसी—!” सोनिया ने मुसकराते हुए कहा।

“शटअप! मैं तुम्हारी मौसी नहीं हूँ।” वह स्त्री दहाड़ उठी।

“आपकी आवाज मेरी मौसी से एकदम मिलती-जुलती है। आज दोपहर को पता नहीं क्यों वह रूठकर बिना मुझसे मिले ही कहीं चली गई। अगर वह यहां होती तो मैं अभी आपसे उनकी बातचीत करा देती। आपको फौरन पता चल जाता कि आपकी आवाज उनकी आवाज से कितनी मिलती-जुलती है।” सोनिया ने हल्की-सी हंसी के साथ कहा। तभी दूसरी ओर से फोन डिस्कनेक्ट हो गया।

“तुमने मौसी को नाराज कर दिया सोनिया! अब तुम उनके स्वागत के लिए तैयार हो जाओ।” मेजर बलवंत ने मुसकराते हुए कहा, “यह भी हो सकता है कि तुम्हारी बदतमीजी की सजा देने के लिए वह खुद न आकर अपने किसी आदमी को भेज दें।”

मेजर बलवंत हंस रहा था, लेकिन डॉली परेशान हो उठी थी।

□□

राजीव और कल्याणी अंधेरा फैलते ही फादर जॉन के बंगले की पहली मंजिल की बालकनी के कोने पर आ बैठे थे, जहां से अमृता का पूरा बंगला और बंगले के पिछवाड़े सारी वह दीवार साफ-साफ दिखाई दे रही थी जिससे समुद्र की लहरें हर समय

टकराती रहती थीं।

रात के ग्यारह बज गए लेकिन उन्हें कहीं कोई असाधारण बात दिखाई नहीं दी। इतने घंटों चुपचाप बैठे रहने के कारण उनका बदन अलसाने लगा था। रह-रहकर वे जम्हाई देने लगते थे।

कल्याणी ने जल्दी से अपनी नोंद से बोझिल पलकें ऊपर उठाई और उस ओर देखने लगी जिस ओर राजीव ने उंगली उठाकर इशारा किया था।

आकाश पर घटाएं छाई होने के कारण चारों ओर गहसा अंधेरा छाया हुआ था। लेकिन समुद्र की लहरों पर तैरते वे चारों स्टीमर स्याह धब्बों की शकल में साफ दिखाई दे रहे थे।

कल्याणी ने होंठों पर उंगली रखकर चुप रहने का इशारा किया, क्योंकि वे चारों स्टीमर अमृता के बंगले की दीवार के करीब पहुंच चुके थे।

कुछ मिनटों के बाद चारों स्टीमर अमृता के बंगले की दीवार के पास पहुंच गए।

अगला स्टीमर धीरे-धीरे बढ़ता हुआ बंगले की दीवार से जा लगा।

उस स्टीमर में सवार किसी आदमी ने किसी छोटी-सी टार्च की रोशनी उस दीवार पर डाली और फिर धीमी, लेकिन स्पष्ट आवाज में बोला, “स्टीमर को लगभग ८: फुट दाईं ओर ले चलो।”

स्टीमर का बन्द इंजन एक बार फिर धीरे से स्टार्ट हुआ और फिर स्टीमर दाईं ओर कुछ दूर सरकने के बाद रुक गया।

कुछ देर के बाद ऐसी आवाज सुनाई दी, जैसे कोई हथौड़े से पत्थर पर चोट मार रहा हो, लेकिन हथौड़े की चोट की आवाज बहुत ही धीमी थी। उसकी अपेक्षा लहरों का शोर कहीं अधिक था।

राजीव और कल्याणी ने रेलिंग से झांककर यह देखने की कोशिश की कि अगले स्टीमर में सवार लोग क्या कर रहे हैं,

लेकि। स्टीमर की छत के कारण वे कुछ भी नहीं देख पाए।

लगभग आधे घंटे के बाद अगला स्टीमर फिर स्टार्ट हुआ और किनारे पर फेन उगलती लहरों को चीरता हुआ दीवार के सहारे-सहारे दाईं ओर को टहलता चला गया।

राजीव और कल्याणी आंखें फाड़े अंधेरे की स्याह चादर में लिपटे उन स्टीमरों की ओर टकटकी बांधे देखते रहे, लेकिन न तो वे कुछ देर देख पाए और न कुछ समझ ही सके।

वे चारों स्टीमर उस दीवार के करीब लगभग दो घंटे तक खड़े रहे और फिर जिस तरह आए थे उसी तरह बिना कोई आवाज किए चले गए।

थोड़ी दूर जाते ही चारों ओर छाए घटाटोप अंधेरे ने उन्हें अपने आप में छिपा लिया।

“ये स्टीमर इस दीवार तक क्यों आए थे?” सहसा कल्याणी ने दबी-दबी धीमी आवाज में जैसे अपने आप से प्रश्न किया।

“अब तुम आराम से सो जाओ कल्याणी। यह तो सुबह ही पता चल सकेगा कि वे चारों स्टीमर इस दीवार तक क्यों आए थे?” राजीव ने कहा और एक गहरी लम्बी जम्हाई लेकर वहीं चटाई पर लेट गया।

कल्याणी भी वहीं लेट गई।

थोड़ी देर के बाद ही उनके धीमे-धीमे खरटि गूंजने लगे थे।

मूर्ति का रहस्य

लगभग आधे घंटे के बाद वे दोनों फादर जॉन के बंगले से निकले तो उन दोनों के बदन पर नहाने की पोशाक थी और हाथों में हवा भरे दो-दो ट्यूब थे।

वे दोनों अमृता के बंगले से गुजरकर बंगले की बायीं ओर वाली उस ढलवां सड़क पर उतरने लगे जिसके निचले छोर को सागर की लहरें छू रही थीं।

लेकिन अभी वे आधी सड़क ही तय कर पाए थे कि सहसा उस ढलवां सड़क से टकराती सागर की लहरों से उड़ती हुई

अनगिनत जोरदार बूंदों के समूह ने उन्हें सिर से पांव तक तर कर दिया।

उनके बढ़ते हुए कदम ठिठककर रुक गए और आंखें आश्चर्य से फटी रह गईं। उस ढलवां सड़क के एक चौथाई भाग में समुद्र का पानी भरा हुआ था।

वे कुछ देर वहीं चुपचाप खड़े-खड़े कुछ सोचते रहे और फिर एक दूसरे का हाथ धामे हुए तेजी से चढ़ते हुए पानी की उस रेखा के करीब जा खड़े हुए।

वे अभी उन तूफानी लहरों के जोरदार थपेड़े के बारे में सोच ही रहे थे कि सहसा कल्याणी उछलकर खड़ी हो गई और राजीव का हाथ पकड़कर ऊपर की ओर भाग छूटी। इस बार लहरों की वह दीवार पहली से अधिक ऊंची और भयानक दिखाई दे रही थी। वे अभी चार कदम भी नहीं दौड़ पाए थे कि लहरों की दीवार उनसे इतनी जोर से आ टकराई कि वे मुंह के बल तारकोल की उस भीगी सड़क पर जा गिरे। उन दोनों के होंठों से एक दबी-दबी-सी चीख निकल गई। वे जल्दी से उठे और अपने-अपने माथे को सहलाने लगे।

“भयानक तूफान आने वाला है। समुद्र में जाकर अमृता के बंगले की पिछली दीवार की जांच पड़ताल कर पाना असम्भव है। लगभग आधी सड़क पानी में डूब चुकी है। लहरों ने किनारे पर बिखरी सारी गन्दगी लाकर यहां पटक दी है। समुद्र में जाने के बारे में सोचते ही मेरा जी मितलाने लगता है।” कल्याणी ने नाक सिकोड़ते हुए कहा।

“चलो वापस चलेंगे। नहा-धोकर इत्मीनान से सोचेंगे कि क्या करना चाहिए।” राजीव ने सड़क को चढ़ाई चढ़ते हुए कहा।

□□

“अच्छा हुआ तुम दोनों लौट आए। हम लोग तो बेहद परेशान हो उठे थे।” फादर जॉन ने उन्हें आते देखकर कहा, “लक्षण अच्छे दिखाई नहीं दे रहे। तूफान की शुरुआत हो चुकी

हैं। परमपिता! उन गरीब मछुआरों की रक्षा करना जो आधी रात को ही मछलियां पकड़ने के लिए अपनी छोटी-छोटी नावें लेकर समुद्र में चले गए थे।”

नहा-धोकर और कपड़े बदलकर राजीव और कल्याणी बंगले की ऊपरी मंजिल के कोने वाले कमरे में पहुंचे तो हवा भयानक रूप से तेज हो चुकी थी। आकाश का पीलापन गहरे स्याह रंग में बदल गया था। समुद्र की लहरें बंगलों की पिछली दीवारों से भयानक शोर करती हुई इस तरह टकरा रही थीं, जैसे उन्हें उखाड़कर फेंक देने के लिए पागल हो उठी हों।

खिड़कियां बंद करते-करते अचानक कल्याणी की नजरें अमृता के बंगले की ओर उठ गईं। वह बुरी तरह चौंक पड़ी।

“वह स्टेच्यू!” कल्याणी ने बंगले के बगीचे में बने संगमरमर के हौज में खड़े औरत के स्टेच्यू की ओर देखते हुए आश्चर्य भरे स्वर में कहा, “इस स्टेच्यू का मुंह पूरब के बजाय पश्चिम की ओर कैसे घूम गया?”

“क्या कह रही हो तुम?” राजीव जल्दी से खिड़की के पास आ गया और उस स्टेच्यू की ओर देखने लगा।

“चलो, चलकर देखें। स्टेच्यू का इस तरह अपने आप घूम जाना कोई साधारण बात नहीं है।” कल्याणी ने सोच में डूबे स्वर में कहा।

कुछ देर के बाद वे दोनों फादर जॉन के बंगले से निकले और अमृता के बंगले की ओर बढ़ने लगे। गेट पर पहुंचकर राजीव ने जेब से चाबियों का गुच्छा निकाला और ताला खोलकर कल्याणी के साथ अंदर चला गया। वे दोनों बंगले की ओर बढ़ने की कोशिश करने लगे तो तूफानी हवा के तेज थपेड़ों से उनकी सांसें कांपने लगीं। वे खड़े न रह सके और घुटने मोड़कर घास पर बैठ गए।

वे बड़ी कठिनाई से पन्द्रह-बीस मिनट में उस हौज के पास पहुंच गए, जिसके बीचोबीच संगमरमर की बनी मानवाकार नारी-मूर्ति खड़ी हुई थी, जिसके कंधे पर बने घड़े में से पानी

छलक-छलककर हौज में गिरता रहता था; लेकिन अब उस घड़े से पानी छलकना बंद हो गया था। इसलिए हौज में पानी की बूंद भी दिखाई नहीं दे रही थी। राजीव कुछ देर तक उस स्टेच्यू को देखता रहा और फिर हौज में उतर कर स्टेच्यू के पास जा खड़ा हुआ।

घड़ा स्टेच्यू के बायें कंधे पर रखा हुआ था। उसके बाएं पांव का पंजा संगमरमर के बने चबूतरे पर टिका हुआ था और एड़ी उठी हुई थी। इसलिए बायां घुटना थोड़ा-सा आगे की ओर निकला हुआ था।

कुछ देर तक राजीव संगमरमर की उस सुन्दर मूर्ति को देखता रहा, फिर उसने न जाने क्या सोचकर उस मूर्ति की टांगों को अपनी बांहों में जकड़ लिया और उस मूर्ति का मुंह सही दिशा में मोड़ने की कोशिश करने लगा।

राजीव और कल्याणी के आश्चर्य की सीमा नहीं रही। जैसे-जैसे राजीव उस मूर्ति को बांहों में जकड़े बायीं ओर घूमता जा रहा था, मूर्ति भी घूमती जा रही थी। तीन-चार चक्करों में ही मूर्ति का मुंह वास्तविक दिशा में मुड़ गया।

“मेरा खयाल है इस मूर्ति के पैरों के नीचे कोई पेच लगा हुआ है, जिसके सहारे यह मूर्ति खड़ी हुई है।” राजीव ने कहा।

“राजीव! अब इसे दायीं ओर घुमाओ।” अचानक कल्याणी ने कुछ सोचकर कहा राजीव ने मूर्ति की टांगों को फिर अपनी बांहों में जकड़ लिया और दायीं ओर घूमने लगा।

“अरे!” हल्की-सी सरसराहट सुनकर कल्याणी चौंक पड़ी और चौकोर हौज की उस दीवार की ओर देखने लगी, जिसमें जड़े पत्थर एक ओर को सरकते चले जा रहे थे। यह देखकर राजीव भी चौंककर रुक गया और उस झरोखे के पास आ खड़ा हुआ, जो पत्थरों के खिसक जाने पर बन गया था।

उस झरोखे के पीछे सुर्ख पत्थरों की सीढ़ियां बनी हुई थीं।

राजीव ने अपनी जेब से रिवॉल्वर और एक पेंसिल टार्च निकाल ली और टार्च की रोशनी सीढ़ियों पर डालता हुआ

सीढ़ियों से उतरने लगा। कल्याणी भी अपना रिवॉल्वर निकालकर उसके पीछे चल पड़ी।

लगभग सोलह सीढ़ियां उतरने के बाद उन्होंने देखा कि वे एक काफी लम्बे-चौड़े वर्गाकार हॉल में खड़े हुए थे। हॉल की दीवारों की लम्बाई-चौड़ाई तीस फीट से कम नहीं थी। हॉल की छतें और फर्श इतने साफ-सुथरे थे, जैसे उन्हें नियमित रूप से रोजाना साफ किया जाता हो।

राजीव और कल्याणी ने कान लगाकर सुनने की कोशिश की; लेकिन उन्हें बंगले की पिछली दीवार पर सिर पटकती लहरों का भयंकर शोर बिलकुल सुनाई नहीं दिया।

हॉल की दीवार में बने दरवाजे की ओर बढ़ने लगे। जिस पर लकड़ी के बहुत ही सुन्दर किवाड़ें चढ़ी हुई थीं, जिन पर पालिश की हुई थी। राजीव ने दरवाजे के किवाड़ों पर हथेली का दबाव डाला। दोनों किवाड़ें बिना कोई आवाज किए पीछे की ओर हटती चली गईं।

सामने एक काफी खुला हुआ कारीडोर; जिनके दोनों ओर तीन-तीन कमरे बने हुए थे। उन तीनों के दरवाजे पर वैसी ही लकड़ी के किवाड़ थे, लेकिन उनमें ताले नहीं लगे थे।

राजीव ने किवाड़ों को खोलकर देखा। सारे कमरे साफ-सुथरे थे। उन कमरों में मेजें, कुर्सियां और रैक तथा स्टील की अलमारियां इस तरह रखी थीं, जैसे वे ऑफिस हों।

राजीव ने स्टील की अलमारियों के हैंडिल पकड़कर घुमाने की कोशिश की; लेकिन उनमें ताले लगे हुए थे।

कमरों से निकलकर राजीव ने उनके दरवाजे पहले की तरह ही बंद कर दिए।

उन दोनों ने जैसे ही उस हॉल में कदम रखा वे आश्चर्य से उछल पड़े। उस हॉल के फर्श पर एक बहुत बड़ी ऑफसेट प्रिंटिंग मशीन रखी हुई थी। उसके पास कुछ छोटी-मोटी मशीनें और भी थीं, जिन्हें राजीव और कल्याणी पहचान नहीं पाए।

वहां रखे बड़े-बड़े सन्दूकों में दो बड़े-बड़े ताले लगे हुए

थे। राजीव ने अपनी जेब में से मास्टर-चाबी निकाली और चारों सन्दूकों के ताले खोल डाले।

राजीव और कल्याणी ने जैसे ही उन सन्दूकों के ढक्कन हटाये उनकी आंखें आश्चर्य से इस तरह फटी रह गईं जैसे वे बाहर निकल आएंगी। उन्होंने चारों बक्सों के ताले लगा दिए और हॉल की दीवारों को बड़े ध्यान से देखने लगे।

सहसा उनकी नजरें दीवार में लगी सुर्ख पत्थर की छः फीट ऊंची और छः फीट चौड़ी चौकोर सिल पर पड़ीं। उस सिल के चारों ओर सफेद पत्थरों से जड़ी तीन इंच चौड़ी और तीन इंच उभरी हुई एक पट्टी बनी हुई थी। वे दोनों सुर्ख पत्थर की उस चौड़ी सिल के पास जा खड़े हुए और बड़े ध्यान से उसे देखने लगे।

एक पत्थर को तराश कर बनाई हुई यह सिल शिल्पकला का बहुत सुन्दर नमूना था। उस पर छेनी हथौड़ी की सहायता से शेर के शिकार का बहुत ही सुन्दर दृश्य खुदा हुआ था। हाथी पर बने हौदे में राजसी वेशभूषा में बैठा एक युवक हाथी के माथे पर उछलते हुए शेर की ओर भाला फेंकता हुआ दिखाई दे रहा था। हाथी के पीछे चार सैनिकों की आकृतियां बड़ी कुशलता से उकेरी गई थीं।

उस दृश्य को देखते-देखते सहसा राजीव की नजर हाथी की आंख पर पड़ी। हाथी की वह आंख की पुतली काले पत्थर को तराश कर बनाई गई थी। यों तो यह आंख बिलकुल असली आंख जैसी दिखाई दे रही थी, लेकिन उसका साइज हाथी के आकार की तुलना में बहुत बड़ा था।

राजीव और कल्याणी कुछ देर तक हाथी की उस आंख को हैरानी भरी नजरों से देखते रहे फिर न जाने क्या सोचकर राजीव ने आंख की काली पुतली पर दायें हाथ का अंगूठा टिका दिया और उसे अन्दर की ओर दबाने लगा।

और फिर वे आश्चर्य से एक-दूसरे की ओर देखते रह गए। पत्थर की वह सिल किसी दरवाजे के पट की तरह दायीं ओर

दीवार के अन्दर धंसती चली जा रही थी।

उस सिल के थोड़ा-सा खिसकते ही सारा हॉल समुद्र की तूफानी लहरों की भयानक दहाड़ों और पानी की बौछारों से भर गया।

राजीव ने जल्दी से उस पुतली पर से अंगूठा हटा लिया। सरकती हुई सिल जहां थी वहीं रुक गई।

“सारा मामला गड़बड़ हो गया।” राजीव ने चिन्तित स्वर में कहा।

“राजीव! शेर की ओर आते हुए भाले के इस फल की ओर देखो। इस फल पर ऐसा निशान दिखाई दे रहा है। जैसे इसके ऊपर हाथों का दबाव पड़ता रहा हो।” कल्याणी ने कहा।

राजीव ने भाले के फल पर अंगूठे का दबाव डाला।

सिल बायीं ओर खिसकने लगी और फिर अपने स्थान पर पहुंच कर रुक गई।

“कल्याणी! अब यहां से चलो। हमें अपनी इस नई खोज की सूचना मेजर साहब को फौरन दे देनी चाहिए।” राजीव ने कहा और कार की ओर कारीडोर की ओर मुड़ गया।

जिस रात दीवान जी पर आक्रमण हुआ था उसने सारी हवेली छान मारी थी। वर्षों से बन्द पड़े एक-एक कमरे को खुलवाकर देखा था। हवेली की दीवारों और फर्श को ठोक-ठोककर जांच की थी, लेकिन उसे कहीं कोई ऐसा स्थान नहीं मिला था, जहां से कोई अंदर आ सकता या फरार हो पाता।

उस रात उसने सोचा कि दीवान यशवन्त पाटिल पर किसी बाहरी आदमी ने आक्रमण नहीं किया। बल्कि खुद दीवान जी ने ही गोलियां दीवार और पलंग पर चलाकर आक्रमण का नाटक किया है, क्योंकि हवेली के अन्दर किसी बाहरी आदमी के आने-जाने का प्रश्न ही नहीं उठता था।

लेकिन दीवान यशवन्त पाटिल की गुमशुदगी ने उसे अपनी पहली धारणा को बदलने पर मजबूर कर दिया। विश्वास हो गया कि हवेली के अन्दर कोई-न-कोई ऐसा रास्ता जरूर है,

जिसके द्वारा हवेली के अन्दर आया-जाया जा सकता है।

लेकिन कहां है वह रास्ता?

सहसा उसे कोई बात याद आ गई उसने अमित की ओर देखते हुए पूछा, “सुधीर और डोरा कहां गए?”

“वह तो कल मेरे यहां पहुंचने से कुछ मिनट पहले ही बम्बई चले गए थे। आपने फोन करके उन्हें फौरन बुलाया था न?” अमित ने उत्तर दिया।

मेजर बलवंत आश्चर्य से अमित के चेहरे को देखने लगा, “आपको किसने बताया कि मैंने कल सुधीर और डोरा को फोन किया था और उन्हें अपने पास बुलाया? आपको तो मालूम ही है कि कल दोपहर के बाद तो मैं आप लोगों के पास अमृता के बंगले में था और फिर आप लोगों को वहां से भेजने के बाद पालघर चला गया था।”

“दीवानजी ने ही हमें बताया था कि उनके सामने ही आपका फोन आया था। और आपका फोन पाते ही सुधीर और डोरा अपनी कार लेकर यहां से बम्बई रवाना हो गए थे।” अमित ने उत्तर दिया। और अपनी कलाई पर बंधी घड़ी की ओर देखते हुए उन्होंने यह भी बताया था कि हमारे हवेली में पहुंचने से पांच मिनट पहले ही उनकी कार हवेली के फाटक से निकली थी।

“अगर वे दोनों आप लोगों के यहां पहुंचने से केवल पांच मिनट पहले रवाना हुए थे तो उनकी कार नदी के पुल तक या पुल के पार आपको और संजीव तथा डेजी को जरूर दिखाई दे जानी चाहिए थी। सोनपुर से लेकर पालघर तक सड़क पर इतना ट्रैफिक नहीं होता कि सामने से आती हुई सुधीर की कार आपको या संजीव को दिखाई न देती। या फिर सुधीर और डोरा की नजरों से आपकी कार छिपी रह जाती। जबकि तीनों ही कारों को आप, सुधीर, डोरा, संजीव और डेजी अच्छी तरह पहचानते हैं।”

सहसा मेजर बलवंत कुछ सोचकर ड्राइंगरूम से निकला

और दीवानखाने से निकलकर फाटक की ओर चल दिया। अमित और शरद भी उठकर उसके पीछे-पीछे चले आए थे।

“कल शाम को जब अमित बाबू बम्बई से लौटे थे फाटक पर किस किसकी ड्यूटी थी?” मेजर बलवंत ने फाटक पर खड़े दोनों दरबानों से पूछा।

“हम दोनों ही ड्यूटी पर थे सरकार!” दोनों दरबानों ने बड़ी विनम्रता से उत्तर दिया, “इस पखवाड़े सुबह के छः बजे से शाम के छः बजे तक हम दोनों की ही ड्यूटी रहेगी।”

“सुधीर की कार तुम लोगों के सामने फाटक से निकली थी?” मेजर बलवंत ने पूछा।

“जी हां, हम लोगों के सामने ही गई थी सरकार। उनकी कार के जाने के बाद हमने दोबारा फाटक बंद किया ही था कि तीन-चार मिनट के बाद ही मालिक की कार आ गई थी।” दोनों दरबानों ने एक साथ उत्तर दिया।

मेजर बलवंत सोच में पड़ गया। अगर दरबानों की बात सच थी तो नदी के पुल पर अमित और संजीव को सुधीर की कार जरूर मिल जानी चाहिए थी; लेकिन उन्हें तो पालघर से लेकर हवेली तक सुधीर की कार कहीं दिखाई नहीं दी, फिर नदी के पुल और हवेली के बीच वह कार कहां गुम हो गई?

अचानक मेजर बलवंत घूमा और तेजी से चलता हुआ दीवानखाने की पहली मंजिल के उस कमरे में चला गया जिसमें सुधीर और डोरा ठहरे हुए थे।

उसने कपड़ों की अलमारी खोली। सुधीर और डोरा के पहने हुए कपड़ों की एक गठरी अलमारी के निचले हिस्से में पड़ी हुई थी। उसने गठरी खोलकर उसमें से सुधीर और डोरा के पहने हुए दो कपड़े निकाल लिए और स्कॉरपियन को लेकर अपनी कार में आ बैठा। उसने अमित और शरद को भी अपने साथ ले लिया।

दो-तीन मिनट के बाद ही उसकी कार भुतहा बरगद की ओर मुड़ने वाली सड़क के मोड़ पर पहुंचकर रुक गई। उसने

स्कॉरपियन को कार से उतार लिया। उसने सुधीर की शर्ट स्कॉरपियन की नाक के सामने रख दी। स्कॉरपियन कुछ देर तक शर्ट को सूंघता रहा और फिर हवा में इधर-उधर सूंघने लगा, लेकिन वह दो-तीन चक्कर लगाकर फिर मेजर बलवंत के पास आ खड़ा हुआ।

मेजर बलवंत ने सुधीर और डोरा के कपड़े एक हाथ में ले लिए और दूसरे हाथ से स्कॉरपियन की जंजीर पकड़े हुए भुतहा बरगद के नीचे आ गया। उसने एक बार फिर सुधीर और डोरा के कपड़ों को स्कॉरपियन की नाक के सामने रख दिया। स्कॉरपियन कुछ देर तक उन कपड़ों को सूंघता रहा और फिर हवा में मुंह उठाकर सूंघता हुआ बरगद के तने के पास जा खड़ा हुआ। उसने बरगद के विशाल तने के दो-तीन चक्कर लगाए। बरगद के तने का घेरा चारों ओर से बीस फुट से कम नहीं था। कुछ देर तक स्कॉरपियन गुर्राता हुआ बरगद के तने के चारों ओर घूमता रहा और फिर तने पर अगले पंजे टिकाकर ऊपर ही ऊपर मुंह उठाकर जोर-जोर से भौंकने लगा।

मेजर बलवंत कुछ देर चुपचाप खड़ा बरगद के तने के ऊपरी भाग को ओर देखता रहा जहां से कई मोटी-मोटी शाखाएं निकलकर चारों ओर फैली हुई थीं। उन शाखों से निकलने वाली जटाएं नीचे आकर जमीन के अन्दर तक धंसती चली गई थीं, जिनके कारण बीस फीट के घेरे में फैले तने के चारों ओर जटाओं की एक डेढ़ फुट मोटी दीवार खड़ी हो गई थी। जटाओं की बनी वह दीवार इतनी मोटी और घनी थी कि उसने बरगद के सारे तने को अपने आपमें छिपा लिया था।

मेजर बलवंत जटाओं की उस दीवार से निकलकर बाहर आ गया और घुटने मोड़कर जमीन पर बैठ गया। वह जमीन पर कदमों के निशान तलाश करने लगा।

वह काफी देर तक जमीन पर कदमों के निशान खोजता रहा लेकिन उसे कदमों के निशान दिखाई नहीं दिए। कुछ देर के बाद वह उठ खड़ा हुआ। उसने स्कॉरपियन के गले में बंधा पट्टा

पकड़ा और मोड़ पर खड़ी कार की ओर चल दिया।

दुश्मन के अड्डे पर

मेजर बलवंत और उसके साथी पूरी तरह लैस थे। उन्होंने अमित और शरद को भी बुलेटप्रूफ जाकटें दे दी थीं। उन दोनों के पास अपनी-अपनी शक्तिशाली पिस्तौलें थीं।

वे सब दबे पांव हथेलियों और अन्य इमारतों की दीवारों की आड़ लेते हुए राव परिवार की कुल देवी अम्बा भवानी के मंदिर की ओर बढ़े चले जा रहे थे, जो हवेली के दक्षिणी परकोटे के सहारे बुर्ज के पास ही बना हुआ था।

जब अम्बा भवानी का मंदिर लगभग पचास कदम दूर रह गया, तो मेजर बलवंत ने रुककर अपने साथियों को कुछ जरूरी हिदायतें दीं और तेजी से मंदिर के दरवाजे की ओर बढ़ गया, उसके साथी बुर्ज के पास जा खड़े हुए।

आज कुलदेवी के मंदिर में गहरा अंधेरा छाया हुआ था। चार शताब्दियों से निरन्तर जलते रहने वाला दीपक आज बुझा हुआ था। मेजर बलवंत के होंठों पर एक अर्थ भरी मुसकान दौड़ गई।

उसने जेब से पेंसिल टार्च और लाइट निकाल लिया। पेंसिल टार्च की रोशनी में दीपक ढूंढ़ कर उसने लाइट से जला दिया। मंदिर का गर्भ गृह दीपक के पवित्र प्रकाश से जगमगा उठा।

संगमरमर की जाली के नीचे कुलदेवी की मूर्ति के ठीक पीछे एक वेदी बनी हुई थी। संगमरमर की बनी उस वेदी के चारों ओर तांबे के चार मोटे-मोटे कड़े लगे हुए थे। मेजर बलवंत ने दो कड़ों को कसकर पकड़ लिया और उस वेदी को दाईं ओर से बाईं ओर को घुमाने लगा।

कुछ देर तक जोर लगाने से वेदी टस से मस नहीं हुई; लेकिन फिर इस तरह घूमती चली गई जैसे उसके नीचे चूड़ियां बनी हों। थोड़ी देर में ही वेदी पत्थर से अलग हो गई।

मेजर बलवंत ने वेदी के हट जाने पर बन जाने वाले गड्ढे की

ओर देखा; एक बालिशत गहरे गड्ढे में उसे लोहे का एक मोटा कड़ा दिखाई दिया। वह वेदी की तरह ही उस कड़े को पकड़कर दाईं ओर से बाईं ओर को घुमाने लगा।

दूसरे ही पल उसके साथी आश्चर्य से बुर्ज की दीवार की ओर देखते रह गए। बुर्ज की एक दीवार एक स्थान पर दीवार के अन्दर सरकती चली गई थी और वहां एक दरवाजा निकल आया था। सामने एक गोल कमरा था और उसमें से पत्थरों की सीढ़ियां नीचे की ओर जा रही थीं।

वे सब तेजी से उन सीढ़ियों पर उतरने लगे। वे सीढ़ियां एक बड़े से वर्गाकार हॉल में पहुंचकर समाप्त हो गई थीं।

उस हॉल पर नजर डालते हुए मेजर बलवंत अपने साथियों के साथ दूसरे दरवाजे से बाहर निकला तो एक खुले हुए कारीडोर में पहुंचते ही उसके कानों से किसी के धीरे-धीरे कराहने की आवाज सुनाई दी।

मेजर बलवंत ने कमरों को खोलकर देखा। तीन कमरे तो बेडरूम जैसे दिखाई दे रहे थे। तीनों कमरों में डबल बेड थे, जिन पर बहुत ही सुन्दर और आरामदेह बिस्तर बिछे थे। स्टील की एक-एक अलमारी वाडरोब और एक-एक सोफा सैट था।

मेजर बलवंत ने उन बेडरूमों की तलाशी लेने का काम स्थगित कर दिया और उस कमरे के दरवाजे पर पहुंच गया, जिसमें से किसी के कराहने की आवाजें आ रही थीं।

उसने कमरे के दरवाजे का हैंडिल घुमाकर दरवाजा खोला और फिर उसकी नजर जैसे ही कमरे की एक दीवार के सहारे पड़े डबलबेड पर पड़ी वह चौंक पड़ा।

उस डबल बेड पर दो लड़कियां बैठी हुई थीं। उनके हाथ लोहे की पतली लेकिन मजबूत जंजीर के साथ दीवार में जड़े लोहे के एक कड़े से बंधे हुए थे। दोनों पैरों को टेप से जंकड़ दिया गया था और मुंह पर टेप की चौड़ी-सी पट्टी चिपका दी गई थी। उनके कराहने की आवाजें उनकी नाक से निकल रही थीं।

तभी एक लड़की को डबडबाई आंखों से अपनी ओर देखते पाकर अमित तेजी से आगे बढ़ा था। उसके मुंह से कांपती हुई आवाज निकली, “अमृता—!”

सहसा मेजर बलवंत का चेहरा खुशी से चमक उठा। उसके होंठ गोल हो गए और वह जोर-जोर से सीटी बजाते हुए उस लड़की के पास आ खड़ा हुआ। उसने उस लड़की का सिर अपने सीने से सटाकर उसके मुंह पर चिपकी टेप की पट्टी को हटा दिया।

“यह तो अन्ना फ्रेन्कलिन है।” सोनिया ने टेप की पट्टी मुंह पर से हटते ही उस लड़की को पहचान लिया।

“हां, अन्ना फ्रेन्कलिन इसका दूसरा नाम है; लेकिन इसका असली नाम अपर्णा है।” मेजर बलवंत ने कहा, “अमृता की खोई हुई जुड़वां बहन अपर्णा।”

अपर्णा ने अटक-अटककर अपने अपहरण की कहानी सुनाने के लिए कहा, “जिस आदमी ने मेरा अपहरण किया था, वह आज दिन में कुछ कागजों पर मेरे दस्तखत करवाकर ले गया था। उसने भी अपर्णा के ही नाम से मेरे दस्तखत कराए थे। लेकिन उसने मुझे यह नहीं बताया था कि अमृता मेरी बहन है। दरअसल आज ही हम दोनों को इस कमरे में लाया गया है।”

“इससे पहले तुम कहां थीं?” मेजर बलवंत ने पूछा।

“यह तो मुझे मालूम नहीं; लेकिन मैं जहां भी थी, वह जगह समुद्र के आसपास है। क्योंकि वहां समुद्र की लहरों के टकराने का शोर हर घड़ी सुनाई देता रहता था।” अपर्णा ने उत्तर दिया।

“मुझे जिस कोठरी में रखा गया था उसकी बनावट भी ऐसी ही थी।” अमृता ने कहा।

मेजर बलवंत कुछ देर चुपचाप खड़ा कुछ सोचता रहा। फिर सोनिया और कल्याणी की ओर देखते हुए बोला, “तुम दोनों अमृता और अपर्णा को लेकर हवेली में चली जाओ। क्योंकि इन्हें अपने साथ रखना खतरे से खाली नहीं है। तुमने रास्ता तो देखा ही है।”

मेजर बलवंत अपने बाकी साथियों के साथ उस कमरे से निकला और तेजी से कारीडोर के दूसरे छोर की ओर बढ़ने लगा।

आगे चलकर उनके पैरों के नीचे सपाट पत्थरों के बने समतल फर्श के बजाय अनगढ़ पत्थरों का ऊबड़-खाबड़ रास्ता था और अब कारीडोर सुरंग में बदल गया था।

कुछ देर चलने के बाद सुरंग इतनी तंग हो गई थी कि खड़े-खड़े आगे बढ़ने के बजाय वे घुटनों को मोड़कर बैठकर धीरे-धीरे आगे खिसकने पर मजबूर हो गए।

लगभग पंद्रह मिनट के बाद इसी तरह चलने के बाद वे एक गोलाकार कमरे में पहुंच गए। जिसकी छत गुम्बद के आकार की थी और पत्थरों को काट-काटकर बनाई गई थी। छतें ही नहीं उसकी गोलाकार दीवारें भी पत्थरों को तराश कर ही बनाई गई थीं।

मेजर बलवंत ने उस गोलाकार कमरे के चारों ओर टार्च की रोशनी डाली।

“अरे, ये तो ठीक वैसे ही बक्स हैं जैसे अमृता के बंगले के तहखाने में देखे थे; हो सकता है इन बक्सों में भी वही चीज भरी हो, जो उन बक्सों में देखी थी।” राजीव ने कहा और अपनी जेब से मास्टर चाबी निकालते हुए गोल कमरे की दीवारों के सहारे रखे टीन के बड़े-बड़े बक्सों की ओर बढ़ गया, जो संख्या में छः थे। और उन्हें मास्टर-की से खोल डाला।

मेजर बलवंत अपने साथियों को उन बक्सों में पाई गई चीजों के बारे में बता ही रहा था अचानक सारा गोल कमरा समुद्र की लहरों के शोर से भर गया। ठंडी हवा के तेज थपेड़े बड़ी तेजी से अन्दर आने लगे थे।

“लगता है कोई अन्दर आ रहा है। इन बक्सों की आड़ ले लो।” मेजर बलवंत ने अपने साथियों से कहा और स्वयं झपटकर दरवाजे के पास रखी लकड़ी की बड़ी-बड़ी पेटियों के पीछे जा छिपा।

कुछ देर के बाद ही खाकी रंग की यूनीफॉर्म पहने और कंधे पर राइफलें लटकाए दो आदमी अन्दर आ गए। उनके हाथों में बेंत की बनी दो-दो टोकरियां थीं।

वे दोनों एक ओर बने चबूतरे पर बिछे मोटे गद्दों पर इस तरह आ बैठे जैसे बेहद थके हुए हों। वे आपस में बातें कर रहे थे। उनका नाम शिबू और हरि था।

“उठकर बैठ जाओ और अपने हाथ सिर के ऊपर सीधे खड़े कर लो।” मेजर बलवंत ने कड़ककर आदेश दिया और स्टेनगन को हिलाया। शिबू और हरी जल्दी से उठ बैठे। उन्होंने अपने-अपने हाथ सिर पर खड़े कर लिए।

“शिबू और हरी, तुम दोनों से बातचीत शुरू करने से पहले मैं तुम्हें यह बता देना जरूरी समझता हूं कि मैं कौन हूं।” मेजर बलवंत ने कहा और उन दोनों से जरा हटकर चबूतरे के कोने पर जा बैठा। शिबू और हरी की घबराहट भरी आंखों में प्रश्न उभर आया।

“अगर सुबह का भूला शाम को घर आए तो उसे भूला नहीं कहते। मैं तुम्हें अपने-आपको सुधारने का एक मौका दे सकता हूं। वरना तुम्हें ऐसी मौत मारूंगा, जिसे देखकर मौत का कलेजा भी दहल उठेगा।”

“नहीं-नहीं, हम मरना नहीं चाहते,” शिबू ने गिड़गिड़ा कर कहा।

मेजर बलवंत लगभग पन्द्रह-बीस मिनट तक उन दोनों से तरह-तरह के प्रश्न करता रहा और वे दोनों निस्संकोच भाव से उत्तर देते रहे।

“मेजर साहब! हो सकता है वे लोग आज रात ही इस माल को और इन दोनों लड़कियों को लेने के लिए चले आएंगे। इसलिए मेरी राय तो यही है कि आप इस माल को और दोनों लड़कियों को यहां से ले चलिए। इस काम में हम लोग आपकी मदद करने के लिए तैयार हैं।”

“ठीक है।” मेजर बलवंत ने कहा और अपने साथियों से

कहा कि वे चारों बक्सों में भरा सामान बोरियों में भर लें और ढो-ढोकर पहुंचा दें।

भुतहे बरगद का रहस्य

मेजर बलवंत ने शिबू और हरी की निगरानी का काम राजीव और संजीव को सौंप दिया और उस कमरे की ओर चल दिया जिसमें सोनिया, कल्याणी और डोरा सोया करती थीं।

वह उस कमरे में पहुंचा, तो कमरा बिल्कुल खाली पड़ा हुआ था। सोनिया, कल्याणी, अपर्णा और अमृता में से वहां कोई भी नहीं था।

वह सोचने लगा कि हो सकता है, सोनिया उन सबको लेकर उस हवेली में चली गई हो, जिसमें अमित की माताजी और अनुराधा रह रही थीं। वह जाते समय डॉली और रमा को उन्हीं के पास रहने की हिदायत कर गया था।

□ □

हवेली के दरवाजे पर दो सशस्त्र सन्तरी पहरा दे रहे थे। अमित और मेजर बलवंत को इस समय आते देख वे दोनों चौंक पड़े। जबसे दीवान यशवन्त पाटिल को उनके बेडरूम से सोते-सोते गुम कर दिया गया था, हवेली में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति शंकित और आतंकित हो उठा था। दोनों सन्तरियों ने सिर झुकाकर मेजर बलवंत और अमित का अभिवादन किया और हवेली के दरवाजे के सामने से हटकर खड़े हो गए।

“हवेली की ड्योढ़ी का दरवाजा कितने बजे बन्द किया गया था?” मेजर बलवंत ने दोनों सन्तरियों की ओर देखते हुए पूछा।

“हमेशा की तरह रात को ठीक ग्यारह बजे जनानी हवेली का दरवाजा बंद कर दिया गया था हुजूर!” एक सन्तरी ने नीची नजरें किए बड़े अदब से उत्तर दिया।

“उसके बाद कोई आया-गया था?” मेजर ने पूछा।

“जी नहीं। उसके बाद तो कोई नहीं आया-गया।” सन्तरी

ने मेजर बलवंत की ओर हैरानी भरी नजरों से देखते हुए कहा।

“मेरे साथ जो चार लड़कियां आई हैं, वे रात को लगभग एक बजे मां जी से मिलने आई थीं।” मेजर बलवंत ने अपनी बात पर जोर देते हुए कहा।

“हम लोग आपके साथ आए हुए हर आदमी को अच्छी तरह पहचानते हैं सरकार, लेकिन आज तो शाम के बाद मां जी से मिलने कोई नहीं आया। मैंने खुद हवेली के दरवाजे टोक ग्यारह बजे का घड़ियाल सुनते ही बन्द किए थे। उसके बाद तो किसी के आने का सवाल ही नहीं उठता।” सन्तरी के स्वर में दृढ़ता थी।

□□

बुर्ज के दरवाजे की सीढ़ियां उतरकर वे दोनों फिर उसी हॉल में आ गए जो ड्राइंगरूम की तरह सजा हुआ था। मेजर बलवंत बड़े ध्यान से उस हॉल की दीवारों को देखने लगा।

उसने दीवारों के पास जाकर एक-एक इंच दीवार को बड़े ध्यान से देखना शुरू कर दिया। अमित भी उन दीवारों की बड़ी बारीकी से जांच कर रहा था। अचानक अमित ने एक स्थान को देखने के बाद एक कदम आगे बढ़ाया ही था कि सहसा उसके चेहरे से बहुत ही ठंडी हवा का एक झोंका टकराया। साथ ही हल्की-सी सीटी जैसी आवाज भी सुनाई दी।

उसने ठिठककर बढ़ा हुआ कदम वापस ले लिया और पत्थरों के बीच बनी उस दरार को घूरकर देखने लगा जिसमें से ठंडी हवा आ रही थी। उस दरार से एक फुट की दूरी पर तीन फुट लम्बी और दो फुट चौड़ी एक पेंटिंग टंगी हुई थी। अमित ने उस पेंटिंग को हटा दिया। उसके नीचे की दीवार बिल्कुल सपाट थी। अमित को पेंटिंग हटाने देख मेजर बलवंत भी उसके पास आ खड़ा हुआ। अचानक न जाने क्या सोचकर अमित उस कील को देखने लगा, जिसके सहारे पेंटिंग टंगी हुई थी। उसने उस कील को पकड़कर हिलाया-डुलाया तो कील इधर-उधर

जाने या आगे आने के बजाय अंदर को धंस गई। उसके अंदर धंसते ही वह दरार चौड़ी होती चली गई, जिसमें से ठंडी हवा आ रही थी। इसके साथ ही उन दोनों के आश्चर्य की उस समय सीमा न रही, जब उन्होंने उन सीढ़ियों के दरवाजे को बन्द होते देखा, जिनसे उतरकर वे इस हॉल में आए थे। जब पेंटिंग के साथ वाला दरवाजा पूरा खुल गया तो सीढ़ियों वाला दरवाजा पूरा बन्द हो गया। मेजर बलवंत आश्चर्य-भरी नजरों से दोनों दरवाजों को देखने लगा और फिर सीढ़ियों वाले दरवाजे के पास जा खड़ा हुआ। उसने उस दरवाजे के पास ही दीवार में गड़ी उस कील को अंदर की ओर टबाया जिस पर बहुत ही सुन्दर पेंटिंग टंगी हुई थी।

उस कील के दबाते ही सीढ़ियों के पास वाला दरवाजा खुलने लगा और उसके बराबर वाली दीवार में बना दरवाजा बन्द होने लगा। वह पलटकर दीवार में बने दरवाजे के पास आ गया। उसने कील दबाकर उस दरवाजे को पूरा खोल दिया। उस दरवाजे के सामने एक कॉरीडोर था जिसमें अंधेरा छाया हुआ था।

उसने टॉर्च की रोशनी उस कॉरीडोर में डाली और फिर अमित को अपने पीछे आने का इशारा करके तेजी से उस कॉरीडोर के दूसरे छोर की ओर बढ़ने लगा।

उसने अनुमान लगाया—वह लगभग चार फर्लांग चल चुका था, लेकिन अभी तक उस कॉरीडोर का अन्तिम छोर नहीं आया था।

कुछ दूर जाने के बाद वे एक ऐसे कमरे में पहुंचे, जिसमें एक काफी बड़ा डाइनुमा लगा हुआ था और उस डाइनुमा से जुड़े लोहे के मोटे-मोटे तार छत में बने सुराखों में होते हुए ऊपर की ओर निकल गए थे। मेजर बलवंत ने उन तारों को झटके देकर खींचने की कोशिश की, लेकिन एक भी तार टस-से-बस नहीं हुआ।

“यहां न तो कोई बिजली की मोटर दिखाई दे रही है न बैटरी, फिर यह डाइनुमा कैसे चलता होगा?” अमित ने सोचते हुए कहा, “और फिर इस डाइनुमा के यहां लगाने का उद्देश्य क्या हो सकता है?”

मेजर बलवंत ने डाइनुमा के एक ओर लगे पहिए को घुमाया ही था कि अमित मेजर बलवंत की खामोश रहने की हिदायत को भूलकर जल्दी से बोल उठा, “मेजर साहब! वह देखिए, इस पहिए के ठीक सामने उस दीवार में लगा ऐसा ही पहिया भी घूमने लगा है।” मेजर बलवंत ने डाइनुमा के पहिए को रोक दिया। उसके रुकते ही दीवार में लगा पहिए का घूमना भी बन्द हो गया।

मेजर बलवंत ने दोनों पहियों को बड़े ध्यान से देखा और डाइनुमा में लगे पहिए को घुमा दिया। सामने दीवार पर लगा पहिया भी घूमने लगा।

मेजर बलवंत के होंठों पर मुसकराहट दौड़ने लगी। वह बहुत तेजी से उस पहिए को घुमाने लगा। दीवार में लगा पहिया भी बहुत तेजी से घूमने लगा। मेजर बलवंत ने पहिया घुमाना बन्द कर दिया, लेकिन अब डाइनुमा अपनी पूरी ताकत से चलने लगा था, इसलिए दीवार पर लगा पहिया भी उतनी तेजी पकड़ता चला जा रहा था।

अचानक अमित के हाथ को एक जोरदार झटका लगा और उसके हाथ से छूटकर टॉर्च छत में से निकलते हुए तारों से जा लगी। फिर कभी इस तार से और कभी दूसरे तार से जा-जाकर टकराने लगी।

मेजर बलवंत ने छत में लगे तारों के साथ इधर-से-उधर घूमती टॉर्च को उचककर पकड़ लिया; लेकिन टॉर्च तो उसी तरह इधर-से-उधर आती-जाती रही। हां, मेजर बलवंत के कदम जमीन से एक फुट ऊपर जरूर पहुंच गए थे। कुछ देर बाद मेजर बलवंत ने टॉर्च छोड़ दी। वह धम-से नीचे आ गिरा

और डाइनुमा के पास आ खड़ा हुआ। तभी उसकी नजर डाइनुमा के नीचे से निकलती हुई लोहे की एक भारी चौकोर राड पर पड़ी। न जाने क्या सोचकर उसने अपना दायां पांव उस राड पर रख दिया और धीरे-धीरे उस राड पर पांव का दबाव डालने लगा। उसके पांव का दबाव राड पर जैसे-जैसे बढ़ता जा रहा था डाइनुमा के साथ-साथ दीवार में लगे पहिए की स्पीड भी कम होती चली जा रही थी। कुछ देर बाद डाइनुमा और दीवार में लगा पहिया एकदम रुक गए।

मेजर बलवंत की आंखों में एक विशेष और अर्थपूर्ण चमक जाग उठी थी। उसने अपनी टॉर्च उठा ली और उस कमरे के दूसरे दरवाजे की ओर बढ़ गया।

वे दोनों उस दरवाजे में पहुंचे तो सामने दरवाजे के इस छोर से लेकर दूसरे छोर तक कुंए जैसी एक गोल दीवार बनी हुई थी, जो ऊपर की ओर शायद काफी ऊंचाई तक चली गई थी। मेजर बलवंत ने दरवाजे से निकलकर ऊपर की ओर टॉर्च की रोशनी डाली।

उस चार फुट चौड़े सूराख के पार आसमान के बजाय किसी पेड़ की मोटी-मोटी डालियां और पत्ते दिखाई दे रहे थे। उस गोल कमरे के बीचोंबीच लोहे की बनी एक घुमावदार सीढ़ी थी, जो उस कुंए के ऊपरी सिरे तक चली गई थी। मेजर बलवंत उस सीढ़ी पर चढ़ने लगा। अमित भी उसके पीछे था।

लगभग तीन-चार मिनट के बाद वे उस कुंए के ऊपरी सिरे पर पहुंचे, तो यह देखकर उनके आश्चर्य की सीमा न रही कि वे एक बहुत ही मोटे तने वाले पेड़ की एक मोटी-सी डाली पर बैठे हुए थे।

मेजर बलवंत ने टॉर्च की रोशनी अपने चारों ओर डाली। वह बरगद का एक विशाल पेड़ था, जो इतना घना था कि उन्हें ऊपर आकाश पर जहां-तहां छिटके तारे तक दिखाई नहीं दे रहे थे। मेजर बलवंत ने अमित के दोनों हाथ थामकर उसे डाल से

नीचे लटक जाने का इशारा किया।

“अरे, यह तो वही भुतहा बरगद है।” अपने आस-पास टॉर्च की रोशनी डालते हुए मेजर बलवंत ने आश्चर्य से कहा।

उसने पेड़ के तने के आस-पास की जमीन पर टॉर्च की रोशनी डाली तो उसे चार जोड़ी जूतों के निशान दिखाई दिए। ये निशान बरगद के तने तक आते हुए और तने की ओर से सड़क की ओर जाते हुए दिखाई दे रहे थे। ये निशान एकदम ताजा और काफी से भी अधिक गहरे थे, लेकिन बरगद के तने की ओर से जाते हुए ये निशान कि हों ऐसे चार आदमियों के जूतों के निशान थे, जिनका जिस्म बहुत ही भारी था, जबकि आते हुए निशान उसी साइज के होने के बावजूद हलके थे।

जूतों के उन गहरे निशानों के साथ-साथ चलता हुआ मेजर बलवंत सड़क के किनारे ऐसे स्थान पर पहुंच गया, जहां किसी कार के टायरों के ताजा निशान दिखाई दे रहे थे।

उन निशानों के पास ही मिठाई का दो किलो वाला एक बड़ा डिब्बा पड़ा हुआ था।

मेजर बलवंत ने उस डिब्बे को उठा लिया और उसे देखने लगा। उस डिब्बे के ऊपर चिपके रैपर पर छपा था—मेलाराम कराचीवाला, मालाबार हिल, बम्बई।

मेजर बलवंत ने डिब्बे का ढक्कन खोला। उसमें कई मिठाइयों का चूरा और थोड़ा-सा रस पड़ा हुआ था। साथ ही उसमें से मिठाइयों की तेज खुशबू आ रही थी।

इससे स्पष्ट था कि मिठाई का वह डिब्बा मालाबार हिल बम्बई के मेलाराम कराचीवाले की दुकान से कुछ घंटे पहले ही खरीदा गया था। मेजर बलवंत पन्द्रह-बीस मिनट तक चुपचाप खड़ा कुछ सोचता रहा और फिर अपित का हाथ थामकर बहुत ही तेजी के साथ हवेली के फाटक की ओर चल पड़ा।

□□

मेजर बलवंत और उसके साथी बम्बई के अपने बंगले में

पहुंचे, तो सुबह का उजाला फैलना शुरू हो गया था।

ड्राइंगरूम में पहुंचते ही मेजर बलवंत अपनी इजी चेयर पर जा बैठा। उसने राजीव से कहा कि वह सब लोगों के लिए चाय बना लाए। फिर उसने टेलीफोन इन्स्ट्रुमेंट उठाकर अपने सामने सेंटर टेबल पर रख लिया और इंस्पेक्टर कुलकर्णी का टेलीफोन नम्बर डायल करने लगा।

थोड़ी देर के बाद जब दूसरी ओर से इंस्पेक्टर कुलकर्णी की आवाज सुनाई दी तो उसने कहा, “इंस्पेक्टर साहब! मुझे तत्काल दो दर्जन छापामार दस्ते के जवान और चार स्टीमर चाहिए।”

“जवानों और स्टीमरों को लेकर मुझे कहां पहुंचना होगा?” दूसरी ओर से इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने पूछा।

“मालाबार हिल के चर्च के पीछे समुद्र की ओर बनी सीढ़ियों के पास पहुंचकर मेरा इन्तजार कीजिए। वैसे मैं पन्द्रह-बीस मिनट में वहां पहुंच जाऊंगा।” मेजर बलवंत ने कहा और फोन डिस्कनेक्ट कर दिया और उठकर अपने ऑफिस में चला गया।

थोड़ी देर बाद वे सब ड्राइंगरूम से निकले और पोर्टिको में खड़ी अपनी-अपनी कार में जा बैठे।

मेजर बलवंत अपने साथियों के साथ चर्च के गेट पर पहुंचा, तो दिन निकल आया था। सड़कों पर लोगों का आना-जाना शुरू हो चुका था। उन्होंने कारें चर्च के सामने वाले फुटपाथ पर खड़ी कर दीं और उतरकर उन्हें लॉक कर दिया।

वे सब चर्च का ग्राउंड पार करके समुद्र की ओर बनी सीढ़ियों के पास पहुंचे तो इंस्पेक्टर कुलकर्णी छापामार दस्ते के दो दर्जन जवानों के साथ वहां पहुंच चुका था। वे लोग चार स्टीमरों द्वारा समुद्र के रास्ते वहां पहुंचे थे।

मेजर बलवंत ने सुधीर, संजीव, राजीव और शरद के साथ-साथ पांच-पांच जवानों को स्टीमरों में सवार हो जाने का आदेश दिया। उसने उन लोगों को हिदायत की कि वे अमृता के बंगले की पिछली दीवार को इस तरह कवर कर लें कि उस ओर से

एक चिड़िया भी निकलकर न जा सके, लेकिन जो भी उस ओर से फरार होने की कोशिश करे उस पर इस तरह गोली चलाई जाए कि वह मरने न पाए। जहां तक मुमकिन हो सके अपराधियों को जिन्दा ही गिरफ्तार करने की कोशिश की जाए।

उन लोगों को आवश्यक हिदायतें देने के बाद मेजर बलवंत अमित और इंस्पेक्टर कुलकर्णी के साथ बाकी चार जवानों को लेकर अमृता के बंगले की ओर चल दिया।

वह अमृता के बंगले के गेट पर पहुंचा, तो उसने देखा गेट में लगे दोनों ताले खुले हुए थे। इससे स्पष्ट था कि जो कोई भी आया था, वह समुद्र की ओर वाले रास्ते के बजाय इस रास्ते से बंगले में गया था।

मेजर बलवंत ने सब लोगों को सावधान रहने की हिदायत दी और गेट से निकलकर बंगले की ओर चल दिया। मेजर बलवंत ने दरवाजे के पट पर हथेली का दबाव डाला। दरवाजा अन्दर से बन्द था।

“आप मेरे साथ आइए। मैं एक ऐसा रास्ता जानता हूँ, जिससे बड़ी आसानी से अंदर जाया जा सकता है।” अमित ने मेजर बलवंत से कहा।

मेजर बलवंत ने दो कांस्टेबलों को संगमरमर के हौज के पास भेज दिया और उन्हें हिदायत की कि वे जिस किसी को भी उस हौज के रास्ते से निकलते देखें उसे फौरन गोली मारकर इस काबिल बना दें कि वह भागने न पाए। उसने इंस्पेक्टर कुलकर्णी को सदर दरवाजे पर ही छोड़ दिया और अमित के साथ चल दिया।

बंगले की दायी दीवार के साथ चलता हुआ अमित एक खिड़की के पास पहुंचकर रुक गया। उसने खिड़की के दोनों पटों के जोड़ के ऊपरी हिस्से पर धीरे-धीरे मुक्के मारने शुरू किए। तीन-चार मुक्कों के बाद ही खट की हल्की-सी आवाज सुनाई दी। अंदर लगी चटखनी खुलकर नीचे गिर गई थी।

अमित ने दोनों पट खोल दिए। मेजर बलवंत ने देखा—वह एक बहुत ही सुसज्जित बेडरूम था।

अमित के पीछे-पीछे मेजर बलवंत भी खिड़की से कूदकर उस बेडरूम में पहुंच गया।

यह अमृता का बेडरूम है, अमित ने बताया और एक दरवाजे की ओर बढ़ गया। यह बाथरूम का दरवाजा था, जो दो कमरों के साथ जुड़ा हुआ था।

वे दोनों बाथरूम से गुजरकर दूसरे कमरे में पहुंच गए। यह डाइनिंगरूम था, जिसमें कई दरवाजे थे। ये सभी दरवाजे खुले हुए थे। मेजर बलवंत और अमित ने सारे कमरे, स्टोर, किचन और बाथरूम देख डाले। बंगले में कोई नहीं था।

मेजर बलवंत फिर एक-एक कमरे को ध्यान से देखने लगा।

वे दोनों एक बेडरूम को देख रहे थे जिसमें एक डबल बेड और एक ओर एक सोफासैट पड़ा हुआ था।

“यह अमृता की मम्मी का बेडरूम है। उन्हें गुम हुए लगभग सोलह बरस बीत चुके हैं, लेकिन वह इस बेडरूम को जिस हालत में छोड़ गई थीं, आज भी उसी हालत में है। उनके पहनने के कपड़े और दैनिक आवश्यकता की हर चीज ज्यों-की-त्यों रखी हुई है।” अमित ने बताया, “एक बार अमृता ने सोचा था कि उनका सामान यहां से हटा दें, और इसे अपना बेडरूम बना ले। यह सोचकर उसने अपनी मम्मी का कुछ सामान यहां से हटवा दिया था; लेकिन उसी रात उसने सपने में मां को देखा था। मां ने उससे कहा था कि उसने उसके बेडरूम से जो सामान हटवाया है, उसे वहीं फौरन रखवा दें और भविष्य में उनके बेडरूम में रखी किसी भी चीज को छूने तक की कोशिश न करें; लेकिन उसकी सफाई रोजाना सुबह-शाम करती रहे। रोजाना वहां धूप-बत्ती जलाई जाए और गुलदानों के फूल बदले जाएं। अमृता ने रात में ही नौकरों को जगाकर जो भी सामान कमरे से हटवाया था फिर वहीं रखवा दिया।”

मेजर बलवंत हैरानी में डूबा अमित की बान सुनता रहा। फिर वह उस कमरे में रखी एक-एक चीज को बड़े ध्यान से देखने लगा। वर्षों से एक ही स्थान पर रखी हर चीज के नीचे उस चीज के तले के बराबर ही निशान पड़ गया था।

वह एक-एक चीज को बड़े ध्यान से देखते हुए आगे बढ़ रहा था कि सहसा कमरे में रखी ड्रेसिंग टेबल के रैक पर रखे एक रूमाल को देखते ही वह चौंक पड़ा। उसने जल्दी से वह रूमाल उठाकर देखा। उसका अनुमान सच निकला। वह सोनिया का ही रूमाल था। वह उस रूमाल को अच्छी तरह पहचानता था। उसने रूमाल उठाकर अपनी जेब में रख लिया और धोचने लगा कि सोनिया का यह रूमाल यहां कैसे आया?

क्या अमृता, सोनिया, कल्याणी और अपर्णा को किसी दूसरे रास्ते से उस सुरंग से निकाल कर किसी बहाने यहां ले आई थी? अगर वे चारों यहां आ गई थीं, तो फिर कहां गई और किस रास्ते से गई?

वह यह सब सोचता हुआ ड्रेसिंग टेबल के सामने पड़े स्टूल पर बैठ गया। अचानक उसकी नजर ड्रेसिंग टेबल के आइने की ओर फैल गई। उसे आइना हिलता हुआ-सा महसूस हुआ। वह कुछ देर तक उस आइने की ओर देखता रहा फिर उसने हाथ बढ़ाकर हिलते हुए आइने को रोकने की कोशिश की। उसने आइने को छुआ तो उसने देखा, वह आइना ड्रेसिंग टेबल में फिट नहीं था, बल्कि दीवार में लगे फ्रेम में जकड़ा हुआ था। लेकिन वह फ्रेम में एक ही ओर जड़ा हुआ था। उसने उसके दूसरे किनारे को बाहर की ओर खींचा तो वह किसी खिड़की के पट की तरह आगे आ गया।

उसके पीछे आइने के आकार का ही एक दरवाजा था। उसकी लम्बाई दो फिट और चौड़ाई डेढ़ फुट के लगभग थी।

“अमित सदर दरवाजा खोलकर इंस्पेक्टर कुलकर्णी को बुला लाओ।” मेजर बलवंत ने कहा और उस दरवाजे में से

झांककर देखने लगा। इस दरवाजे के पीछे सीढ़ियां थीं, जो कुछ दूर जाकर अंधेरे में गुम हो गई थीं।

कुछ देर के बाद ही अमित इंस्पेक्टर कुलकर्णी को लेकर आ गया।

मेजर बलवंत ने अपना रिवॉल्वर निकाला और उस तंग दरवाजे में से सीढ़ियों पर उतर गया। इंस्पेक्टर कुलकर्णी और अमित भी उसके पीछे-पीछे सीढ़ियों पर उतर गए।

उन्हें यह देखकर हैरानी हुई कि उस तंग दरवाजे के पीछे सीढ़ियों की लम्बाई-चौड़ाई और छत की ऊंचाई काफी बढ़ गई थी। वे बिना सिर झुकाए और आड़े-तिरछे हुए बिना बड़ी आसानी से सीढ़ियों पर उतरते चले गए। वे जैसे-जैसे सीढ़ियों पर उतरते गए अंधेरा कम होता चला गया। कुछ देर के बाद वे एक लम्बे चौड़े हॉल के दरवाजे पर पहुंच गए।

हॉल की दायीं ओर की दीवार के सहारे छत में लगे कुंडों से बंधी सोनिया, कल्याणी, अमृता और अपर्णा लटकी हुई थीं। उनके साथ ही अधेड़ उम्र की, लेकिन बहुत सुन्दर और गोरी-चिट्ठी एक औरत भी थी। उन पांचों के हाथ कलाइयों पर से उन रस्सियों से बंधे हुए थे, जो छत में जड़े कुंडों के बीच से गुजरती हुई कुछ दूरी पर फर्श पर रखी एक मशीन में लगे रोलर से बंधी हुई थीं। उन पांचों के पैर फर्श से लगभग एक फुट की ऊंचाई पर थे।

उन पांचों के ठीक सामने स्याह लबादों में लिपटी तीन मानव आकृतियां खड़ी थीं और उनके दायीं ओर राइफलें ताने दस आदमी खड़े थे, जिनके बदन पर नीली पतलून और नीली ही शर्ट थी। शक्ति-सूरत से वे छंटे हुए गुंडे दिखाई दे रहे थे।

मेजर बलवंत ने अमित और इंस्पेक्टर कुलकर्णी को इशारा किया और वे दरवाजे के साथ ही दीवार में लगी सीमेंट की एक जाली के सामने आ खड़े हुए।

सीमेंट की जाली में लगभग एक-एक इंच लम्बे-चौड़े सुराख

बने थे, जिनसे उस हॉल का दृश्य साफ-साफ दिखाई दे रहा था।

“अच्छा हुआ मधु! तुम खुद ही चली आई। पूरे सोलह साल तक तुम्हारी खोज में मैं कहां-कहां नहीं भटका। देस-परदेस—न जाने कहां-कहां की खाक छाननी पड़ी है मुझे।” उन तीनों सायों के बीच में खड़े लम्बे-तड़ंगे साये ने भारी-भरकम आवाज में कहा, “अब तुम्हें अगर अपनी और अपनी दोनों बेटियों की जानें प्यारी हैं, तो इन कागजात पर अपने दस्तखत कर दो।”

“हरामजादे! तेरी गन्दी जबान को मुझे इस नाम से पुकारने का कोई अधिकार नहीं। इस नाम से पुकारने वाला तो कभी का इस दुनिया से जा चुका। दूसरे सब लोग मुझे जिस नाम से पुकारते हैं, तू मुझे उसी नाम से पुकार सकता है।” दीवार पर लटकी अधेड़ उम्र की स्त्री ने दर्द से छटपटाती, लेकिन कड़कती हुई आवाज में कहा, “तू मेरे दूर के रिश्ते का भाई था, फिर भी मैंने तुझे अपना सगा भाई समझकर अपने घर में आश्रय दिया, लोग तुझे आवारा, बदचलन और गुंडा समझकर अपने घर के दरवाजे पर भी फटकने नहीं देते थे; लेकिन मैंने तुझे लोगों की बातों की परवाह न करके हर तरह का सहारा दिया। तूने बहन कहते हुए भी मेरी आबरू लूटने की कोशिश की और जब मैंने तुझे मार-पीटकर अपने बेडरूम से निकाल दिया, तो तू मेरी बच्ची का ही उठा ले गया, जो वर्षों के बाद मुझे आज मिली। अब दुनिया की कोई भी ताकत मुझसे मेरी बेटों को नहीं छीन सकती।”

लम्बे-तड़ंगे साये ने एक जोरदार कहकहा लगाया। वह कहकहा इतना भयानक था कि हॉल की छत और दीवारें थरथरा उठी थीं।

“तो मैं कब तुमसे तुम्हारी बेटियों को छीन रहा हूँ।” लम्बे-तड़ंगे साये ने अपने कहकहे को रोकते हुए कहा, “तुम्हारी

बेटियों और तुम्हारी जान के सामने इस बंगले की कोई कीमत नहीं है। लो जल्दी से इन कागजों पर दस्तखत कर दो। मैं तुम तीनों को अभी छोड़ दूंगा।”

यह कहकर उसने रोलरों के पास खड़े आदमी की ओर हाथ उठाकर इशारा किया। उस आदमी ने तीन रोलर घुमा दिए। उस स्त्री अमृता, अपर्णा के पैर एक-दो मिनट के बाद ही हॉल के फर्श पर आ टिके।

“मैं इन कागजों पर दस्तखत नहीं करूंगी।” उस स्त्री ने दृढ़ता भरे स्वर में एक-एक शब्द पर जोर देते हुए अपना निर्णय सुना दिया।

यह सुनकर लम्बे-तड़ंगे साए ने रोलरों वाली मशीन के पास खड़े आदमी की ओर हाथ उठाकर इशारा किया। अमृता, अपर्णा और उसकी मां की कलाईयों में बंधी रस्सियां फिर धीरे-धीरे तनने लगीं। उन तीनों के पांच फर्श पर से उठते चले गए। लम्बे-तड़ंगे साए ने अपने रिवॉल्वर के चेम्बर की जांच की और चेम्बर बन्द करके रिवॉल्वर की नाल उन तीनों की ओर उठा दीं।

“मधु! मैं एक बार फिर कहता हूँ। ज़िद छोड़कर उन कागजों पर दस्तखत कर दो। अगर इस बार तुम्हारे मुंह से नहीं निकला, तो उसी के साथ तुम्हारी बेटियों की लहलुहान लाशें छटपटाती-तड़पती दिखाई देंगी।” लम्बे-तड़ंगे साए ने कड़ककर कहा।

“मैं एक बार जो कुछ कह देती हूँ वह पत्थर की लकीर होता है राजन!” अमृता की मां ने दृढ़ता-भरे स्वर में कहा।

“फिर जैसी तुम्हारी मर्जी।” लम्बे तड़ंगे साए ने कहा और फिर रिवॉल्वर की नाल अमृता की ओर उठाते हुए ट्रेगर दबा दिया।

“लेकिन उसके रिवॉल्वर से निकली गोली अमृता को न लगकर छत से जा टकराई, क्योंकि ट्रेगर पूरी तरह दबाने से पहले ही उसकी दर्द-भरी चीख उस हॉल की छत और दीवारों

से टकराकर गूँज उठी और फिर वह लहराता हुआ धड़ाम से फर्श पर जा गिरा। उसके दायीं ओर खड़े भारी बदन वाले साए के रिवॉल्वर से निकली गोलियां उसकी गर्दन और खोपड़ी को फोड़ती हुई निकल गई थीं।”

“इन सबकी रस्सियां खोल दो।” उस भारी-भरकम साए ने कड़ककर उन लोगों को आदेश दिया, जो अपनी राइफलें ताने खड़े थे।

हॉल में खड़े लोग जब तक कुछ समझ पाते भारी-भरकम साए ने किसी फुर्तीले जवान की तरह एक उछाल भरी और अपनी बायीं ओर खड़े साए के पीछे पहुंच गया और कड़ककर बोला, “रत्ना! अपना यह लबादा उतार कर अपने दोनों हाथ ऊपर उठा दो।”

वह साया एक पल खामोश खड़ा रहा। उसने हॉल में खड़े राइफलधारियों की ओर देखा; लेकिन अब उनकी तनी हुई राइफलें उनके पहलू से सटी खड़ी थीं।

उस साए ने धीरे से अपना लबादा उतारकर फर्श पर फेंक दिया और अपने दोनों हाथों को ऊपर उठाती हुई बोली, “मेरा मिशन पूरा हो चुका है। जिन लोगों ने आज से कई साल पहले धोखे से मेरे पति की सारी दौलत छीनकर उन्हें मार डाला था, मुझे और मेरे बच्चों को दर-दर का भिखारी बनाकर हजारों मील दूर परदेस में छोड़ आए थे। किसी तरह मैं अपने देश लौट आई, और उनके पास सहारा मांगने गई, तो उन्होंने मेरे साथ बलात्कार करके मेरी आबरू की धजियां बिखेर दीं। उन्हीं में मेरे पति का बड़ा भाई छबीलदास भी था। मैंने अपने पति के चारों हत्यारों और मेरी आबरू लूटने वाले दरिन्दों में से तीन को मौत के घाट उतार दिया। उनमें से दो के तो खानदान का नाम-निशान ही मिटा दिया और चौथे को ऐसी करारी चोट पहुंचाई कि अब वह जिन्दगी-भर पनप नहीं पाएगा। मेरा काम पूरा हो चुका है। आप बड़ी खुशी से मुझे गोली मार सकते हैं।”

लेकिन भारी-भरकम साए ने रत्ना की जिन्स की बेल्ट के साथ लटके होलस्टर से रिवॉल्वर निकालकर अपने लबादे की जेब में रख लिया और उसकी पीठ पर टिके रिवॉल्वर को हटाते हुए बोला। मैं तुम्हें इन हत्याओं का दोषी नहीं मानता रत्ना! अगर तुम्हारी जगह स्त्री के रूप में मैं होता, तो मैं भी यही करता। फिर भी कानून की नजर में तुम अपराधी हो। तुम उस कुर्सी पर जाकर इतमीनान से बैठ जाओ। अपना काम खत्म हो जाने के बाद मैं तुम्हें कानून के हवाले कर दूंगा।”

रत्ना ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप जाकर उस कुर्सी पर बैठ गई। भारी-भरकम साए ने राइफलधारियों की ओर मुड़कर कहा, “मैं जानता हूँ कि पेट की आग इन्सान को घिनौने-से-घिनौने गुनाह करने पर मजबूर कर देती है। रत्ना और तुम लोगों ने इन नकली नोटों के बदले काफी धन इकट्ठा कर लिया है। अगर तुम लोग शराफत से जिन्दगी बिताने का मुझे वचन दोगे, तो मैं तुम्हें इतना रुपया दे दूंगा, जिससे तुम कोई छोटा-मोटा कारोबार कर सको और शराफत से अपनी जिन्दगी बिता सको।” भारी-भरकम साए ने कहा और फिर अपना लबादा उतार कर एक ओर फेंक दिया।

अपराधी कौन

“अरे—!” सीमेंट की जाली के पीछे खड़े मेजर बलवंत, अमित और इंस्पेक्टर कुलकर्णी के मुंह से निकला।

हॉल में खड़े आदमियों ने अपनी राइफलें एक कोने में रख दीं।

“तुम लोग उस दीवार के साथ लगकर खड़े हो जाओ और प्रतिज्ञा करो कि तुम लोग अब शराफत से जिन्दगी बिताओगे।” उस भारी-भरकम बदन वाले आदमी ने कहा।

उन दस आदमियों के साथ रोलरों वाली मशीन के पास खड़ा आदमी भी उस दीवार के पास जा खड़ा हुआ।

“हम प्रतिज्ञा करते हैं कि हम अपना जीवन अब शराफत के साथ बिताएंगे।” दीवार के पास खड़े ग्यारह आदमियों ने प्रतिज्ञा की। प्रतिज्ञा के वाक्य समाप्त होते ही ग्यारह दर्द-भरी चीखों से हॉल की पथरीली दीवारें कांप उठीं। दीवार के पास खड़े ग्यारह आदमी अपना-अपना सीना थामे कटे पेड़ की तरह मुंह के बल फर्श पर जा गिरे। भारी-भरकम आदमी ने फुर्ती से अपनी पतलून की जेबों से दो रिवाल्वर निकालकर उन सबके सीनों को छेद डाला था।

“मधु! केवल इसलिए कि तुम्हारे माता-पिता ने तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध तुम्हारे प्रेमी के साथ विवाह न करके मेरे साथ कर दिया था; लेकिन विवाह के बाद एक दिन के लिए भी न तो तुम मुझे अपना पति स्वीकार सकीं और न मैं ही तुम्हें पत्नी के रूप में पा सका। इसीलिए मैं बम्बई छोड़कर तुमसे दूर चला गया। लोगों को दिखाने के लिए बम्बई आता रहा; लेकिन तुम्हारे बंगले में मैंने कभी पांव नहीं रखा। तुमने मेरा पुश्तैनी बंगला छोड़कर यह बंगला खरीद लिया, ताकि मैं तुम्हारे पास भी न आ सकूं और तुम इतमीनान से अपने प्रेमी के साथ रातें बिता सको। तुम्हारा खयाल था कि मैं तुम्हारे बंगले का पता और तुम्हारे बारे में कुछ भी न जान सकूंगा; लेकिन तुम्हारा बूढ़ा नौकर मोती मुझे सब कुछ बताता रहा। एक दिन मौका पाकर मैंने तुम्हें और तुम्हारे प्रेमी को मार डालने की कोशिश की; लेकिन तुम अंधेरे का लाभ उठाकर भाग निकलीं और मेरे रिवाल्वर से निकली सारी गोलियां तुम्हारे प्रेमी के बदन में समा गईं।” भारी-भरकम बदन वाले व्यक्ति ने घृणा-भरे उत्तेजित स्वर में कहा, “उस दिन तुम बच गई थीं; लेकिन आज मैं तुम्हें उसी तरह तड़पा-तड़पाकर मारूंगा, जिस तरह तुमने मुझे जिन्दगी-भर तड़पाया है।”

यह कहते ही उस भारी-भरकम साए ने अमृता की मां की कलाईयों में बंधी रस्सी का निशाना लेकर ट्रेगर दबा दिया।

लेकिन उसी के साथ सीमेंट की जाली के एक सूराख से एक शोला लपका और वह भारी-भरकम आदमी अपनी दायाँ कलाई थामकर कराहता हुआ फर्श पर धम से बैठ गया। उसके हाथों से छूटकर दोनों रिवाल्वर फर्श पर दूर जा गिरे थे।

दूसरे ही पल मेजर बलवंत अपनी स्टेनगन उस भारी-भरकम आदमी की ओर ताने उस जाली के पीछे से निकल आया। अमित और इंस्पेक्टर कुलकर्णी भी उसके पीछे आ गए।

“अमित! अपनी स्टेट के पुराने वफादार दीवान यशवन्त पाटिल को कवर करो। अगर यह जरा भी हिले, तो इसे फौरन गोली से उड़ा देना।” मेजर बलवंत ने कहा, “इन सबको ठिकाने लगाने के बाद इसका अगला कार्यक्रम तुम्हें और तुम्हारी मां को भी ठिकाने लगाना; तुम्हारी सारी चल-अचल सम्पत्ति को हड़पना था।”

“यह आप क्या कह रहे हैं मेजर साहब?” अमित ने आश्चर्य से कहा।

“जो आदमी एक मासूम लड़की को केवल इसलिए झील में डुबोकर मार सकता है कि वह तुम्हें प्यार करती थी और इस हत्यारे की वास्तविकता जान गई थी। वह इसे अपना पिता जानती थी। इसलिए उसने इससे अपना विचार बदलने की प्रार्थना की। इसे तुम्हें खत्म कर डालने का मौका नहीं मिला। जब इसे यह पता चला कि तुम्हें बचाने में भी चंदा का ही हाथ था। उसी रात इसने उस मासूम लड़की को झील में डुबोकर मार डाला था।”

मेजर बलवंत ने सोनिया, कल्याणी, अमृता और अपर्णा की कलाईयों पर बंधी रस्सियां काट दीं। और फिर रत्ना से बोला, “रत्ना! तुम जानती हो कि समुद्र की ओर वाला दरवाजा किस तरह खोला जाता है। उसे खोल दो।”

रत्ना चुपचाप उठी और उस जगह जा खड़ी हुई, जहां पत्थर की एक सपाट सिल पर शेर के शिकार का दृश्य उकेरा गया

था। उसने बड़ी आसानी से उस दरवाजे को खोल दिया।

मेजर बलवंत ने दरवाजे में खड़े होकर स्टीमरों पर सवार अपने साथियों को आने का इशारा किया और फिर दीवान यशवन्त पाटिल के पास आ खड़ा हुआ।

“इंस्पेक्टर साहब! दीवान यशवन्त पाटिल और रत्ना के हाथों में हथकड़ियां डाल दीजिए। मेरे जासूसी जीवन का यह एकमात्र ऐसा केस है, जिसमें इतने आदमियों का खून बहा, करोड़ों रुपयों की लूटमार और हेराफेरी हुई, लेकिन अन्त में केवल दो ही अपराधी हाथ लगे।”

कुछ देर बाद ही चारों स्टीमर उस दरवाजे के सामने आ लगे। सुधीर, राजीव, संजीव और शरद के साथ पुलिस के जवान भी हॉल में आ गए।

“सुधीर! इस हॉल में जितनी भी मशीनें और बक्स तथा अलमारियां हैं, स्टीमरों में रखवा दो। यह सारा सामान हेड-क्वार्टर पहुंचाया जाएगा। इन बक्सों में करोड़ों रुपयों के जाली नोट हैं, जो इन मशीनों पर छापे गए हैं। देश के सबसे अधिक खतरनाक दुश्मन वे हैं, जो खून की एक बूंद भी बहाए बिना देश की आर्थिक स्थिति को कमजोर करके उसे विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर देते हैं। मैं स्मगलरों और जाली नोट बनाने वालों को देश की अखंडता और एकता के दुश्मन आतंकवादियों से भी अधिक खतरनाक और देशद्रोही मानता हूं।” मेजर बलवंत ने कहा।

तभी राइफलों की गोलियों की तड़तड़ से पत्थरों के बने उस विशाल हॉल की छत और दीवारें एक बार फिर कांप उठीं।

मेजर बलवंत का इशारा पाते ही उसके साथी और पुलिस के जवान बड़ी फुर्ती से फर्श पर लेट गए और उस तरफ अपनी राइफलों, स्टेनगनों और रिवाल्वरों की नालें घुमाकर गोलियां चलाने लगे, जिस ओर से आने वाली गोलियों ने कई जवानों और मेजर बलवंत के साथियों को जखमी कर दिया था।

ये गोलियां उसी दरवाजे के पीछे से आ रही थीं, जिसकी

एक दीवार में लगी सीमेंट की जाली के पीछे थोड़ी देर पहले ही मेजर बलवंत, अमित और इंस्पेक्टर कुलकर्णी के साथ खड़ा हुआ था।

मेजर बलवंत पेट के बल सरकता हुआ, अपनी स्टेनगन से आग और मौत बरसाता हुआ उस दरवाजे के पास पहुंच गया। उसने बड़ी फुर्ती से अपनी पीठ पर बंधे बैग से एक हथगोला निकाला और दरवाजे के अन्दर उस कोने की ओर दे मारा जहां सीमेंट की जाली के पीछे छिपे खड़े रहने की काफी गुंजाइश थी।

एक जोरदार धमाके के साथ कई दर्द-भरी चीखें उभरीं और फिर सारे हॉल में धुआं फैल गया।

“मैं तुम्हें पहचान चुका हूं नरेन्द्र राव?” मेजर बलवंत ने ऊंची, कड़कती हुई आवाज में कहा, “अपने पिता वीरेन्द्र राव के साथ हथियार फेंककर बाहर आ जाओ। मैं तुम्हें केवल दस मिनट की मोहलत देता हूं। अगर तुमने मेरी इस हिदायत पर अमल न किया तो अपनी और अपने पिता की मौत के तुम खुद जिम्मेदार होगे।”

कुछ देर बाद नरेन्द्रराव और उसके पिता वीरेन्द्रराव अपने पांच साथियों के साथ अपने हाथों को ऊपर उठाए हुए निकले। हथगोलों की मार से उनके बदन से जगह-जगह से खून बह रहा था। कपड़े तार-तार हो गए थे।

“तुम दोनों ने सोचा था कि तुम्हारी ओर पुलिस या जासूसों का ध्यान कभी नहीं जाएगा, क्योंकि तुम हमेशा रत्ना के कन्धे पर बन्दूक रखकर चलाते रहे। मुझे तुम पर उसी दिन सन्देह हो गया था, जब मैं गजेन्द्रराव की हत्या की छानबीन के सिलसिले में उनकी हवेली में गया था। गजेन्द्रराव की हवेली इस ढंग से बनाई गई है कि उसमें फाटक बन्द हो जाने के बाद परिन्दा भी पर नहीं मार सकता। उस हवेली से सटी हुई केवल तुम्हारी हवेली थी, जिसकी छतें गजेन्द्रराव की हवेली की छतों से मिली हुई थीं। इसलिए मुझे विश्वास हो गया कि जिस किसी ने

भी गजेन्द्रराव की हत्या की थी।" मेजर बलवंत ने वीरेन्द्रराव और उनके साथियों तथा उनके बेटे नरेन्द्रराव को स्टेनगन से कवर करते हुए कहा, "तुम्हें शुरू से ही औरत और दौलत का लालच रहा है। तुम्हारे पहले लालच की शिकार हुई थी वह नार्वेजियन युवती सूसी जो यहां भारतीय भाषाओं और संस्कृति का अध्ययन करने आई थी। तुमने विवाह का लालच देकर उसका सब कुछ लूट लिया और एक बच्ची की मां बन जाने के बाद उसने तुमसे विवाह करने का आग्रह किया तो तुमने उसे धक्के मारकर घर से निकाल दिया और खुद भी बम्बई छोड़कर टांगानीका भाग गए, जहां तुम्हारे बड़े भाई गजेन्द्रराव अपने तीन साथियों के साथ मिलकर अपने मित्र सोमनाथ की सारी दौलत लूटकर उसकी हत्या कर चुके थे और उसकी पत्नी रत्ना के साथ बलात्कार करके बेहोशी की हालत में एक खड्ड में फेंककर भारत भाग चुके थे। जब तक तुम वहां पहुंचे तुम्हारे बड़े भाई अपने तीनों साथियों के साथ अपने मित्र सोमनाथ के प्राण, धन-सम्पत्ति और उसकी पत्नी की आबरू लूटकर और उसे मरा हुआ समझकर वहां से भाग चुके थे, लेकिन रत्ना मरी नहीं थी। तुमने परदेस में उसकी सहायता की और उसे उसके बच्चों को लेकर बम्बई लौट आए। वहीं तुम्हारी मुलाकात राजन से हुई, जो जाली नोट बनाने में एक्सपर्ट था, लेकिन उन दिनों उसकी आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी, क्योंकि जाली नोट चलाते हुए उसके सभी साथी पकड़े गए थे। तुम उसे भी अपने साथ बम्बई ले आए। अमृता की मां मधु उसकी दूर के रिश्ते की बहन लगती थी। वह उसके घर में जाकर रहने लगा।"

"मधु के सम्बन्ध अपने पति दीवान यशवन्त पाटिल के साथ टूट गए थे। दीवान यशवन्त पाटिल उसके प्रेमी हितेन्द्र देसाई को ठिकाने लगा चुका था। मधु बहुत ही सुन्दर थी। उस पर राजन की आंख तभी से थी, जब उसका विवाह नहीं हुआ था, लेकिन रिश्तेदारी होने के कारण राजन उससे विवाह करने की बात मुंह पर नहीं ला सकता था। मधु ने उसे भाई समझकर

अपने घर में आश्रय दिया। उसकी हर तरह से सहायता की और जब रत्ना और तुम्हारी सहायता से उसका जाली नोटों का धन्धा अच्छी तरह चल निकला, तो उसने एक रात अपनी बहन मधु के साथ बलात्कार करने की कोशिश की; लेकिन मधु ने मार-पीटकर उसे अपने कमरे से निकाल दिया। वह मधु की दो-ढाई वर्ष की बेटी अपर्णा को उठाकर भाग गया।"

"लेकिन एक दिन जिस दिन सूसी को तुमने अपने घर से निकाल दिया था और निराश्रित अवस्था में उसकी बच्ची की मृत्यु हो चुकी थी और निराश होकर वह अपने देश वापस जा रही थी, राजन पर इंटरपोल के कुछ आदमियों की नजर पड़ गई। वह अपर्णा को फुटपाथ पर छोड़कर भाग गया; लेकिन इंटरपोल वालों के हाथों से न बच सका। वे उसे पकड़कर वापस टांगानीका ले गए और जाली नोटों को छापने, उन्हें बाजार में चलाने और लोगों को लूटने तथा हत्याएं करने के अपराधों में उसे पन्द्रह वर्ष की कैद की सजा हो गई।"

"जिस समय ढाई वर्ष की अपर्णा फुटपाथ पर खड़ी रो रही थी सूसी वहां पहुंच गई। एक दिन पहले ही उसकी बच्ची की मृत्यु हुई थी। उसने अपर्णा को उठाकर अपने सीने से चिपटा लिया। वह उसे अपनी बेटी बनाकर अपने साथ नावें ले गई। जिसका नाम उसने अन्ना रख दिया।"

"संयोग से जिस जहाज में अन्ना नावें के स्कूलों और कालेजों के छात्र-छात्राओं के साथ विश्व भ्रमण के लिए मोनार्क जहाज से यात्रा कर रही थी, उसी जहाज में मुझे भी सीटें मिलीं और उसी जहाज से राजन भी पन्द्रह वर्ष की कैद की सजा काटकर उसी जहाज से बम्बई लौट रहा था।"

"अन्ना विदेशी लड़कियों के साथ उनसे अलग-अलग दिखाई दी। उसके नाक-नक्श भी उन लड़कियों से नहीं मिलते थे। मैंने उससे पूछा तो उसने सूसी की कहानी सुनाते हुए बताया कि लोगों का कहना है कि वह सूसी जो सस्सी के नाम से प्रसिद्ध है, की बेटी नहीं है, लेकिन जब सस्सी भारत से लौटी थी, तो

वह उसकी गोद में थी। उस समय राजन वहीं कहीं खड़ा था। अन्ना की कहानी सुनकर वह उसे पहचान गया कि यही मधु की बेटी अपर्णा है, जिसे इंटरपोल के आदमियों के चंगुल से बचने के लिए भागते समय वह फुटपाथ पर छोड़ गया था।”

“उसने अपने गले में लाकेट के रूप में पड़े ट्रांसमीटर द्वारा रत्ना को आदेश दिया कि वह एक मोटरबोट लेकर रात को ठीक आठ बजे मोनार्क जहाज के पास पहुंच जाए। वह लोगों की आंख बचाकर जहाज की रेलिंग से एक रस्सा बांधकर जहाज से नीचे लटका आया। ठीक आठ बजे जैसे ही रत्ना ने ट्रांसमीटर द्वारा उसे मोनार्क जहाज के निकट पहुंचने की सूचना दी, वह अपर्णा को उठाकर उस मोटरबोट में रस्से के सहारे उतर गया और मेरे वहां पहुंचते-पहुंचते जहाज से इतनी दूर पहुंच गया, जहां मेरे रिवॉल्वर की गोलियां पहुंच नहीं सकती थीं।”

“राजन के आते ही रत्ना का साहस बढ़ गया। उसने सबसे पहले अपने पति के बड़े भाई छबीलदास की हत्या की फिर रतनचंद कापड़िया को ठिकाने लगाया और उसी रात राव गजेन्द्रराव की भी जीवन-लीला समाप्त कर दी। सेठ छगनलाल को धोखा देकर लगभग एक करोड़ रुपये के जेवर उससे झपट लिए।”

“मेजर साहब! वह दूसरा आदमी कौन था, जिसकी लाश सेठ रतनचंद कापड़िया के बंगले में उनके बेडरूम की खिड़की के ठीक नीचे पाई गई थी?” इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने पूछा।

“सेठ छबीलदास, सेठ रतनचंद कापड़िया, सेठ छगनलाल और राव गजेन्द्रराव से बदला लेने की योजना जिस दिन रत्ना ने बनाई थी। उसी दिन राव वीरेन्द्रराव भी इन चारों को ठिकाने लगाने का प्रोग्राम बना चुके थे। इन्होंने यह काम अपने एक खास आदमी कल्लू पहलवान को सौंपा था, जो पेशेवर हत्यारा था।”

“आपको यह जानकर और अधिक आश्चर्य होगा कि सेठ

छबीलदास के बेटे, सेठ रतनचंद के बेटे और अपने भाई के बेटे सुरेन्द्रराव को उनकी नवविवाहिता पत्नियों के साथ कार एक्सीडेंट की आड़ में मौत के घाट उतारने वाले भी राव वीरेन्द्रराव ही हैं।” वीरेन्द्रराव ने चन्दा की प्रेतात्मा की कहानी को खूब प्रचारित किया और बरगद के पेड़ के तने से हवेली तक जाने वाली सुरंग को जोड़कर नदी के पुल से सोनपुर आने वाली सड़क के ठीक नीचे एक कोठरी बनाकर उसमें एक डाइनुमा फिट कर दिया और उस डाइनुमा से जुड़े तारों को सड़क पर जहां-तहां बिछा दिया और उनके सिरों पर शक्तिशाली चुम्बक फिट कर दिए। इन तारों के सिरों पर जुड़े चुम्बक इतने शक्तिशाली हैं कि कार तो दूर के रोड रोलर और बुलडोजर को भी खींचने की क्षमता रखते हैं। वह डाइनुमा चुम्बक की सहायता से ही चलाया जाता है और उसमें एक ऐसा यंत्र फिट किया गया है, जिसके द्वारा उससे जुड़े तारों में अपनी इच्छा के अनुसार चुम्बकीय शक्ति पैदा की जा सकती है। उन्हीं तारों में लगे चुम्बकों के द्वारा उस सड़क पर से गुजरने वाली किसी भी कार या ट्रक को आसानी से अपने उस अड्डे तक ला सकते थे। उसे सड़क पर इधर-से-उधर दौड़ा सकते थे और उलट भी सकते थे। एक साथ सारे तारों से प्रवाहित होने वाली चुम्बकीय शक्ति कारों को अपनी ओर इतनी ताकत से खींचती थी कि कारें बे-काबू हो जाती थीं। इन्हीं कारों की चुम्बकीय शक्ति द्वारा वीरेन्द्रराव ने सेठ छबीलदास और सेठ रतनचंद कापड़िया के अलावा अपने भतीजे सुरेन्द्रराव को उस समय मौत के घाट उतार दिया था जब वे अपनी ससुराल से अपनी नवविवाहिता पत्नियों को लेकर अपने घर लौट रहे थे।”

“मेजर साहब! हवेली के तहखानों और सुरंगों का पता दीवान यशवन्त पाटिल और वीरेन्द्रराव को कैसे चला?”

“वीरेन्द्रराव ने भी इसी पुरानी हवेली में जन्म लिया था। यह अलग बात है कि बड़ा होने के कारण तुम्हारे पिता जागीरदार बनाए गए, लेकिन जागीरदार के बेटे होने के नाते इन तहखानों

का रहस्य तुम्हारे पिता और उनके दोनों छोटे भाइयों को मालूम था। दीवान यशवन्त पाटिल को अपना अत्यन्त विश्वासपात्र समझते हुए तुम्हारे पिता ने सोनपुर छोड़ने के बाद तहखानों का रहस्य बता दिया था, ताकि वह उन पर नजरें रखें और कोई दुश्मन उन सुरंगों के रास्ते हवेली में घुस न सके, क्योंकि हिम्मतसिंह को दीवान यशवन्त पाटिल अपना विश्वासपात्र समझते थे, इसलिए उन्होंने यह रहस्य उसे बता दिया था और उसी से मुझे इन सुरंगों के बारे में पता चला। मैं दुश्मनों के ठिकाने तक पहुंच गया।”

यह कहकर मेजर बलवंत ने जेब से सिगार निकालकर सुलगा लिया और एक कुर्सी पर बैठकर हलके-हलके कश लेने लगा।

इंस्पेक्टर कुलकर्णी ने दीवान यशवन्त पाटिल और रत्ना के साथ राव वीरेन्द्रराव, उनके बेटे नरेन्द्रराव और उनके पांचों साथियों को गिरफ्तार कर लिया, जब वह उन लोगों को स्टीमर की ओर ले जाने लगे तो मेजर बलवंत ने कहा, “रत्ना, सालों से तुमने अपनी बेटी सोमा और अपने अन्य बच्चों को नहीं देखा है। बेचारे बम्बई में ही हैं। तुमने सेठ छबीलदास की हत्या करते समय जिस लड़की को उनके पलंग पर बेहोश पड़े देखा था, वह तुम्हारी बेटी सोमा ही थी। अब वही सेठ छबीलदास की करोड़ों की सम्पत्ति की मालिक होगी। एक दिन जेल में उन्हें लाकर तुम्हें दिखा दूंगा, ताकि तुम इतमीनान से उस सजा को भुगत सको, जो इन हत्याओं और धोखाधड़ी तथा जालसाजी के अपराधों के दंडस्वरूप तुम्हें मिलेगी।”

रत्ना डबडबाई आंखों से मेजर बलवंत की ओर देखती रह गई। उसके मुंह से कोई आवाज नहीं निकली।

□□□

मुजरिम की तलाश

की अपार सफलता के बाद

मनोज पब्लिकेशन्स

में पढ़िए

कर्बलखीव

का आगामी नवीनतम

जासूसी उपन्यास

औरत

तेरा

का नून

मनोज पब्लिकेशन्स

में

अजिंक्योहना

का

मोना चौधरी सीरीज का
आगामी नया उपन्यास

आतंक का चेहरा

मनोज पब्लिकेशन्स के
आगामी सैट में

मुजरिमकी तलाश

एक ऐसी औरत की कहानी, जिसके पति की दौलत लूट कर कुछ धन लोभी अय्याशों ने उसके साथ बलात्कार किया और उसके बच्चों को दर-बदर का भिखारी बना दिया।

कौन थी वह औरत, जिसने इंतकाम की आग में झुलसकर उन समाज के दुश्मनों को तड़पा-तड़पा कर मारा।

एक ऐसे खतरनाक मुजरिम की कहानी, जिसने एक मासूम लड़की की झील में डुबो कर सिर्फ इसलिए हत्या कर दी कि वह उसका असली चेहरा पहचान गई थी और जिसे वह अपने पिता के रूप में जानती थी।

अत्यधिक सनसनी और रोमांच से भरपूर उपन्यास, जिसमें कदम-कदम पर आश्चर्यजनक रहस्यों का ताना बाना बुना गया है।

इस बार विश्वविख्यात जासूस मेजर बलवंत अनोखे और अचरज भरे अंदाज में करते हैं—
'मुजरिम की तलाश'।

पढ़िए और दांतों तले उंगलियां दबाइये।

